(३२) करहेड़ा युद्ध प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ९९९ से १०१३ तक)

*

(३३) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १०१५ से १०२९ तक)

(३४) जैतराव युद्ध समय।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक।)

(३५) कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १०४५ से १०७४ तक ।)

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक।)

—

(३७) पहाडराय समय।

(पृष्ठ १०९९ स १११८ तक।)

(३८) बरुण कथा।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक।)

---

[३९] सोमवध समय ।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

[४०] पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

[४१] पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

[४२] चंद द्वारिका समयौ ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

—

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११०८ तक)

०

[४९] भीम वध समय।

(पृष्ठ ११९० से पृष्ठ १२०७ तक)

(४५) संयोगिता पूर्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

— —

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

[४६] सुक वर्णन।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

०

[४८] बालुकाराय समय ।

(पृष्ठ १२९२ से पृष्ठ १३२९ तक)

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव ।

(उन्चासवां समय ।)

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव ।

(पचासवां समय ।)

---

(५१) हासीपुर युद्ध ।

(इक्यावनवा समय ।)

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय ।)



Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-.9

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÁI,

EDITED

BY

Mohunlal Vishnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIX and XXXVI



महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी ए

ने

सम्पादित किया।

समय २९ से ३६ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA BENARES

1907

मूल्य १।)] Issued 15th March 1907. [Price Re 1-4

सूचीपत्र।

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

(उन्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गज़नी मे पहुंचा ।

कवित्त ॥ दिल्लियपति प्रथिराज । अवनि आषेटक [1]पिल्लय ॥
साठ सहस असवार । जाइ लग्गा धर ढिल्लय ॥
धुनि धरा पतिसाह । रहे पेसोर [2]सुथनाय ॥
सथ्य लिये सामंत । दिल्ली कैमास सु [3]जानय ॥
आगया सु समय प्रथिराज वर । गज्जन वै धर धूसियै ॥
दूसरौ इन्द्र दिल्लेस वर । सुभर सरस ढिग सुभ्भियै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर ग़जनी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है ।

दूहा ॥ गई षबर अम्मान की । उट्ठ चढे असवार ॥
ढिल्ली धर लिजै तपत । दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥
प्रथीराज साजत पवंग । है गै नर भर भार ॥
दिल्लीपति आषेट चढ़ि । कुहकवान छथनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
डेरा करि पेसोर न्रप । सहस सट्ठि सुभ बाज ॥
सोन [4]पंथ विच पथ दोइ । गल अज्जै आवाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए पिल्लिय, ढिल्लिय । (२) ए क को धरत्तिय (३) ए कृ को मत्तिय । (४) ए पच ।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत। चले च्यारों चतुरन्नर ॥
लीय षबरि प्रथिराज। चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत। तबहि तत्तार सु बुज्झिय ॥
काहां कारंत दिलेस। चढ़त गिरवर धर धुज्जय ॥
सँग [1]सत्त षट्ट सामंत चलि। तीन पाव लष्यह तुरी ॥
अनि सूर वीर नरवर सकल। उड़ी षेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आषेटक दिन रमय। संग स्वानं घन चीते ॥
नावक पावक विपुल। जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बष्षह सु। संत मेघा कलि कंठिय ॥
सीहगोस पुच्छिय सु। लंब सिरषां सिर [2]पुट्ठिय ॥
जुर्रा [3]रु बाज कूही गुहा। धानुकी दारु धरा ॥
वहु काल माल वद्दकं विला। जम भय तव जित्तिय धरा॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तराबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट। सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह। रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक वाजिन्न। सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब। दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तांब जब्ब प्रथिराज कों। तब तसबी कर मंडिहों ॥
ठामंक सद्द नद्दह करों। जुगति साह तब [4]छंडिहों ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना।

(१) कृ. को. ए.-सित्त। (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय।
(३) ए. कृ. को.-जु। (४) मो.-ठडिहौं।

दूहा ॥ देस देस कागद फटे। पेसगी षुरसान ॥
रोम हबस अरु बलक में। फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जत। लष्प पचह मिलि पष्पर ॥
कूच कूच परि पैर। गुरज धारी लष गष्पर ॥
कोस दह दह कूच। आइ गिरवान सपत्तौ ॥
दौरि दूत दिल्लेस। जाम कार चय दिन वित्तौ ॥
मुक्काम कियौ प्रथिराज न्टप। तहा षबरि कहि दूत सब ॥
गोरी नरिंद है गै सुभर। सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घग्घर नदी पहुचा।

चैत मास रवि तीज। सेत पष्पह काल चद्दह ॥
भयौ सुदिन मध्यान। चल्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥
काटक सवर हिल्लोर। भार सेसह कारि भग्गिय ॥
चढि सामंत सकज्ज। नद सुर [1]अमर जग्गिय ॥
गज रोर सोर बधे घटा। सिलह वीज सिलकावलिय ॥
[2]पप्पीह चीह सहनाइ सुर। नदि घग्घर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह। पैसगी पतिसाह ॥
[3]पच्छाई बादल प्रबल। भग्गे राह विराह ॥ छं० ॥ ११ ॥

बरन बरन तहा देषिये। घटा रव गजराज ॥
सन्नाहा सन्नाह रजि। पष्पर सष्पर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥

भई हलोहल सेन सब। पान व्यूह वर षेत ॥
लष्प एक भर अग मै। छच ध-यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

(१) मो-अमर सु जग्गिय। (२) ए पापीह। (३) क प छाहीं।

हुअ टासंक सु दिसि विदिसि। हुअ संनाह सनाह ॥
हुअ हलोहल सुम्मरन। दोऊ दिन इक राह ॥ छं० ॥ १४ ॥

सेना का वर्णन।

त्रोटक ॥ हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं। धन घेरिक कीय सु फौज वरं ॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर मद्दव वाहल संमिलयं ॥
छं० ॥ १५

सु अग्गें हथनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं ॥
तिन पिठ्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]करंत करी तिहलं ॥
छं० ॥ १६ ॥

तिन पिठ्ठह फौज गहव्वरयं। धरि गोरिय सुठ्ठ करं धरियं ॥
कमनेत अमूल सु लप्प लियं। तिन मध्य ततारह छत्र दियं ॥
छं० ॥ १७ ॥

लष दोय गुरज्ज स गप्परियं। षुरसान दियं दल पप्परियं ॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लप्प हुकम्म मयं ॥
छं० ॥ १८ ॥

षुरसान तनं दल उप्पटयं। मनुं साइर सत्त उलट्ट मयं ॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अद्ध सरं। लोहानिय पानिय षेत षरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

हबसी उजबक्क हलीर भरं। कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं ॥
सरबानि ऐराकि मुगल्ल कती। बहु जाति अनेक अनेक मती ॥
छं० ॥ २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना।

कवित्त ॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गे तत्तारिय ॥
मधि नायक सुरतान। नील षुरसान सु मारिय ॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलंजर ॥
पाषि पीठि रूमांस। पला बहु भांति अवर नर ॥

(१) ए-करत। (२) ए-जब। (३) ए.-घ्यानिय।

उत्तरिय नद गोरीस पहु। वज्जा दस दिसि वज्जिया ॥
मानों कि भद्द उलटी मही। सादर [1]अवु गरज्जिया ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्डराव को आगे किया।

दूहा ॥ दिल्लीपति फौजह रची। दियौ जैत सिर छत्र ॥
चामंड रा अग्गै भयौ। मनो सु गिरवर गत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की।

कवित्त ॥ फौज रची सामंत। गरुडव्यूह रचि गढ्ढिय ॥
पष भाग प्रथिराज। चच चावंड सु गढ्ढिय ॥
गावरि अत्तताइ। पाइ गोइंद सु ठढ्ढिय ॥
पुच्छ कन्ह चौहान। पेट पम्मारह पढ्ढिय ॥
सुंडाल काल अग्गो धरे। [2]काढे दोइ कलहन्न किय ॥
चालंत वान गोरी प्रबल। मानहु अधकि मार दिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना। एक हजार मीरों का कैमास को घेरना।

तत्तारह उप्परह। चित्त चावंड चलायौ ॥
दुहू फौज अग्गज। दुहू भुज भार भलायौ ॥
मीर वान वरषंत। धार धारा हर लग्गौ ॥
वाही चामंडराइ। भूमि तत्तारह भग्गौ ॥
उत्तरे मीर सै पच दुइ। दाहिम्मै किन्नौ दहन ॥
पहिलै जु झुझ्झ दिन पहिल कै। मच्यौ जुद्ध जानैं महन ॥ छं० ॥ २४ ॥

तत्तार खां का घायल होना। मीरों की वीरता।

भूमि पर्‌यौ तत्तार। मारि कामनेत प्रहारै ॥
एक घाव दोइ टूक। परे धारन मुहु धारै ॥

(१) ए अगर।   (२) ए कढ्ढे दोई कल किय।

[1]षुर बज्जै षुरतार । चमकि चामंड चलायौ ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ । एक बहु लष्षन धायौ ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ । सत्त धरी साहस धरै ॥
तिनमा [2]कटक चिबिधो घड़ा । एक एक पग अनुसरै ॥ छं० ॥ २५

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना ।

षान षान आषूंद । अठ्ठ सहसं बहु गष्षर ॥
परिय पंति अवनेस । पारि बहु [3]अष्षर गष्पर ॥
[4]हयौ नेज चामंड । बीर दो सहस लरै भर ॥
हस्ति एक बिन दंत । तसह तिन मयौ सहस कर ॥
दाहिम्मराव मुरछ्यौ पर्‌यौ । दौर्‌यौ जैत महा बलिय ॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही । कलि मरग्गो रिन बट कलिय ॥
छं० ॥ २६ ॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया ।

धपी [5]सेन सुरतान । [6]मुठ्ठि छुट्टी चावद्दिसि ॥
मनु कपाट उघर्‌यौ । कूह फुट्टिय दिसि बिद्दिसि ॥
मार मार मुष किन्न । लिन्न चावंड [7]उपारे ॥
परे सेन सुरतान । जाम इक्कह परि धारे ॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ । जानि सनेही भिंटयौ ॥
चामंडराइ करि वर कहर । गोरी दल बल [8]कुट्टयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन ।

जैत राइ जडधार । लियौ कर दंत मुष्ष कर ॥
परे बज्र सिर धार । मनों सेना सिर उप्पर ॥

(१) ए.-पुर । (२) ए.-कमंध ।
(३) मो.-परिकर, कृ.-पष्षर । (४) कृ.-पयौ, ए.-भयौ । (५) मो.-मुठ्ठि ।
(६) मो.-तुठ्ठि । (७) ए.-उधारे । (८) ए. कृ. को.-छुट्टयौ ।

पुरसानी वगाल । मनहु [1]डहूर रमावै ॥
भरै पच जोगिनी । डक्क नारद वजावै ॥
अपच्छरा गीत गावत इला । तुंवर तत वजावही ॥
सुरतान सेन दिल्लेस वर । [2]मग्ग मग्ग जस गावही ॥ छं० ॥ २८ ॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ।

सिर धुनत पतिसाह । धाह सुनि सेना रुध्धिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार । परे वध्धन सौं वध्धिय ॥
जम सौं जम आहुरै । सूर जुट्टै दोइ घुट्टै ॥
नई गठि तन जोग । सूर मुंडावलि घुट्टै ॥
पुरसान जैत अब्बूधनिय । धार धार मुह कढ्ढिया ॥
ऐसो न जुद्ध दिष्षौ सुन्यौ । दारुन मेछ दवढ्ढिया ॥ छं० ॥ २९ ॥
मनु द्वादस सूरज्ज । हथ्थ चंद्रमा महा सर ॥
जिन उप्पर पलमलै । ताहि धर गोरिय सुभ्भर ॥
काटक क्रूह किलकार । सार परमार वजायौ ॥
भिरि भज्यौ सुरतान । एक एकह सुष धायौ ॥
सिर सार धार वुझ्यौ प्रहर । तव दौर्यौ पज्जून भर ॥
निसुरत्ति षान लष्पह वलौ । लष्प एक पाइल सुभर ॥ छं० ॥३०॥

घोर युद्ध हुआ। निसुरत खां मारा गया। दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई।

भुजंगी ॥ मचे [3]कूह कूह, वहै सार [4]सार । चमक्कै चमक्कै, करार सु [5]धार ॥
भभक्कैं भभक्कैं, वहै रत्त धार । सनक्कैं सनक्कै, वहै वान [5]भार ॥
छं० ॥ ३१ ॥
हवक्कै हवक्कैं, वहै सेल मेल । हलक्कै हलक्कै मची ठेल ठेल ॥
फुकै फुक फूटी, सुरत्तान ठान । वकी जोग माया, सुर अप्प थान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए क को दहूक। (२) ए-वग्ग।
(३) ए क को हूक हूक। (४) ए कृ को धार। (५) मो धार।

बढ़े चट्ट पट्टं, उघट्टं उलट्टं। कुलट्टा [1]धरै अप्प, अप्पं उहट्टं ॥
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थं सुटट्टं। कडक्कं बजै सैन, सेना सुघट्टं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बढ़े हथ्थ परमार, सिरदार सारं। परे सेन गोरी, बहे रत्त [2]धारं ॥
पन्चौ षान मिसुरत्ति, सेना सहित्तं। हुऔ सूर मथ्थान, दिल्ली स जित्तं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना।

कवित्त ॥ कालंजर इक लष्ष। सार सिंधुरह गुड़ावै ॥
मार मार मुष चवै। सिंघ सिंघा मुष धावै ॥
दौरि कन्ह नरनाह। पटी छुट्टी [3]अंषिन पर ॥
हथ्थ लाइ [4]किरवान। रुंड माला किन्निय हर ॥
बिहु बाह लष्ष लोहैं परिय। जानि करिम्भर दाह किय ॥
उच्छारि पारि धरि उपरें। कलह कियौ कि उधान किय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं। गिरे काइरं, सूर बज्जे सनूरं ॥
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कपारं। पियै जोगनी पत्र, कौयैं डकारं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बढ़े अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं। करं सूर संम्हालियै, घल्लि बथ्थं ॥
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं। लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना। कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय। भगिय सेना पतिसाहिय ॥
पंच फौज एकट्ठ। कन्ह करवारि [5]सम्हारिय ॥

(१) ए.-धरा। (२) मो.-पारं। (३) ए.-अंषनि।
(४) ए. कृ. को -करिवार। (५) कृ.-सम्माहिय।

धर पारे वहु मीर। सथ्थ अब सेना भग्गिये ॥
गर घत्ती कमान। लियौ गोरीय उछ्गिय ॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे। हाय हाय मुष हुकार्‍यौ ॥
पज्जून ग्रेसि मुष मीर कौ। कान्ह लोइ गोरी वर्‍यौ ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुलतान को पकड कर अपने घर ले आना।

जनु उद्योन हलाइ। पवन चलै ज्यौ बाधै ॥
त्यो पज्जून नरिंद। मीर जमदढ्ढ साधै ॥
परे मीर सै सत्त। विए रन छडिव भज्जे ॥
चामर छत्र रपत्त। तपत लुट्टे ज्यों सज्जे ॥
कान्ह नरिंद पतिसाह लै। गयौ थान अप्पन वलिय ॥
पमार सिंध लग्यौ सु पय। चाव भाव कीरति चलिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहा किले में रखना।

[1]रहै कान्ह अजमेर। *गयौ चहुआन जैत लिय ॥
धरि अग्गोरी नरिंद। दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥
गयौ अप्प अजमेर। †लिए पतिसाह नरिंदह ॥
दिन किन्नौ महिमान। पास ठट्ठा रहै द्रढ्ढह ॥
बैठारि तपत सिर छत्र दिय। सभा विराजे सु पहुमर ॥
सिर फेरि पैर दिन्नौ दुनी। यौं रप्पै पतिसाह दर ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की सख्या।

एक लष्ष वाजिच। सहस तीनई मय मत्तह ॥
लष्ष एक तोषार। तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए को हरै। * ए कृ को लिए पतिसाह नरिंद हिय।
† ए कृ को तहा चहुआन जैत लिह।

आराबा हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु मारिय ॥
चामर छत्र रषत्त। साहि लिन्निय घर सारिय ॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्टे धाव सु बंधियै ॥
रन जीत सोधि संभर धनी। बज्जे अनत सु वज्जियै ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[1]रची सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए ॥
गोयंद निढ्ढुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए ॥
करौं दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह ॥
रा पज्जून प्रसंग। राव हाहुलि हंमीरह ॥
इत्तने मत्त मंत्रह मिले। हम मारैं छोरैं न अब ॥
छुट्टै न हास्य अबकें हमैं। फिर न आइहै इह सु चव ॥ छं० ॥४२॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस षंधार। दिए पछ्छिवानं सारं ॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं ॥
गज्जन रष्षे देस। बियौ समपै प्रथिराजह ॥
ना तरु छुट्टै नाहिं। कर हेम उप्पर काजह ॥
बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि। अबकें मारै कोइ नह ॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जें हमहि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यौ प्रथिराज। कहै काका त्यौं किज्जिय ॥
जेता रंजक होइ। तिता लादा भरि लिज्जिय ॥
जग्य कियौ पंडवन। हेम काचौ [2]उन आन्यौ ॥

(१) ए. कृ. को. करिव। (२) ए. कृ. को.-तुम।

त्यौ लभ्यौ पतिसाहि। लष्प लोहा हमःमान्यौ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह कौं। लोहानौ सथ्थं दियौ॥
असवार सहस सथ्थें चलें। कर सिर कान्ह इतो कियौ॥छं०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

करि जुहार सब कान्ह। गयौ अजमेर दुरग्गह॥
तज्यौ कान्ह पतिसाह। वत्त सब जपी अप्पह॥
हूँ पुसाल गजनेस। दई इक लाल सहित मनि॥
कान्ह लेइ पतिसाह। गयौ दिल्ली सु ततच्छन॥
मनुहार करिय सामंत सब। तेग दई दिल्लेस वर॥
दो अश्व करी दोइ देय करि। [1]साहि चलायौ अप्प घर॥
छं०॥४५॥

सुलतान का कुरान बीच मे दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

करि सलाम गजनेस। करिय नव निह दिल्लेसर॥
तम रचियो हम प्रीति। वरप मन सत्तह केसर॥
पेसगी धर सीम। बीच पौरान कुरान॥
जा तको तुम अवे। तवै तुम कढियौ प्रान॥
उत्तरौ अटक तौ मैं अवर। मुसलमान नाही धरौ॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै वहुत। हून अवै ऐसी करौ॥छं०॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना।

पहु चल्यौ सुरतान। दियौ लोहानौ सथ्थं॥
दूत च्यारि अनुसार। काल छुच्यौ सें हथ्थैं॥
गयौ वीस म्हौलान। अटक उत्तरि इन पार॥

(१) ए को चाहि, चाह।

सोवन पथ मेलान। सहस सह्है असवारं ॥
निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन। आइ कियौ मुकाम तहां ॥
आजान बाहु मछिमान किय। चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥ छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल हरी नवट्ट। सहस अट्ठारह सथ्थें ॥
हेरौ करि पतसाह। पुले लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार। कटक देष्यौ असवारह ॥
कह्यौ बरन सब सथ्थ। सहस दोइ सेना सारह ॥
तिन बार बज्जि चंवाल बहु। सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥
उतऱ्यौ कटक छोरिय अटक। नहि हुओ उग्गंत पहु ॥ छं० ॥४८॥

गाथा ॥ बज्जे पुठि चंवालं। हथ्थिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं। किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान। कौन बज्जा बज्जाए ॥
दौरि दूत तिन बेर। धनी पछिवानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच। कौन पछिवान धनी कहि ॥
तब जान्यौ रयसल्ल। सेन आजान बऱ्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं। सहस डेढ़ असवार दिय ॥
बंधेव फौज लोहान बर। दुहूं फौज टामंक किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा।

अरुन किरन परसंत। आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै बान बिहंग। जानि जुट्टा दोइ मल्लं ॥
संमाही आजान। तेग मानहु हबि दिट्ठिय ॥
जानि सिषर मज्झि बीज। कंध रैसल्लह बुट्टिय ॥

लोहान तनौ वज्जै लहरि । कोउ हस्सै कोउ उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रवल । एक घाव एकह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी । लोह वज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक तर । लुथ्थैं लुथ्थ समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना।

पयौ लुथ्थि रयसल्ल तह । ढुढि षेत लोहान ॥
सुवर साह गोरी न्रिभय । गयौ सु गज्जन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना।

कवित्त ॥ तत्तारिय षुरसान । सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्योछावर करि पैर । वहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक असवार । मिल्यौ गोरी दल पष्पर ॥
लष्प भये दरवेस । आइ पइ लग्गे गष्पर ॥
उछ्छाह भयौ गज्जन इला । गयौ मभ्भि गोरी धनिय ॥
दरबार मीर मीरन्न धन । मिलत आइ अप अप्पनिय ॥छं०॥५४॥

दस दिन लोहाना वहा रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोडे लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया।

डेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ॥
करिय सत्त आजान । तुरिय पचास अप्प वस ॥
इह दिन्नौ लोहान । बियौ भेज्यौ न्रप राज ॥
लादे दाइ हजार । सत्त सै तोला साज ॥
इक इक तुरी हथ्थी सु इक । सामतन दीनौ सबै ॥
मुह करिय कित्ति अनेक विधि । सुवर सूर फेरिय जवै ॥छं०॥५५॥

लोहाना विदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोडा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी।

सीष दई लोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत। काली छत्तीसह दप्पै ॥
मिल्यौ बाह आजान। वत्त सुरतान सु अप्पै ॥
इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए घरैं ॥
सोव्रन्न रासि रंजक पहर। मुक्कलियै चित्तँगपुरै ॥ छं० ॥ ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेंट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतोड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं ॥
लादे सित्त सुरंग। सित्त लै [3]तुला प्रमानं ॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैवर कुल राकिय ॥
छत्र लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यौ चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरह ॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरह ॥ छं० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को.-दुरगा। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोला



अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना ।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ [1]कानवज्ज ॥
चढत पग सम्हौ मिल्यौ । सुवर वीर कामधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥
करि पलपट्ठ सुरतान सौ । दल भग्गे सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर । चढि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना । करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना ।

कवित्त ॥ चल्यौ सुवर चहुआन । वीर कन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव वर सेन । तारि कव्यौ सु तुग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद । सवै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पाच । पठय नाइका घर थाही ॥
वर वीर जुद्ध कामधज्ज करि । भीर भगी वर वीर [2]अचि ॥
तिहि दिना वीर पज्जून पर। पग्ग मार वोहिथ्थ [3]मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥
जच तच एकठ भये । [4]सवै साज समाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना ।

(१) ए - कसवज्ज । (२) ए कृ को -आगि ।
(३) ए कृ को -मार्ग । (४) मो सव कमधजाहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस । दिवस प्रथिराज राजि भर ॥
अति सामंत उभार । आइ अति ध्रम्म ढिल्लि धर ॥
दिय थानको नाइक्क । नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु विद्य । कला संजुत्त सुनेयं ॥
ता सध्ध नीय रतिरूव तन । वर चवद चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति विमल । अति मति अगनित [1]निघषल॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना।

बाधा ॥ संभलि वत्त सुयं प्रथिराजं । अति अंगनि विद्यावल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं । पूरन हाटक वरन विवंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं । स्वर जनु पंचम मगग गुँजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं । सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै । वासन महल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि । जग्यौ काम न्रपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ । बहुर प्रसंसन साधक कीनौ ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दूहा ॥ संझ समय अंदर महल । किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प वयठौ राज तहँ । अनत सजग्गित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के रामामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं । सु धाम तेज तग्गियं ॥
सजे सुमाल आसनं । अमोल रोहि वासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) ए.-वैद्य । (२) मो.-अति ।

सु दीप साम सोभय । सुगध गध ओमय ॥
कपूर पूर जंभर । मृगज्ज वास अगर ॥ छ० ॥ १२ ॥
सु सज्जि सिघ आसन । समोल रोहि वासन ॥
कनक छत्र दडय । सु रग रग मडय ॥ छ० ॥ १३ ॥
अबीर [1]जप्प कर्दम । सरोहि ग्रेह सर्दम ॥
अभूत साय सोमयं । अबीर भूर ओभय ॥ छ० ॥ १४ ॥
अयास धूम धोमर । प्रसार वास ओमर ॥
प्रसून प्रन्न वन्नय । स भूपन स भम्मय ॥ छ० ॥ १५ ॥
घन सु सार सम्मर । अभूत वास अम्मरं ॥
भुअ कुसम्म केसर । सुर अभूत जे सुर ॥ छ० ॥ १६ ॥
तहां सु राज आसन । सरोहि सिध सासन ॥
सुपाय अग रष्षिय । कला जु काम लष्षियं ॥ छ० ॥ १७ ॥
प्रवीन भाव पायस । विचित्र चित्र पासय ॥
भवति क्रति भूषन । सुबुद्धिय विदूपनं ॥ छ० ॥ १८ ॥
प्रसून [2]विद्धि वासन । अभूत [3]सिद्धि आसनं ॥
बरष्प षोडस सम । अदोस रूपय [4]रम ॥ छ० ॥ १९ ॥
कला विग्यान विद्धय । सु पास भूप सिद्धय ॥
सिगार सार सारय । अभूषन स धारय ॥ छ० ॥ २० ॥
ग्रहे विदून चामर । सु विभ्र राज सामरं ॥
धरत कव्वि पन्नय । सु कठ थान सन्नय ॥ छ० ॥ २१ ॥
सु घन्नसार पानय । सुगध विद्ध मानय ॥
करें सु [5]द्रप्पक कर । सु सष्षि [6]अद्धि समर ॥ छं० ॥ २२ ॥
शृगार ग्रेह सोमय । अभूत दुत्ति ओमय ॥
समोभ धामय सज । सुवास वासव लज ॥ छ० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम ।

(१) क ए दच्छ, जच्छ, जच्छ ।
(२) मो विद्ध । (३) मो मद्धि । (४) को ए सम ।
(५) क-दर्प, ए-दप्प । (६) मो-अद्ध ।

कवित्त ॥ रचि धाम अभिराम। राज हरि थान वयट्ठौ ॥
दिपत [1]दीह सुभ लोह। तेज उम्मर तप जिट्ठौ ॥
बोलि [2]चंद चंडीस। बोलि जद्दव रा जामं ॥
निडुर बोलि कमधज्ज। अत्ति आमनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर। लोहानौ आजानभुअ ॥
बैठक बैठि आसन्न सजि। ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल ताम नाइकं। सथ्थ सथ्थह सब साजं ॥
बोलि पात्र कर्नाटि। बैठि गानं वर वाजं ॥
नाटक भेद निबंध। बूझि राजन वर वत्तं ॥
कवन कला प्रति पात्र। कहौ नाइक निज सत्तं ॥
नाइक कहै प्रथिराज सुनि। एह पात्र देष्यो सु पथ ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय। कला मनोहर चिंति मथ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिससे निड्डुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चर्यौ ताम कविचंद बानि। नायक अहोमति मरम जानि ॥
सो धरौ कला विचार साज। निड्डुरह बयट्ठौ पास राज ॥ छं० ॥ २
नाटक विविध बुझ्झै बिनान। विचार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं

नाइक जंपि हो चंद भट्ट। न्रप पास बयट्ठौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचंद का निड्डुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्यौ चंद नायक सरीस। कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव। ता सुअन कमध निड्डुरह एव ॥ छं० ॥ २

(१) मो.-देह। (२) क्र.-चंद पुडिर।

नायक कहै हय वत्त सब्ब। आवन्न केम हुअ दिल्ली तब्ब ॥
वरदाइ कहै नायक्क चित। आवन्न किन्न कारन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
जौ सिध कियौ तहां उद्ध काज। अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु बैस उभय बंधव सरूप। श्रुत थान उभय पेलत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ महल निढ्ढुर समेक। कहि कुमर राज सद्धौ सु एक ॥
उच्चर्यौ ताम निढ्ढुरह देव। कर कुमर हम मिच्छत सेव ॥३१॥
जयचंद समुप निरपेत ताम। कल [1]कलिय लग्ग चामंड धाम ॥
करि सभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह। सुष धाम काम विलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना।

कवित्त॥ समय एक निढ्ढुर। कामध आपेट सपत्तौ ॥
विधि कुरंग दुअ तीन। उभय एकल निज धत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग। सुवन सोवत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार। सथ्थ सभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि। घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये बाग आगम सकल। लहयौ निढ्ढुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निढ्ढुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल ॥ निढ्ढुर ताम [2]गोठिलिय अप्प। तर सेवक सारंग सु दप्प ॥
घन पकवान सरस गति सार। रच्चे मस विवह विसवार ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे। [3]चपतौ सथ्थ सबै विधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहै। कासमीर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तमोल [4]सुगंध। मादक आइ अग्गि जहां जग्ग ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्त। आयौ आतुर [5]वग्ग तुरत्त ॥छं०॥३६॥

(१) ए कृ को मलिय। (२) ए-गोगिय। (३) मो नृप तौ।
(४) मो सुरंग। (५) मो-वेगि।

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम वाचे । तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे ॥
गयौ अथ जैचंद सु रावं । लुट्टी वस्त गोठि मनि सावं ॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना ।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं । कलमलि कोप रोस सब अंगं ॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ । फेरे मुष जैचंद विरत्तौ ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस वसि सिर नायौ । निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ । अति आदर करि पिथ्थ वधायौ ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाट्य कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दूहा ॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन । घनि घनि वैंन उचार ॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन । जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ॥ ४० ॥

गाथा ॥ राजनीति गति एवं । गुन संपूर चौस एकंगं ॥
जे रंजे रज ग्यानं । सुनि कविराज सब्ब संपूरं ॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन ।

साटक ॥ विद्या विनय विवेक [2]वानि विमलं वर्णौ कुवेरप्रभा ॥
[3]सुविचारो सु विचक्षणो रु सुमनं सौजन्य सौदंर्य्यता ॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं ॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कालसं जानंत केली कला ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥
[5]उद्दायं उद्दार दाव उछहं एते गुना राजयं ॥

(१) ए.-कानिक । (२) ए. कृ. को.-मार सलयं, विव्वेक विच्चारय ।
(३) ए. कृ. को.-विचारं ससु तप्प सोप सुमन सौजन्य सौभाग्ययं ।
(४) ए कृ. को.-भाग्यं ।
(५) ए.-उद्दाय ।

सोय ज्ञान विचार चारु चतुरं विव्वेक विस्तारय ॥
सोय [1]नीति सनीत किति अतुल प्रात जय [2]जोरय ॥ छ० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ फुनि नाइका जपै सु नमि । अहो चंद वरदाइ ॥
राग विनोदह चौसपट । कहौ सुनौ विधिसाय ॥ छ० ॥ ४४ ॥

* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोदय । सुरवध न्रत्य समोदय ॥
गीताद्य अधि नव वादय । अभिलाप अर्थ पदादय ॥ छ० ॥ ४५ ॥
[3]वक्रात जयपवीतय । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतय ॥
पडीत पालक तल्पय । ते पढय तर्क विजल्पय ॥ छ० ॥ ४६ ॥
प्रमान सेरन प्रमोदय । प्रातापय च प्रमोदय ॥
प्रारभ परिछद सग्रह । निग्राह पुष्टित तुष्टिह ॥ छ० ॥ ४७ ॥
प्रासस प्रीति स प्रापय । प्रातिग्र यासु प्रतिष्टय ॥
धीरज्ज धीर जुध वरं । सो रज्जएव सतं नर ॥ छ० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ सुनि नायक राजनन मति । जपहि दिल्ली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छ० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और वाजे वजना ।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥
पाछें न्रत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छ० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजगी ॥ तबै वोलिय अप्प नाइकाअ ग्ग । सुष पाच आरोह उचार जग्ग ॥
धरै आप वीना सुरसाज सारे । सुर पच घोर धरे थान भारे ॥
छ० ॥ ५१ ॥
धुनि रूप राग सुहान उपाए । रचे च्यार राह सुभा सुभ्भ भाए ॥
गिय गान अप्प सुर तति मान । रचे मडली राय आयास थान॥
छ० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो ताग ।　　　　(२) ए को चौवर ।

* ए कृ को में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है ।

(३) कृ ए वक्यत, वक्मत ।

मनं सर्व मोहे अतिं राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। वयं विसायं वेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३॥
दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नषं सिष्ष जय्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ी मत्त वेली चितं पच्च हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइकसे मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं।

तबै बोलि नाइक्क राजन्न तामं। कहा मोल पात्रं कहौ द्रव्य नामं॥
कहै नाम नाइक्क पात्रं सरीसं। कहा मोल पात्रं न्टपं जोग जीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पात्रं सुमासं॥
विसज्जे मिहस्सं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पात्र तुट्ठे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दुहा ॥ काम कला तुट्ठिय न्टपति। सु ग्रह पवारी द्वार॥
तिन अवास दासी सघन। अहं निस रह रषवार॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम्॥ ३०॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतो का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ न्रप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठढ़। दिसि [1]उत्तरिय । राय चामंड वीर वर ॥
बभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काज ॥
चावद्दिसि अरि नन्हे । सीम कहै नह आज ॥
कैमास बोलि मंत्री तहा । मंत्र लाज जिहि लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुझ्झ । पद्धरी छंद बरनैति मझ्झ ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सब्बै सु जुद्ध संग्राम भीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवत्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिन सुद्ध राज चल्लियै सु आज । सम बैर वीर बकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए क को उत्तरिय । (२) ए कृ को कोदक ।

चालुक्क वीर गुज्जर नरेस। क्रित कौ जुद्ध करनी विसेस॥
थल वदिय वीर मक्किशाय हुजाव। रप्पंति सूर तिन मध्य आव॥
छं० ॥ ५ ॥

सब सबर अरी चहु दिस नरिंद। तिन मध्य देव पृथिराज इंद॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम। महि मंह काल सुभथान ताम॥
छं० ॥ ६ ॥

तिन बरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज मंडन सु वीय॥
बंच्यौ सु राज कग्गद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल॥
देवास धीय देवास व्याह। मंच्यौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल वत्त चलै प्रमान॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती संसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै वत्त। संसार सार गलहां निरत्त॥
इह काय पिंड [1]संची सु वत्त। जै है सुजोग जोगाधि तत्त ॥छं०॥१०॥
जै है सु मान सब ग्रह प्रकार। दिष्षिये मान सो विनसि सार॥
वापी विरष्य सर मढ प्रमान। मिलिहै सु सर्व ब्रगतिस्स जान॥
छं० ॥ ११ ॥

छंडो न वीर देवा सु सुष्य। रष्यौ सुमंत गलहां [2]पुरुष्ष ॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त ॥ गलहां काज सु देव। अस्ति दधीच दीय वर॥
गलहां काज सरुष्ष। बज्र किन्नौ सु इंद्र गुर॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को -पुरिष्ष।

गल्हा काज नरिंद । बस दुरजोध मान रषि ॥
गल्हा काज सु धात । मान अट्टत्ति भूमि लषि ॥
रष्षिहै नरन गल्हा सुवर । गल्हा रष्षै न्रपति उप ॥
जयचंद बंध दल बल सकल । सबर [1]साइ किज्जै सरुप ॥ छं० ॥ १३ ॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतो का सिरोधार्य करना।

दूहा ॥ इह [2]परतग्या नरिंद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा मे उपस्थित सब सामंतो का बल पराक्रम वर्णन।

त्रोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धर । दरबार विराजत राज भर ॥
चढि चच्चर चंद पुंडीर किय । सोइ देह धरै फिरि आनंदिय ॥
छं० ॥ १५ ॥

न्रप लज्ज न्रपत्तिय सारँगय । सभ पुज्जिन सामँत ता बरय ॥
अततांइय अग उतंग भर । सिव सेव कियै तन फेरि धर ॥
छं० ॥ १६ ॥

नर निट्ठुर एक नरिंद सम । कनवज्ज उपज्जिय जास जम ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥

छिति रष्षन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंत्रिय राज दर । अरि अंग [3]उछाहन वीर बर ॥
अचलेस उतंग नरिंद धर । रन मझ्झ विराजत पग्ग भर ॥
छं० ॥ १९ ॥

षावंड नरिंद सु पग्ग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उतंग पल । बय देष्षिय जानि सुबाहु बल ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए कृ को माइ। (२) ए कृ को परतग्यान। (३) ए कृ को उछाहन।

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं। कर पाइ सु अंपय हथ्थ तनं॥
लरि खोह लुहानय किन्ति करं। अरि वाइव धूर ज्यौं प्र[2]दरं॥
छं० ॥ २१ ॥

भजि भोंह चंदेल सु षेल पगं। धर धूसन भुंमिय जंपि जगं॥
दिवराज सु बग्गरि बंध बियं। जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्दिग बाह पगार बली। हरि तेज ज्यौं रोर फटंत घली॥
नरनाह सु कन्ह जो किन्ति करी। भर भीषम भारथ सुद्धि धरी॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै। तिहि नाम सुने अरि अंग कपै॥
सुत नाहर नाहर के अभयं। तिन कंकन बंक बियं अभयं॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं षग अग्ग बली। जिन किन्ति दिसा दस बड्डि चली॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं। जिन [3]कंदल रुद्धि उठंत भ्रमं॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग्ग लियौ। भर भट्टिय भान मयंक बियौ॥
रघुबंसिय राम सुरंग बली। कनकू जिन नाम नरिंद कली॥
छं० ॥ २६ ॥

बर राम नरिंद नरिंद समं। तिहि कंदल उट्ठि रुधं सु जमं॥
जिहि वस्त्र सु सख्खय अंग करं। धरि द्वै भर उट्ठिज बूंद भरं॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवत्ति अराधन न्याय करै। रघुवंसिय किल्ह नरिंद वरै॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं। .... : ॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ। धर मंडव मुंड चका बरत्यौ॥
पांवार सलष्ष सु पुत्र बली। न्रप जैत सजैत कि किन्ति कली॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-इक रंग सुरंग। (२) ए. कृ. को-धरं। (३) कृ.-कंकानि
(४) ए.-मंडिय।

सु चले बर भाइ [1]दुभाइ भर । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू न्टप [2]धावरय । जित तित्त नही मन सावरेय ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुर ॥
तन [3]तूंअर नेत धिनेत बर । परिहार पहार सु नाम धर ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयौ जय सह पुंडीर बली । जिनके भुज जंगल देस चली ॥
परसंग सु षीचिय पग्ग बली । चमरालिय किंत्ति नच्यंद छली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव किंत्ति नरिंद सु अग्गहनय । भजि भारथ कुभज किरग्गहनय ॥
सारंग सुरंगिय किंत्ति बली । बर चालुक चार नछत्र छली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

परि पारय क्रम्म कुँवार न्टप । तिहि पारथ पूजय जुड जप ॥
पग पडिय [4]छिचिय छित्त रन । सब सामंत सूर समोह तन ॥
छं० ॥ ३४ ॥

हहकारि उभै न्टप पास लिए । समतम्मि सु मंचिय मंच दिए ॥
जित जोध विरोधत राज करें । तिन मैं सुष भारथ नाउ सरैं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनकी गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अतय आतप छत्र धऱ्यौ । कनकावलि मंडिय मंडि हऱ्यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि किंत्ति प्रमोधय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुर सु धरं । सुक सक्रय वक्रय बुद्धि नरं ॥छं० ॥३७॥
तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनों छवि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं । जिहि भारथ कौं प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो सुभाइ ।　(२) मों धीवरय ।　(३) ए क्र को तूँअर ।
(४) ए कृ को छत्रिय ।

जयचंद जँघारय नाहरयं । न्रप राज सु रष्षन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर वली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥
छं० ॥ ३९ ॥

कठ हेरिय सारंग सूर वली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुत्र राव हमीर वरं । छिति पत्ति कंगूरह सूर गुरं ॥
छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं । भर भारथ जुग्गिनि पात्र करं ।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसौ । मग वेद चलंतह ब्रह्म इसौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह सै सकसैन वरं । प्रथिराज चढ़ंतह वाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं । वजि बंब कि अंबर धुम्मरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

झननंकत षग्ग फरी धरयं । भजि डंक ज्यौं डक्कत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं । जनु छुट्टि जलद्द विहद्द भ्रमं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

चलि मल्लन हल्ल ज्यौं रोस रसै । जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे ॥
हथनारि सुधारि कें कंक षगी । धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥
छं० ॥ ४४ ॥

कमनैत बनैत कि नेत धरं । मॅडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं । सु मनौं धन फुट्टिय अग्गि झरं ॥
छं ॥ ४५ ॥

सब सेन समा इह ब्रन्न कहै । बरषा रुव संत है छब्बि लहै ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना।

दूहा ॥ जो बुल्लै सामंत सथ । तौ [1]चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद कौ । अरि बंधौ सिरताज ॥ छं ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना।

(१) मो.-मो।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत। स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौं मंत्र गुन ग्यान। धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यौं सु ध्रम्म [1]उवरत्त। वीर चढ्ढौ परिमान ॥
ज्यौं गुरु वलहुअ विदुष। तत्त सोई कारजान ॥
सा ध्रम्म चिया अग्या न्टपति। मान मोह जानै न अँग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। सबल वीर चलंत सँग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ वल। गिनौ न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ। सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सोइ सज्जिय सूर नरिंद वल। छिति धारन को छिति छत्र कल ॥
मति मंत्र बरप्पय सूर वर। धर पर्वत ज्यौं भर कारज कर ॥
छं० ॥ ५० ॥
आटत्त अहीर करैं वलय। सुरष्यौ गिर एक हरी छलय ॥
सु करैं वलवीय अटत्त भर। न्रप राज सु कंठिय कंठ गुर ॥
छं० ॥ ५१ ॥
हरसिंघ महावल बंधु वियौ। वरसिंघ वली अरि छत्र लियौ ॥
बर जद्दव जाम जुवान नर। जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुर ॥
छं० ॥ ५२ ॥
नर नाहर टाक नरिंद नम। तिहि कंठ अरी धर ध्रम्म तम ॥
[3]पचम्म पवाँर सु पुज वर। मद मोप विछुट्टिय काल भर ॥
छं० ॥ ५३ ॥
परपत्त सु पल्हन अल्हनय। भुज रष्यिय भारथ ढिल्लनय ॥
वर तूअर रावति वान वली। जिन कित्ति कलाधर ध्रम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो-उवरत्त। (२) ए. कृ. को. कंठय। (३) ए. कृ. को. पचमुष्पन वार।

बर बीर कंठी षुरसान [1]रनं। हय चीय अहुट्ठपती सुमनं ॥
कंठीर कलंकत जैत बली। जिहि ओटत जंगल देस भली ॥ छं० ॥ ५५ ॥

न्रप रूप नरिंदति वाहनयं। षुरसान दषंपिति सा हनयं ॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। पित की पित कंध परं न धरं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

जनएस गुरेस सबंध बली। जिहि निढ्ढुर उप्पर पंप [2]पुली ॥
परसंग पविच पविच छती। षुरसान दलं जिन जुद्ध मती ॥
छं० ॥ ५७ ॥

अवनीस उमाह तुरंग [3]तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं ॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय धनं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
सहनंग महा सुर नैंन समं। तिन राज सु रप्पिय जित्ति क्रमं ॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु मनों कल जोति सरीर बढ़ी ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सम सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन जानत [4]मोद मयं करिकं ॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी विरदावलि जंपि फुनं ॥
छं० ॥ ६० ॥

सत में षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं ॥
छं० ॥ ६१ ॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त ॥ निढ्ढुर सूर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं ॥
जिपड़ जैत जैसिंध। सलष पावारति सूरं ॥
जामदेव जद्दव जुवान। मारथ्थ पत्ति सिर ॥
बर रघुबंसी राम। द्रुग्ग महि कौन तास बर ॥
बर बीर रत्त [5]पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि ॥
मधि मद्धि मुहूरत इक बर। अरि बर गन रुंधहि सिरहि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परे।

उक्त छ० सामंतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अङ्कुर वीर रस ॥
सज्जि भली नकपत्त। अग लग्गे सुभत तस ॥
[2]राजस तम सातुक्क। साप अग्गै अधिकारिय ॥
जथ्थ कथ्थ आरुहिय। रत्ति ढिल्लीपति धारिय ॥
जगलू देस जगल न्नपति। जग लेवै वर सूर पट ॥
षुरसान पान उप्पर चढिय। वर वीर रस वीर पट ॥ छ० ॥ ६३ ॥

सामंतो का जैचंद पर चढाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान वीर रस ॥
सामंता सतभाव। पग उप्पर कीजै कस ॥
पच घटी सौ कोस। राज अग्ग ढिल्ली तँह ॥
साम दान अरु भेद। दड निर्नय[3]साधौ जँह ॥
मन बच क्रम कह कह कथ्थौ। अलप न सुर सहय सुघट ॥
दुजराज सधि गुरराज कौ। सज्जि महूरत चढ्ढिपट ॥ छ० ॥ ६४ ॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिविंव स्वरूप था।

चोटक ॥ प्रति प्रीति प्रत्य प्रतिविंव न्नप। ससि राज इक प्रति व्यव पय ॥
प्रतिव्यंवह मझ्झ इकत उभै। चहुआनह सामत सूर सुभै ॥
छ० ॥ ६५ ॥

दिस राकय अकंय थान वियौ। तम भजित तेज सु राज लियौ ॥
सोइ सच्छि हयग्गय मत षुली। रवि की किरनावलि तेज डुली ॥
छ० ॥ ६६ ॥

पर पप्पर स्याह तुरग रन। सु मनो घन सोभत नैर तन ॥
सु विचें विच राजत राज रती। सु मनो प्रतिविंव किदेव किती ॥
छ० ॥ ६७ ॥

(१) ए कृ को-"रौद्र भयानक रस"।
(२) मो-राजत। (३) मो-साधै।

पृथ्वीराज के सब रच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक सुष । न्रप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंच एकह वुलो । वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना।

तिते सूर तिहि रत्ति वर । ग्रेह सपत्ते वीर ॥
पंचमि वर वैसाष धुर । लै सु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब वीरों का आनन्द में मतवाला होना।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रेहं सूरं । मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े वीर चावहिसि रंगं । मनों [1]षलह लिय मेघ असंगं ॥छं०॥७०॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना।

दूहा। ॥ मेघ पंति वद्दल विषम । वल दंतिय सजि सूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै । धर नहिं परै कारूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि वर । लिय कारन परिमान ॥
सूर उगे सत पच ज्यौ । ज्यौं मद्दव बल मान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन।

चोटक ॥ सुअं वर वीर सु चोटक छंद । छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय वीर नफीर रवद्द । ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय मद्द ॥छं०॥७३॥
षनंकिय संकार अंदुन अंद । जग्यौ मनु मारत वीरय कंद ॥
छिती छितिपूर हयग्गय भार । दिसौ दिसि दिष्षहि ज्यौं जल धार
छं० ॥ ७४ ॥
डरै दिगपाल सु अट्ठय मेर । भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छच्चिय सद्द निसान । दिसा षुरसान सु बद्ढय पान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-षहह ।

महे मय मत्त [१]गहम्महराज। उठै वर अकुर सुच्छ विराज ॥
कहे कबिचद सु उप्पम ताहि। मनो सुर लग्गिय चद कलाहि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

[२]अपे प्रथिराज समप्पय बाज। तिनें दिषि पतिय प्रब्बत लाज ॥
दुअ दुअ बधि रकेवन जोर। चढे वर छिंचिय सूर झकोर ॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयदल पति सुभतिय ठानि। मनों वगपति धनी घट वानि ॥
मय मय रुद्र सु रुद्रय सार। भयौ जनु अत प्रलै दुतिवार ॥छं०॥७८
डहडुह वज्जय डकय मात। डलै तिन वीर गिरव्वर गात ॥
सु दिप्पन वाम फुरक्कय नैन। चल्यौ जनु वीर परब्रत वैन ॥छं०॥७९॥
इसे दोउ वीर विराजत रिघ। गुफा इक मझ्झ मनों दुअ सिघ ॥
चले ग्रह छडि नहग्रह सूर। कहै कविचद सु उप्पम पूर ॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कातहिं चीर। उठौ तहा जित्त भयानक वीर ॥
लिपी लिप चित्तय दपति वैन। मनों पलटै दिन चाचिग नैन॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान॥ किधौं चकई सुपमुक्कय मान ॥
भयौ मन वीरन वीर प्रमान॥ भयौ करुना रस तीय प्रमान ॥छं०॥८२॥
दुहू दिसि चित्त अचित्त अलोल। मनों दुअ पास हलत हिडोल ॥
दोऊ मझ्झ रप्पय सूर सनूर। भजै करुना रस काइर पूर ॥छं०॥८३॥
मिले न्रिप आइ सु ढिल्लिय थान। कहै कविचद वषान वषान॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामतों की सर्प से उपमा वर्णन।

[५]दूहा ॥ स्वामि ध्रम्म सों [३]सुद्ध मन। ज्यौ [४]वावी दिसि [५]सप्प ॥
स्रग विपान ज्यों अग्नि वर। जगि वीरा रस जप्प ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामतों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन।

(१) मो गहम्मग। (२) रु को अपे। (३) ए रु को शुद्ध।
(४) को वाली। (५) ए रु को सर्प।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु वीर । अग्गि नयनेत अग्गि सिव ॥
के मचकुंद प्रमान । गुफा वाहन सु दैत्य निव ॥
के [1]जग्यौ ससमास । दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत । वीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनौ न न्टपति किन निरति वर । किहु न सुनी जैचंद क्रम॥
वग्गं उपारि धाए वलिय । अभिलापह मारय्य श्रम ॥छं०॥८६॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलापह श्रम गर्व । भयौ किन्न किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत । सेन सज्जी रन पूरं ॥
भवर सद्द सम सुमन । प्रेम रस छुट्टिय जंगं ॥
सुवर राज चहुआन । करन उप्पर वर पंगं ॥
माधुरत मधुर वानी तजी । रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिग । दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन ।

मोतीदाम ॥ दसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार । चढ्यौ जनु इंद्र धनुप्पय धार॥
तुरंगन तुंग हरप्पय ईस । परक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ । कहै कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सुसथ्थय वीर । रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनों कुत कुंतय वारय षुल्लि । गए मनु आरद शंकर भुल्लि ॥
करुना रस कलि क्रमीनह वीर । नच्यौ अदबुद स रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर । दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानह हिंदुअ बैर प्रमान । सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥
छं० । ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जग्या । (२) ए. कृ. को.-छित्त । (३) मो.-छिपग ।
(१) ए. कृ. को.-मध्यय ।

दया वर हीन समप्पन नथ्थि। ॥
उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि। तज्यौ तन मात उरग्गिय लच्छि॥
छं० ॥ ६२॥

पिछे सिर ईस पटक्किय जट्ट। भयौ तहा जन्म सु वीरय भट्ट॥
भिरी भिरि नदिय दद प्रकार। पछै दछि दच्छिय दप्पि उचार॥
छं० ॥ ६३॥

इत मिति मत सु कतिय राज। भयौ वर वीर भयानक साज॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ। वज्यौ रनतूर रवद्दय एछ ॥
छं० ॥ ६४॥

मलो जनु जंगम जो गवरीस। दसकधु डुलावत प्रव्वत रीस॥
तज्यौ जहा मान लगी पिय कंध। नयौ रस सत सु मतिय सध॥
छं० ॥ ६५ ॥

सु जाति जरा न्रप हक्कि प्रमान। चल्यौ तिन वेर वलो चहुआन॥
छं० ॥ ६६॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना।

कवित्त ॥ चाहुआन वर वलिय। भार भारथ रस भिन्नौ॥
मधुर सुधर सिंधुरस। अग चावद्दिसि छिन्नौ॥
सुवर सेन सामत। सुवर बल वीर निनारे॥
मझ मझझह आवत। देव जनु जुद्ध हकारे॥
कुसमित्त जुद्ध देवह करन। रथ सुरत्थ हय हयति नर॥
सामत सूर पुज्जै नही। वर कदल 'उठ्ठैति धर॥ छं० ॥ ६७॥

सामतो की वीरता का वर्णन।

उरग विद रवि उठै। सीस हक्कै धर नचै॥
देवासुर सग्राम। देव पूजा देवचै॥
इद्र जुद्ध तारक्क। सोइ ततह अधिकारी॥
पच पच पडव सु। भीम दुर्जोधन भारी॥

(१) मो उठति।

गज मंत दंत कट्टै सु मृत। दैवत्त जुध सामंत रन ॥
उद्दयो जुद्ध आदत मिति। नहिन मेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर रावतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-गात वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि आइ मिलै घर ॥
कोन काया संग्रहै। काया को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन निमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
षिन मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु घर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कह निढ्ढुर रठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहो देव को अग्ग। कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
बारि बूंद बुदबुद्द। हथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बहलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मसान पुरान रु काम के। अंत चित्त सदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥

अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब अग्ग संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जं जं बधै। तंतं बुद्धि पुरान बर ॥
निध्धात धात पत्तिय सु वर। सु हत काल निचरि सु नर ॥छं०॥१०१॥

स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि वंछौ मरन। मीर संकरै निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग। छंडि इह मंच सल्लगह ॥
अस्थि काज दधीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु वर। निवर अंग को अंग भय ॥
जैचंद भूमि उब्बैलि कै। चढ़हु भूमि धर दुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रेह। के के न काल सग्रहे हत ॥
मची जा प्रथिराजं। रष्षे जा वीर सो सस्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥

साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरय, मानस्य सा सुदरी ॥
[1]ता भग्गा मन सूर काइर वर, [2]किल किंचि किचित रसै ॥
अभिलाप छिति गर्व तारुन विधे, ससार सहकारयं ॥
वार जा पारग दिव्यत गुर, दीसति देवानय ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहत वाह उचारै पवगा। तिनै धावतैं होइ मारुत पगा।
झमै झुंम अग्गै सुम तीन सधै। मनों ब्रह्म विधि गठि लै वाइ बधै॥
छं० ॥ १०५ ॥

पुजे पय अपी मन पौन धावै। तिन उप्पमा कौन कविचद लावै ॥
किधौ कैसपन्न चलै चित्त भारी। किधौ चक्री हथ्य [3]आवत्त तारी॥
छं० ॥ १०६ ॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै। मगराज कैसै उपम्मोति लावै ॥
अगपाइ दीसे मुष मेह कारै। मनों दिव्य वानी पढै कव्वि भारै ॥
छं० ॥ १०७ ॥

धरे पाइ वाजी हृद त निभारै। मनों तार सौ तार वज्जै हकारै॥
तिन दूरि तें अग ओपम ऐसे। मनों तार छुट्टै अकास सु जैसे ॥
छं० ॥ १०८ ॥

इसे वाजि सज्जे समप्पेति राजं। दियै सूर सामंत हथ्थें सुपाज ॥
छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

दूहा ॥ वाज राज नृप [4]राज दिय। विलसि विधान बिधान ॥
तिन उप्पम कविचद कहि। का दिज्जै धपवान ॥ छं० ॥ ११० ॥

(१) मो ना।　　　　(२) ए कृ को कल।
(३) ए कृ को-दीसत।　　　　(४) ए.-गज।

घोड़ों की शोभा वर्णन।

रसावला॥ धपै बान भारै, हकारै निनारै। दुरै अप्प छाया, तते अग्गि ताया॥
छं० ॥ १११ ॥

धवै [1]अंठ भारी, सुकोटं निनारी। वरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें॥
छं० ॥ ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा। उरं पुट्ठ भारी, [2]सु मासं निनारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं। नपं डंड इद्धं, मनो डंड सिद्धं॥
छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर डुसै, कवी कित्ति घुसै। मनों वाय कांडं, परी मम्म होडं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं। अवत्तं निनारे, मनों स्वामि सारे॥
छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी। सु है है रकेवं, चढ़े बीर [3]बेवं॥
सुरत्तान पासं, चढ्यौ बीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा॥ विना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त॥ षल गोरी सुरतान। जाइ रुंध्या रन अग्गौ॥
हय गय रथ नर सज्जि। बीर पावस घट जग्गौ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय॥
चाहुआन सुरतान। बीर जैपत्त करारिय॥
डमरू डहकि जुग्गिनि हसै। जिम जिम बंबर धज लसै॥
सामंत सूर चहुआन सौं। बीर बिदुरि सस्लह कसै॥ छं० ॥ ११[illegible]

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंस। (३) ए. कृ. को.-बेब।

राजा की आज्ञा विना चावडराय का आगे वढ़ जाना।

मेछ मस्रूरति सत्ति। मत्ति कीनौ रत भारी॥
वीरा रस विद्दुरिय। लोह लग्गी अधिकारी॥
छित्ति मित्ति छिति सोभ। अंपि आवै न अपि पिन॥
ज्यों नद्दव वन दिद्व। चपि चूवत मत धन॥
रन हरपि वरप्पिय सुत्ति जिहि। धप्पि लोह कोहा करास॥
चावडराइ दाहर तनौ। न्नप अग्यो विन अग्र धसि॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानवाहु का पाच कोस आगे वढ कर तत्तार षा खुरसान पां पर आक्रमण करना।

रा चावड जैतसी। लोह आजानवाह वर॥
रुप्पे रन सुरतान। [1]मत्त लग्गे सुवीर भर॥
पच कोस न्नप छडि। आप रुध्या सुरतान॥
वज्र धाट वज्जीय। आइ लग्गा सु विहान॥
छुट्टा कि सिघ पल बाज वर। उरसि लोह लग्गा लरन॥
तत्तार पान पुरसानपति। अप्प मस्रूरति मरन मन॥छं०॥१२१॥

उक्त सामतों के आक्रमण करने पर मुसलमानों का कमान पर वाण चढा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना।

भुजगी॥ पुरासोन षान सु तत्तार वीर। मनो वज्र देषे सु वज्र सरीर॥
महा वाहु वज्जी कढे वज्र हथ्थें। लगे अग अग निरथ्थें निरथ्थें॥
छं० ॥ १२२॥

छुलिका सु वान कमानेन साही। [2]इसे सूर वेग पल लै न्निवाही॥
उर मत्त मत्तें विमत्तें निनारे। मनौ देपियै वीर रत्तें प्रकारे॥
छं० ॥ १२३॥

(१) मो मनह। (२) मो नेत्रिवाही।

उरं काल काली जमं दड्ढ कड्ढी । पिधौ दंद्ढ जम दड्ढ जम कार पिड्ढी ॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती । परे रंग चंगं छके जानि गत्ती ॥
छं० ॥ १२४ ॥

दुवं हिंदु मेच्छं तस-गीति नंषी । सरं सट्ठि हज्जार आहत लष्षी
तिनें हथ्थ हथ्थं सुपात्ती प्रमानं । मनों देषि देवंत देवाधि यानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे । भए अंग अंगं तहाँ तथ्थ सारे
नचै कंध बंधं कबंधं दुरंगी । मनों बीर आहत मारथ्थ रंगी ॥
छं० ॥ १२६ ॥

इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे । घुमै सार घुम्मैं मनो ..
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना ।

* दूहा ॥ चल्यौ राज सब सेन सजि । दिसि उज्जैनिय रंग ॥
आइ साहि जग हजूरन । लयै सहायक पंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥
गही गैल देवास की । गहन उपज्ज्यौ मिच्छ ॥
नर चिंतन इच्छै कछू । ईसर औरै इच्छ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और । करै करता कछु औरै ॥
नर चिंतन कर ईस । जिय सु नर और दौरै ॥
रचे रचन नर कोटि । जोरि जम पाइ बल सह ॥
छिनक मध्य हर हरै । केल किर तप्प क्रम्म इह ॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि । च्याह विनोद सु मंडि जिय ॥
अनचित्ति जग्गि गज्जन बलिय । आनि उतंग सु कंक किय ॥
छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है ।

पृथ्वीराज का राजा वली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों वावन वलि पास। आनि अनचित्य छलन किय ॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर वधि छडि जिय ॥
दसों दिसा दल उमडि। घुमडि घनघोर आइ जनु ॥
मीर मसद ससेद। वान वहु वूद वरपि घन ॥
दोउ दीन दद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन ॥
प्रलैकाल हाल पिप्पिय निजरि। मनो मिच हत्ती करन ॥
छ० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला ॥ कोह लग्गे पल, सार उड्डै पल। अत तुट्टै खल, पग्ग वेली तुलं॥
छ० ॥ १३२ ॥
नैन रत्ते झल, जुट्टि जाल पल। मिट्टि मोहै मल, कोह कै केवल॥
छ० ॥ १३३ ॥
रुड नच्चै दल, मुड वक्कै वल। गिद्धि सिद्धी काल, वज्जि कोलाहल ॥
छ० ॥ १३४ ॥
छिछ उड्डै लल, जानि तिदू झल। हथ्थ तुट्टै नल, हप्प सापा ढल॥
छ० ॥ १३५ ॥
पप पपी वल, ईस आसावर। माल सोभै गर, रुद्धि वुद्दै झर ॥
छ० ॥ १३६ ॥
जानि नग्ग पर, चडि पच्चं [3]भर। [4]मति डक्क डर, भूत नच्चै पर॥
छ० ॥ १३७ ॥
उभ्भय चिक्कर, वक्कि नैंरु हर। कपि स्यार नर, सूर वड्ढै वर ॥
छ० ॥ १३८ ॥
झक्कर झारै सूर, छ० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पाव देने को उद्यत थे।

(१) ए रु को दीप। (२) ए रु को दन सुरन धनि छडिय प्रिय।
(३) ए रु को वर। (४) ए रु को-मन्नि।

दूहा ॥ सार मंत मत्ते सुभट। पग ढिल्लै गज ठट्ट ॥
स्वामि अप्प सद्दै रनह। सुकति सु भारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कपिप जिसि ॥
हय दल बल उच्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली महि मध्य। कढ्ढि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं। बहत सूर सामंत रिन ॥
कलि काहर कांकं बकहिं विहसि। गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुसल्मानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्षं। काले कांक बक हीन जीवं सु लष्षं॥
षलं कन्ह गोइंद कोवा प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [2]थानं॥
छं० ॥ १४२ ॥
बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों बीर भारथ्थ आरत्त रंगी॥
छं० ॥ १४३ ॥
लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं। पगे षेत षंच्यौ षुरासान षानं॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षियै पेट पष्षे करेजं॥
छं० ॥ १४४ ॥
हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु षोपरि पुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमे सार घुमा मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

(१) मो.–तसब्बीनि। (२) मो.–पानं।

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥
तहन सुष्ष दुष्ष निजहि । मोह कोह रस पान ॥छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान । वीर मत्ते चावद्दिसि ॥
तवल तुग वजि जग । वीर लग्गे सु वीर कसि ॥
जा दिष्षै सुरतान । नैन वडवानल धारी ॥
मलय कारन कारवान । प्रलय इन पग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अवनय तनह । अति उदार चिन्त्य रनह ॥
प्रथिराज राज राजिद गुर । गहन गज्जि लीनो पनह ॥छं०॥१४७॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साहन वाहन बिरद । साह गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विछ्छरहि । रोस उछ्छरहि वीर भ्रम ॥
वजहि पग्ग आदत्त । जूथ उड्डहि असमान ॥
मनहु सिंध गुर गज्ज । हकि कारिय सिर मान ॥
दल जोरि विहसि साहाव भर । भर भर भिरि असिवर वजिय ॥
जानेकि मेध मत्ते दिसा । निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

तोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धर । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुर ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मत काला कलि से बिडुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥
रननकय नागय वीर सुर । मनों वीर जगावत वीर उर ॥
छिति छच दुहाइय छच धर । सु मनो वरवा हवि वज्र झर ॥
छं० ॥ १५० ॥

(१) ए मो लजिय ।

छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं॥
दोउ दीन विराजत दीन उभै। रँग रत्त रमै छिति छत्र सुभै॥
छं० ॥ १५१ ॥

सुमनों मधु माधव रीति डुलै। सुजनो क्रत कांवर वीर फुलै॥
इक अंग विभंगन हथ्थ चरै। सु मनों काल बीर काला दुसरै॥
छं० ॥ १५२ ॥

मिति मत्त अटत्तन धाइ घटं। सु नचै जनु पारथ वीर भटं॥
छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ बरकि बीर भट सुभट। झुमि हकै चावद्दिसि॥
इक्क इक्क आवत्त। बीर बरषंत मंत असि॥
नच्चि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि॥
सार ताल वेताल। नंचि रन बीर डकारहि॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि बीर लग्गे सु बर॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर॥छं०॥१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव वाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्भ भर।
इन बज्जे असि बरह। सार बज्जे प्रहार धर॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी॥
मनु कढ्ढी जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी॥
चालुक्क चंपि चच्चर कियौ। सार धार सम उत्तऱ्यौ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करौ सु कोगुन विस्तऱ्यौ॥
छं० ॥ १५५ ॥

दूहा ॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आवतह तिन नैन॥ छं० ॥ १५६ ॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध कोस न्टप अग्गा। सूर रोपे पग गढ्ढै॥
सद्द मद्द गजराज। चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै॥

लज्ज बध सकरिय। वीर अकुरिय दिष रन ॥
सार धार वज्जी कपाट। त्रिधात धुमत रन ॥
कलमलिय काक इम मिच्छ सह। जनु लुअ लग्गत जेठ महि ॥
जद्दव सु जाम घरि इक्कलों। जनु वडवानल चद कहि ॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिप्पे मुष्पय मच्छरय। अरज दुव सन्नाम अवनय ॥
अच्छरि वर कर इच्छ। भ्रमत [1]फिरत [2]गौन मग्गाइ ॥छं०॥१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥
चंच पीप परिहार। कन्हे गोइंद नयन सरि ॥
कठ चद पुडीर। पाव जुग जैत सलप सजि ॥
निढ्ढुर भर वलिभद्र। पय वजि वाय तेज गति ॥
सम पुछ और सम पुछ मन। वरन वरन छवि सिलह तन ॥
रन रोहि रह्यौ प्रथिराज महि। गिलन अप्प सुरतान रिन ॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ मुच्छौज वर मच्छर। त वटे अच्छरी अग ॥
सोय साध प्रमान। सा पूजी सूर सामत ॥ छं० ॥ १६० ॥

याजी खा, तत्तार खा और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पडिहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त ॥ कर वल षान ततार। षाने न्याजी षा गोरी ॥
हरवल [1]पोप नरिंद। साहि वधी विय जोरी ॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह सधारै ॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल वड्डा उच्चारै ॥
सत अग्गत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ ॥
सुरतान सूर आवत्त वर। धन्नि सुवर सामत भुअ ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए फरत।　(२) ए कृ को गैन।　(३) ए कृ को-अप्प।

तन तरफात धर मिच्छ। बला छवि जानि नटक्कैं ॥
मत्त दन्ति आरुहं। दंत सौ दंत कटक्कैं ॥
समर अमर करि वंदि। भये विस्सत पल[1] चारिय ॥
जहँ तहँ चंद पुडीर। चंद ज्यों रैनि उजारिय ॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम। भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल। मह्न रंभ मच्यौ सु[2] धर ॥ छं० ॥१६२

युद्ध होते होते रात्रि होजाना।

हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद। काल विकाल काल हात चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान। चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक। मनौं मंडि वंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस। सेन उभ्भै चावद्दिस ॥
रत्तिवाह सम जुद्ध। बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सस्त्र। रत्त द्रिग तेजं प्रमानं ॥
सार धार निरधार। बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक कारक रंक पल। निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरैं। सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंआर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुसलमान फौज का पैर उखड़ना।

अद्ध होत बर रत्ति। साहि गोरी धररुंध्यौ ॥
तौंअर बर पाहार। कित्ति सा सिंधुह संध्यौ ॥
सेत बंध बंध्यौति। सूर बंध्यौ रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार। धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर। तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि। सुनि जंपै बर हयति हय ॥ छं० ॥ १६[illegible]

(१) ए. कृ. को. हारिय। (२) ए. कृ. को.-भर।

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ सकल्प करना।

होत होत मध्धान। पीप नें पन मन मंडयौ ॥
प्रबल पानि परचड। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
सेत बंधि ज्यौं राम। चंद सुर भान रुद्र सधि ॥
यों लिन्नों परिहार। बालि दस कंध कंप मधि ॥
रन छंडि छंडि धर मच्छि हुश्र। लाजवंत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जंपैं सुष धर श्रमर। सु कविचंद कवितह धरिय ॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खीची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खा का मारा जाना।

भुजंगी ॥ पन्यौ राव तिन वेर खीची प्रसंग। जिनें पंडिय पित्तपत्त पंग्ग श्रंग॥
पन्यौ राव पज्जून पुत्र ति राज। गय स्वर्ग लोग करे देव गाज ॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धक्कै श्रजमेर राई। दुश्र सेन जंपी सुष कित्ति पाई ॥
वध जामदेव वर्धो वीरमान। लरी अच्छरी मझ्झ वीर वरान ॥
छं० ॥ १६९ ॥

पन्यौ धाइ षेत अतताइ तात। मनो देषियै भूमि कंदर्प गात ॥
पन्यौ सेन हुज्जाव गोरीस वंध। हय श्रट्ठ भग्गं सु उट्ठं कमधं ॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे। दिपे थान थानं मिछ प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ इन परत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट वीर ॥
तिन जस जंपत का कवी। जिन करि जज्जर श्रीर ॥छं०॥१७२॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान। पान षग्गह पल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग। जै जै जै जस लद्धयौ ॥
जयचंद कनाउत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। सान भंग्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उत्तरै। सुनौ मंत्री अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। इदं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुचछ सोमेस सुअ। भुअ समान संभरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चढ्ढई। धर पद्धर कारि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संभ्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छत्र मुजीक निसान। जीति लीने सुरतानं ॥
गो धर ढिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा अभ्भ धारि छत्री न्रपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कों। सुष अथन्न पारथ्थ गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल विसे सुमर। कोलाहल अरि गान ॥
सुवर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

कवित्त ॥ छडिदियौ सुरतान । सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जग राजान । इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ । इक वधे वस किज्जिय ॥
इक अप्प पहराइ । मान भजि रूमन दिज्जय ॥
आवै न पार लच्छी सहज । पट्ट वेरन सुप्पह रुगन ॥
चहुआन सूर समरि धनी । तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८॥

इति श्री कविचद विरचिते प्राथिराज रासके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहन नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥



अथ करहेरो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस बित्ते न्नप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मद्धौ न्नपति । आपेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतो के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहा के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सट्ठि । सूर सामंत [2]सु सथ्थ ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आपेटक तथ्थ ॥
वर उज्जेनी राव । जीति पावार सु भीम ॥
वल समर जो गट्ट । गाहि चहुआन [3]जु सीम ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम वर न्नपति ॥
सभाग समर सुनयौ समर । समर वीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुन्नर वीर चितै न्नपति । वर बरनी दुति काज ॥
वर इंद्रावति सुंदरी । वरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छवि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र सुंदरी नाम । वीय इंद्रावति सोहै ॥
वर समुद पावार । धरिग अति सम सग लोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद । छाइ करि भाइह गाढी ॥
[4]रूप तरंग झकुरित । तुंग दोऊ करि काढी ॥

(१) रू ए को कितेक, केतेत, फितेक । (२) मो जु ।
(३) मो -सुमीम । (४) ए रु को रुअन अग, अँग ।

ज्यों छित्ति काम जंप्यौ परिन । प्रति सुरेस निसाय मर्याद ।
संकुच सु काम कर कम्मिय तिहि । रिपु सुरेस पायो मर्याद ॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना ।

दूहा ॥ श्रीफल दुजवर हथ्थ करि । दिन गयौ चहुआन ॥
दिन पंचमि वर भौम दिन । लगन करै परमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना ।

दुज पुच्छै आतुर न्रपति । किहि वय किहि उनहार ॥
किहि लच्छिनमति कौन विधि । कहि कहि सुमति विचार ॥ छं०

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना ।

कुंडलिया ॥ वय लच्छन अरु रूप गुन । कहत न बनै सु बाम ॥
सारद मुष उच्चारतौ । मापि भरै जो काम ॥
मापि भरै जो काम । कहै सारद मुष अप्पन ॥
मापि चित्त नन धरै । कहिय दिष्षियं सु अप्पन ॥
वलि सरूप सज्जी मदन । सुभ सागर गुर भेव ॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवस । तकि प्रथिराज वनेव ॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के वचनों को पृथ्वीराज का चित देकर सुनना ।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन । ढुरि ढुरि श्रवन सु चित्त ॥
जिम जिम दुजवर उच्चरत । तन मन तिम तिम रत्त ॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन ।

---

(१) मो.-कर लीय ।
(२) ए. कृ. को.-फेरिपु देख ।
(३) मो.-करइ ।
(४) ए.-वुध ।
(५) ए. को.-किहिं किहिं ।
(६) ए. कृ को.-भैरं ।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि ।

नूफाल ॥ सुनि प्रथम वालिय रूप । वर वाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि सधि सैसव पाल । अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु सूर समान । वय चद [2]चढन प्रमान ॥
सैसग्र जोवत एल । ज्यों पथ पथी मेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भोंह भँवर प्रमान । वै वुदि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग । सावक म्रग छुटि वाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
विय द्रिगन ओपम कोड । सिस भृग पजन होड ॥
वर वरन नासिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिपा पतँग नसाव । ओपम दे कवि आव ॥
नासिक दीपन साल । झँप देत पजन वाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
विय वाल जोवन सेव । ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसधि सधि अचिद । ज्यौ मत्त जुरहि गुविद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचद । ॥
तुछ रोम राजि विसाल । मनों अग्गि उग्गिय वाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर । मनों काम फल अकूर ॥
वय रूप ओपम एह । मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न थकत तेइ । जा जनक न्टप कर देह ॥
वैसधि कविवर वधि । ज्यों वृद्ध वाल विवधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसधि सधि समान । ज्यौ सूर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि सूर । चव नहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर वाल वैसधि एह । सिकार काम करेह ॥
लज करे लज लजि छडि । चित रक दीन समडि ॥ छं० १९ ॥
कहा लगि कहो वर नाइ । तो जम अत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान । तप तूग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ घेर लेना ।

---

(१) ए रूप । (२) मो चढत ।

* यह पंक्ति मो प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है । (३) ए क को -प्रमान ।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव। रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी। बीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट। समर कग्गर बर धाइय ॥
बर गुज्जरवै राव। चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रब्वत गुहा। धर पद्धर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ वर। गढ़ उत्तरि [1]किरपान लिय ॥छं० ॥२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चितौर जाना।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट वर। गो मेलान नरिंद ॥
छंडि सूर सिंगार रस। मंडि बीर वर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चितौर की तरफ जाना।

कवित्त ॥ सतो मंडि चहुआन। सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून। बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कान्ह चहुआन। सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर। सथ्थ दीनौं न्टप हामं ॥
आल्हत अत्तताई सुबर। रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निड्डुर सुबर। मुक्कलि जैसिंघ पप्पलिय ॥छं० ॥२३॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ। [2]न्त्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास सँग। दाहिम्मों बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
सब सामंत सुसंग लै। लै चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई। कहिग कविय [3]बष्षान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

त्रोटक ॥ प्रथिराज चढ्यौ सिर छत्र उपं। ससि कोटि रबी ज्यों नछित्र
गजराज विराजत पंति घनं। घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

(१) ए. कृ. को -करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. वषान। (४) ए. कृ. को -मन।

हय पष्षर वष्षर तेज [४]तुन। किननकहि [५]धकहि सेस धुन ॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नद। घुरवान निसानन मेघ [६]भद ॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सर। मनु भद्दव बीज उपम धर ॥
*किरवान कमानन तान कर। हयनारि हवाइ कुहक्क वर ॥
छं० ॥ २८ ॥
सुजय प्रथिराज सु सारथय। दुतिय कहि भारथ पारथ य॥
छं० ॥ २९ ॥

(४) मो तुम। (५) ए.-धकहि। (६) मो नद।
* यह पंक्ति मो-प्रति में नहीं है।

मोतीदाम ॥ चढ्यौ न्रप वीर अनंदिय चंद। सु मुत्तियदाम पयंपय छंद॥
दए न्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट। मिले सब आइस जग्ग न रिष्ट ॥
छं० ॥ ३० ॥
उडी घुर धूरि अछादिय भान। दिसा धरि अष्ठ न सुभ्भय [१]सान॥
बजे घन सद्द निसान सुहद्द। लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द ॥
छं० ॥ ३१ ॥
[२]सुदे सतपंच कमोदन घेरु। करे चतुरंगय सक्किय मेरु॥
द्रिगपाल पयाल पुर सरसौ। तिनकै वर कम्प परे धुरसौ॥
छं० ॥ ३२ ॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यौं। किल कपहि तुड जस बर यो॥
विफुरै बर स्तूर चिहू दिसि यौं। डरपै सुर पत्ति उर बसि यौं॥
छं० ॥ ३३ ॥
फन फूक फनपति को विसरी। धरकै पय बज्जि घुर दुसरी॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं। तिनसों बर [३]पाति पग उरझं॥
छं० ॥ ३४ ॥
बर बज्जि तहूर तहा तबल। निसु नैंन नवीनय बस बल॥
जु धरैं बर गौर [४]उछग हर। सु कहै बर कातिन कपि डर ॥
छं० ॥ ३५ ॥

(१) मो भान। (२) ए कृ को सुदे। (३) ए कृ को पषियते।
(४) मो उबग्ग।

जु बजावत [1]डौंरुअ डक्क सुरं। रन नंकहि जोग जुगाधि हरं।
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं० ॥ ३६॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना।

दूहा॥ सजी सेन प्रथिराज वर। वीर वरन चहुआन॥
वरद सौर संभय मिल्यौ। चित्रंगी परधान॥ छं० ॥ ३७॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चित्रंगी परधान॥
कहौ समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं० ॥ ३८॥

कुंडलिया॥ मिलत राज प्रथिराज वर। समर कुसल पुच्छि तीर॥
कहां सेन चालुक्क कौ। कहां समरंगी वीर॥
कहां समरंगी वीर। दियौ उत्तर परधानं॥
कारहेरा चित्रंग। राज आहुट्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरि[2]जंम। हक्क उत्तर पक्खर चलि॥
गढ़ इत्तं दस कोस। समर उब्भो समरं मिलि॥ छं० ॥ ३९॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त॥ कहि चित्रंगिय मंत्रि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [3]मंडोवर चुक्कह॥
चित्रंगी चतुरंग। आइ अड्डौ कारहेरां॥
जुद्ध रुद्ध चालुक्क। हुए कोऊ दिन मेरां॥
हम दैन षवर तुम मुक्कलिय। कहौं कहौ मुष मुष्ष रुष॥
प्रथिराज राज अग्गैं विवरि। कहौ वत्त परधान मुष॥ छं० ॥ ४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-मोरे। (२) ए. कृ. को.-मंडहि वर।
(३) मो.-प्राति पतियां। (४) ए. कृ. को.-जंग।

न्रप बुझ्झै चालुक्क। सेन कित्तक परमान ॥
आइ अह्यौ चित्त ग। निरत दीनो नन आन ॥
सूर सुबर आहत्त। रीति रप्पी विधि जान ॥
इन अग्गै चालुक्क। वेर कित्ती भग्गान ॥
जोगिंद राव जीयर्न वलिय। कलिय काल छप्पन विरद ॥
समर ग वीर सम सिध वल। चपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढना।

ोपाई॥ करि अग्गे लीनो परधान। आतुर ह्वै चल्यौ चहुआन ॥
दै गढ दच्छिन तच्छिन आन। समर सजन समुह उठि धान ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

वित्त॥ पावस रन प्रव्वाह। अभ्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिनी छित्ति प्रमान। अभ्भ वद्दर उठि झाइय ॥
आलस [1]नीदय पीझ्झ। सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन वुट्ठनह। करैं उद्दिम रन हामस ॥
अ गार रभ ग्रेह वसह। औ कुलटा सुकवीय हुव ॥
कारन्न कित्ति औ काल मिसि। द्रवै इद्र सूरह सुलव ॥छं०॥४३॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन।

ज्यौ गुनाव गारडू। सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकायौ। सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ षग्ग जझ्झारि। सेन सज्जे चतुरंगी ॥
वान मच मनेन। रसन कुनन आवग्गी ॥
मन धीर वीर तामस तमसि। निधि चलै मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवग भजन भिरन। पुब्ब दई चितह सु वसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन।

यह सभरि चहुआन। वीर पारधि परि आइय ॥

(१) मो नीदरुपीज।

दुहूं निसान बजि समुह। भूमि पुर कंपि हलाइय॥
बीर सिंघ आरुट्ठ। बीर चालुक नुप साहिय॥
पुच्छ मग्ग चहुआन। दुहुन वर बीर समाहिय॥
उत्तरिय मनों सामुद्द ताहि। उदित दीठ मंगल अरक॥
जोगिंद जेम जोगिंद कासि। अप्प कुली वंछै मुरक॥ छं० ॥ ४५

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना।

दूहा॥ चालुक्कां चहुआन दल। भई सनाह सनाह॥
दोऊ सेन कविचंद कहि। बरनि बीर गुन चाह॥ छं० ॥ ४६

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना।

मोतिदाम॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ। परे वर बीर निसानन घाइ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क। मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क॥
छं० ॥ ४७ ॥

अछादि अरुन्न न सुझ्झत भम्म। कारें किधों सोर कपी वर गल्ह॥
गहक्कर बैंन उचारत श्रोन। इहै गुधकार प्रकारय द्रोन॥
छं० ॥ ४८ ॥

धरं गज आगम नीम अउद्ध। छुटे बर पाइक फूलय रुद्ध॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान। विचैं गुथि मोति कुहक्क [1]अचान॥
छं० ॥ ४९ ॥

दुहूं बिच नग्ग मगं नग पंति। परी तहां पट्टनराइ मपंत॥
सु भाल अंकूर सु सुंदप बिंद। धरी हयनारि छतीसय चंद॥
छं० ॥ ५० ॥

कसुंमिल डोरि सु पच्छिम संधि। तिठौहर बंध नरिंद सु बंध॥
लरं मधि भ्रह्म सु चालुकराव। दिसं बुलि भट्टिय दक्खि न काव॥
छं० ॥ ५१ ॥

दिसि वाम जवाहर लेर अराव। रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप। तिन में वर छीन सुरंग अनूप
छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-अबान।

पसरी वर अर्न्न सनाह न तीर । अचवै उत कालिय के रुचि पीर ॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ । चढे अरि के उर चालुक राइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ चालुका चित्र गपति । मिले दिष्ठि दुअ दौरि ॥
मना पुब्ब पच्छिमहु तै । उडि डवर इल सौर ॥ छं० ॥ ५४ ॥
[1]इत चप्यौ चित्रगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
आइ राज उप्पर वीरन । वज्जि निसानन घाव ॥ छं० ॥ ५५ ॥

कुंडलिया ॥ ढाल ढलकि दुअ सेन वर । गज पती हस्ति जुध्थ ॥
मनो मल्ल आरूद दोउ । तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ । राम अवनी अन पिष्षे ॥
दुहुन दिष्ट अकुरिय । पाज वधन बल दिष्षे ॥
चपि सेन चालुक । वीर भ्रम सो वर मिल्ल ॥
चाहुआन [2]वर सेन । ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ल ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना ।

कवित्त ॥ [3]सव सामंत रु समर । वीर दच्छिन दिसि हडिय ॥
चाहुआन हूसेन । गज्ज व्यूह रचि गढ्ढिय ॥
एक दंत हूसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिसि वाम सवै आकार गज । महन सीह मोरी सुवर ॥
बहुनय अग आहुठपति । महन रंभ मच्चो सुभर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पद्धरी ॥ घन धाइ धाइ अध्धाइ स्हर । सिंधु औ राग वज्जै कायर ॥
हुंकार हक जोगिनिय डक । मुह मार मार [4]वज्जै ववक ॥छं०॥५८॥

(१) मो इन । (२) मा-हुसेन । (३) मो नव । (४) मो जुझे ।

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस। पष्पर उपट्टि धुटै घुरीस॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब। अच्छरी अच्छनद जानि लुंब॥छं०॥५९॥
गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल। षेचर षपाल कूदै कराल॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह। कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह॥
छं०॥६०॥

चमकंत दंत मथ्थै कपान। मानों कि जक लग्यौ गिरान॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन॥
छं०॥६१॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा॥ चालुक्कां परि सूर रन। सहस एक सुर सत्त॥
चूक चिंत चूकौ चितन। भौ अचिज्ज विधि वत्त॥ छं०॥६२॥
पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान॥
उभै सत्त रावर [1]समर। प्रथीराज सत आन॥ छं०॥६३॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति [1]सत्तरहि। सेष जाम पल तीन॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन॥ छं०॥६४॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चालुक्क वर। चिंपि सुमर प्रथिराज॥
सुमर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज॥ छं०॥६५॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ परे धाइ चहुआन चालुक मुष्षं। मनों मोष मद मत्त जुट्टे ...
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई॥
छं०॥६६॥

(१) ए. कृ को.-समर।

झरै सार अग्गी दझ्झै टोप दम्भझ। मनों त चनेत प्रलै अग्गि सज्ज॥
फटै गज्ज सीस सिर भेदि लोही। धसी भारती कासमीरं ति सोही॥
छं० ॥ ६७ ॥

दिग नागमुष्प गजे त तवान। ठनक्कत घट फटै पीतवान॥
बजे वज्ज धाई उच्चातीति चिन्ह। वकै ग्यानि भट्ट प्रसत्ती इन्ह॥
छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत सूर चढ़ै कुंभ तत्ती। फिरै जोगिनी जोग उच्चारवत्ती॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी। मनो राह सूरं वटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥

रुधी धार मत्ती सुमत्ती उच्छारै। उतकंठ भेली जु रंभा विचारै॥
परै घुम्मि सूरं मद्दा रोस भौन। मनों वारुनी मद प्रथम सु पौन॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छें परे। समर तिरच्छौ आइ॥
मानहु पल हुत्तासनी। भई वीभच्छ निधाइ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन।

त्रिभंगी ॥ तिय विय अरि सत, बहु बलवंत, ग्यारह जत, अति रंगी।
त्रिभंगी छंद, कहि कविचंद, पढत फनिंद, बर रंगी॥
विय हुअ नय नाल, बज रिन ताल, असिवर झाल, रन रंगी।
सामंत भर सूर, दिठ्ठ कार, मिलि [1]अरिपूर, अनभंगी ॥छं०॥७२॥
मनु मान पयान, चढि बर वान, मिलि बध्थान, असिझार।
ओडन कर डार, वेन करार, तामस भार, तन तार॥
जुट जुट्टिय जुद्ध, जोवति इद्ध, अरिनि अरुद्ध, अरि बक्क।
उर धरि चालुक्क, सूर जहक्क, [2]सुर आतक्क, धक धक्क ॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओठ, सीस विघोट, रन रस वोट, परि उठ्ठ।
दंत उप्पार, कधय मार, अरि उत्तार, अंत छुट्ट॥

(१) मो आसि।   (२) ए कृ को सुर।

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी, दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन कालं, परि वेहालं, धोर्मुक झालं, बर सारी ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना।

कवित्त ॥ वीर बीर आरम्भ। चढ़िय वीरं तन हक्कें ॥
चावदिसि विद्दुरे। मोह माया न वसक्कें ॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुद्धं पिति लग्गों ॥
कै छुट्टें मद मोष। जानि वीरन द्रग जग्गों ॥
धन धाइनि धाइ आधाइ धन। मति सुमाइ विरमाइ परि ॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुद्ध आदीत टरि ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा ॥ संक्क सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस राइ ॥
तिथ षवास परिगह न्रपति। सिर धुम्भै घट धाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ पर्‌यौ समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय ॥
परि भट्टी महनंग। छत्र नष्यौ अरि संक्किय ॥
पर्‌यौ गौर केहरी। देह अजमेरी लग्गिय ॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय ॥
रघुबंस पंच पंची मिले। बर पंचानन और कबि ॥
चिनंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रबि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

धरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हसेन षान स्रम ॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोर्‌यौ तन तोर्‌यौ ॥
अरा वस्त वज्री कपाट। दधीच ज्यों जोर्‌यौ ॥

वर रंभ वरन उतकंठती । सूर हूर उत कंठ मिलि ॥
ढिग्गीव ढोल जीरन जुग । गल्ह वीर जुग जुग्ग चलि ॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घडी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ।

दूहा ॥ निसि दिन घटिय तिसत्त वर । दल चहुआनन चीन्ह ॥
भिरि भोरा रावर विनह । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ७९ ॥

गुरजर राय भीम देव का भागना ।

भिरि भग्गौ सुत सुअंग कौ । गरुड समर गुर राज ॥
फिरि पच्छौ पुछो पटकि । विन सु गरब तजि लाज ॥ छं० ॥ ८०

कवित्त ॥ पेत जोति चिन ग । ध्ध्य चल्यौ चहुआन ॥
के भोरी भर सुभर । लीन अप्पह पर आन ॥
केक किए परलोक । मुत्ति लभ्भी [1]जुग जान ॥
पंच तत्त मिलि पंच । तार धारह लग्गान ॥
चहुआन समर इकतन्नि मह । तहां सेन उत्तरि सुभर ॥
चालुक्क भीम पट्टन गयो । करी चंद कित्तिय अमर ॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।

चौपाई ॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्पी । जा लगि ससि सूरज नभ सष्पी ॥
इह काया माया जिन रष्पी । अंत काल सोई जम भष्पी ॥छं०॥८२

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।

दूहा ॥ निसि सुपनंतर राज पै । कित्ति आइ कर जोर ॥
नौतन अति उज्जल तनह । नीद न्रपति मन चोर ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मै तुझे दर्शन देने आई हूं ।

जपि जगाइ सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ॥
देत रूप छत्री मकति । दरसन [2]तवही पान ॥ छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए जुग। (२) ए कृ का छत्री।

कोटि लछन सुंदरि सहज। मय सुंदरि तिन प्रेम ॥
सूर सुभर डरपै रनह। तो सुधीर कहि केम ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त ॥ तो कित्ती चहुआन। निदरि संसारह चल्लौं ॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौं डर मल्लौं ॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो ॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुज्जन सिर पुंदो ॥
हूं सार अडर डौंरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी ॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध ॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ छं० ॥ ८७ ॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह ॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह ॥ छं० ॥ ८८ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कवि चंद और गुरु को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त ॥ जु कछु लिख्यौ लिलाट। सुष्य अरु दुःप समंतह ॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह ॥
कलप कोटि टर जाहि। मिटै नन घटै प्रमानह ॥
जतन जोर जो करै। रंच नन मिटै विनानह ॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुज्झिय चंद गुरराम तह ॥
बरनौ विचित्र राजन बरहि। कही सत्ति मत्तौ सु अरु ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा ॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देव जिम कीम ॥
रत्ति वाह बर नरिंद सों। दीनो भोरा भीम ॥ छं० ॥ ९० ॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलष नंदन रचि गट्ठौ ॥
ता सथ्थह चामंड । भीम भट्टी रचि ठट्ठौ ॥
महन सीह वर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ष अरि भोज । प्रात पिष्षिक्षय वर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कै । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जानै कि पुराने द्रुग में । अग्गि तिनका झरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रेसावला ॥ अत्ति अच्छी रन, तेग कड्ढी धन । रत्ति अद्धी मन, वीज कुद्दी घन ॥
वीर रस्स तन, सार भंजे धन । हक्क मच्ची रन, वाह वाह तन ॥
छं० ॥ ९२ ॥
रुंड मुंड धन ईस इच्छै चुन । पग्ग भग्ग तन, प्राह गग्ग जन ॥
सभ रुट्ठी मन, तार चौसट्ठिन । भूत प्रेत तन, भष्प दिन्नौ घन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
जानि सील रुधी, कव्वि ओपम सुधी । मन मारथ जल, भेदि उप्पर चल
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पऱ्यौ पावार रूपधन ॥
पऱ्यौ किल्ह चालुक्क । सधि चालुक हजूरन ॥
पऱ्यौ वीर वग्गरी । भयौ अग्गर चहुआन ॥
परि मोरी जैसिंध । सिंघ रप्यौ पिजवान ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अधार पय । चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दोनो तरफ के डेढ हजार सैनिको का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल । लुथ्थिय स देढ हजार ॥
सब धाइल [1]होडे परिय । तव मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो दौडे ।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [1]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। पिक्षिय लग्गौ अरि मारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक्क न पायौ ॥
[2]कांन्ह बैन [3]संभलियं। फेर बर भीम घसायौ ॥
उल्लरिय पानि बर भद्द भिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारत्थ कहुं ॥ छं० ॥ ९७ ॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात बन होत। होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक्क घत पग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर विकसत [4]वथ गत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर विडुरि। ठठुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्षन गौ सूर तन ॥ छं० ॥ ९८ ॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दष्षिनं भीम भिरि चित्रकोटं। परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

किए सूर कोटं न हस्सैं हलाए। असी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छत्र बंसं धरौ ध्यान ॥
छं० ॥ १०० ॥

भज्यौ चित्त [5]वाहं लजे सूर दिष्षं। तहां चंद कथ्थौ सु ओपम्म [illegible]
पियं चास पिष्षं सषी पास लग्गी। मनौं बाल बद्धू परे [6]पाइ [illegible]
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए.-ढ्ढन। (२) मो.-कैन बैनै संभलिय फेरि बर नीम घसायौ।
(३) ए.-समंरिलिय। (४) ए. कृ. को.-वग रत्ता। (५) मो.-चाह। (६) को.-

असव्वार ऐसे सनाहत कट्टू । मनो [1]बीय सौकी इयौ भाग वट्टू ॥
उडै कादर हक्क हरि जीव चास । उपमा कवर फुटै नैन पास ॥
छं० ॥ १०२ ॥

मनों पुत्तली काठ [2]गढि चित्र लाही । कर जान लग्गी टग टग्ग चाही ॥
फुटै फेफरं पेट तारंग झुल्लै । मनौ नाभि ते कोल सारंग फुल्लै ॥
छं० ॥ १०३ ॥

दिए नाग मुच्यौ गज हल्ल पग्गी । पित तेज आयौ वर जत लग्गी ॥
उपमा न पाई उपमा न वची । मनौ इंद्र हथ्थ कर राम पची ॥
छं० ॥ १०४ ॥

[3]करी फारि फट्टू कर ऐक कोर । जकै सिंधु भार जुरै जानु जोर ॥
पय जोर ऐसे प्रतग चलायौ । भगदत्त [4]छव्वी तहा सूर पायौ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कध वध कमध निनारै । उपमा तिन की न ओपम्म चारै ॥
हकै सीस नीच धर उच धायौ । मनो भगुरी रूप न्रपती दिपायौ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

सम पाज घट्टै कित साम काज । तिते [5]ऊपरे सूर चढि कित्ति पाज ॥
वडे सूर सिद्ध सिध कोन जोगी । त्रिग पल की भति ज्यों पाल ओगी ॥
छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढते चढते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त ॥ चढत दीह विप्पहर । परिग हज्जार पच लुथि ॥
वान वचन भरि नरिंद । झारि उचारि देव थपि ॥
घट छह वर हज्जार । रेकि मज्झे चहुआन ॥
वर कट्टन चालुक्क । मत्ति कीनी [6]परिमान ॥
सह सेन वीर आहुठि तहा । तौ पट्टनवै कढ्यौ ॥
उचर्यौ वभ भट्टी विहर । धार धार अपु चढ्यौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए रु को त्रिय पिय,। (२) मो गहि। (३) ए रु को-गज। (४) ए रु को छत्र। (५) ए कृ को उत्तरे। (६) मो-परिमान।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निंगर राव। गुज्जर धर रावर मंडिय ॥
रक्षि सेन चहुआन। पग्ग मग्गह तन पंडिय ॥
परिगहिय सब सथ्थ। गयौ चालुक्क वजाइय ॥
षसर षेह पग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय ॥
बीरंग बीर वज्जर विहर। मिरत वज्जि निय विप्पहर ॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन वर कुसर ॥ छं० ॥१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा ॥ तीस सहस वर तीस अग। गत चालुक रन मंडि ॥
तिन में कोइ न ग्रह गयौ। सार धार तन पंडि ॥ छं० ॥ ११०॥

बाव सूर कोइ न भयौ। धनि चालुकी सेन ॥
सामि काज तन तुंग सो। चिन करि जान्यौ जेन ॥ छं० ॥ १११

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त ॥ षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में ॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में ॥
है गै बर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुकी ॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रब्बत [1]मुक्की ॥
दिन अठ्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी ॥
जोगिनी न्नपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर वर धरी ॥ छं० ॥ ११२

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा ॥ ढिल्ली न्नप ढिल्ली गयौ। बजि निघात सुदंद ॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद ॥ छं० ॥ १

जस धवलौ मन उज्जलौ। निब्बौ पहुमि न होइ ॥
सूत सबिकृति व्रित्त मन। चिंतनहार न कोइ ॥ छं० ॥ ११४।

(१) मो.-सुक्की। (२) ए. कृ. को.-साचित।

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना।

पडौ सुनि प्रथी सु न्नप। वज्जि निसानन घाइ॥
वर इंद्रावति सुंदरी। पिय वर करि परनाइ॥ छं० ॥ ११५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम वत्तीसमो प्रस्ताव: ॥३२॥



अथ इन्द्रावती ब्याह ।

(तेंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मै उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट । सूर बध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति । सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अम्रत रत्त विष होत । अम्रत रस रत्त उपज्जै ॥
नाव अाव सो प्रीति । सार सो सार सपज्जै ॥
[5]कट्ठ सो कट्ठ वर बधियै । नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यो वरनी वर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमग पँवार । चढे प्रथिराज प्रपग्ग ॥
समर दिसा चालुक्क । [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद । दंड सुदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ [7]पर जाइ तौ । न्रप वर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए । लज्ज बधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

(१) ए कृ को तत । (२) ए कृ को तदिना । (३) ए कृ को मति ।
(४) ए कृ को रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जे । (५) मो-कठ ।
(६) मो सुजो । (७) ए कृ को पर । (८) ए कृ को-दिप ।

कहै जोइ वरदाइ । मंत कविचंद सु आमन ॥
मन वासौं मन मिलत । जियत कै कंठ सामन ॥
जो वासुर सुर पंच । [1]पग्ग मंडै चहुआनं ॥
तौ माविक जिह लेप । तिही ह्वैहै परिमानं ॥
मावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न । दइय दुसंकह जानि गति ॥
लिषि बाल सीस दुप सुष्य दुहु । सत्य होइ परमान मति ॥छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा ॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी । धरनि सरन सिर लाइ ॥
कै धरनी फट्टै कुहर । कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ॥ ४ ॥
इन भव न्रप सोमेस सुअ । जुध बंधन सुरतान ॥
कै जलद्धि वूड़वि मरै । अवर न [3]वंछौं प्रान ॥ छं० ॥ ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त ॥ सषी कहैं सुनि बत्त । सुतौ दानव कुल कहियै ॥
अवर जाति अनेक । राइ [4]गुर परनह लहियै ॥
कारे कौन परसंग । पाइ म्रगमद धनसारं ॥
कौन करै कुष्टीन । संग लहि कामवतारं ॥
तो पित्त अवर वर जो दियै । तो नन जंपै अलिय वच ॥
राच्चियै अप्प राचै तिनह । अनरचैं रचैं न सुच ॥ छं० ॥ ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा ॥ तुम दासी दासी सु मति । मो मति न्रप पुत्तीय ॥
बोलि विंन चुक्कै न नर । जो वर मुक्कै जीय ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

(१) ए. कृ. को.-मद्धि आयौ । (२) ए. कृ. को.-भंजी ।
(३) ए. कृ. को. छंडौं । (४) ए. कृ. को.-गुन ।

कहै भीम कविचंद [1]सुन। स्वामि काम तुम अड्ड॥
सेन सगप्पन रीत नह। तुम दानव कुल चड्ड॥ छं०॥ ८॥

कवित्त॥ हौ सु भीम मालव नरिंद। मोहि घर बर अच्छिय॥
सवा लाष मो ग्राम। ठाम सपति बहु लच्छिय॥
विधि विधान न्रिम्मान। कोन मिट्टै इह बत्तिय॥
होनहार होइहै पुरुष। जपै गति मत्तिय॥
तुम कहो नामं बरदाइ बर। गुरुराज बदै चरन॥
ओछी सु बत्त कहौ कथन। एह सगप्पन विधि बरन॥ छं०॥ ९॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है।

दूहा॥ अहो भीम [2]सत्तह सुमति। तुम मतिमान प्रमान॥
औसर तकि कीजै [3]जुगत। औसर लहिजै दान॥ छं०॥ १०॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरवीर ही नहीं जानते।

कवित्त॥ कहै भीम पज्जून। सुनौ पामर मतिहीना॥
[4]अमत कियौ तुम मत। बरन बरनौ षग लीना॥
तुम सहाव बलि बधि। गर्व सिर उप्पर लीना॥
गिनौं और तिल मत्त। कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना॥
छत्तीन बस छत्तीस कुल। सम समान गिनियै अवर॥
घर जाहु राज सुक्कौ बरन। कारन व्याह उछछाह नर॥ छं०॥ ११॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्यों पलटते हो।

(१) ए कृ को कहि। (२) ए कृ को सतिमात्ति।
(३) को कृ ए जु रन। (४) मो अमन।

जैतराव जस जैत। नैन रत्ते करि बोलै ॥
अहो भीम करि नीम। बत्त पहली तुम भोलै ॥
बल बलिष्ट कोहरिय। स्थार क्यों मुष वर घल्लै ॥
लोक आप बुल्लकी न। न्योत वैरी को मिल्लै ॥
हम कज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कट्टय मुष वत्तरिय ॥
सु विहान वरन इष्षै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय ॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम ॥
असत सत्त मंडौ मरन। इह सु कोन ध्रम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥

गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कवित्त ॥ चिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
[1]कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो वालि हत्यौ अब ॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ ॥
अस्ति वस्थ करि स्थिल। मतक सम वर करि छंड्यौ ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिय बान इक मारियौ ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुरान कहि सुरत्त ॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानौ वत्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव ॥
जैतराव [2]मिलि राम गुरु। लै कानै समझाव ॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-बलि।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद। चीय काज रावन पच्यौ ॥
[1]बैरोचन न्रप नंद। मारि अप्पन भ्रम भंच्यौ ॥
कास कान्ह सिसुपाल। काज रुकमनि जुध मच्यौ ॥
[2]ता बंधव रुकमान। बंध मुंडवि सिर छच्यौ ॥
सुर असुर नाग नर पषि पसु। जीव जंत चिय काज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन की। ता बरनी को बर वरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान भर। कहौ सु कीजै काम ॥
जुध्ध जुरैं चहुआन सौ। ज्यों इल रष्षै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मानकर क्रोध करना।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अनाम। जेन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग। अगनि दीपक दिप्पाइय ॥
पच्छै ही भज्जियै। होइ दुज्जना हसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी। देहु चहुआन प्रयाई ॥
सुनि भीम राज तत्तौ तमकि। गई बत्त बुझ्झी सु तुम ॥
हंकारि जैत गुररांम कवि। पग्ग व्याह न न करै हम ॥छं०॥१९॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना।

दूहा ॥ उठि चले सामंत सब। कारन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरै। न्रपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन।

कवित्त ॥ फिरि जानी पावार। राम रघुवंस विचारी ॥
जीवन जो उब्बरै। मरन केवल संचारी ॥

(१) ए. वेरीचन, बेरीवन। (२) मो. के बंधव रुकमना।
(३) ए. रु. को. वर। (४) ए. कृ. को.-सनाम।

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्धारी ॥
स्वामि अस्स तिय तिथ्थ। मुकति संमो न विचारी ॥
पांवार सुबल मालव न्टपति। बर समुंद जिम मारयौ ॥
बर नीति किलि सुर वर असुर। मुगति मथन संभारयौ ॥ छं० ॥२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ। मत्त को वित्त विचारिय ॥
बर पट्टन दक्खिन द्दै। घेन लेहै हक्कारिय ॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि पिश्चिहै पांवारय ॥
बर आतुर धाइहै। अप्प संग्हौ हक्कारिय ॥
धर दहै कोस अधकोस वर। फिरि चावद्दिसि रुंधही ॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही ॥ छं० ॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा ॥ पंच कोस लेलान करि। लिय न्टप पट्टन घेन ॥
कूक कहर बज्जिय विषम। चढ़िय भीम न्टप सेन ॥ छं० ॥ २३॥
उंच कांन अनमिष नयन। प्रफुलित पुच्छ सिरेन ॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन ॥ छं० ॥ २४॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका सामहना करना।

कवित्त ॥ औसरि [1]बसि सामंत। घेन लुट्टिय पट्टनवै ॥
वर मंडल उज्जेन। धाक बज्जिय बद्धनवै ॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। सूर मानव बर बज्जै ॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै ॥
संभरिय बीर बाहर श्रवन। बाहर हर बाहर चढ़िय ॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। गगन हंकि जगपति बढ़िय ॥ छं० ॥२५॥

* महकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

(१) मो.-सब।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना ।

हय गय रथ चतुरंग । सज्जि साइक पाइक भर ॥
आइ मिले सुपमेल । दुहुन कढ्ढिय असि वर वर ॥
[1]तेग मार सिर झार । धुम धुम्मर हर लुक्किय ॥
पऱ्यौ घोर अधियार । विछुरि निसि सम चक चक्किय ॥
को गिनै अपर पर को गिनै । लोह छोह छकै वरन ॥
सामंत सूर जैतह वलिय । कहत चंद जुग्गति लरन ॥ छं० ॥ २६ ॥

रघुवसराय का नाका बाधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हाँकना ।

वर सिप्रा नदि तट्ट । धाइ सामंत जु रुक्किय ॥
रोकि मुष्य रघुवंस । धेन पज्जून सु हंकिय ॥
दुतिय वीर वर टिके । भीस भारथ जिम लग्गिय ॥
सूर विना प्रथिराज । धके जुरि पग्गन पग्गिय ॥
मुकि धेन गठि बधिय मिलवि । औसर पग कढ्ढिय लरन ॥
झरि सार तिनग्गा तुट्टि वर । तिरटू झर लग्यौ झरन ॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ । कला [2]ससि सपि जगन्नय पाउ ॥
पय पिय छंद सु मोतियदाम । कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम ॥
छं० ॥ २८ ॥

मिले जुध जैतर भीम नरिंद । मच्यौ जुध जानि वृतासुर इंद्र ॥
पगें पग मग्ग परे धर मुंड । परे भर वथ्थ मरोरत झुंड ॥
छं० ॥ २९ ॥

कटक्कहि हड्डुहि गूद करक्क । विछुट्टकि तुट्टहि लुब लरक्क ॥
भभक्कत वक्कत धाइल छक्क । उरंझत अंत सु पाइन तक्क ॥छं०॥३०॥

(१) ए कृ को "मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय ।
(२) मो ससि ।

करक्कस कोस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनखिय केस उलथ्थ पलथ्थ। परैं धर लुथ्थि उनें उन जथ्थ॥
छं० ॥ ३१ ॥

करें कर आवध दंड छतीस। तकौ छल सांइय अम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। इसौ जुध रुद्द अनुद्ध अपार॥छं०
गए भगि सेंन सँग्राम सियार। भिदे रवि मंडल सूर सुवार॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा॥ आदि सूर पांवार वर। भीम सरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। पग पन मोपन पान॥ छं० ॥ ३४॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
अलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निकऱ्यौ पंचमो भाग भान॥
†वर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि लहत चंद सो भासमान॥
छं० ॥ ३६ ॥

मानों कि राह ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बढ्ढे बिसाल। मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्क लाल॥
छं० ॥ ३७॥

सिप्पर सुभंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्क हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह। मानों हपंति पंषिय सजूह॥छं०॥३८॥
काढ़ि इसौ तेग धाइय पहार। मनुं अमं इंद्र सज्यौ संभारि॥
विरचै जु सूर बाहै विहथ्थ। दिषि दूर चढ़ि मनमथ्थ रथ्थ
छं० ॥ ३९ ॥

भरहरै सब्ब पाइल सुमार। रिन [1]रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तबल आकास तार॥
छं० ॥ ४० ॥

* छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।
† यह पंक्ति मो. को.-क इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए क्रु. को.-सूप राज।

झक झक उझक्क वद्दल दिपीव। ओपम्म चंद तिन कहत हीव॥
कट छित्त सूर जोधाइ मुक्कि। कट्ठंत बाल ज्यों बाल रुक्कि॥छं०॥४१॥
इह सार सुद्ध भिट्टिय डरेन। जानियै वीय वयसंधि तेन॥
परि सहस सत्त दोउ सेन वीर। रवि गयौ सिंधु तीरह सु तीर॥
छं० ॥ ४२॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना।

कवित्त॥ सझ्झ हेत वहि सार। मार [2]वारि तुट्टि सनद रिझ्झ॥
सो ओपम कविचंद। भ्रग छुट्टे कि बाल पिझ्झ॥
टोप [3]ओप उत्तरै। परै विपरीत विराजै॥
मनों सु भाजन भोम। हथ्थ जोगिनि रुध काजै॥
यौं भऱ्यौ सेन सम वर सुवर। नन हाऱ्यौ जित्यौ न कोइ॥
दोउ सेन वीच सरिता नदी। निस कट्टी वर वीर होइ॥
छं० ॥ ४३॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना।

होत प्रात सामंत। पान व्यूह [4]जुध रच्चिय॥
मोती भर सामंत। पान कूरंभ रा सच्चिय॥
वर हरिन्य उथ्थट्ट। पत्ति भडी [5]गुन राजै॥
[6]लाल रूप कविचंद। मद्धि कानड्डा दुति साजै॥
[7]नालीव रूप लीनो वरन। राम सुवर रघुवंस भिरि॥
कोदंनि सुरंग पती करिय। वीय सहस पुंडीर परि॥ छं० ॥ ४४॥

युद्ध वर्णन।

माल्लती॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, वीय तीय, पयो हरे॥
मालती छंद, सुचंद जपय, नाग पग मिलि, चित हरै॥

(१) ए कृ को नीर। (२) मो कहि।
(३) मो-ओट। (४) मो सुध। (५) ए कृ को गुर।
(६) ए कृ को-लाज। (७) मो-नालीच।

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह मिल मिल, निक्करे
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, बर भरे ॥ छं०
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ।
झलमलत तेक्क, सकत्ति बंकिय, ओपमा कवि, मानयौ ॥
मनों बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
धन सूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चक्कं, निद्धयं ॥
मनुं रास मंडल, गोप कान्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरि सेन, विडारि चिहु दिसि, कारषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोस, अलुझज्झयं ॥ छं० ॥ ४७॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त ॥ दिन पलट्यौ पांवार । सरुल बाहैं सरुलन पर ॥
चावद्दिसि सामंत । भीम बीथ्यौ सुरंग नर ॥
तन सट्ट अरि सट्ट । बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुट्यौ संग्रह्यौ । दई बर भंमर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच परि । बाल सुबर सुंदर बरी ॥
धनि सूर बीर सामंत हौ । [3]जुझर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ॥ ४८॥

भीम का राव सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों की औषधि करना।

दूहा ॥ भीम भयानक भग्गह्यौ । सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. ए. कृ. को.-घट । (२) मो.-सौनयौ ।
(३) मो.-सु वर ।

जो मति पच्छै उप्पजै। सो मति पहिले होइ॥
काज न विनसै अप्पनौ। दुज्जन हँसे न कोइ॥ छं०॥ ५०॥

आदर करि आने सु ग्रह। भगति जुगति बहु कीन॥
जे भर धाइल उप्परे। जतन जिवाइ सु दीन॥ छं०॥ ५१॥

पग विवाह भीमग रचि। वाजे वज्जन लग्गि॥
मगल मिलि अलि गावही। गौप गौप निस जग्गि॥ छं०॥ ५२॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजगी॥ रची वेदिका बस सोवन्न सोहै। जरे हेम में कुभ देषत मोहै॥
लगी वेद विप्रान सो [1]गान झाई। रचे कुड मडप्प सेप न साई॥
छं०॥ ५३॥

हसे तर्क वितर्क हास सुरास। धसे कुकम लाल गुलाल वास॥
उडै वीर [2]गोधूरक वास रेन। करे भेरि भुकार गज्जत्त गेन॥
छं०॥ ५४॥

चवै छंद बदी नन पार जान। करे दान हेम सु विद्या बिनान॥
भई प्रीति जेत सुरा कव्विरान। तिन लेपिय कग्गद चाहुआन॥
छं०॥ ५५॥

दूहा॥ लिपि कग्गद चहुआन दिसि। दिय पुची भीमानि॥
इद्र धरनि सम सुदरी। कलह कुसल वर वानि॥ छं०॥ ५६॥

इन्द्रावती का शृगार वर्णन।

नाराच॥ कन्यौ सुन्दान कामिनी। दिपत मेघ दामिनी॥
सिगार षोडस करे। सु हस्त दर्पन धरे॥ छं०॥ ५७॥
वसन्न वासि वासन। तिलक्क भाल [3]भासन॥
दुनैन ऐन अजए। चल चलत पजए॥ छं०॥ ५८॥

(१) मो मान। (२) मो केदासु। (३) मो तासने।

सुहंत श्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु मुत्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५८ ॥
अनेक जाति जालितं । धरंत पुप्फ मालितं ॥
झँकार हार नोपुरं । धमंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी धनं ॥
सु छुद्र घंटि घंट्टिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० । ६१ ॥
कनक नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल बानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्र रूप सारदं । सरन्न रुप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियां सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना।

दूहा ॥ करि श्रृंगार अलि अलिन सँग । रिम झिम मंडन मंग ।
बसन रंग नवरँग रँगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चौपाई ॥ कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि वर बानं ॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विवाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीमा का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा ॥ सत हथ्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
हथलेवौ चहुआन कों । दियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ । सुर सत दासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरी । कही बनै वर गथ्थ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
पतिव्रत सेवा सुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पति लुध्धै लुध्धै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरौ । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

(१) मो -छप्पे ।

पृथ्वीराज का वंदियों को दान देना ।

बंदिन दान प्रवाह दिय । लिय सुंदरि जुध जीति ॥
दुहु जस न्त्रमल हद [1]गुन । पढन कविन इह रीति ॥ छ० ॥ ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ धनि सामंत समथ्थ । जेन न्नप विन जुध जित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ । जेन जस किंद्वि विदित्तिय ॥
धनि सामंत समथ्थ । जेन बरनी बर सध्यौ ॥
धनि सामंत समथ्थ । जेन भीमंग [2]रन बध्यौ ॥
सामंत धन्नि जिन कित्ति वर । ढिल्ली दिस पायान कर ॥
बैसाष मास अष्टमि सितह । कित्ति सचरिय देस पर ॥छ०॥७१॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन ।

ढिल्लिय पति सिनगार । हट्ट पट्टन की सोभा ॥
गौष गौष जारीन । दिष्षि त्रिय नर सुर लोभा ॥
भुंगल भेरि नफेरि । नद्द नीसान म्रदंगा ॥
नाना करत संगीत । ताल सौं ताल उपंगा ॥
गाजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर । न्नप प्रवेस सुंदरि करि ॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ । प्रथक प्रथक परसंस करि ॥छ०॥७२ ॥

दहेज वर्णन ।

च्यार अग्ग च्यालीस । मत्त अप्पे गजराजिय ॥
सौ तुरंग तिय अग्ग । बीस चव अप्पि सु पाजिय ॥
इक अमोल सुंदरी । सत्त तिय दासिय बिटिय ॥
सबै सथ्थ सामंत । रहे भर करिय अमिटिय ॥
सामंत करी प्रथिराज विन । करै न को रवि चक्क तर ॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै । गए बीर अष्टमि सु घर ॥छ०॥७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ।

---

(१) मो-गुर । (२) ए. कृ. को-रन । (३) ए. कृ. को. फेरि न फेरि ।

दूहा ॥ वर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भीर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन वीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति । गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दै कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है।

कवित्त ॥ मेषग्गाही सेन । दंड पलट्यौ सु विहानं ॥
अघुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगे रा गघ्घर ॥
हबस हेल षंधार । सज्जि धल्ली फिर पष्षर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । वर मंगै मंग्गौ सु वर ॥
चहुआन राह मैं [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइश।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप । न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना।

(१) ए. कृ. को.-बीर। (२) ए. कृ. को.-चहुआन।
(३) मो.-निगली।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल। सार घनसार सु रम्मिय ॥
धूप दीप सुगंध। दीप दस दिसि हत [1]जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम नग जरे जरान ॥
दिए भीम भूपाल। भोग साज सु सवान ॥
न्नप देषि अचंभ समानि मन। सुप आतुर देषन महल ॥
आनिय सु सेज चिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७६ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरेन। गनि गति मति सारद्द ॥
रूप देषि भूल्यौ न्नपति। रचिय विरंचि विहद्द ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्जौ। सषौ रस हार सुरत्तिय ॥
ठाम ठाम चढि हरम। सद्द कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हद्द हद्द सुप रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्नवल। प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
स्रंगार हास्य करुणा सु रुद्र। वीर भयान विभाछ रस ॥
अद्भूत संत उपज्यौ सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रव गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरण ॥३३॥

(१) ए क को नम्मिय।



अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते।

(चौंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना।

कवित्त ॥ किहि मेपत प्रथिराज। किहित मेपत चिहु पास ॥
किहि मेपत दिसि विदिसि। कहौ मनया उल्हास ॥
किहि उमाह उच्छाहं। कौन ओपम द्रुग राजै ॥
सो उत्तर कविचद। देव गुरराज विराजै ॥
सजि मान वीर चतुरगिनी। कमल गहन सुरतान वर ॥
नव रस विलास जस रस सकल। तपै तुग चहुआन वर ॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू वन मे शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना।

नीतराव पिचीय। भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ [1]ग्रह भेद। लिष्यौ कग्गद सुरतान ॥
वरप उभै पट मास। फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्टू वन प्रथिराज। वहुरि आषेटक जान्यौ ॥
सामत सूर सथ्थहन कौ। वर वराह वर पिल्लइय ॥
दैवान जोध चहुआन वर। भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज क साथ मे जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू वन मे शहाबुद्दीन के दूत का आना।

सत चीता द्वादसति। स्वान अच्छे सु रग दह ॥
चीय अग्ग च्यालीस। सीह वर गोस कहद्दह ॥
सत्त सत्त म्रग अच्छ। सर्त्त दह अग्गति [2]पाजी ॥
आषेटक प्रथिराज। वीर ओपम अति राजी ॥

(१) मो वर।   (२) ए पाजी।

[illegible]

पृथ्वीराज का कहना कि मैं [illegible] नहीं जानता
कि अभी कौन जीता और कौन हारा [illegible]
के लिये कर्तव्य छोड़ना पाप है।

(१) [illegible] (३) [illegible]

(२) [illegible] (४) [illegible]

अरे ढीठ वसीठ। कौन हाऱ्यौ को जित्यौ ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ। कौन वित्तग अब वित्यौ ॥
पच तत्त पुत्तरी। पच इध्यन कर नच्चै ॥
अजै बिजै गुन बंधि। चित्त तामस रस रच्चै ॥
बछै जु सुष्य फल राजगति। वह करतार सु नन करै ॥
उच्चरै कित्ति छल ना रहै। तब लग्गै गल वल परै ॥ छं० ॥ ८ ॥

कहा गजनी है और कहा दिल्ली और कै वार मैने उसे बंदी किया।

दूहा ॥ कै कोसा ढिल्ली धरा। कै कोसां गज्जान ॥
पंडा सौ [2]कर बंधिया। चहुआना सुरतान ॥ छं० ॥ ९ ॥
मै रष्यौ [3]हुस्सेन वर। वर बंध्यौ सुरतान ॥
उट्ठाए वस्सीठ वर। वर वज्जै नीसान ॥ छं० ॥ १० ॥

दोनो ओर की सेनाओ की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

मोदक ॥ दसमत्त पयो लहु, पच गुर। पग पन्न हरे बिप पत्त [4]वर ॥
वर सुद्ध प्रमान हुलास छवी। कहि मोदक छद प्रमान कवी ॥
छं० ॥ ११ ॥
जु सजी चतुरंगन दान दिय। कवि दोउअ सेन उपम्म किय ॥
[5]सुत पजन ज्यौं बुधगत्ति पढ़ी। सति सीतल [6]वात प्रमान बढ़ी ॥
छं० ॥ १२ ॥
वर रत्त रपत्त सुरत्त वन। तिन की छवि पावस सज्जि घन ॥
सु वजे वर वीर निसान बज। सु मनौं धन पावस सज्जि गज ॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए कृ का बिन। (२) ए कृ को वर। (३) ए कृ को पुरसान।
(४) मो हर। (५) मो सत। (६) ए कृ को बाल।*

* हुसेन शब्द से यहा मीर हुसैन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है।

बजावत बीर जंजीरन सूर। कंपै सुर बीर पयाल-पूर॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि विट्ठुरियं। सुदरी द्रग अठुत धुंधरियं॥
छं० ॥ १४॥

तिह ठौर रसं अप बंधव से। तिनके सुप वाल भुअंग ग्रसे॥
बर जग्गत नेन सु सेन सुचें। तहां क्रूर नसें नर आइ नचें॥
छं० ॥ १५॥

अम सूर तिनं अभिलाष रिनं। वर थध्य वसं वर वंसु तनं॥
काल किंचित संकर सूर दियं। बर बीर मजादन लाजि लियं॥
छं० ॥ १६॥

सहनाइय सिंधुअ अद्दरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं॥
वर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिसं बढियं॥
छं० ॥ १७॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा॥ तं बीरं जल गंभीरं। आव यों उप्पटी सेनं॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि॥ छं० ॥ १८॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया॥ इह सु राज आतुर [1]धरिय। सुरतानह प्रथिराज॥
भूमि भार कछु [2]बढ्यौ। सो उत्तारन [3]काज॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह॥
तिन अर बस चर परे। को इन [4]छुट्टै मति हीनह॥
अप्पन सुसिंह वहुरे [5]सुरह। चक्कई चक मुक्कै नहीं॥
अप्पन सुहथ्थ मरही परै। दया न किज्जै मन इही॥ छं० ॥ १९

(१) ए. कृ. को.-धरिय। (२) ए. कृ. को.-छटयौ।
(३) मो -पार। (४) मो.-छंडे।
(५) ए कृ को.-सुहर।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना।

दूहा। ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल। दूत सपत्ते आइ॥
चर चरित्त चहुआन दल। कहै साह सों जाइ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

कवित्त ॥ नहिन इंद्र प्रथिराज। सोम नंदन सिवर दिसि॥
बर इंद्रह दीसै न। मंडल मध्यौ सु दुहु निसि॥
जबही हम संचरे। काल तवही दिसि पास॥
परत बाह खप्पत। दिट्ठ देवन सुष वास॥
लच्छीन [2]भीव बल बीर रस। दुहु दिसि भिरि दानव मिलिय॥
मेलान कोस परपंच को। गौरी वै सम्हौ चलिय॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरवीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना।

दूहा। ॥ हुइ अवाज चहुआन दल। बंटि सेन सु विहान॥
काइर भर सह उच्चरै। कहि बधन सुरतान॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि। चरनि वरज्यौ सु विहान॥
झुम्झ रहै कै [3]जाइ। जु कछु पत्तौ चहुआन॥
बरन मेच्छ बर हिंदु। सुनत रन पन कर हेरी॥
जय जानौ अन चप। पच चतुरंग सु भेरी॥
भुअ बीर रूप गोरी सु बर। मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम॥
पलटयौ भेष देषत सयन। बर बज्जे नीसान तिम॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन।

चंद्रायना। ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ।
उड्डि उछ्गिय रेन, सु मेरनि मान भय॥

(१) ए रु को पुल। (२) ए रु को -न्राय।
(३) मो नीय। (४) मो तद।

गोरी वै औ राह रयन हर मिग्गई।
गज असवारन सूर निब्रत्त सु लग्गई॥ छं० ॥ २४॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ॥
सब पाइ पिंगल सावरे लहु, बरन अच्छर बंधयौ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं॥
गज मद नहय छिरह मदय, अननि दिन दिन जोरयं॥ छं०॥२५॥
घन चल्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, वीय बग्ग उरन्नरे॥
तिन देवि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे॥
गजदंत कांतिय झलकि उज्जल, पिष्षि पंतन रा इयं॥
रवि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं॥ छं०॥२६॥
गज कारत दंत सुसंत ऊरध चंद, उप्पम मंडिकै॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै॥
धर मत्त दंतिय सेन बंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं॥
मनौं मेघ बरषत विज्ज कोंधित, अम्भ बुढ़ि गिरि स्यामयं॥ छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले॥
धर चलत गिरवर वरन वारन, स्याम बद्दल रलिचले॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइवा, बनि समथ पसु पुज्जवै॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै॥ छं०॥२८॥
चय लष्प मीरति साह गोरिय, मार अहुझरह अलुझावै॥
षुरसान षान अरब्ब आरब, सज्जि सेन [5]सझांझवै॥ छं०॥ २९॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय।

भ्रमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग। लजै कविचंद उपंम कुरंग॥
सितं सित चोर गुरै गज गाह। तिनं उपमा बरनी नम जाइ॥
छं०॥ ३०॥

(१) ए. कृ. को.-उडन। (२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिद्धता, छविद्ध।
(३) मो.-झलकंत। (४) ए. पुज्जवै। (५) ए. कृ. को.-अंवझवै।

जु सजे हय गोरियसाहि परे। तिन देषि रवी रथ के विसरे॥
दिषि सेन तिन उपमा सु करी। सु मनो नदि पूर छिली दुसरी॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चद कविद इद कवित। गुरु वक पिष मन कै चढत॥
वजि वाज कुह धर सद्द षुर। सु मनो कठतार वजत तुर॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुर सित सोभ पगे। मनो सेत वेऊरन भान लगे॥
नभ कै तिमर जित के समर। मनु उठि किरन सु पाल पर॥
छं० ॥ ३३ ॥

विय ओपम चद वनी वनिकै। सु धसे मनु गग तरगनि कै॥
अग हथ्थ वनें हय के सिरय। गलि प्रव्रत हेम द्रुम वरय॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर पष्षर सोभ करै तनय। मनु अर्क अरक विचें घनय॥
तिनकी हर वाय फुलिग सजै। सु कहै कविचद कुरग लजै॥
छं० ॥ ३५ ॥

वुहु रैनन आसन जी डरय। [2]मग मत्त मनो वहरें वनय॥
मन मत्ति तिहा इत अत्ति पढी। हय नष्षत रागन सास कढी॥
छं० ॥ ३६ ॥

विय वाय अरकन वध चढै। कविचद पवन्नन वाद वढै॥
सु उडै नन धावत धूरि पुर। गतिमान सुसील विसाल उर॥
छं० ॥ ३७ ॥

पय मंझत अश्वत आतुरय। विरचे नच पातुर चातुरय॥
दुहु पार अपार अवद्ध परी। मनु गावहि इदुन वध धरी॥
छं० ॥ ३८ ॥

हय अप्पिय अत्तन साहि वर। जु गहो चहुआन पयाल पुर॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो-कविचद। (२) ए कृ को मन।

प्रातः काल होते ही जम्सरोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा। ॥ सबै सेन गोरी सु वर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उट्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल[1] मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ। [2]डम्मरी उड्डि आकास छाइ॥
अचरनचरन गोरीस [3]साई। सेंन चहुआन हथ्थें बनाई॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर संजप्पर समर किय। चावद्दिसि अरुनग्ग ॥
मुष गोरी चहुआन मिरि। ज्यों रावन लगि अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥ समह्यौ रन चहुआन सपट्ठिय। वजिग वाय सुझिझान [4]नदि उट्ठिय॥
धुंधर घन बद्दर निसि भद्दों। सुज्झिझ न अंष कन्न सुनि नद्दों॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्र सन्हौ सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि वाम। वैर कन्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहका बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों। रोह ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य देवी पहकि। गहका मझ्झ धूघू वहका ॥
आकास मद्धि गज्यौ गयन। परौं बूंद बेबंग हका ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा। ॥ ज्यों जगदीसह कान दै। तकसी रन किहुं कौन।
मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें। मिरन भरन दोउ दौन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

(१) मो.-मली। (२) मो.-मम्मरी।
(३) ए. समाई। (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर लोगो तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी ॥ परे धाइ धीढ़ दीन हीन न जुद्दे। मुप मार मार तिन मान सद्दे॥
परी आवध छोड बज्जै निसान। बजे इक्क सूर दमामें न जान॥
छं० ॥ ४६ ॥

बढ़ै आवध हथ्थ सामंत सूर। घुरै वै निसान वजै जैत [1]पूर॥
कढ़े वे सनाह झनंके उनंगी। मनों आवध हथ्थ बज्जै चिनंगी॥
छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवान मद [2]मरक दंती। ढली ढाल ढाल ढलक्क तुरंती॥
फुरै हथ्थ जन मुरक्की उरक्की। मुरै धार धार सुधार मुरक्की॥
छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्पर कोर फूलै समती। ग्रस्यौ राह सूर छटै नभ्भ हुती॥
परै सार तीर झनंकत बज्जै। सद तीतर जेम सों पच्छि गज्जै॥
छं० ॥ ४६ ॥

बढ़ै सोर गोरी पढ़ै दै समान। भगै पच्छिनी पति पावै न जान॥
तुटै सीस जुझ्झै कमधंत नच्चै। चलै रुद्धि धार चिह्न पास गच्चै॥
छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्थ आई। मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई॥
फुटी वारि धार चली ईस सीस। लगे धार धार रज रज्जकीस॥
छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोही परे बूंद पानी। ढुढी लुथ्थि पावै न नही वहानी॥
मन मोद लै सोस मुद्राइ कोनी। ॥ छं० ॥ ५२॥

(१) मो सूर। (२) ए कृ को सरक दंती।

उठं उद्ध सीसं उपमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धौं श्रोन लूलं॥
दोऊ दीन धाए मनें कोपरीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जवै वै। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का सामहने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ त्रतिय पहर पर पहर। बीर धरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय॥
घरिय इक्क बनि सेन। सूर सामंत परष्षिय॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर सु विहान षरक्किय॥
कर बार धारि सिप्पिर करह। एक होइ [2]उप्पर तरै॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हौ भिरै ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिक्कि नंष्यौ है नरिंद। भूमि धुज्जिय षुरतारं॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उड्डिय नाल चमंकि। भक्झक्क धुंधर छबि लग्गिय॥
रबि ओपम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्डुरिय। परे मध्य सेना घनिय॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाह गहि॥

(१) मो.-वक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिप्पर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

इतै दीह अथ्थम्यौ । सूर वर सिधु ¹सपन्नौ ।
मुकत तट्ट मिलि सूर । स्याम रन अप्प अपन्नौ ॥
सापला सूर ²सारग ढहि । जुरि जुवान पचाइनौ ॥
केहरौ गौर अजमेरपति । प-यौ भुम्भि रन माइनौ ॥ छं० ॥५७॥

सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर । दिसि रत्ती धवलाइ ॥
सैसव में जुव्वन कछू । तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥ छं० ॥ ५८ ॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना ।

कवित्त ॥ जाम निसा पाछली । सेन सज्जिय दोउ वीर ॥
सामता चहुआन । आनि गोरी काछमीर ॥
मान पयानन भयौ । करे द्रिग रत्तह चढ्ढिय ॥
ता पहिले पायोन । जोध रन असुरन कढ्ढिय ॥
अदिहार वीर गोरी सुवर । चाहुआन दिन सुदिन धन ॥
करतार हथ्थ कित्तौ कला । लरन मरन तकसीर नन ॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओ का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ।

भुजगप्रयात॥ प-यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी ³गज्ज सेना क्रम पचभाजी॥
तहा वाहु-यो वीर वीर नरिंद । लग्यौ धार धार सची कित्ति चंद ॥
छं० ॥ ६० ॥

अनी एक मेक धरी अद्ध पच्छी । फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दीन वाहै दोऊ हथ्थ लोह । प-यौ जानि वाराह पारद्धि रोह॥
छं० ॥ ६१ ॥

कटे कंध बंध कमंध निनारे । मनों पत्त रत्त वसंत सुडारे ॥
नन अश्व चल्लै चलै हथ्थ रोज । नन चित्त चल्लै रवी रथ्थ दोज ॥
छं० ॥ ६२ ॥

(१) मो सनत्तौ । (२) मो सामंत । (३) ए कृ को राज ।

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं। तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं॥
ग्रहं प्रत्ति अग्गे रहै ज्यों कुलट्टं। चितं दृत्ति चल्लै अगै देषि घट्टं॥
छं० ॥ ६३ ॥

वरं वाज्जि माला ग्रहीं रंभ सथ्थं। चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनों पुत्तली कट्ट कारसी लगाई॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार वीरं हहंकार पाई। मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई॥
दोऊ बाह सेना दोऊ वीर ठेलं। मनो डिंभरू जानि [1]हड्डूड षेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं। करे भाग विंवं अरी कोप दाहं॥
जबै विड्डुरी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थानं मनों प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहूं मुक्कती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना।

दूहा॥ परत साहि गोरी सुधर। हौ गै भूमि मयान॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों। परी बीटि चहुआन॥ छं० ॥ ६८॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।

भुजंगी॥ परी वीट गोरी सुरे मीर षानं। तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि वा-
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं। पत्यौ धाइ पावार भर सलष .....
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान सात्त्यौ। तहां मीर मारुफ अग्गैं गुराय्यौ
धरी अद्ध रुग्गयौ करी छत्र धारं। वहै सब्ब सामंत विचि तीन धा...
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-हड्डड्डूड।

तुटै आवध सब्ब अरि हथ्थ लागी । तबै आइ सीस [1]गुरज्ज त वाजी॥
गज गहन प्राहार निठ्ठे ढहायौ। तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना ।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान । हथ्थ आप्यौ चहुआन ॥
चामर छत्त रपत्त । तपत लुट्टे सुरतान ॥
गोरी वै हुस्सेन । वीर [2]तुट्टे आहुट्टिय॥
मान तुग चहुआन । साहि मुष के वल घुट्टिय ॥
मध्यान मान प्रथिराज तप । वर समूह दिन दिन [3]चढे ॥
जस जोति मत समर धनिय । चद वीज जिम वर वढै ॥छं०॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्यं गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव सपूर्ण ॥ ३४ ॥



(१) ए कृ को गुर गुरज । (२) ए क को पुटे । (३) मो-चढे ।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों वचन । हू सु कांगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । नेह मैं वाचा दिष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छैं फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गैं करै । दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा ॥ चलिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीत्तौ न्रप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के वचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उभ्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो पजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इचना अति सूर । तोइ का [7]भाठी कोपै ।

---

(१) मो मिस । (२) मो भग्गै ।
(३) मो दिसौ । (४) ए कृ को-भोट ।
(५) ए कृ को जौ पजुआ । (६) ए, कृ को जौ इचदा । (७) मो-भागी ।

हूं नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा ॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिर्‍यौ। कही राज सों बत्त ॥
तमकि तीन लीनौ नृपति। मनों सुजोधन पथ्थ ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो षग बज्यौ ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ होइ रज्यौ ॥
आहत झरत झारत परत। श्रोन धार १धर पैर चलि ॥
इत उत्त सूर देषै लरत। षरी पंच रवि रेथ न हलि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥
कवित्त ॥ षग वाहिय भिरि भान। अरिन अझर धूर किन्नौ ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उमापति लिन्नौ ॥
रिझत लिंग उत मंग। अमिय विष जंग सु ढरयौ ॥
ठंडौ मंडि अमंध। नहि भौ अंग जु परयौ ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ ॥
सिंगार वीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ ॥ छं० ॥ ७

(१) ए.-उर।

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना ।

दूहा ॥ सम मिलाप गधर्व [1]हुअ । नारद तुम्मर गान ॥
सकार काल किंचित भयौ । चाहुआन प्रम्मान ॥ छ० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना ।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिमान । परी अरि मग्ग अरिट्ठह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय । वरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
कहु त मंस कहु अस । हस कहु सस्त्र वस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान । थान देषिय न जम्म जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि । तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीप चरित प्रथिराज ने । कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छ० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना ।

इह परत चहुआन । मोप लभ्यौ सु रथ रवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ । मिटे झकुरन भान छवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ । हरह भग्गी [4]उतकठ ॥
भग्गि मनोरथ रभ । [5]ब्रह्म भग्गी चित गठ ॥
झल हलत नीर काइर मुपन । प्रलय सुभर रनरत्त रह
दिन पति पतन्न सह तप्प तन । भान भान भेदत [6]नह ॥छ० ॥१०॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मे होनहार नही मेट सकती ।

तब कगुर पालहन । चित्त चिता उप्पन्नी ॥
सुनि मोटी भर मरन । सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

(१) मो भय । (२) मो नइय
(३) मो एक । (४) मो-उप कठ । (५) ए रु को प्रतियों में "चतुरानन भगिचित टारि रय मग्ग मुर्गली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है । (६) मो सह ।

निसि अंतर करि ध्यान । मात कंगुर आराधी ॥
सो आई नृप सुपन । कहै सुनि बात अगाधी ॥
[1]सोमति अनेक जानै न को । मो सेवा को परि लहै ।
भावी विगत्ति हों प्रकति हों । तो प्रधान फूठह कहै ॥ छं० ॥ ११ ॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना ।

चौपाई ॥ वचनन मात कही समझाइय । निसि पल भ्रमित गमत बर आइय ॥
भोटी नृप कन्हा [2]पै आइय । कालो कन्ह कि हंकि जगाइय ॥
छं० ॥ १२ ॥

तब कन्हा परधान बुलाइय । मात वचन की जुगति सुनाइय ॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय । करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं० ॥ १३ ॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मै शत्रु का मान मर्दन करूंगा ।

अरिल्ल ॥ का चिंता सु विहानं । * कन्ह होइ जाके परधानं ॥
स्वामि वचन किन्नौ परमानं । लरि भंजौ दुज्जन चहुआनं ॥
छं० ॥ १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सो सुपनंतर राज । रैन दिठ्ठौ सु कह्यौ रचि ॥
बर बंसी [3]ससिपाल । पल्ह आयौ सु सेन सचि ॥
लष्ष एक असवार । लष्ष दह पाइल भारी ॥
अष्ष सेन उप्परें । जुगं जुग गहि उच्चारी ॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि । पच्छि उररि दुज्जन परिय ॥
चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा । सामंता कुंडल फिरिय ॥ छं० ॥ १

(१) ए. कृ. को. मो भति । (२) ए. कृ. को.-पै ।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था ।
(३) मो.-सिसुपाल ।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

बर रघुवंस प्रधान। राज मझौ बिचारिय ॥
बोलि बीर हम्मीर। भेद जानै धर सारिय ॥
बाट घाट बन जूह। धरा पद्धर नद घाट ॥
अव्व जान न्त्रिसान। कोन पद्धर [1]बन बाट ॥
अगवान देहु नारेन बर। कछुक, मत जपौ सु तुम ॥
जालधराज जबू धनी। स्वामि ध्रम्म [2]मडहित हम ॥ छं० ॥ १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरे न्त्रप अग्गौ ॥
सकल भूमि कौ भेद। राज जानै ए भग्गौ ॥
अति सु बिकट बन जूह। चढ़ै सग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ। चढन किहि ठौर न कोई ॥
बन बिकट जूह परवत गुहा। बर बेहर वकाम बिषम ॥
दारुन भयानक अति सरल। बर प्रस्तर नहिं जल सुषम ॥
छं० ॥ १७ ॥

कंगुर गढ के पहाड जंगल इत्यादि की सघनता और उसके बिकटपन का वर्णन।

भुजंगी ॥ बन जा बिषम बिष बाज कट ॥ घन व्याघ्र आघोततो नद घटं॥
षह जा षजूरी घन जूथ भोर। जिनै वास आस लगे पक भोर ॥
छं० ॥ १८ ॥
धन पामर जाति बधै धनकी। गिर देखते गत्ति भाजै मनकी ॥
झरै झरनि झोर सु आघातसोर। [3]जितें सद्द्या सद्द ता अग मोर ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) मो बर। (२) मो-मडाहि नं हम। (३) मो जिनें।

हयं तज्जि राजं चलै हत्थ डोरं । इकां इक्क पच्छै विपं जन्न जोरं ॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उट्ठै । सुनै कान्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै ॥
छं० ॥ २० ॥

इकां होइ राजं पथं सत्त [1]रुट्टै । दियै हत्थ तारी तिनं कोन [2]वट्टै ॥
तबै मुक्कले राज नारेन वीरं । नमं षग्ग मग्गं सधै इक तीरं ॥
छं० ॥ २१ ॥

नृपं काम नाही [3]प्रधानं प्रवानं । दोऊ सेन रघुवंस अरिसेन भानं ॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खाँ के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ मानि मंत चहुआन को । मुकलि दीय दोइ बीर ॥
ताजी तुंग समप्पियै । [4]षां हुसेन दिय मीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ तब लगि पान सु पान । हत्थ नारेन मंडिलिय ॥
नमि चरननि कर बाहि । रोस आरोहि अंषि विय ॥
ताजी तुंग सु अप्पि । जेन रुक्के बर विय करि ॥
नीतिराव कुटवार । संग दीनो नरिंद बरि ॥
बारंग बीर बज्जर बहिर । निधि निसान बज्जे सुभर ॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा । जस मुकट्ट प्रथिराज बर ॥ छं० ॥ २४ ॥

पंगुर दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन

बर भरियं बर अप्प । लियौ फुरमान नरिंदं ॥
लाज राज विंटयौ । जानि पारस बिच चंदं ॥
श्रीय काज श्रीराम । सु छल हनमंतह तैसे ॥

(१) ए. कृ. को.-रुवै । (२) ए. कृ. को.-वधै ।
(३) ए. कृ. को-प्रथानं । (४) ए.-खान ।

स्वामि कार्ज सामंत। बियौ धर मझ्झव जैसे ॥
जस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरग सु सत्त में। गुन प्रमान जवुत्र चुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जबु गढ चल्यौ काज। बोलहित वाम कोदहति ताज ॥
दाहिने म्रग्ग समुह फुनिद। नौरूप बोल बोलहित हद्द ॥
छं० ॥ २६ ॥
हकरै सिह कोदहति वाम। उत्तरै [1]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक। फुनि करै हक्क केकी पहक ॥
छं० ॥ २७ ॥
उत्तरै [2]दार वाराह [3]सथ्थ। डहकारै साड दिसि वाम तथ्थ ॥
[4]वन्नर विरूरे दाहिनैं सद्द। सुनियै न कान नदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[5]कुरलंत वाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हसीय वाम आनद कीन ॥छं० ॥२९॥
हा कहत हल्ल करि गट्ट मध्य। चहुआन पिथ्थ रिझ्झेव तथ्थ ॥
हाहल्लरोव दीनौ विरद। आनद वज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हा कहतें ढीलन करिय। हलकारिय अरि मध्य ॥
* तायें विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढि चल्ले वद्दर्न [6]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
वर प्रब्बत बैदेस सधि। बीर वजी रन वाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरो की वीरता वर्णन।

(१) मो देव। (२) ए रू को डार।
(३) ए कृ को रत्थ, हथ्थ। (४) ए कृ का वदर।
(५) कृ-कुरलेत। (६) मो सगुन।
* छंद न ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो प्रति में नहीं है।

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुमर मंडी सु मेस ॥
सिंगिनी सुश्थ गौ गंठि थाल। अरि अंग पतंग मै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। अठ्ठार टंक पंचै कमान ॥
धज्ज सुरंग रत्त गजराज ढालि। जानं कि भमि बद्दलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति द्रुत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गड्ढ ओछंडि थान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो रथ्थ नारि चकि नयसु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चढ्ढि। मंगलिक जानि वनौर कढ्ढि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार काहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुमार ॥
तुट्टंत मुत्ति पग पगन मान। नंषंत तोय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चित्रसाल। जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य जाइ रहै षंचि सास। मानहु कि रचि चित्रह विलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकौ दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतर्यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चित्रहति साल रष्पीति बाल। नह परहि बंदि तें तिहति काल
दाहंतवै [3]वाहि मदिरति रिसिंग। चल्लै न पाइ मानं उलंभि
छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-षाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेट्टे। (३) मो.-नाहि।

देपत सुमन गति भई पग। रुठुई काम रति कोटि रग ॥
नठुई उगति तिन देषि बाल। मानो कि रास मझ्झें गुपाल ॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना।

दूहा ॥ बस दुजन घर गाहि फिरि। तब लगि दुजति सपन्न ॥
एकल्ल रघुवस ने। लै गढ सबर प्रपन्न ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सब सामतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ रक्षा पर छोडना और सब का गढ के नीचे पृथ्वी-राज के पास जाकर विजय का हाल कहना।

कवित्त ॥ सबै सूर सामत। पल्ह बध्यौ गढ लिन्नौ ॥
थप्यौ राम नरिंद। हथ्थ फुरमान सु [1]दिन्नौ ॥
तुम रहियौ इन थान। जाइ कगुर सँपत्तौ ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज। राज सम्हौ प्रापत्तौ ॥
आनंद फते तप तुझ्झ बल। धन समूह आइय सु घर ॥
सुभ्भर सुधाइ तेरह परे। बिय दाहिम्म नरिंद वर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री ब्याहना।

सबै भूमि अरि गाहि। आन फेरी चहुआन ॥
पऱ्यौ भान रघुवस। बीर बचे फुरमान ॥
माल्हन वास नरिंद। राज रष्यौ तिन थान ॥
वर बध्या अरि साहि। पून कव्यौ परवान ॥
वर वरनि वीर प्रथिराज वर। वर रघुवस बुलाइयौ ॥
दिन देव दसमि वर भूमि वर। तदिन सु रगन पाइयौ ॥छं० ॥४५॥

नियत तिथि पर ब्याह होना।

(१) ए कृ को लिन्नौ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छि ॥
देव ब्याह दुज्जन दवन। दिन पद्धरी सु अच्छि ॥ छं० ॥ ४६ ॥

मोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन दृत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु पंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिपत।

बर जंघन मृदु पंथ। कुरंग लज्जो छवि हीनं॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जौ सुवर।
जंबूअ राव हम्मीर ने। अगा काज दीनौ [1]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

मोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगंमद मधुर। चूम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [2]पिष्पिय सोमासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिंग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥

दूहा ॥ आयौ न्नप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे निघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कार। (२) ए.-दिप्पी।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते

(छत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना ।

दूहा ॥ इक तप पग नरिंद कौ । सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चंदेरी में शिशुपाल वंसी पचाइन नाम राजा राज करता था ।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिनथंभ । भान पचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम । हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कीनी ॥
मन मन्नवै विचार । रूप सिंगार स लीनी ।
लष्षन वतीस लच्छी सहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अत्तम्म उदे वर [2]चक्र विच । दिष्षि न कहु चक्रत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन ।

नाग वेनि सुनि पीन । कति दसनह [3]सोभत सम ॥
अषि पद्म पच मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति । नाभि दच्छना वृत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु । जंघ रंभा जुपि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित । चतुर चित्त हरनी विदुष ॥
सत पच गंध मुष सरिय सम । नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

(१) मो-अवरि । (२) को चक्र । (३) मो-सोमत ।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना।

गाथा॥ वर बंसी [१]ससिपालं। चिंतं जस संभलं बोलं॥
मन बयनं तन [२]बद्धं। रिनथंभं [३]मुक्कवै दूतं॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल॥ दूत आइ वर वीर सपत्तं। जग्गद हथ्थ दिए वर तत्तं॥
हंसावति अप्पै वर [४]रंभं। तजौ वेग उम्भौ रिन थंभं॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त॥ सुनि जद्दव रिन भान। तमकि कर चंपि लुहट्टौ॥
वर रनथंभ उत्तरौ। वीर बच्चौ [५]अहुट्टौ॥
वर कग्गद [६]कर फेरि। सुभ्रि करियै वर राजन॥
मतै बैठि कुंडली। प्रगा छची जिन भाजन॥
बुल्लइ न एन दुज्जन मिरन। तरन तार साधन मरन॥
वर वीर जुद्ध चालुक रन। हकारौ दुज्जन मिरन॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया॥ रिन थंभह वर उप्परै। चढ़ि गढ़ौ करि सोहि॥
हंस भरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई॥
जोग मग्ग लभ्भनह। षग्ग मग्गह मत होई॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकाह अथंमह॥
सब्ब जोग सहकाया। सब्ब तीरथ रनथंमह॥ छं० ॥ ७॥

(१) मो.-शिशुपाल। (२) मो.-बढ्ढे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उम्भं।
(५) ए.-उहठौं। (६) ए. कृ. को.-बर।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल। वीर पचाइन कोप्यौ।
सद्द मद्द गज जेमि। तमसि धीरज सम लोप्यौ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियौ वर वीर मिलान॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन वेर प्रमान॥
वर वीर अग्ग वसीठ चलि। राजद्दौ समुह दिसा॥
परनाइ कुअरि हंसावती। सु वर कोपि आयौ निसा॥ छं० ॥ ८

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये।

दूहा ॥ जस वेली रिनथंभ न्रप। फल पच्छै न्रप आइ॥
राजद्दव सुरतान सौं। कहि वर जाइ सुधाइ॥ छं० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त ॥ सीय [1]रष्षि रावनह। लंक तोरन कुल षोयौ॥
कपट रष्षि दुरजोध। पग्ग षोहनि दल [2]गोयौ॥
मतहीन वर चंद। कियौ गुरवार सुहिल्लौ॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। अजै जान्यौ न पहिल्लौ॥
रनथंभ मंडि छंडी [3]सरन। मिरन कहौ वर वीर सब॥
ससिपाल वीर वसौ [4]विलस। हम देषै आयौ सु अब॥ छं० ॥ १०

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं।

जीवन वल्लह विनोद। अल्लह नव्बी घन संगहि॥
जीवन वल्लह विनोद। आसि आसन्न असुर गहि॥

(१) ए रषी। (२) मो षोयौ।
(३) ए कृ को-रसंन। (४) मो विमल।

जा जीवन सुंदर। सुगंध वर बंधव लोकै॥
जा जीवन काजं। कपूर पूरन प्रभु कोकै॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन केलि आवन गवन॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन॥छं०॥११॥

भानुराय यद्धव का बसीठ की बात न मानना।

दूहा॥ २१ जद्दव बर भान नैं। बहु संथ्यौ वर हट्ट॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट॥ छं०॥ १२॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। मानह हथ्यौ न हस्स॥
तीस कोस सम्हौ मिल्यौ। वर पंचाइन ढस्स॥ छं०॥ १३॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त॥ अग्गिवान उजबक्क। धाइ भाई परवानिय॥
ता पच्छैं साहाब। षान बंधे तुरकानिय॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब। सेई संचारिय॥
केलीषान कुलाह। सब्ब सेनी कुटवारिय॥
बानिक्क बीर दुल्लह सुजर। भाइ षान रन अंभ बर॥
ससिपाल बीर बंसी विलस। बर आयो रनथंभ पर॥ छं०॥ १४॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा॥ पंचाइन बल पष्षरै। [1]थह रनथंभह काज॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यौ रन राज॥ छं०॥ १५॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी॥ ससीपाल बंसी चल्यौ कोपि रथ्थं। मनों बंक चक्रं ग्रस्यौ आनि पथ्थं॥
जलं जुब्बनं जूथ धावै तुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जै तुरंगा॥ छं०॥१६॥

(१) ए. कृ. को.-हथ, हथ्थ। (२) मो.-उरझ्झै, उरजै।

काहे वत्त रत्ती मुष रत्त आहौ। काहे अश्व आठू रनथम ढाहौ ॥
ससीपाल वसी चदेरीय राय। उथौ छत्र सीस कवी देपि गाय।
छं० ॥ १७ ॥

नग पति सुत्ती सिर हेम दडी। ग्रह अट्ठ मानों ससी मेच्छ मडी
फिरी पति राई रिनथम घेऱ्यौ। मनो भावरी भान सुम्मेर फेऱ्यौ
छं० ॥ १८ ॥

रनथभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मागना।

दूहा ॥ धन घेऱ्यौ रिनथभ पर। लिपि ढिल्ली परवान ॥
तब जद्दव रा भान ने। दिय कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना।

कवित्त ॥ रा जद्दव वीराधि। वीर गुज्जह अनुसरयौ ॥
हयदल पयदल गज। अरोहि रिनथँभ यौ अरयौ ॥
धधेरा धधेल। षद ससिपालह वसिय ॥
अध लष दलहि हिलोर। जोर गरुवत गसिय ॥
हम्मीर राव हाडा हठी। षीची राव प्रसग दुह ॥
प्रारभ करै सभरि धनी। जौरै वध षुमान सह ॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिहजी के पास कन्ह को भेजना।

दूहा ॥ सुनि कग्गद चर चित कौ। तिथि साते चहुआन ॥
समर सिध रावर दिसा। गुर जन मुक्यौ कान्ह ॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिह के पास पहुच कर समाचार कहना

कवित्त ॥ वर पचाइन सवर। सवर वसी ससिपाल ॥
घेऱ्यौ तिन रनथभ। सुवर जपे वर काल ॥
मान वीर पुकार। धाइ आई ढिल्लीवै ॥
अद्ध अद्ध पहु पग। सध्य अद्धो वर है वै ॥

जोगिंदराव जग हथ्थ वर। महन रंभ उप्पर सवर ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। [1]तुम आओ रचि सेन वर ॥ छं० ॥ २२ ॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा ॥ चित्रंगी चतुरंग सजि। वर रनथंभ सु काज ॥
वर सहेट रावर समर। आवन वदि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३ ॥
चलत कन्ह चहुआन वर। कहि चतुरंगी राज ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २४ ॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुंचेंगे।

पंच कोस वर सट्ठि अग। चीतौरह रनथंभ ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। महन रंभ आरंभ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा मान पर बड़ी विपत्ति है।

कवित्त ॥ महन रंभ आरंभ। कन्ह चालत मन मंडिय ॥
अट्ठ दीह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥
वर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्रप [2]मानं ॥
धरति धवर [3]तह नाम। सेत मिसि देही दानं ॥
अथहन थहन रिनथंभ मति। इह सुमित्त आयौ पढ़न ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। महन रंभ बज्यौ बढ़न ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

(१) मो.- तुम आओ सेना वरन ।
(२) ए. कृ. को.-मान । (३) ए. कृ. को. नाहि ।

सुनि कन्हा चहुआन । रीति आहुट्ठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि काढ्डन । मिलै जो कोटि देव बल ॥
संग्राम हरपै न । सुबर पत्नी वर धायौ ॥
रन रष्षै रजपूत । छत्र छत्त छाह नवायौ ॥
द्रिग रत बल बसै सुबर । वेद ब्रम्म बध्यौ चवै ॥
कालक राइ कप्पन विरद । कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग । हत्त मत्त वर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय माल दस । रष्पे कान्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय । वे सब मनि [1]गनि साह ॥
लष्षिय सब हथ्थिय ग्रहन । दीना सञ्च समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा।

चले कान्ह वर संग न्रप । समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि च्यवका वज्जिहै । धरकि वीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन।

कवित्त ॥ धरी पच वर सोम । दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि स्नच । सुगुर पंचमि बुध [2]चारिय ॥
अष्ट चार भय सूर । फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्कयौ । छड विय थानति अग्गा ॥
चित्रग राइ रावर समर । महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस वीर मेलान दै । सुबर वीर चतुरंग [3]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्थ । जानै कि सरित सागर समथ्थ ॥

(१) ए कृ को-नर साहि, नर साई ।
(२) ए कृ को नारिय ।　　(३) ए कृ को साजि ।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान । मानों समुद्द गिरि [1]गजिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुज्झै न मान रज [2]मज्झि सलीव । चकीय चकवे चलि सु फौव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग । बहु रुक्कि झंम घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि । जल होइ थलनि थल जलन रुमंभ
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान । मद [3]चलहि गंध गज शिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि । वर बरन बीच सोहंत जाहि ॥
पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि । चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

धन जिम निसान बज्जे विसाल । जोगिंद मत्त जग हथ्थ माल॥
पावस समूह रावर नरिंद । भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चीह । बोलंत सद्द कवि मधुर जीह ।
बरषहति दान गज [4]मद्द मान । फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सद्द झिंगुर झँकार । सुगज्झहि भसद्द बदि श्रवन थार॥
पावस समूह करि समर चल्लि । रिनथंभ दिसा मेलान मल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुराज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समर सिंह जी का आना ।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज । छंडि रनथंभ सँपत्तौ ॥
वर दच्छिन समरंग । बीर जोगिंद प्रपत्तौ ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि । सुकवि ओपम तिन पाई॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि । (२) मो.-मधि ।
(३) मो.-लीह । (४) मो.-मत्त ।

कुभ अंत्र डोलत। हथ्थ वरनै रस माई॥
चहुआन सेन चित्रगपति। चावद्दिसि वर विड्डुरिय॥
वर ढोह छंडि चदेर न्रप। जुग्गिनि ह्वै सम्हौ भिरिय॥ छं० ॥३९॥
दूहा॥ उत चपे चहुआन ने। इत चपे चित्रग॥
मूंदि सास अरि सम दरी। जनु [1]चप्यौ सु म्रदग॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व मे पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और वीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त॥ प्राची दिसि चहुआन। चव्यौ पच्छिम चतुरगी॥
दुहु वीच [2]रिनथंभ। वीच अरि फौज सु रंगी॥
दुहु सेन [3]समकत। [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी॥
मनु राका रवि उदै। अस्त होते रथभग्गी॥
ससिपाल वीर वसी [5]विमल। दुहुन वीच मन मेर हुअ॥
पह मिलै येह पग्गह हन्यौ। चवै चद रवि दद दुअ ॥छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पप अकुल्यौ। जुद्ध पचाइन मड्यौ॥
इक सपंप पग वीय। पेट रनथंभ सु छड्यौ॥
पीठि पड पावार। सु वर हुऔ नप पप॥
एक मुष्ष वन वीर। धीर उभ्भौ विय मुष्ष॥
न्निम्मान वभ वर पुछ कवि। पुच्छ पाइ साधन समर॥
दुह लोह कढ्ढि परियार ते। समर मोह भूल्यौ अमर॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी॥ मिले आइ [6]धाय सु आहुट्ठ राई। लगे वीर वथ्थै लगे लोह धाई॥
काढी वक अस्सी ससी वीय गत्ती। वरै ज्वाल सूर मनो हव्वि तत्ती॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए रु को-चपी। (२) ए-चतुरंग। (३) ए कृ को-चमकत।
(४) ए को-नग, नगा। (५) ए कृ को बिसल। (६) ए कृ को घाई।

कारै हक्क सोरुं महा मार मारं । धरं कित्ति सीसं तुरं पार पारं ।
बजे सव्व बीसं [1]तुरित्तं बषानं । तिनं सद्द अग्गैं दुरै वै निसानं ॥
छं० ॥ ४४ ॥

धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं । थकी रंभ उतकंठ मनों पंग तथ्थं ।
लगै धार धारं धरक्कै विवानं । गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवथानं ॥
छं० ॥ ४५ ॥

कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं । मनों ज्यों पुलंदी कढ़ै कंद हथ्थं ॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं । मनों दंपती संजुधं की सुरत्तं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं । महा दिष्षियै वीर रूपं करूरं ।
कटै कंध सूरं उड़ै छिछ भारी । झरै फूल तथ्थं सिरं डुंड भारी ।
छं० ॥ ४७ ॥

जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [2]जरूरं । उड़ै रेंन रावत्त कच्छे करूरं ।
धराधाव श्रोनी पलं भद्द जानं । गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं । मनो विज्जुमाला चमक्कंत चंगं ॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं । रवै दंड दंडं नफेरी सबद्दं ॥छं०॥४९॥
बहै षग्ग वानं मनों बग्ग पानं । रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं ।
भिरै भंति भारी परै जूह राजं । ढरै धाइ धंधेर बंधी सु पाजं ॥
छं० ॥ ५० ॥

[3]इलावार पूरं सरित्तान श्रोनं । तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं ॥
मुषं मेद पाटं सु घाटं षुमानं । भिरे भौर भारी सु अब्बे उमानं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

गहै नाग मुष्षी अरी जा उठायौ । मनों चंद संदेस पच्छै पठायौ
थहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं । रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं ॥छं०॥५२॥
पन्यौ षग्ग षीची भरं चित्रकोटं । जलं पष्प मच्छी धरं जानि ॱ
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं । थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो.-तुटित । (२) ए. कृ. को.-करूरं । (३) मो.-इलाचार ।

महादेव जुद्ध दिष्यौ मेस यान। धनी चित्रकोट ¹धसी सेन जान॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खा के बीच मे रावल समर सिह जी का घिर जाना।

कवित्त ॥ उत वसी ससिपाल। इतै रुस्तम्म दुद वल्ल॥
विचै समर रावर। नरिद वीरन गाहरमल्ल॥
उतै तेग उभ्भारि। इतै सिगनि धरि वान॥
छडि निधक्क अरियान। उररि पारी परि तान॥
रन तुग अवर चिते रिपुन। हवि सुप रुप सुक्कै नही॥
भर सुभर दार रष्पन सु वर। समर समर उभ्भौ पही॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना।

सम लरत्त वर समल्ल। दिष्षि चहुआन कियौ वल॥
वाम सुष्प अरोहि। नीर असि झल्ल मुषह झल॥
सौ सामत छै स्हर। सथ्य प्रथुराज सु धायौ॥
सार कोट अरि जोट। पग्ग पल्ल पभ हल्लायौ॥
जै जैत देत जै काहि। देव वीर आनँद वध्यौ॥
तारुन्न तुग तन तेज वर। असि पहार धर भर चढ्यौ॥छं०॥५६॥

रनथभ के राजा भान का समर सिह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेट करना।

दूहा ॥ रा जदव रिनथम तजि। मिलिय राव प्रति मान॥
समरसिह रावर सु प्रति। चरन चपि चहुआन॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनो का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

(१) ए कृ को मधी। (२) ए कृ को कीय।

*दिन धवलो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ ॥
समरसिंध रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मद्धि फौज प्रथिराज वल। रा जद्दव दिसि वाम ॥
समरसिंघ दछ्छिन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, वीर प्रसंसी, वर बीरं।
सेंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, भृग रारी ॥
बर टोप सु कांतिय, सूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम्म रारी ॥ छं० ॥ ६० ॥
गोरष्षन पाइय, कंठन लाइय, काढ़ि असि धाइय, विरुझाई ॥
परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, वसि सुरलोकं, सरसाई ॥
†वीरंग विचारै, डक्क हकारै, मंच मारै, उब्भारै।
छं० ॥ ६१ ॥

अफ्फार कि फारं, असि वर तारं, वंसेति मारं, सिर सूरं ॥
वर टोप समेतं, सिष्पर तेतं, असि आलेतं, हंसि सूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, मयउ समन्नं, ब्रह्मचारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

वर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि वर बालं, किल कालं।
‡नचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, वरि वरि सूरं, धरि मालं ॥

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिलसिला ठीक जँचता है।

(१) ए.-समनेजरि।   † यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

(२) ए. कृ को.-हारी चिर चिन्ह।

‡ यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाठ गौण मालूम होता है।

कर व्रन्न सु तुट्ट, धर धर लुट्ट, ओपम घट्ट, कविराज।
ओपम्म विराज, ज्याजल काज, मच्छवराजं, सक साज॥
छं० ॥ ६३ ॥

चष छिछत ओन, लगि घटि कोन, उप्पम होन, धन धाई।
कवि ओपम तासं, सूर विलास, माधव मास, फिरि आई ॥छं०॥६४॥

युद्ध मे मारे गए सैनिक वीरो की गणना।

कवित्त ॥ दस कम्मन अरि ठेल। सुरिय पचाइन सेन॥
वीर छक उत्तरी। सुत्ति भिरि रन रत नैन॥
सुरस पियौ प्रथिराज। प्रगटि अपिन जल झलकिय॥
पी अधरा रस पीन। प्रातसौ की सुप जक्किय॥
चहुआन सु वर सोरह परिग। समर सिध तेरह [illegible]
ससिपाल वीर वसी सुवर। सहस पच लुथ्थय [illegible] ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच [illegible] आक्रमण करना।

दूहा ॥ निग्रह [1]नर वछत न्रपति। अहि गवन [illegible]
पच अनी करि षेत चढि। षेत अरक [illegible] ॥ ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों [illegible] उनका परस्पर वार्ता-

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड। सोई [illegible] ॥
[3]त्रत [4]कुलस तन जान। [illegible] ॥
जिहि मरन मन सूर। [illegible] ॥　　। धाई॥
पच पच पथ गोत्र। [illegible] ॥　　॥
आई॥
॥

(१) ए० कृ० को निग्रह [illegible]
(३) ए० कृ० को प्रतियों में [illegible]
(४) ए० कृ० को [illegible]

घरियार रूपि सु कुठार धट। तंत मुक्कि लग्गी नदिय ॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुअ व्यापं लग्गंन दिय ॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]वर छीह ॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाहन ढाहे दीह ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ पंच चिराकन मग्गफ्फ नप। सो सोमित जुग्गिंद ॥
सुनि ग्रह सत्तह बीस [2]थह। लिय पारस मंडि चंद ॥
लिय पारस मंडि चंद। सुक्कित ससिपाल सु वंसिय ॥
अप्प सामि वर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बैंन बुल्लियै। घोरि ढंकी अरि रंचै ॥
कपट द्रोह करि इक्क। पथ्थ टारै [3]पच पंचै ॥ छं० ॥ ६९ ॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा ॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल फंद अरि कढ्ढि ॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चक्राव्यूह रचि ठढ्ढि ॥ छं० ॥ ७० ॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय ॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय ॥
मद सरक्क [5]तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह ॥

(१) मो.-बर वीह। (२) ए. कृ. को.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-पंच पंच। (४) ए. कृ. को.-पग।
(५) ए.-विन।

गोरधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उदै उदै वर अरुन हुअ। दुहू लोह कढ़ी विभर ॥
जल उकति लोह हिलोरही। कमल हंस नचै [1]सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

[र]सावला ॥ कर लोह कढ्ढै, रस रोस बढ्ढै। अंग अंग गढ्ढै, कथ सूर कढ्ढै ॥
छं० ॥ ७२ ॥
असी अच उढ्ढै, थट थट्ट गढ्ढै। हक सीस रढ्ढै, पग सूर कढ्ढै ॥
छं० ॥ ७३ ॥
गिध लोल रट्टै, द्रुन नच ठट्टै। थुती रंभ पट्टै, अंत तुट्ट जुट्टै ॥
छं० ॥ ७४ ॥
सिर अग बढ्ढै, लोह पच्छ कढ्ढै। कर किति मढ्ढै, वक वीन नढ्ढै ॥
छं० ॥ ७५ ॥
मुष चद पढ्ढै,   । सिंघ सम्भ रनी, लुथ्यि लुथ्थ घन्नी ॥
छं० ॥ ७६ ॥
सधि तुट्ट ऐसे, कध वध्य जैसे।   ,   ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ समरसिंघ दिष्षत सुवर। उप्पारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चँदेरी सुभाई। पग पोलि धाई, अरी सीस धाई ॥
छं० ॥ ७९ ॥
भिरत वजाई, रज तम्म छाई। विरुम्भाई धाइ, असी वक झाई ॥
छं० ॥ ८० ॥

(१) मो ज़ु।

किरनं उड़ाई, ससी ब्यंव पाई। सुतं [1]राति छाई, कवी किति गाई॥
छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों वताई, वरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्ति रासी, अवी अब्बि नासी। उपं राज जीतं, सु भारथ्थ वीतं॥
छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (वीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ वर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [2]जुट्टे ॥
अमर [3]बंध चिचंग। वीर पंचाइन वट्टे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोल्यौ विरगाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लड्ड नन लुष्थि न पाइय ॥
प्रथिराज वीर जोगिंद न्नप। दिट्ठ देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन। दिट्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०॥८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्टि लष्षि चिचंग। राज रिनथंभ [4]उवारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अग्ग। घाइ आहुट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज वीर वीरंग वलि। निसि सपनंतर अड्ड पहि ॥
[5]याग्गत्ति जागि देषै न्नपति। तबह कन्हे जलयोन लहि ॥छं०॥८५॥

(१) ए. कृ. को.-रारि। (२) मो.-सट्टे।
(३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मात्ति।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

इस [1]सुगति मानंनी। चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरुन सुंदरि सुचंग [2]हथ नयन प्रगट्टी ॥
हस काला अवतरी। कुमुद वर फुल्लि समथ्थै ॥
एक चित्त सोइ बाल। मीत सकार अस रथ्थै ॥
तेहि वाल संग में पूछ्य लिय। वरन वीर संगति जुवह ॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू। नवह देव नन मान वह ॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा ॥ *सो सुपनंतर देषि वह। सो तुअ वर वर नारि ॥
वे वर गज्जि नरिंद तू। हँसि हँसि पुच्छि कुआरि ॥ छं० ॥ ८७ ॥
एन वयन रुपह रवन। इन गुन इन उनमान ॥
धीरत्तन पूजत वर। सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ८८ ॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल ॥ सुनि सुवर वरनी रूप। तिहि चढन वै न्रप भूप ॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह ॥ छं० ॥ ८९ ॥
वय काम दिन पछितान। आवन दिन सुभ जानि ॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान ॥छं०॥९०॥

(१) मो गति। (२) मो-हय

* इस छंद मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

धन धलक वेदी काम। [1]द्रिग काल गौरभ वाम॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ। देपंत काम बजाइ॥ छं० ॥ ९१॥
बरछिज उन्नित बाल। बर काम चित चढि सालु॥
चित हरुअ गरुअ सुहंत। गुर गरू होत पढ़ंत॥ छं० ॥ ९२॥
जिम जिम सु विधा आइ। तुछ भरत तुछ सरसाइ॥
मति लघू अलघु प्रमान। [2]अंब निबंद समान॥ छं० ॥ ९३॥
बर मत्त पिछली जीअ। तहां रसन [3]हौनति पीय॥
गति हंस चढ़त सुभाइ। सुत बंटि [4]जसु अभिसाइ॥ छं० ॥ ९४
सैसब सु सुतन सुपाइ। जोवन्न रस सरसाइ॥
तिसहूंत गजगति जानि। . . .. ॥ छं० ॥ ९५॥
जसु पन्न चित क्रम मान। जिम संधि प्रथम गियान॥
प्राचीय सुष रंग सूर। प्रगट्यौ सु काम करूर॥ छं० ॥ ९६॥
बर बाल साहि सरूप। धट धरक कपट अनूप॥
वय बाल [5]जोवत काज। किप कपट उत्तर लाज॥ छं० ॥ ९७॥
मधु मधुर [6]अन्नत जानि। बेजियन सोषत बानि॥
मति मत्ति बरनी षाइ। तहां बाल बेस [7]छिकाइ॥ छं० ॥ ९८॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना।

कवित्त॥ कहि सुपनंतर [8]न्रपति। सु वह श्रोतान बढ़ाइय॥
तव लगि [9]भान नरिंद। बीर दुजराज पठाइय॥
[10]वर दुजराज पठाय। रतन उर कीनौ अप्पी॥

(१) ए. कृ. को.-दृग का लगौ सुभ वांम। (२) मो.-अव्र विन्द समान।
(३) मो.-हीनित। (४) मो.-अभि जनु माइ।
(५) ए. कृ. को.-जोबन। (६) ए. कृ. को.-उतम।
(७) मो.-लुकाय। (८) मो.-उपति।
(९) ए. कृ. को.-मान।
(१०) ए. कृ. को.-"हय हथ्यिय मनि मृत्त रतन उर किन्हे रप्पी"।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-10.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia,

AND

Syam Sundar Das B A

CANTOS XXXVI to XLIII



महाकवि चंद बरदाइ

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या

और

श्यामसुन्दरदास बी ए

ने

सम्पादित किया।

पर्व ३६ से ४३ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1907

मूल्य १)] Issued 15th July 1907 [Price Re 1-4

सूचीपत्र।

तिथ पंचम रवि भौम। लगन प्रथिराज सु थप्पौ ॥
कामलहु सुरीज किनौ कनक। किति लब्भौ दुज्जन वहिय ॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय ॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

वर पंचाइन समर। दंड मुक्किय वर मुक्किय ॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय ॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लद्धिय ॥
अम्रत भाग चिंत्रंग। सेन हालौं हल सद्धिय ॥
वारुनी वीर अस्सिय सु भर। अरिन पाइ जस रतन लिय ॥
मह महन रंभ हथ्थह कपट। सिंभ सीस वर अप्प लिय ॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का वारू वन को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा ॥ तब लगि मतन लगन दिन। न्रिप आपेटक जाइ ॥
वारू वन उभ्भौ न्रपति। मात दरस निस पाइ ॥ छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के वारू वन में शिकार करते समय सारंग राय सोलंकी का पितृवैर लेने का विचार करना।

कवित्त ॥ वारु विरल वन न्रपति। राइ आपेटक सारिय ॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि वर विचारिय ॥
समरसिंघ चढि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआन ॥
पिता वैर बहु वध। हुओ कार नार समान ॥
वर वैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अगयौ ॥
वर वीर वैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान वर मगयौ ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृवैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है।

दूहा ॥ वैर काज वर नंद सुत। वर वैरोचन हत्त ॥
करि वसीठ माली सुतन। वैर पुब्ब मन जित्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥

कवित्त ॥ सुनि मंत्रीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। कारन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बालि जान्यो न बंधगति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजै इसी भँति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। कित्ति एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ १०४ ॥
[1]कित्ति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
कित्ति काज विक्रम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
कित्ति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
कित्ति काज बर सिवरि। [2]मध्य कार कट्टि सु अप्पौ ॥
ꣳ रष्षंत [3]अचल गल्लां जियन। कीरति सब जग भल कहै ॥
लकंग एक जुग्गन विरह। रहै तो गुर भल्ला रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ केहरि काल केहरी हिरन। कारन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ल बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट जाल में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाहु सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंड्यौ चालुकां ॥
हाड़ा सौं हथलेव। मूल कट्टन [4]सोलुकां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पगार उद्दिग्ग तेन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी है परंतु इस "पिता वैर वहुतन्न, हुओ कर नार समान" पक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मस। (३) ए. कृ. को.-अचर।

ꣳ ए. कृ. को.-प्रतियों में "कित्ती काज श्रिय राम राज भामीछन दोनो" पाठ है और दूसरी "कित्ती काज विक्रम्म जैसे देसह घर लुक्किय" नहीं है। (४) ए. कृ.-को.-चालुक्का।

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक ने। [1]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै। करि जु निवतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिग। बर चालुक सु थान ॥
समर सिंघ चहुआन कों। न्योतन को बलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त ॥ एक ग्रह विच बीच। सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
पंच घट्टि पंचास। बीर अबी रज सच्चै ॥
तक्क लोह सह दीन। करै चालुक्क सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
मन तन्न सुष्य मिट्टै सधन। सुबर बीर सगह हलिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा ॥ आज हनद्दे पाप बर। ग्रह बड्डे बडराइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्य हनद्दे आइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतहीं अशकुन होना।

गाम वाम पैसत न्नपति। बन न्नप बोलत सद्द ॥

* इस प्रबन्ध में चालुक शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है।

(१) को मो-पाइक। (२) मो सन्नाहित।

फेरि बीर दष्षिन भयौ। बैरी कारन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन षिधि विधि सकल भय। अकल अपूरब वत्त ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त ॥ दे किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु मंग्रह ग्रह ॥
ठाम ठाल सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार।। विपन वर वर बन मुक्किय ॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर षवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवक निगट। समर काज उम्भौ समर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

दूहा ॥ तक्कि बक्कि उट्ठे [1]सुमर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मच्चौ समुष। बक्कत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त ॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कढ्ढी सु हक्कि कर ॥
बज्ज कढ्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढ़ी बर [2]अभ्भि सु सग्गी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बढ्ढी मन हग्गी ॥
कैधूं दुबढ्ढि बंदर सिरह। हलधर हल सिर भारयौ ॥
सामंत सट्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ ॥ छं० ॥ ११७ ॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को-आसि असे।

तेग हथ्थ झकझोर। वीर लिन्नो सु बथ्थ [1]भरि॥
दुतिय घात आघात। धाइ [2]अग्गा बर बाहै॥
कामल पति दत्ती। समूह दारुन जल गाहै॥
घट घाव भग भेदै नहीं। चौकाट जल घट बूंद जिम॥
आहुट्ट उग्र साहस करिय। पच तरोवत अरिन तिम॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना।

दूहा॥ नागमुषी चहुआन लिय। अरिन करन्न सु दाह॥
[3]हट्ट नपि उचाइ अरि। ज्यों काल वधि बराह॥ छं०॥ ११९॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना।

मोतीदाम॥ रन वीर खद्द कहै कवि चद। सु मोतिय दाम पय पय छद॥
कढै वर आवध वज्जत तूर। उठे परसद्द महस्सन सूर॥
छं०॥ १२०॥
नचै वर उट्ठि धर धर म्लूर। करै हवा देपि उसस्सि करूर॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मद्धि। रही तिन मझझ सुकीव समुझझ॥
छं०॥ १२१॥
दिपी दिपि [4]सुक्किव अच्छरि जुथ्थ। उपावहि [5]मत्त जु सुदर तथ्थ॥
उपावत मत्त सु छोडन घट्ट। चलत है विद्धि अगम्मनि वट्ट॥
छं०॥ १२२॥
[6]अपज्जस कित्ति तज्यौ अस राइ। चल्यौ अप अग्ग छुडावत जाइ॥
वर कुलटा छँडि छडि सु केउ। भुझै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ॥
छं०॥ १२३॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ। चली वर नारि अमग्गन धाइ॥
लरतह भूपति भान कुआर। करै मनु [7]वज्जय वज्ज प्रहार॥
छं०॥ १२४॥

(१) ए क्र को परि।   (२) मो लग्गा।
(३) मो हटट नपिड। * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष। (४) मो सुकवि,कुक्कवि।
(५) ए को मत। (६) ए अपजस। (७) मो मजूह।

लरै भर चालुक चंपत धट्ट। सचीरह नारि अगंम सुभट्ट ॥
त्रियं त्रिग लज्जन दर्छन जाइ। भजै क्रम सूर [3]चियं गय पाइ॥
छं० ॥ १२५ ॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न। उड़ै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न॥
सु उज्जल छोह चल्यौ रुधि छेदि। मनों जल गंग सु भारति भेदि॥
छं० ॥ १२६ ॥

तजै जर जग्ग भिदै रवि जाइ। परै धर मुत्ति जु सूरन आइ॥
॥ छं० ॥ १२७॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त ॥ बर बड़ गुज्जर राम। कूह वज्जिग बर धायौ ॥
पीलवान अरियान। [3]पील अरि पूर लगायौ ॥
नारिगोरि सा बात। तीर जल जोर सु बढ्ढी ॥
मीन रूप रघुवंस। पूर सम्हौ अरि चढ्ढी ॥
कल मलिनि कालिनि कालिकलन काल। लोह लहर सम्हौ हली ॥
अरि घरा फुट्टि बर [4]धार सों। सुमन लोह उड्डै मिली ॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंगदेव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ। [5]लुथ्थि पर लुथ्थिय हुट्टिय ॥
न को जियत संचयौ। न को जुझ्झयौ बिन षुट्टिय ॥
कोन जम सु जुझ्झवै। वैर मंगै सु पुब्ब अब ॥
ब्याज तत्त अप्पीय। मूल अप्पयौ कुटंब सब ॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ। नको षेत बिन मुक्कयौ ॥
संभाग बीर चहुआन कौ। सबै सथ्थ गोरी कियौ ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियअग (२) ए. कृ. को.-सत्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-" लोथि पर लोथ "।

पज्जून राय के पुत्र कूरमराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद। वीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त्र वस्त्र अरु सस्त्र। टूक लभ्भै न ढुढ धर ॥
विहर्त वीच अरु पड। एक [2]उग्गरि पॅडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय। नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
ढुढत अस्ति न सुझि परै। लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेद्यौ राह रुपह सु रवि। वरन वीर वैकुंठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार। सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पच। सेन सभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अगए। चूक एकान ठट्टनवै ॥
उद्दिग दार पावार पर। पहुर तीन तुथ्यौ करन ॥
आचिज्ज सूर मडल सुन्यौ। सहु सथ्थै [4]बध्यौ सुतन ॥छं०॥१३१॥

रेन पवार (सामत) की प्रशसा।

कुडलिया ॥ मरन न लद्धौ तुग तिहि। सब सथ्थई पवार ॥
सोमेसर नदन [5]छला। गहि गज्जे गमार ॥
गहि गज्जे गमार। तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूकि चालुक्क। स्वामि कढ्यौ बर वारन ॥
[6]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्था तन ताइ। तुग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पवार के भाई का सारग को पकडना और पृथ्वीराज का

(१) मो -मत। (२) ए ठगरि। (३) मो -रावन।
(४) ए कृ को मड्यौ। (५) ए कृ को झला। (६) मो हेसतथ्यान बधेरन।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना ।

कवित्त ॥ बंध देन लिय रज्ज । चाड़ चालुक छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी । हेल हम्मीर बढ़ायौ ॥
षेल षग्ग षुमान । पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो षीची परसंग । राइ तुस्सै दल लीनौ ॥
अंकुर्‍यौ अरिन रिनथंभ सौं । सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राह ससि संमुह गहन । जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए ।

भयौ भूमि भूचाल । संध समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्दै सिंदूर । सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टे तेरह [1]तुरंब । सथ्थ बंवर बर धारी ॥
बार बार रावत्त । हरउ बर बाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय । मिलि षुमान चल्ल्यौ षलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहिं । पल संमरि पंषिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना ।

कुंडलिया ॥ बंधे वर हुस्सेन । षान बल सुवर कुंआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह । कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि । मेछ सुंदरी वधेरी ॥
समरसिंह सुनि कूह । चियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन । हद्द अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार । समर हेतु वर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-तुररा ।　　(२) ए. पीठ ।

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी वहिन व्याह देना।

दूहा ॥ अमर वंध रष्यौ अमर। अगि दीनौ वर माल ॥
जस वेली चतुरंग कौ। वरन धस्सि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसवेली [1]वरिगौ चतुरंगी। चढि चौडोल ग्रेह अनभंगी ॥
वरन राव रावल संजोगी। सु धर फेरि चालुक्क न भोगी ॥
छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि संदेह। सद्द सावद्द कवीयस ॥
प-यौ वीर जद्दव। नरिंद चंदेल [2]छवीयस ॥
गूडराइ सनसलह। जुद्ध लोह लरि वित्ते ॥
मु-यौ सेन पुब्बहि। पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[3]अप्पाह अप्प वीतक वित्यौ। वधि चँदेल सज्जै सुहर ॥
आवद्ध वीर मत्तौ कहर। गही गल्ह वधी सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

षुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना।

गाथा ॥ जित्तराय षुमान। निसाने सद्दय धाय ॥
छुट्टा रन रनथंभ। पा पग्गे पीचिय राय ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ पीचीराइ हमीर अवन्निय। दोइ चहुआन धरम्म भवन्निय ॥
चालुक्का सों चूक सवन्निय। दुत्तिय दीपता निरवन्निय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन अंग मे। राज विहंग गति कीनौ ॥
मध्यदेश मालव नरिंद। हंसध्वज भीनौ ॥
नीलध्वज कर धरिग। विप्र वदन सपनौ ॥

(१) ए कृ को परिगो।　(२) ए कृ को सवीयस।　(३) कृ अप्पाह।

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंनह सुभ किन्नौ॥
सत पञ्च लगन लम्भइ भरिय। धरिय अठ्ठ तेरह तिनह॥
रनथंभ सेन संचरि नृपति। करिय अवधि ताकरि रनह॥
छं० ॥ १४१॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा॥ आगम बीर बसंत को। रन जित्ते जुधवान॥
बर हंसावति सुन्दरी। चलि ब्याहे चहुआन॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन।

गाथा॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यों कुंजिन मेलयं सब्बं॥
बय रुष सुष अंकुरियं। सो मिलयं बंकुरी मुच्छं॥ छं०॥ १४३॥

दूहा॥ मुच्छ रवन्निय राजमुष। बर बंधिग सुरतान॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान॥ छं०॥ १४४॥

दोधक॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरनौं बर जानय॥
नीति अनीति सुमं सरसानय। लम्भर कित्ति लही चहुआनय॥
छं०॥ १४५॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुट्ठिय।
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संग्रहय गानकला कल सथ्थिय।
छं०॥ १४६॥

छंदह छंद रसे रस आनन। कंठ कला मधुरे मधु आनन॥
उद्दिम मैन उदार सुधारिय। [1]नृज्जय रूप सरूप सुरारिय॥
छं०॥ १४७॥

दूहा॥ श्रवन रवन अरु सिष भवन। पवन त्रिविध तन लग्ग॥
वापी कूप [2]तड़ाक रुष। विधि ब्रंनन कवि लग्ग॥ छं०॥ १४८॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोखे से झांकना।

(१) ए. कृ. को.-नृयज्जय, नृयजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

सा सुंदरि हंसावती। सुनि ओतान सुरुष्य॥
बर दिष्टा नन मानियै। बेला लग्गि गवष्य॥ छं०॥ १४९॥
सुनि आयौ चहुआन अप। गुरुजन बध्यौ जानि॥
तब मति सुंदरि चितवै। भेदक गौष वषान॥ छं०॥ १५०॥

गौख मे से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन।

कवित्त॥ पथ बाल पिय झंकि। सुभ्रित विटिय सु राजै॥
मनों चंद उडगन बिचाल। मेरह चढ़ि भाजै॥
सुनिय श्रवन दै सैन। अलिन अलिमैन सरोज॥
रति मच्छर मति काम। जानि अच्छरि सुर सोज॥
धावत वेस अकुरित वपु। वसि सैसव तिन वेस धुरि॥
ओतान सुष्य दिष्टान धनि। यह कहि चलि सैसव बहुरि॥
छं०॥ १५१॥

दूहा॥ प्रथम वत्त ओतान सुनि। सुष पै दिषहि सलोइ॥
सब बात झूठी चवौ। तब जिय सुष्य न होइ॥ छं०॥ १५२॥
सुनि ओतान सु मन्निय। दिपि दिष्टात सचीय॥
बीज चंद पूरन जिमं। बधै बाला मनि जीय॥ छं०॥ १५३॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी।

बर बेहरि देषी न्रपति। गौ न्रिप न्रिपवर थान॥
बालु सुअवर काज कौ। बर बज्जे नीसान॥ छं०॥ १५४॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन।

आभूषन भूषन न्रपति। बैसंधि कहि न कविंद॥
कवि अनन दूह लग्गि न्रिय। ज्यों बृढत लधु चंद॥ छं०॥ १५५॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन।

कवित्त॥ बर भूपन तजि बाल। सुबर मज्जन आरंभिय॥
सोइ छबि बर दिष्षनह। कोटि [1]ओपम पारंभिय॥

(१) मो-उपमा।

बर सैसव बर चंपि। कंपि चिहु कीद झपायौ॥
सो ओपम कविचंद। जोनु बूड़त नल धायौ॥
बालपन बीर बर मित्र पन। रवि ससि करि अंजुरि भरिय॥
वय बाल [1]उबीचन प्रीति जल। सैसव तें हरई करिय॥ छं०॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैन॥
बाल भरी घरियार ज्यौं। नेह नीर बुड़ि नैन॥ छं०॥१५७॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम॥ कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद।
लटिं भिंजि बार रही लपटाइ। मनौ दिढ़ सुक्र लग्यौ ससि आइ॥
छं०॥१५८॥

बि ओपम दै बरनै कविराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज॥
बहै जल भेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार॥
छं०॥१५९॥

जु राहय चास पियै विष सोम। द्रवै मुष चंदह मत्तह भोम॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि। धरैं घन धारत संत सँवारि॥
छं०॥१६०॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोल्हो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच॥ कियं सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं॥
सुगंध केस पासयौ। बिहस्थ हथ्थ भासयौ॥ छं०॥१६१॥

उपमा जोस साधयौ। बिरंचि लेष बाधयौ॥
जु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवता प्रगासयौ॥ छं०॥१६२॥

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

[1]जु केस मुत्ति सजुरे। ससी सराह दो लरे॥
मनोस वाल साच ज्यौ। कि कन्ह कालि नाच ज्यौ॥छं०॥१६३॥
परी नवैन कथ्थयौ। जु कन्ह कालि मथ्थयौ॥
तिलक्क भाल भासयौ। मलक्क काल साचयौ॥ छं०॥ १६४॥
विधार गग पावयौ। जु तिथ्थराज आसयौ॥
धसत सोमता वर। कलीन भद्र सावर॥ छं०॥ १६५॥
सुभाव वान [2]वाढयौ। सुराह कपि ठाठयौ॥
सु पट्टि वाल ठानयौ। सु राह रूप जानयौ॥ छं०॥ १६६॥
उपम्म नेन ऐनसी। मनौ कि मीन मैनसी॥
कवी [4]निसक जानयौ। उपम्म चित्त मानयौ॥ छं०॥ १६७॥
भवन्न जीव छडयौ। ससीम रूप मडयौ॥
उपम विंव उग्गन। कमल्ल जासु सुम्मन॥ छं०॥ १६८॥
रुलत मुत्ति सोभई। उपम्म अत्ति लोभई॥
अम्रत्त तार विच्छुरी। दु चद अग्ग निक्करी॥ छं०॥ १६९॥
सु तारि हस सामर। अनेक भेस तामर॥
विभास रूप जामर। सु चद चित्त साहर॥ छं०॥ १७०॥
रतन्न विव जानय। सु चदवी प्रमानय॥
चिवल्लि ग्रीव सोभई। जु पोति पुज [5]लोभई॥ छं०॥ १७१॥
ससीह राह छडि कैं। असन वैठि मडि कैं॥
डर हरा विसाल यौ। कि ईस दीप मालयौ॥ छं०॥ १७२॥
उर चिअग जित्तयौ। जु सुक्क वग्ग पतयौ॥
कि काम वीर भजयौ। दहत्ति ग्रेह रजयौ॥ छं०॥ १७३॥
उपम ईस [6]कुचयौ। अनग नीति रच्चयौ॥
रोमग तुच्छ राजय। उपम्म ता विराजय॥ छं०॥ १७४॥

(१) मो सु।　　(२) मो बाटको।　　(३) मो ठाढको।
(४) ए कृ को सक।
(५) मो लुम्भई।　　(६) ए चक्कयौ।

उरज्ज पत्र काम को। लिपै जोवंत वाम को ॥
कटी अलष्यता ग्रही। मनों कि रिद्धि रंकई ॥ छं० ॥ १७५ ॥
कि सोभ द्वै नपं रही। तुला कि दंडिका कही ॥
रुलंत छुद्र घंटिका। सदंत सद्द दंडिका ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जु जेहरी जराइ की। धुरंत नद्द पाइ की ॥
नितंब अद्ध तुंबियं। प्रवाल रंग [1]धुम्बियं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
कि काम रथ्थ चक्रए। चलंत एड़ि वक्रए ॥
उलट्टि रंभ जंघनं। करी सु नास पिंडनं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
उपंम रंग राजही। जलज्ज भांति साजही ॥
बसन्न सेत बन्नयं। उपमा कव्वि भन्नयं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
मनों कि दीय अंभयं। सुमंत मध्य रंभयं ॥
दसन्न जोति दामिनी। मनों अनंग भामिनी ॥ छं० ॥ १८० ॥
सुगत्ति हंस लीनयं। सिंगार सोभ कीनयं ॥
झंकार झंजनं झनं। मनों कि सोर मद्दनं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
सु कासमीर रंगयं। जु एड़ि जावकं लयं ॥
मनों कि हंस सावकं। चले बिद्रुमा भावकं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
[2]जरित्त मुद्रका नगं। सु जोति अंगुली लगं ॥
जुवास रास बासयं। मनों हुतास पासयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
[3]दिपंति नष्ष बीसयं। रवी ससी सुरीसयं ॥
नव ग्रहीय पुच्छिया। उपमा कव्वि बंच्छिया ॥ छं० ॥ १८४ ॥
जु चंद राहु बेदि कै। कि हेला चंद भेदि कै ॥
उभै तिषट्ट भूषनं। सजंत मेटि दूषनं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चलंत वाम कोड़यं। तजंत हंस होड़यं ॥
उमग्गि प्रिथ्थि देषनं। अलीन मग्गझ पेषनं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
सु सैसवं लगंत रष्षि। मुक्कियं दरस्स दिष्षि ॥
॥ छं० ॥ १८७ ॥

(१) मो.- धुम्भियं,को -पुव्वियं। (२) मो.-जरिंत। (३) मो.-दियत्ते।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन।

हनूफाल ॥ सुर मनौ कोकिल जोइ। अवजध रचन होइ ॥
अवर कमर्ल पुटन्न। रितु देषि सीत बसन्न ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह सधि रभ दसन्न। बनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
कसि कासमीर सुरंग। झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि। रवि परी होड सुजानि ॥
नौ ग्रहित्र पुचित्र हथ्थ। उपम्म चद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चद उप्पम वेदि। कै हँसत हिमकर भेदि ॥
वर एडि मडि सुरंग। जनु प्रभा रवि ससि सग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
घट दून भूपन सज्जि। सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड। गति हस तजहित होड ॥ छं० ॥ १९२ ॥
बर चरनं लगि चिपयान। पंय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पानं सलाइ। वे काज काम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
तव लग्गी सैसव रष्षि। मो [2]कत दरसन दष्षि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन।

कुडलिया ॥ वर कुकुम सब सथ्थ रगि। बहु सथ [3]न्रप वर सथ्थ ॥
सो ओपम वर राज लहि। कवि वरनन लहि कथ्थ ॥
कवि वरनन लहि कथ्थ। फिरिय गुर राजहि कथ्थं ॥
मन ससितर काम कौ। प्रात उग्गत रवि सथ्थं ॥
[4]सुम्रत रवि ससि रूप। एक असु जीव काम तर ॥
पचानन तिन होइ। पच प्रथिराज देव वर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीरज का विवाह मडप मे प्रवेश।

दूहा ॥ वदन वर आयौ न्रपति। तोरन सभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै। कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

(१) ए कृ को यान।　(२) मो-कहत।　(३) मो उप।
(४) मो कै सुभूत सासि रूप।

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (ब्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ नग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्तौ लोभ ॥
संग सपत्तौ लोभ। जुड तट वर अन रुक्की ॥
रहै न्रपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
पंचन पष चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। सूर मंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग किन्न अवंत अली। नंषत वर अचित [3]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रूप रस [4]सानि। पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुल्लित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु बर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। महुर महुरं रस पिन्नौ ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥
नव भमर पिट्ठ वर कमल में। कै मकरंद फुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥छं०॥१९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा ॥ बर अंचल सोमेस चित। बंधि बीर बर नारि ॥
देवकाम दुज काम कहो। सो बर बीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

हंसावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-मग्गा मग्गा।
(२) ए. कृ. को.-पिय।
(३) मो.-मानी।

कवित्त ॥ बैनि नाग लुट्टयौ । बदन ससि राका लुथ्यौ ॥
नैन पदम पसुरिय । कुंभ कुच नारिंग छुथ्यौ ॥
मद्धि भाग प्रथिराज । हंस गति [1]सारंग मत्तौ ॥
जंघ रंभ विपरीत । कंठ कोकिल रस मत्तौ ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक बरन । दसन बीज दुज नास बर ॥
सेना समन एकंत करिय । काम राज [2]जीतन सुधर ॥ छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ कवि लघु लघु बत्ती कही । उकति चंद मन छेव ॥
मनो जनक बदन बावन । जानु कि बंदै देव ॥ छं० ॥ २०२ ॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत । चूक सब सेन सु दिष्यिय ॥
घट दस बर सामंत । मरन केवल मन लिष्यिय ॥
पंत निसुरत्ति समूह । जूह दैवान सु धाइय ॥
मार मार [3]उच्चरंत । मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब सामंत रजि । तिन अरि तन तिन बर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध । सुवर जुद्ध रत्तौ करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे । कायरं बिडुरे, लोह मची झरे ॥
छं० ॥ २०४ ॥

पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं । कढ्ढिय पंजरं, नंष्यि लोहं करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

सूर बध्ध परं, मोह मोहं परं । कूक बज्जी परं, लोह बड्डप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

(१) ए कृ को सारद । 　　　(२) मो आपन ।

* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छं० २२० में खुलती है।

(३) ए कृ को उचंत, उच्चंत ।

अग्ग उठ्ठी झरं, बीर बाजं ढरं। श्रोन रतं [1]धरं, अंत आलुझ्झरं।
छं० ॥ २०७ ॥

सूर जा उच्चरं, रारि छग्गं जरं। लज्ज पब्ब परं, लोह लोहं करं।
छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि अद्धी वरं। बाज कुट्टी झरं, षान झारा भरं।
छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मोरं धरं, मझ्झ रोसं ररं। सानि सामं नरं, धाइ घुम्मं परं।
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ काम्र बंध मग्गमैं रह्यौ। रहे सु जैत कु आर ॥
है मुक्किव सामंत गो। उप्पर मेर पहार ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात षान सुरतान। सेन [2]बंधी अहसारी ॥
बर सोभै कविचंद। चंद अष्टमि आकारी ॥
अद्ध चंद्र महमूंदि। अद्ध षुरसान षान करि ॥
मध्य भाग सुरतान। सेन षुरसान जित्ति [3]वरि ॥
दुल धरकि भरकि सिप्पर लई। अरुन दीय उद्दिम सुभर ॥
चिचंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ [4]बंधव अमर ॥ छं० ॥ २१२ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

त्रोटक ॥ सारंग चढ्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं ॥
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयंटन की ॥
छं० ॥ २१३ ॥

धननंकहि घुग्घर पष्य रनं। ठननंकहि आइ प्रसद्द घनं ॥
[5]बर चिक्किय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुग्घुर रेनिय आस घटै ॥
छं० ॥ २१४ ॥

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को. बर। (४) ए. कृ. को.-बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"वर चपि

तमके तम तेज पहार उठे। वहुरे किधु पावस अभ्भ वुठे ॥
कविचंद सु असुय [1]साव धरे। चय [2]नेत्त जु गग समीर परे ॥
छं० ॥ २१५ ॥

दोउ दीन अनदिय तेग छुटी। सु वनै चहुआनय सार टटी ॥
छं० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ उठ्ठि ढाल चहुआन वर। बढ़ि अवाज परवान ॥
सुनि वरनी सों रत्त तिन। सत छुट्टे वर थान ॥ छं० ॥ २१७ ॥

थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड गए।

कवित्त ॥ धुअ मुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि ॥
धरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरग सेन भजि ॥
जुद्ध कथ कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्ट ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत है वै वर लुट्टे ॥
प्रथिराज वीर रावर समर। मिलि [3]नषित्त पति ग्रहन गिरि ॥
धर लज्जि लज्जि आहुठ्ठ पति। तीन वार अठ्ठ ग गिरि ॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त मे लूट मे एक लाख का असवाव हाथ लगना और पीरोज खा का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरग। चारु चतुरग समोरी ॥
[4]एक लष्य प्रमान। ढाल गोरी ढढोरी ॥
षा पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी ॥
समर सिघ रावर। नरिंद झोरी करि डारी ॥
वज्जे निसान जयपत्त के। [5]बिन सुरतानै लुट्टि दल ॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छत्र रषत्त तल ॥ छं० ॥ २१९ ॥

---

(१) मो साच।　　(२) मो नेत्र।　　(३) ए क को नछित्र।

(४) मो-"एक लष्य पम्मर प्रमान" ए कृ को एक लष्य पष्पर प्रमान।

(५) मो-"बिन सुरतान सु लुट्टि दल"।

पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्ब सामंतन मन्ने ॥
उभ्भ भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने ॥
नैन चैन लन बैन। हीन सुषन्न कढ़ि दोऊ ॥
बर समान तुम रोज। तेग राजन विधि कोऊ ॥
रष्षयौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर ॥
चित्रंग राव रावर समर। [1]पाध सीस बंधी अमर ॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा ॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुत कुंभ नरेस ॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तौ सोमेस ॥ छं० ॥ २२१ ॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त ॥ तब चित्रंग [3]नरेस। पिक्खवि नंष्यौ वर पट्टौ ॥
तुम हूंढ। कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर ॥
हम आहुट्ट मक्कामि। स्वामि कहिजे सु [4]उंच वर ॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरुद। कुलह कलंक न लग्गयौ ॥
दग्यौ न हाथ [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ ॥छं०॥२२२॥

(१) कृ. पाय।

(२) छन्द २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में समान है अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम धरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ भेद पड़ता है।

(३) मो.-नरिंद। (४) मो.-चद। (५) ए. कृ. को.- बिरद्द।

(६) कृ.-चीनौर।

समर सिंह का चित्तौर जाना ।

दूहा ॥ ग्रेह गयौ चित्रंग पति । गौ ढिल्लिय न्रप छेह ॥
मास वीय वित्ते न्रपति । मतौ मंडि न्रप एह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ।

विमल विलोकन कोक रस । सोक हरन सुष सत्त ॥
ससुष हंस प्रभु नीलनभ । विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।

भुजंगी ॥ द्रिगं मत्त मत्तं सुमत्तं प्रमानं । वियकेलि कारनी विधानं सुजानं ॥
निजं नेह नीलं सु कीलं कलानं । सुष मूल विप्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

मयं मोह मंडं सु वंदीन दानं । हयं हेम हड्डं पताका सु थानं ॥
[1]सु रूप च सोभा स सोभा स मत्तं । [2]छयं छंद जोतीय ससाइ तत्तं ॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तत्तं सु कंतं सु थानं । सुराया विहंगं सु पुच्छी प्रमानं ॥
लियं ग्रेह सज्ज्या प्रथम्मं अलीनं । मनों मत्त मातंग [3]बंध्यौ कलीनं ॥
छं० ॥ २२७ ॥

वचं अंकुसं हेट हेटं चलावै । दुरै देषि आलंतरे फेरि नावै ॥
छुट्यौ सैसवं लज्ज ते प्रेम आसं । फिरे जानि बालो तनं प्रेम त्रासं ॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील थाहं । कवी केलि कंठे यकी सच्च स्याहं ॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं । कला केलि बढ्ढी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सदान सेजं । सदा स्वेद षेदं हुओ प्रात हेजं ॥
॥ छं० ॥ २३० ॥

(१) छ को सुष ।　　(२) मो-" छय दुत्तिय छन्द छम्माय तत्र ।
(३) मो बन्धे ।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

*कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन । रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय [1]वदन सहि रहिय । सरस रस सोर सु लुट्टिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय । [2]हद्दय हय हयइ यथा [3]हह ॥
सहिय सेज कह कहिय । चंपि चिंचनिय मन्न थह ॥
कामंध अंध मुद्दह वृषभ । भ्रमन भ्रमावह तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह । अगह मुगद्धन मन हसन ॥ छं० ॥ २३१ ॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भाँति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन हिय वृत्तन मुगधनिय । रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]म्रग रथिय । निसि निमाल दिय छेह ॥ छं० ॥ २३२ ॥

शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कमंध ॥ निमाली नेह नासा । दिष्ट एन लग्गी सु त्रासा ॥
छेहंग कामी रसा । संचान भग्गी त्रसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची । दासी प्रीति संवची ॥
†पुस्तका पढ़ि बिस्तारी । कथा गाथा प्रेम बिस्तारी ॥ छं० ॥ २३४ ॥
दंत कांडका निसारी । हास बिलास सुसारी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं ।
सस [5]सज बंधू चक्रवाकोपि कीरं ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद। (२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मग्गथिय। (५) मो.-समं ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

तिमिरगजमृगेंद्र चन्द्रकातप्रमाथी ।
विकसि अरुन प्राची भास्कर त नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीर सागरा नद हेतु ।
कुमुद बन विकासी रोहीणी जीव तेस ॥
मनसिज नस बधु मानिनीमानमर्दी ।
रमति रज निरमन चद्रमा त नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये।

मुरिल ॥ बछय चद चकोरत राजन । [1]हसनि हस उदै भयौ साजन ॥
बिहु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय । कनक जेम कसि कर [2]आहुट्टिय॥
छं० ॥ २३८॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फदा । बिसनी पत्त बलाकरे हथ्थ ॥
मरकति मनि भाजन्ने । परठिय पहुप सु तीय ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना।

झिल्ली झिंगुर खरी । गायन पुनीय ललित लुभ्भरिय ॥
पहुकिय पप सु हास । झलकिय सीताइ मद मदाइ ॥छं०॥२४०॥
किय मडि स पुकरिय । मैन राइ सिरीय बंधाय ॥
पर दार चौर साही । पुकारे जाहु रे जाह ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढती हुई रात्रि के साथ दपति में प्रेम बढना।

पपट करि करतार । हसा सयनेव हस सह पायं ॥
निसि बड्डय अकुरिये । कुक्कडय [4]कठ कलाय ॥ छं० ॥ २४२ ॥
अचलीय नेह ससी हर । [5]रसनह रगी सुरगय देह ॥
उवकठय सदेस । गावै एकत चित्त सलाइ ॥ छं० ॥ २४३ ॥

(१) ए कृ को हसति, हसति ।　(२) ए आहुट्टिय ।　(३) ए कृ को सहास ।
(४) मो कठक ।　(५) ए कृ को "अचलिय नेह से सहिए" ।
(६) ए कृ को रसरह ।

हे मौनं करि कोकिलयं। जलधर सम एह कंठ [1]उंचत ॥
विकसित कर जल बंदे। विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० ॥२४४॥
संग्राम गए सूरो [2]संपगे। होइ चंद्रोदए ॥
विविधा काम तीयं। अवसर रत्त [3]काम लम्भाइं ॥ छं० ॥ २४५॥
गाहा नक्रिय तत्ती। सदानं नूपुरं उरवा ॥
[4]जिह अंकुर पव्वितं। मूतं जुध्धांइ मंग भंगुरयं ॥ छं० ॥ २४६॥
जोई छविना वेनं। रचया सि महिला न रूप मह कामले ॥
तां नंचिय सु वियोगे। निमह सुत्तंच जुग्ग जुग्गाए ॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे।

पीय आरंभत चियथं। चिय आरंभ कंतं [5]चित्तायं ॥
सो तिय पिय पिय पतौ। मा पिमं [6]विद्दमं धामं ॥ छं० ॥ २४८॥
अजा [7]सन्न जो होजा। कंठायं पयो हरं फालयं ॥
दीहंते सय लब्धं। हसनं रस नाय स बकियं होई ॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाओ। उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग्ग सुहाई। दिस असनी रसं नायं ॥ छं० ॥ २५० ॥

कवित्त ॥ रयनि पंच संकुलित। पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि षग्ग। मग्ग लग्गिय जुर जोइन ॥
[8]मिलत चतुर इक रीय। अतुर अह अहं [9]दद्दुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त। नष अष [10]बष्ष बल ॥
आरति सोइ दइता बिछुरि। पार [11]समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रात पतिव्रत प्रथम पहु। नवति चित्त आचंभ लहि ॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन।

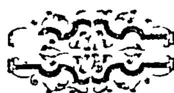
(१) ए. कृ. को.-उचंती। (२) ए.-सष। (३) ए. कृ. को.-कान।
(४) ए. कृ. को.-"निद अकुर ए वित्त"। (५) ए. कृ. को.-वितायं।
(६) मो.-बंदय। (७) ए. कृ. को.-सानंज।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है।
(८) मो.-माचित। (९) ए. कृ. को.-दुदुर।
(१०) मो.-चष्ष। (११) मो.-समुद्रिन।

कवित्त ॥ हमराइ [1]हसनिय । पानि अहनी ग्रह हस्तिय ॥
मानव द्रुग्ग देवास । [2]वास सुद्धत नव वस्तिय ॥
हय गय धुर धर भ्रम्म । कम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथभ । प्रीति पीची चौहानह ॥
चित्त ग राइ रावर रमिय । [3]देव राज जद्दव वहिय ॥
वित्तिय वसत रिति अम्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चद छद [4]वाचिचद ॥
समर अठारह वरष दस । दिवस त्रिपच रविद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासके हसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्ताव सपूर्णम् ॥ ३६ ॥



(१) ए ससनिय ।
(२) मो वस सुम्त नवस्लिय ।
(३) ए कृ को -चेदराम ।
(४) मा कवि छद ।

अथ पहाड़राय सम्यौ लिष्यते ।

(सैतीसवां समय ।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाडराय तोअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा ॥ दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ।

कवित्त ॥ संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्प प्रम्मधुर ॥
चनिय दीह अहल्ल । उदित रवि व्यवे वरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गहअ [1]गज्ज [2]विसम्म गन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कामल्ल मन ॥
साहाव दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठड्डौ सु बर ॥
अष्यै ततार षुरसान षा । कहा पबरि चहुआन घर ॥ छं० ॥ २ ॥

तत्तार खा का उत्तर देना ।

गाथा ॥ उच्चरि षान ततार । अरि वरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत सूर संभार । मत्त अमित समित जमकार ॥ छं० ॥ ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढाई करने की सलाह करना ।

भुजंगी ॥ कहै साह साहाब तत्तारषान । रचौ मंडली मंडि दीवान थानं ॥

(१) मो गज्ज ।   (२) र रु को विमग मन ।

अरी [1]षान दिष्षौ बरं आसमानं। [2]करौ कूंच सेना प्रकासंत भानं।
छं० ॥ ४॥

दलं लष्ष तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं किति सूरं॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत बैताल मत्ते मद्दूरं॥
छं० ॥ ५॥

हलाहूल झंकार हुंकार झारौ। तुटै तेक तानं झरं धूमि धारौ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। धनं सिंदरे चोर नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सझोलं॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे॥
छं० ॥ ८॥

असं बेस कंपी ढुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फौजं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध्य [5]व्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल बैताल सिंदू सबैनं॥
वनै अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छंत रैनं॥
छं० ॥ १०॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रूपं॥
अनी कोर आकार आक्रत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पयो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११॥

(१) ए. कृ. को.-पान। (२) मो.-करौ कूच सेनाइ सासंत भान।
(३) ए. कृ. को-त्रिमानं त्रिमानं। (४) मो.-हगे।
(५) मो.-आत।

मही मडि माय। रहे लोपि माल। पिले [१]पग्ग अग्ग वल बोलि ताल॥
नव नद नीसान [२]भेरी भयान। मनो मेघ गज्जे कयान पयान॥
छं० ॥ १२॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा ॥ [४]तव ततार षुरसान षा। सुनौ साह साहाव॥
अवि अभग दल सक्क रस। अमित तेज वल आव॥ छं० ॥ १३॥
अरुन वरुन उदित अरुन। वढि प्राची रुचि [५]रुप॥
मेच्छ सामि चढि सेत अस। रन दिल्ली सम भूप॥ छं० ॥ १४॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ कर पडाव डालना।

कवित्त ॥ अरुन कोर वर अरुन। वदि साहाव साहि चढि॥
दिसि प्राची दष्षिन [३]विपथ्थ। पच्छिम उत्तर वढि॥
[७]सेस भाग भै भाग। भोमि सकुचि कुकपि निल॥
गमन सेन उडि रेन। गेन [८]रवि पत्त धुध इल॥
दस कोस यान दल उत्तरिग। धन अवाज घर रिपु [९]परिग॥
गत मेच्छ मडि मडल सुमति। गति सु जग अग्गर धरिग ॥छं०॥१५॥

दूहा ॥ गत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक वसि वात॥
सुनिव चप अति साह मन। तन विकप अकुलात॥ छं० ॥ १६॥

अरिल्ल ॥ मिले मेच्छ मडम्म भर भीर। अतुलित पान पान सधीर॥
उठत वयन अप अप्प समीर। साहि [६]वढौ थिर कर कठीर ॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास मे गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो पग्ग। (२) ए रु को भेभी। (३) मो पयान कयान।
(४) ए रु को तवि। (५) ए रु को रूपि। (६) मो विथ।
(७) मो सेचि। (८) मो परिय। (९) ए रु को उठो वढौ।

हनूफाल ॥ घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेन कंपि दिसान ॥
पहु और कोरति मान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
बर मंच षान ततार। जुरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [1]वाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
मनसूर सेर हुजाब। जिन दान षग जम आब ॥
[2]महमूंद कम्मान काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
मन ज्यंद जम्मान धीर। तेजर्गा षान गंभीर ॥
बेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
ममरेज से रनसिंध। भजि जात तिन अरि भंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० ॥ २२ ॥
आमोद जाजन पीन। तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतस मीर। सारुफ सेर गंभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
सुरतान [3]मंडि दिवान। बर मंत्र करि परमान ॥
॥ छं० ॥ २४ ॥

रासा में ततार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा ॥ मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ मीरषान से रनवितंड। हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाव। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनों सेन हिंदवान। एन चहुआनह संधौं ॥
अरि अरिन्न अरि मीर। हक्कि हकों षग [4]बंधौं ॥

(१) मो.-वाजीद। (२) ए.-महमूंद।
(३) ए. संझि, कृ.-मांझि। (४) ए. कृ को.-बन्धौ।

गज बाज साजि जथल पथल। पल अदुन भजौ [1]भरन ॥
भुअ भाप भिस्त मकोद रन। कै [2]धोरह जीवन धरन ॥छं०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन।

पद्धरी ॥ षुरसान पान कहि सुनि ततार। सचौ सु वत्त जपौ सु ढार ॥
दल जोर तेज हिंदू अकार। वर मत्त सेन रच्यौ [3]विपार ॥
छं० ॥ २७ ॥

वुल्ल्यौ वितड कालौ तमकि। तम छते जुद्ध [4]किम साह सकि ॥
सग्रहौ सेनपति हिंदुराज। वधौं अपारि पल पग्ग बाज ॥छं०॥२८॥
निसुरत्ति मीर जपै सु तत्व। तम हसे साह किज्जैं न ग्रब्ब ॥
॥ छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ रावन ग्रब्ब विनाश रज। एन सीस हयवीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ। कालू से रनमीर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पद्धरी ॥ पुनि अप्पि साहि निसुरत्ति बैन। सुरतान आन मरकान [5]नैन ॥
कुहि बाज तेन चालत पब्ब। भीपग कंपि हैं ग्रब्ब सब्ब ॥छं०॥३१॥
राई सुमेर करते न बार। [6]असह सुआल ऐसौ विचारि ॥
विन साह तेज वड्डे सु ग्रब्ब। ड्ड्पै न ताहि असह अदब्ब ॥छं०॥३२॥
मनो न सक चहुआन सूर। वधव सुमत्त भर मत्त पूर ॥
वेलू विलाइ नदि वधि वारि। विन सेन काक चहुआन च्यारि ॥
छं० ॥ ३३ ॥

* हिंदू सहस्स दस सामसद। दल गैन लेस तन तेक कद ॥
वुलाइ बैनपति समर मड। वचै विचार सु विहान चड ॥
छं० ३४ ॥

वादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धम्मायन के पास दिल्ली भेजना।

(१) ए० कृ० को-सरन। (२) ए० कृ० को धोराहि। (३) ए० कृ० का त्रिचार।
(४) मो० क्यों। (५) मो० दैन। (६) ए० कृ० अलहसुआल।
* ए० कृ० को "हिन्दु सु हद सोमेमानद। लगे न लेस तन तेक कद"।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं । मंडे पत्रीय बीर पत्रायं ॥
अप्पित पान प्रमानं । कथ्थौ गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय । दिय सु पत्र तिन हथ्थ ॥
कहौ जाइ अग्गान सों । सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना ।

गाथा ॥ निज के वीसा रुढं । वर [2]साहाव ढिल्लीयं थासं ॥
बरति मंत्र मष किन्नं । गज्जीय मद्द मद्द नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव । करि सलाम वर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन । बलि आतुर वर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना ।

स्याम [3]पष्प पूरन क्रमिग । पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर अग्गान कर । बर [4]त्रिगौ रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धर्म्मायन से मिलना ।

गाथा ॥ दिय पत्री अग्गानं । पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
मर चौहान समथ्थं । सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के गत पर शोक करना

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर । हायथ [5]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुम्भर समर । आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धर्म्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कैमास को देना

बचनिका ॥ पत्री अग्गान बांचि कैं देहु । बहुरि दरबार गएहु ॥
कै मास कों तसलीम कीनी । पत्री सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२

(१) ए. कृ. बुल्लवि । (२) मो.-साह । (३) मो.-पथ्थ ।
(४) ए. कृ. को.-मगै । (५) ए. को. हीय ।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चौपाई ॥ हम तुम धरते सौगंध कीनी। नाते भ्रम्म दुह्व हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे। ताते वैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम वजिहै [2]धार। त्यौं त्यौं सुकवि गाइहै सार ॥
अमर नाम साहिब का साचा। पानी पिंड षेह का काचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में वध्या अहंकार। मरदा भ्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अलि मारथ्थां षेती। मरद मरै तब निपजै षेती ॥ छं० ॥४५॥

दूहा ॥ मरदा षेती षग मरन। अथ्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सचा काचा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंवरा। अरु मारथ्थ पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है। सुनौ राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्नी दूह्व कहि सु कर। करि सलाम तिय वार ॥
साहिब तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ कर सुनाना।

सुनि मंत्री न्रप अथ्थि सम। वचि पत्र तिन वार ॥
कच कूच पधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्री चहुआन ने। सब सामंतन राज ॥
बात परट्ठिय सब भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतो को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरच आयौ सु अप्प [5]पर ॥
साज बाज मय मत्त। पग्ग बर भर उब्भारिय ॥

(१) ए कृ को-लग्गो। (२) ए को वारैं। (३) ए हथ्थि।
(४) मो बल। (५) ए कृ को सुर।

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उच्चारिय॥
सज्जौ समथ्थ सामंत सब। संमर चावर डंव रन॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन ॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

तमकि राज प्रथिराज। कहै सम्मंत सूर भर॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चारु घर॥
सिंधु साह गज गाह। षग्ग षंडौ पल चित्तह॥
कर अंगुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ अमर॥
ज्यों मान व्योम आरूढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर ॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल॥ चढ्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्ष दल बल गज बाजन॥
चामर छत्र रषत्त निसानं। मनुं घनघोर दिसान दिसानं॥
छं०॥५३॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

त्रोटक॥ चढ़ि राज महा भर सेन भरं। उडि षेह षुरं हकि सूर करं॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [6]कौतिग भूत बेताल वरं॥
छं०॥५४॥

मुष छंद सु चंद बरं पठियं। [4]मुष जुग्गिनि अंग वियौ गहियं॥
सुर सद्द जयं जयरं [5]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं॥
छं०॥५५॥

तल ताल करं लति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अप्पिय सेन निकट्ट कलं॥छं०॥५[illegible]

(१) ए. कृ. को.-लागस्ति, अगस्त। (२) ए. कृ. को.-ढरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन। (४) ए. कृ. को.-सुख।
(५) ए.-पथयं। (६) ए. कृ. को.-कौतिक।

पृथ्वीराज का पडाव डालना ।

दूहा ॥ सुनि अवाज सुरतान दल । हरपि राज प्रथिराज ॥
कोस पंच दुअ सवचिग । हिंदुअ मेच्छ अवाज ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना ।

उदय भान प्राची अरुन । चल्यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर [1]इसे । मेच्छ पीर फर सेन ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ अच्छरि कच्छिय गैन । चैन चवसठ्ठ गैन गोमाय ॥
हर हरषे हाराय । गुद्ध सज्जाइ दो दसा दीन ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

दूहा ॥ मिलिवि सेन अरन सु अनी । तनी तनी दुअ [2]दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन । दोउ वीरा रस भीन ॥ छं० ॥ ६० ॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना ।

मोटि साहि भर षान सव । पति पुच्छी इह वत्त ॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल । करहु समर सक मत्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

सूर्योदय होते होते दोनो सेनाओं में रणवाद्य वजना और कोलाहल होना ।

अरिल्ल ॥ प्रगटित भान पयानिति पूर । वाजिग दुंदभि धुनि सुर झूर ॥
चल्यौ साहि समर करि रूर । अरुन वरुन मिलि तथ्य [3]सनूर ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना ।

दूहा ॥ ढलकि ढाल वहुरंग वर । [4]गुरत मत्त गजराज ॥
झलकि नीर वपु दल चढिय । मनों पावस गुर राज ॥ छं० ॥ ६३ ॥

(१) ए कृ को जिसे ।
(२) ए कृ को-दीम ।
(३) ए कृ को-न वर ।
(४) मो-"गुरतम चढि गजराज" ।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्केति [1]हूरं। धमक्के धरा, नाग नीसान[2]पूरं।
किलक्कै सुमेरं, बजे बाज तूरं। झलक्कै सुनेजा धरा [3]धूम धूरं॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरक्के बितालं, बजे तार तालं। करै कूह कूहं, जगी जोग मालं।
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू। वकैं भूत प्रेतं, काठें तार तिंदू॥
छं० ॥ ६५ ॥

मिली सेंन सेनं, ठगी लग्गि [4]नेंनं। वढ़ी कोल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं।
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं। रची अट्ठ फौजं, विचै साहि सारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

सुषं अग्ग मंने, षुरासान अन्नी। भरं चिग्गानं, षान तेयं दिठन्नी।
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे। दिसा दच्छनं, चिग्गानं जम्मरज्जे॥
छं० ॥ ६७ ॥

अनी च्यारि पिट्ठं, अनी दोइ अग्गं। गुरं गौर तारं, फरी पाइ लग्गं।
जग्यौ जंग जोरं, हुऔ बीर सोरं। धनंनद्द नीसान, भद्दं सघोरं॥
छं० ॥ ६८ ॥

दूहा॥ भर सहाब सज्जिय अनी। जिवन जोर चतुरंग॥
सुभर प्रफुल्लित वीर सुष। काइर कंपत अंग॥ छं० ॥ ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन।

भुजंगी॥ चढ्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं। बढ़ी बेद साषी चढ़ी जाग नूरं।
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्कै। करं हात षग्गं सु पट्टं चमक्कै॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-निसानं।
(२) ए.-मेरं, कृ.-मूरं।
(३) मो.-"धरा धूर पूरं"।
(४) मो.-गैनं।

धनआगम जानि विज्जू दमक्के। घनघोर नीसान नाद धमक्के॥
रची पच [1]सेन। मधे [2]मद्धि राज। गज वाजि रोह हथनार साज॥
छं० ॥ ७१ ॥

सुप अग्ग कैमास चावड सूर। सहस्स अठ सेन गज वाजि पूर॥
[3]भुजा दच्छिन भीम कान्ह किवार। सत तथ्य सामत सेन सवार॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिग वाम पम्मार आबू [4]प्रईस। चमू च्यारी सोभ मिरी आनि सीस॥
[5]रस रौद्र मच्यौ पग [6]पडि जीस। फिरै वेक ढाल [7]ढुरै नागरीस॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछ जाम जाज दल सिध साज। सय पच पचास सगी विराज॥
दह तीन पच [8]तय पच सज्ज। इल लेप नद गन गेन गज्ज॥
छं० ॥ ७४ ॥

धम धम्म नीसान रीसान वज्ज। सवद्द [9]सु सद्द सु सिद्ध सु लज्ज॥
चढे मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अन्नी। कथी व्यास भारथ्थ सा आज वन्नी॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुर पड वध्यौ वधे आप अग्गे। इसे मेच्छ हिंदू भर पग्ग लग्गे॥
॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना।

दूहा ॥ जनुकि पथ्य भारथ्थ भर। लगि कुर पड प्रचड॥
चाहुआन दल मेच्छ दल। हक्कि हय गय झुड॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल। [10] रन चड्ढे वर धीर॥
हक्कि तेज असि वेग वढि। लगे सुभर हर भीर॥ छं० ॥ ७८ ॥

(१) मो फौज। (२) ए कृ को मग। (३) ए कृ को दिसा।
(४) मो अईस। (५) मो "रस शङ्कर मडि पग पाड़े जीस"।
(६) ए कृ को पड। (७) ए कृ को ढलै, ढलैं।
(८) ए कृ को मय। (९) ए कृ को सुसज्ज।
(१०) ए कृ को चल्ले चढि।

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि । धाइ धाइ अधाय धर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड धर हर । मत्त बहुत सुरत्त भरहरि ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भग्ग कादर जूह भीरन । छंडि जल हूरिअ धीरन ॥
रुंड चढ्ढिय रच्चि थर हरि । रत्त जुग्गिनि पत्र पिय भरि ॥ छं० ॥ ८० ॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि । सुफटि पट्ट सुपट्ट फार हरि ॥
सिद्ध हूरन बीर जुरि जुरि । .... ॥ छं० ॥ ८१ ॥
प्रबल पीलिय पाल सेनिय । विचलि थल दिग परै ऐनिय ॥
गोम गैन निसान नंगिय । थान थान विवान संगिय ॥ छं० ॥ ८२ ॥
भुअन भिरि भुअधार धारन । ओन तुछ्छिय हीर झारन ॥
हिंदु मेच्छं अधाइ धाइन । नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥ ८३ ॥
गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं । क्रोधं धन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं । पत्तो चंद भानं आ यानं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा ॥ थकि भरुभ्भत संझ्झ सपत । सपत भान पायान ॥
पहु प्राची बजि पंचजन । लह हूझत गोयान ॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर रा० कैमास का और उधर शहाबुद्दीन अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया ॥ पहुलग्गे चामँड सुभर । अरु चिलन्न चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि । बहसि बढ़ी [१] सु तुरंग ॥
बहसि बढ्ढि सु तुरंग । पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिमा । सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति पतिलकं । वकं कंकान कार अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिमा । सु हय छंडे जुध लग्गी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) मो.-चतुरंग।

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कवित्त ॥ उदय भान पापान । कोर [1]दिष्षिय दल चढ्ढिय ॥
हय गय [1]नर आरिय । सद्द पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हथनारि धरि । गजैनारि करनारि वजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर । धनुष वान अप्रान ॥
हिंदुअ मीर सुद्दक हुअ । मीरचद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदु मेछं अनी एक मेकं । [2]वजे पग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पंच[3]सत्ती चवै [4]सिध नद्द । अवै श्रोन गड्डूष पग्गं उनगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं धमं धूम रंगं । सतं [5]सेत नीलं जलं जात संगं ॥
उठं पंच[6]डडूर सरं सोभ सज्जी । मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
वितालं वितालं रजे ताल भेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ वेरं ॥
जमं जाम जग्यौ जमानं सुजग्गं । तिलं [7]तिक्ख अग्गं बढे पग्ग पग्गं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए कृ को अर।
(२) मो-"वजे पग्ग धोर जेतो झत्ततेक"।
(३) ए कृ को सट्ठी।
(४) मो सिद्ध।
(५) मो सेल।
(६) ए-डेंडूर।
(७) ए कृ को तिल्ल।

जयं अग्गि जग्गी जनू जग्य जूनं । रते अंग अंगं चले संग [1]लूनं ॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ वान भानं । परे पाइ सामंत सो चंद जानं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड [2]कौरू परे मस्सिझ जुद्धं । सही सत्त, कथ्थौ पगं बद्धि उद्धं ॥
कवीचंद कथ्थी कुरष्येत हेतं । इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ नेत बंधि हिंदू । नरिंद-सामंत मत्तभर ॥
मीर भार असरार । सवें ढाहे सु सद्धि सर ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कथ्थ सुभ्भै जिम कथ्थिय ॥
सु कविचंद बरदाइ । एम कथ्थिय रन वत्तिय ॥
धन घाइ आघाइ सुघाइ घट । तेक तानि नंचिय करस ॥
चहुआन राइ सुरतान दल । नत्य वीर मंड्यौ सरस ॥ छं० ९४ ॥

दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर । नचिय नंच विन पैर ॥
चाहुआन सुरतान रिन । रचे नत्य बर वैर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना ।

भुजंगी ॥ रचे नत्य बर बैर [3]हिंदू रु मीरं । म्रदुं मंदलं तज्जा राजंत धीरं ॥
धनं गज्जा नीसान ईसान सोरं । करें नत्य भूतं रचें और कोरं ॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल मालं बजें रंग रंगं । भ्रमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं ॥
सुरं सुंदरी नंदरी चढ्ढि व्योमं । छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ै रत्त गुल्लाल फूले सु [4]फागं । षलं षग्ग षूचं समं माल लागं ॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं । लगें षग्ग षत्तं सु पेरंत मानं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

(१) मो.-रूनं । (२) ए. कृ. को.-केरं ।
(३) मो.-हिन्दू समीर । (४) ए. कृ. को.-कागं ।

कटै अड सीस वहै रत्तजान । रत पट्ट बध्यौ मनों रिझि भोन ॥
सुर सठि नद्द चवै मुष्य गानं । फिरै जुद्ध जोध वहै मोह वानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

वढे मास प्रासाद भूत अद्दर । रत पानि डार तकै सूर नूर ॥
रुरै रत्त रूप काच कुच वास । विधि छित्ति राजी रस रग रास ॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पान विना सीस केल । मनो अग्ग फाग जगे न्रत्य पेलं ॥
पग घटि नाना कटे रुड सेप । इभ रूढ सठ्ठी निने नारि द्वेप ॥
छं० ॥ १०१ ॥

वकै मत्त हालाहल पग्ग पडे । जिसे राम रन मझझ रावन्न मडे ॥
नव नारिका वाटिका वीर तुट्टै । धन घाइ प्रध्धाइ जुग जोग छुट्टै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन की उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव वड्डिय नाटिका । पग्ग कड्डी असु हक्किय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत । अप्प अप्पन चढि कक्किय ॥
रा चावँड रा जैतसी । राइ पज्जून [1]कनकह ॥
मीर पान भर पच । पग्ग वट्टए तननकह ॥
वपु वेद चन्द वानी विमल । विढुरि पग्ग पल्ल षेत वढि ॥
कँवल सु कड्डि [2]सुरतान दल । लिय रतन्न मथि देव दधि ॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि वक्यौ सुरतान दल । दधि केवल मन वड्डि ॥
मीर पान मारूफ दल । वीर विमानन चड्डि ॥
वीर विमानन चड्डि । दिष्ट वड्डी वारह परि ॥
भर चदेल विरम । षेत झोरी सुभोह भर ॥
गय नगचद अमृत झरिग । कुसुम गुच्छ कविचद पथि ॥
विम्मान पथ्थ रवि कुत रथ । पग्ग नेत कढि केल मथि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए क को-कमक्कह ।　　(२) मो पुरसान, पुरसान ।

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन।

मोतीदाम ॥ मच्यौ सुरतानय सेन पचार। लई जस कीरति चंद सुचार॥
परे रन मक्कन चंदेल सुचाइ। परे बहु षान सुधाइ अधाइ॥
छं० ॥ १०५॥

पन्यौ धर बाहर [1]राइति साल। धरड्डर षग्गन तुट्टिय ताल॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल। धकाधक काइर छत्ति विसाल॥
छं० ॥ १०६॥

शुकि मशुकि तुंडन अछ कमछ। मनों हरि चक्रन केतन बंध॥
पन्यौ धर्न [2]धाव सु वीरमदेव। हयग्गय विछ्छिय छत्र अनेव॥
छं० ॥ १०७॥

विनों सिर नंचत मीर कमंध। हये हय नाग नरम्मर संध॥
लयौ धर सीस सुम्यौ असि साइ। हनें लगि पंचय पंचय धाइ॥
छं० ॥ १०८॥

[3]हए लगि पंचल षिग्गान धाइ। ....
[4]पन्यौ पीरोज सु रावन नंद। करे [5]नय कीतिग हूरन चंद॥
छं० ॥ १०९॥

चले दल चंचल दो सुरतानं। लगे कर देषि चंदेल परानं॥
परे मफरद सुमंच [6]विझीर। लगे ग्रहसुद्दि काषी कर कौर॥
छं० ॥ ११०॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात। विय छवि छंछ वढ़ी हविपात॥
[7]रजे रति आगम राव वसंत। नगग्गनि जंग परे बर संत॥
छं० ॥ १११॥

(१) मो.-राय विसाल।
(२) मो.-घाय।
(३) ए. कृ. को.-हनैं, हने।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोज"
(५) ए. कृ. को.-जय।
(६) ए. कृ. को.-विमीर।
(७) मो.-रते।

गही तरवार विपानि सु झारि। नवतिय वाइस अत उतारि ॥
पऱ्यौ सम वाज सु हाजमपान। रचे गज इद्र सु [1]ब्रह्म धियान ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कऱ्यौ मन स्तूर तिलत्तिल पग्ग। उडे रिन [2]पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढे सारूप सु गैवर रूप। छयौ सम सीस धरद्धर भूप ॥छं०॥११३॥
भिरे भर हिंदुअ मीर अधाइ। गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥
छं० ॥ ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर। हय गय धाइ अधाइ ॥
[3]सुंड रुंड मुंडन झरत। रत्त झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

उपरोक्त वीरो के मारे जाने पर पहाड राय तोमर का हरावल मे होकर स्वय सेनापति होना।

भिरि तूअर लिय वग्ग भरि। हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन धाइ समुप [4]समर। लगे मेच्छ पति थाह ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पहाडराय तोमर का वल और पराक्रम वर्णन।

धाइ धाइ तन छाइ छिति। रत्त छिछ उच्छरंत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि। लग्गि [5]जमन गज अंत ॥छं०॥११७॥

कवित्त ॥ भर तोंअर अभि रत्त। धरत कर कुंत जत अरि ॥
गजन वाज धर ढारि। धरनि वर रत्त जुथ्थ परि ॥
भग्गि मीर काइर कानक। हिय पत्त [6]मुच्छि [7]द्रढ़ ॥
भग्गि सेन सुरतान। दिष्षि भर सुभर पानि कढ ॥
उम्भारि सिगि कुंभन छरिय। झरिय श्रोन मद गज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय ॥छं०॥११८॥

(१) मो ब्रह्म सुग्यान। (२) मो पातरि।
(३) ए कृ को मुंड। (४) ए-ससन, कृ को सरन। (५) मो जमुन।
(६) ए कृ को-मुट्ठि। (७) मो द्रग।

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर । समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरगि । ससि जिम सद्धि पिसान ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ।

कवित्त ॥ दिन त्रतिया बर तुंग । झुकि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हथ हक्कि । धक्क बज्जिय भर इक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि । झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल । मंस तुट्टत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि । बिहसि चंद वट्टिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी । रंगि कंक डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उदोत आरनि । सुभर भीर समुष्प धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर । धाइ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥ १२१ ॥
श्रोन द्रोन प्रवाह थरहर । अंत अंतन अंत झर हर ॥
[1]तार तान बिताल करि करि । तेग षंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय । अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय । दिष्षि देव विमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय । [2]विकल मुष ह्वै [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय । [4]विचल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) मो.-तार वितान विताल कर कर । (२) ए. कृ. को.-विमल ।
(३) ए. कृ.को.-निकारि । (४) ए. त्रिमल ।

बीर वहुरि विभेष बानय। छुट्टि छाय अकास भानय ॥
रैन सूर दिसान थानय। सोक कोक [1]अलोक आनय ॥छं०॥१२५॥

झमकि सुर मुष सत्त लग्गिय। दमकि दिसि दिसि पग्ग नग्गिय ॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि। ईस सीस [2]सजत गुरि गुरि ॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन काच्छ कच्छिय। दलन दोन कलोन अच्छिय ॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उडी चाइन ॥ छं० ॥१२७॥

नपत पित्त सुहत्त फिरि फिरि। मप्पि डोरि पसारि कर धरि ॥
रुहिर सर सम वहत धार स। भँवर पपिन काक पारस ॥
छं० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल ॥ रगिय रदनु जुग्गिन बीर। है गै पारि असि [4]वर मीर ॥
तोंवर राइ दिष्यौ साहि। नष्यौ बाज सनमुष आइ ॥छं०॥१२९॥
डारिय तेग सिर करि पीज। *गिर पर जनु कि करकिय बीज ॥
करि कर वारि गज धर ढाहि। [5]गैवर गिरत निकरि साहि ॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्षि राह पहार। गैवर दिष्षि है कंध डारि ॥
भावरी भग्गि जब्ब मेछान। जै जै जै जपिय चहुआन ॥छं०॥१३१॥

मुसलमान सेना का घबरा कर भाग उठना।

दूहा ॥ भग्गि सेन सुरतान सब। रव लग्गी मुष तक्कि ॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राह ससि वक्क ॥ छं० ॥ १३२ ॥

(१) ए कृ का असोक जानय। (२) मो जाति।

* मो गिर पर जानु करक्यि त्रीन पाठ है और ए कृ को प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पाठों में छन्दोभंग होता है। (३) ए कृ को -नातिय।

(४) मो -चर। (५) मो -गिर चत गैवर निकर साह। (६) मो पुरिस।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गर्न गर सिंधु। करत उच्चार सार मुष ॥
अच्छि अच्छरि वर इच्छ। विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल। रज्जि वर [1]तुंड चंड संग ॥
श्रोन छोनि छय छंछ। गुंज गन देन रत्ति अंग ॥
[2]मुरि मेच्छ धाइ घट सघन परि। हथ्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ। अमै सुमै अंगन धटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान। अप्प ढिल्ली संपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी। वार भ्रगु वर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह। सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ट प्रमान। वहै षट रित्त मद्द भर ॥
कोटिक द्रव्य नप हेम लिय। घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति वेली अमर। सुमत सीस चहुआन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसगो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥



(१) ए. कृ. को.-तंड। (२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सछन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

अथ बरुण कथा लिष्यते ।

(अडतीसवां समय ।)

"सोमेश्वर" सासारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अग नवनि करि उब्बरै । है पुर पग्गह चाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्नप । कालद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब सग लै । तहा बोले विप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ मे जाने वाले योद्धाओ के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुधोडस दान विचारिय राज । रची विधि ज्यौ [3]बध [4]देवति साज ॥
तहा ढिगोसिध पँवार पवित्त । [5]सुध्रम्मय ध्रम्म तहा विपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥

जुगौर गुरबर सिंह सुसग । जिनै करि जज्जर देहिय जग ॥
तहा ढिग सजम राव नरिंदु । धरे जनु इंद्र विराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥

सुवाहन बीर बली कुनि तथ्थ । तिनै कलि भ्रम्मन दूजि यकथ्थ ॥
तहा गुर राज [7]विराजत ताम । तिदिष्ट वसिष्ट मनों ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

(१) ए कृ को ग्रहनी । (२) ए कृ को होम जग्य ।
(३) ए कृ को -बुध । (४) मो -देवनी ।
(५) ए कृ को सुधर्मय धूम नहीं विपचित। (६) ए कृ को इन्द, इन्द्र । (७) मो बिरामत ।

सु और अनेक महाभर मंझ । अमंत कमंत [1]सर्यन्निय संझ ॥ छं०

उक्त समय पर पूर्णिमा की शोभा वर्णन ।

साटक । मुद्दी मुष्ष कमोद हंसति काला, चक्कीय [2]चक्कं चितं ।
चंदं किरन कढ़ंत पीड़न पिमं, भानं काला छीनयं ॥
बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं ।
[3]निद्रा वस्य [4]अगत्त भर्ता जनयं, वा जग्य कामी नरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

चोटक ॥ *चक्की चक्क चक्किय चित्त मयं । बिछुरे बिय दिष्षिय संझ मयं ॥
† जु पयोधि भत तत्त मझ्झ सुरवी । सु मनों दिसि दिष्षि सिंदूर [5]जवी ॥
छं० ॥ ८ ॥

घन सोर द्रुमं करि पंष धनं । सु मनों लगि पारसियं पढ़नं ॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं । कुलटा बसि छैल रसं विभिदं ॥
छं० ॥ ९ ॥

बिरही जन दिष्टि सु धाम हुरी । उलटैं बसि डोरि ज्यों चंग उरी ॥
बजी बर देवल झल्लर झूर । तिसं घर सिंगिय सिद्धन पूर ॥ छं० ॥ १० ॥

[6]कपी मुग धापिय केलि कठोर । भुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर ॥
छबि दीपक द्वारन जोति जगै । जनु दंपति नैन सुभे उमगै ॥
छं० ॥ ११ ॥

जु लगीं धुअ धुंमर रैनन मंडि । चले क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि ॥
‡ जुरसे रस चामर सीस डसे । दिषि दीपक जोति पतंग जिसे ॥
छं० ॥ १२ ॥

बिरहा उर झारिय केलि करी । इन दाहिय देहत प्रीति धरी ॥
बिरही चिय मुष्ष सु दुष्ष [8]सदं । कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं ॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को-सपन्निय ।　　(२) मो. चक्कीचित ।　　(३) मो.-निद्रया
(४) ए. कृ. को. जगत । *ए. कृ. को.-"कवि चक्क सु चक्किय" ।
† ए. कृ. को.-जु पयोध पनत मझ सुरबी ।　　(५) मो. बची ।
(६) मो -किपि ।　　(७) ए. कृ. को.-पिम ।
‡ ए. कृ. को.-"जुरसे रस बामर सीदक से" ।　　(८) ए. कृ. को.-मुदं ।

जु सँजोगय भोग सुप सरसे । सु कमोदिन चद फुले दरसे ॥
जु थ्रिह ग्रह जोवत दीप जुन । जु वए मनु काम के बीज भुव ॥
छ० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना ।

दूहा ॥ साँझ समय ससि उग्गि नभ । गइ जामिनि जुग जाम ॥
ग्रहन समय दिपि होतही । जमुन पधारे [1]ताम ॥ छ० ॥ १५ ॥

वरुण के वीरों का जाग्रत होना ।

स्नान जकी नौ न्रपति । जल रक्षा जगि वीर ॥
[2]हकारे समुप उठे । मगन जुद्ध [3]सरीर ॥ छ० ॥ १६ ॥

इधर सामत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे ।

ए बिन वस्त्र रु सस्त्र बिन । हस्त दरभ कुस कोस ॥
तिल तदुल जव पुहप कर । वरन दूत उठि रोस ॥ छ० ॥ १७॥

वीरो का गहरे जल में शब्द करना ।

अति प्रचड गहराइ गल । गल गज्जे बल वीर ॥
स्याम बरन भय भीत दिपि । धीरन छुट्टै धीर ॥ छ० ॥ १८ ॥

जलवीरो के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ अति उतग बज्ज ग । उदित उर जोति रत्त द्रिग ॥
अरुन रुधिर नप अधर । वस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग ॥
दसन ऊच सिर केस । वेस भय भग्गिय पास ॥
अति उनाह भ्रम दाह । कौन मडै जुध आस ॥
काल कालह बचन किलकात सुर । सुर बाजत जनु धुनि धमनि ॥

(१) मो -बाम । (२) ए कृ को-हहकारे ।
(३) ए कृ को-समीर ।

हम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि॥
छं० ॥ १९॥

सांमतों का ग्राव पर चला जाना।

दूहा॥ सुभट दिष्ष करि क्रोध उर। मथे भयानक सूर॥
सत्त्व हथ्थ दिष्षे नहीं। *ग्राव ग्रहे जलपूर॥ छं० ॥ २०॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त॥ परत ग्राव जल पूर। झरत जनु रुप्प पाल सुवन॥
बजत धात आघात। फुरत अवसान वीर तन॥
रावत्तन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी॥
[3]जोग ध्यान जय मान। वनिक वुधि मोहि सुनारी॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। सुगति जुगति विधि [4]कोविदह॥
इत्तनी वेत्त अवसान मिलि। मनहु मंत्र जनु गुन भिदह॥
छं० ॥ २१॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि करि वर करह। भिरत भारथ [5]पच्चारिय॥
अंग अंग संथरहिं। इक्क इक्कत अधिकारिय॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं। करहिं बल कपट अनंगिय॥
कबहु धूम वे करहि। करहि कव तार झरन्निय॥
कब्बहू मेघ [6]उट्ठें सुजल। कबहिं करन ग्रावह वरष॥
उच्चरहिं बैन बहु बीर बर। बिरचि कवहु बुल्लै हरष॥ छं० ॥ २२

(१) ए. कृ. को-सुमूढ। (२) ए. कृ. को.-मति।

*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद न[illegible] आवरुद्ध तदद्धम्"। इसका तात्पर्य डेलटा से है।

(३) मो.-ज्यों। (४) मो.-कोबदह।

(५) ए. कृ. को.- परचारिय (६) मो. वुट्ठे।

जलवीरों के वहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामतो का भयभीत न होना।

कवहु सस्त्र सर परहि। कवहु डक्के डकारिहि॥
तीन लोक तन [1]हकहि। बकहि वीरन वकारहि॥
अकाल कालह बल कारहि। समहि सग्राम सुधारहि॥
अजुत जग उद्धरहि। [*]कालह बल धार उधारहि॥
सामत भूमि भजहि भिरहि। गिरहि परहि उठहि लरहि॥
सोमेस सूर सक न [2]गनहि। विरचि गाल गल बल करहि॥
छ० ॥ २३॥

वीरों को स्वय अपना पराक्रम वर्णन करके सामतो का भय दिखाना।

हम सु भयकर बल अभूत। सुभटन [3]हकारिहि॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान। कनिष्ट अगुरि उप्पारहि॥
हम समुद्र प्रमान। डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहि॥
देषी सुनी [6]न कोइ। सोइ ब्रह मडल गावहि॥
किन काम धाम तजि वाम सुप। आइ सपत्त जमुनि निसि॥
चर बेर निसाचर हम फिरहि। नीर रमे तिल लेइ धसि॥
छ० ॥ २४॥

वीरों का राजा सहित सामतो पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना।

दूहा॥ [7]इह कहि के लग्गे लरन। गैन गुज जल फार॥
मानहु भारथ अत कौ। भार उतारन हार॥ छ० ॥ २५॥

सामतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना।

कवित्त॥ काल सक अट्टरहि। तार बज्जत प्रहार सुर॥
जम्मुन [8]जल अदोल। वीर बोलत वीर गुर॥

(१) मो तर्कहि। * कृ को कवहि वीरन वक्कारहिं। (२) मो -गिनहि।
(३) ए कृ को हक्कारिय। (४) ए कृ को चड प्र०वत समान।
(५) मो प्रमानहि। को प्रवाहिहि। (६) न होइ। (७) मो एह कहे। (८) मो मजन।

कालह केलि सम केलि। ठेलि काढ़ैं चावद्दिसि ॥
एक आव वरषंत। एक फारंत नष्ष कसि ॥
परि मुच्छि मध्य विक्राम वलिय। जुद्ध निसाचर विषम [1]अषि ॥
वर वीर धीर धष्षे लरन। फहु पट्टत न्रप सोम [2]लषि ॥ छं० ॥ २६ ॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरों का बल कम होना और सागतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी ॥ तिमि [3]तिमि सु वीर तामसत थोर। दिन उगन [4]बढ़ै रजपूत जोर ॥
वढ्ढै [5]जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार ॥ छं० ॥ २७ ॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार ॥
तरफरहि मध्य जल इन प्रकार। कपि कोप नंषि गिरि समुद सार ॥
छं० ॥ २८ ॥

वर भरहिं करहिं लत्तननि हाइ। * वज्जंत वज्र जनु विषम घाइ ॥
रन रह वहसि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन ॥ छं० ॥ २९ ॥
निसिचरन दिष्षि जब समय सूर। झलमलत किरन निमल करूर ॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटौं सु दिसा विदिसान अन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥

तब लग्गि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥
छं० ॥ ३१ ॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा ॥ ज्यों सैसव में जुवन [7]कच्छु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर। उद्दित दिसा [8]लसाइ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
*रत्ति रही वर विलगि वर। ज्यों ससि कोरह राह ॥
हरि उट्ठै वाराह धर। कै हरि चंपत राह ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पिषि। (२) ए. कृ. को.-लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-वछे। (५) मो.-मुगल।
* मो.-बज्र लेत हथ्थ जम्बू विघाइ। (६) ए. कृ. को.-परभात।
(७) ए. कृ. को.-काव। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यो रत्ति ही रविलग वर"

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर साहित सब सामतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर वीर। परै धर मुच्छि सु पच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुदुभि जानिय गान ॥
छ० ॥ ३४ ॥

सब मुर्छित पड़े हुइ थे उसी समय पृथ्वीराज का वहा पर आना।

दूहा ॥ म्रतक समानति म्रतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आनि सपत्ते [1]पान ॥ छ० ॥ ३५ ॥

निज पिता एव सब सामतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय मे दु ख होना।

साटक ॥ [2]सोहिष्य न्रप राज तात निजय। बीभच्छ इच्छा क्रुध ॥
काल केलिय छिछ रुद्ध तनय, रुद्र सु सरत्तय ॥
माते तामस रस्स कस्स असुर, [3]हालाहल नैनय ॥
राज जा प्रथिराज चिति तनय, पुच्छै गुर [4]ततगुर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ वाध कर खडे हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनमुष जोर कर। अस्तुति मडिय मुष्य ॥
तू माता दुष भजनी। रजन सेवक सुष्य ॥ छ० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजगी ॥ नमो मात मातग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भम्मी जम पै [6]कहाया॥
जग अधक्रूप सु दीपक गन्नी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरी करन्नी ॥
छ० ॥ ३८ ॥

(१) ए कृ को प्रान। (२) ए कृ को सोहिष्य।
(३) ए कृ को हाली। (४) ए कृ को सद्गुर, तद्गुर। (५) मो सूरिज्ज।
(६) ए कृ को कहाये। (७) मो -पूजै।

महा अम्म धारन्न तारन्न देही। निकासी सलीलं सु सेलं समेही।
बलीभद्र रष्यो हरप्यो हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कालंदी।
छं० ॥ ३९ ॥

त्रयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं मरन्नी॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [1]कारनी अघं काट आपं॥
छं० ॥ ४० ॥

तुही याम सूरं जलं मुत्ति धारा। तुही नम्म मातंग नर लोग सारा॥
तुहीं साधवी मात नष्यं समानी। तुही तारनं लोक त्रैलोक रानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

तुही बाल वेसं तुही वृद्ध काली। तुही तापसं ताप आपं सुराली॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]सिद्ध सिद्धं। तिते मुत्ति मुत्ति मनं वंछ दिद्धं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तुही [3]मद्दनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव त्रय लोक हारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]मैं कंप रापंत आलं॥
छं० ॥ ४३ ॥

तुही विस्स रूपं तुहि विस्स माया। तुही तारनं जन्न संसार आया॥
कियौ अस्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै॥
छं० ॥ ४४ ॥

तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [5]आचार उग्गंत सूरं।
तनं तम्मनं तं जयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्षी
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस। दिष्य दैवन मुनि थप्पिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"।
(३) मो.-महंत।
(४) ए. कृ. को. मैं कप्प।
(५) ए.-आवार।
(६) ए. कृ. को.-अप्पं।

मिली जाइ [1]भल मग । गग सागर अवधारिय ॥
ता सोनेसर रोग । दोष दोषह तन टारिय ॥
अव सुभट सहित देवी सु तन । करि निरमल तन मोह मय ॥
इह काहत जग्गि नृप मूरछा । प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥छं०॥४६॥

सोमेस की मूर्छा भग होने पर पृथ्वीराज का पुन: ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना ।

साटक ॥ [2]त्व मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीव धन प्रनाय ॥
दाह अग्गि सु क्रम्म दारुन धरै आवस्य [4]बद कार ॥
स रुद्र जम जोग तिष्ठत तनै अद्ध पल मध्यय ॥
जीवी वारि तरग चचल धिय विस्मत [5]अस तर ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिल पषी वर [6]सुद्धय ॥
सुष्य दुष्यय मध्य वृच्छ तवय सापास्य चै गुनय ॥
मोह पत्तय रत्त छन्नव क्रमे फूल फल धारन ॥
एकश्रय सँतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गुन ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यों भूत आभूत वर्ष सु सत आयुर्बल अद्भुत ॥
तेषा अर्द्ध निसा गत रवि उभै बाल्यै च वृद्धे गता ॥
प्रात जोवन रत्त मत्तय रस व्याध क्रुध वधनै ॥
ना भूत [7]ससार तारन गुने [8]सभार निस्तारय ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगो का शिथिल शरीर चैतन्य होना ।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय । भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामत सब । जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गध्रव मच सुइष [8]जिय । आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]वरुन दोष तन ताप गय । उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए कृ को जल गग ।　(२) ए कृ को त्वमे ।　(३) ए सरसी ।
(४) ए कृ को सवद ।　(५) ए कृ को नर ।　(६) मो सुठय ।
(७) मो ससार ।　(८) ए कृ को हुअ ।　(९) ए कृ को वरन ।

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना ।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि आइ । जानंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ । निसि समय बरुन तन धरिय ठाइ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइत्त [1]आइ । पोताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ । उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

भौसेन तब्ब तहँ एक ठाइ । करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किन्नह पराइ । भए सुद्ध पाय गए तन [3]फुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ।

दूहा ॥ बरुन दोष मेट्यौ सुप्रथु । ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम न्रप । फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥



(१) ए. कृ. को.-पाइ ।
(२) ए.-पाइ, कृ. को.- धाइ । (३) ए. कृ. को.-फुलाइ ।

अथ सोमवध सम्यौ लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल ॥
कोइ न चपै सीम । कित्ति वर रीति अचंगल ॥
सोमेसर सभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तस [1]अंतर बल्लै ॥
मिलि मत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछत्र मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ सभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [2]असेस ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रप्पै इलास ॥छं०॥२॥
चपौ जु अप्प उर रपैं डस । मन मध्य भीम इम भूमि गस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]पेल । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥

कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम पगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राह केत । कलमल्लिय चल्लिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥

रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यौ सु राइ चालुक्क इंद ॥
[6]तमि कह्यौ ताम हौ इतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥

बुल्लाइ सब्ब मर इक्क ठौर । चढिवाइ वेगि वर करौ दौरि ॥
पेलत नारि नर लेइ गड्ढ । इम लेउ भूमि पल पग्ग वड्ढि ॥छं०॥६॥

(१) मो-अवर । (२) ए कृ को अरेस । (३) मो-कालयद ।
(४) ए कृ को-पेत । (५) ए कृ को मलम । (६) मो मत ।

जिम करिव बाल घर मिटत धूरि । तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत भील जिम घर सुहाल । संभरिय भूमि इम करौं हाल ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कहीं नरिंद । रानिंग राज वर ॥
चौरासिम जयसिंघ । वीर धवलंग देव घर ॥
धौल हरै सुरतान । वीर सारँग मकवानं ॥
जूनागढ़ तत्तार । सार लग्गयौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर । पुव्व वैर साल्यौ हियं ॥
केतीक बत्त संभरि धरा । रहै रंग चच्चर कियं ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझत्ती रन जित्ता । केवा किन्न संभरी राजं ॥
[1]तं वोलि कालहंतं । सस्सै सूल षग्ग [2]मग्गीयं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोलौ राव रानिंग । बोलि चौरासिम मानं ॥
स्यामा स्याम नरिंद । भीर कहौ रेन थानं ॥
अति उदार अति रूप । भूप साईं रन रष्पन ॥
चाहुआन वरसिंह । [3]षिस्यौ वड़वानल भष्षक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि । सुवर वैर कहौ विषम ॥
आरंभ्य कथ्य भावै भवन । सुभर सुत्ति लब्भै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय बर । जुग जोग [4]नह लब्भ ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप । करै वीर प्रति अब्भ ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा ।

भुजंगी ॥ करै वीर वीरं सु वीरं प्रकारं । लगे राह चहुआन सौ जुद्ध ...
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं । करै षेत भीमंग कौ सोन जोन...
छं० ॥ १२ ॥

(१) ए. कृ. को., "तंकेलि कुलहंता" ।　(२) ए. कृ. को.-मग्गाइं ।
(३) मो.-षिज्यौ ।　(४) ए. कृ. को.-नहि ।

करै कौन जमजोति जोत्यं प्रकार। गनै कौन वेलू सु गंगा प्रकारं ॥
गिनै कौन तारक ते [1]तेज भोरै। लरै कौन चालुक्क सों जुद्ध सोरै ॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना।

गाथा ॥ फट्टै पुडु फुरमान। धाये धराजित्त जिताइ ॥
इम जुट्टे सब सेन। ज्यों मू नीर वह्नि सरताइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य।

विअष्वरी ॥ जुट्टे दल पहु पग [2]अपार। हैगै वर भर लभ्भि न सार ॥
वनै हय पय पय समान। पहु भूमी जनु पय उड़ान ॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीर। मद्दव वद्दल जानि समीर ॥
दिपियै सूर नूर पहु पूर। सध्या सागर [3]नूर करूर ॥ छं० ॥ १६ ॥
चलै मत्त मग मत्तहारे। धावै धर पग पाहर कारे ॥
काच्छे काच्छै वधै डोरी। चदन पेरि पिलै जनु होरी ॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लै कोई। विचरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइक पग पिन्नै जनु नट्ठ। पडा कढ्ढि वढे गज [4]दट्ठ ॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी विन तिन लोह न छिज्जै। धार अनी कर वर ठेलिज्जै ॥
चचल अश्वह [5]नयत सूर। सूर तेज जिन मुष्प सनूर ॥ छं० ॥ १९ ॥
वकी भोंह भयकार नैन। फूली ववर लग्गो गैन ॥
रत्ते [6]स्वामि ध्रम्म रस रग। जोग जुगति मन चहुत जग ॥
छं० ॥ २० ॥

नेह न देह न माया ग्रेह। चितत सदा ब्रह्म मन लेह ॥
तेग त्याग मन मड न अग। सुभ्भत सेन मनो सुत्र गग ॥ छं ॥ २१ ॥
गहु परे न्रप गाहत गहु। जिम वाराह मोथ रस दहु ॥

(१) मो-मेज। (२) ए कृ को प्रपार। (३) ए कृ को सूर।
(४) मो नट्ठ, वट्ठ। (५) मो जनुपत। (६) मो साम।

औगुन अंग न स्वामित जंगं। ज्यों सह मीन दुहागिल रंगं॥
छं० ॥ २२ ॥

यों आतुर रत्तो मग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं॥
दसहूं दिसि दारुन दल बढ्ढं। ज्यों धुर बद्दल मद्दव चढ्ढं॥ छं० ॥ २३॥

सिलह सज्जि बढ्ढे बल बंकं। रीछ लंगूर मनों कपि लंकं॥
दिष्षत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई॥ छं० ॥ २४॥

अमरसिंह सेवर परिमानं। मेरूं भट्ट तत्त बुधि जानं॥
बंसल लीला लच्छिन मंडे। देव काम सव बंधि रु छंडे॥ छं० ॥ २५॥

साम रूप सेवर परिमानं। दान रूप वर भट्ट सुजानं॥
भेद रूप दुज राज बषारं। डंड रूप चारन आकारं॥ छं० ॥ २६॥

लीने भीम संग चव मंत्री। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंत्री॥
सुर्ग म्रत्यु पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं० ॥ २७॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा॥ साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। वर सिधंत आकार॥ छं० ॥ २८॥

ए बुलाइ चालुक्क वर। मंत्री भोरा राज॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंच जंच गुन काज॥ छं० ॥ २९॥

[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भीम नरिंद॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं० ॥ ३०॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंत्री मंच तब। सुनि भीमंग सुदेव॥
धरतो वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [7]छेव॥ छं० ॥ ३१॥

(१) ए. कृ. को -पाइ।
(२) ए.-मंत्री। (३) मो.-इनह। (४) ए. कृ. को. ज्यौ।
(५) मो.-बत। (६) ए. कृ. को.-न्यंदे। (७) ए. कृ. को.-सेव।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण।

साटक ॥ भूमीन धर ध्रम्म कम्म [1]निरत, वध्यो वधे पाडव ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्त वज्ज कारन ॥
केकइय भुअ काज रामय वन, दसरथ्य मगे वर ॥
सा भूमी कित कारनेव सरसा, स्नेहायय भूमय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुन मंत्रियों का आख्यान कहना।

कवित्त ॥ जा जीवन जग पाइ । आइ अवनी रस रगह ॥
जो जा जीवन वलह । विनोद रपह मन पगह ॥
जा जीवन कज्जह । कपूर पूरन प्रभु कोवाह ॥
जा जीवन आरंभ । कित्ति सा ध्रम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि । भमर गुफा साधहि अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मडय कलह । तौ भूमिय लभ्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन इम पहुनि करि । अच्छित सती समान ॥
चावद्दिसि नध्यै निडर । वौ लभ्भै [4]मिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना।

सुनत मत चल्लिय न्त्रपति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु वद्दल पह उन्नए । दिठ्ठ न परत [5]नभग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुडाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हल मिलत्त सेन । [6]ज्वाला मलि [7]ज्वालाह दत्तेन ॥
दैवत देव वधि चतुरंगी । है हिलन्न हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं ॥ ३६ ॥

(१) मो सरस। (२) मो काज।
(३) मो सर। (४) ए कृ को पिम।
(५) ए कृ को भमग। (६) मो क्षाला।
(७) मो क्षालाह। (८) ए कृ को लग्गी।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं । हय गय सज्जि वीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं । जानिज्जै सूरतं वीरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना ।

उद्यौ छत्र छिति राज सिर । निपत वीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियैं । ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते ।

कहहिं मंत्र मंत्रिय सुमति । विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजै कै रंजई । कै [1]दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना ।

आनिअ [2]अक्षित साल गुन । विधि चालुक सयन्न ॥
पुब्ब बैर सोभित्ति कौ । भिरि भंजै रिन तन्न ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंच सहस पंचौ सुकत । पंचौ पंच प्रकत्त ॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहैं । तौ भारथ्थ सु जित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन ।

दूहा ॥ सली मिली कज्जल वरन । भेक भयानक भंति ॥
तिन अग्गैं धर मंडे । तिन अग्गैं गज पंति ॥ छं० ॥ ४२ ॥

उक्त सेनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

माधुर्य ॥ गज पंति चल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं ॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुम्भर डुल्लियं ॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहिं धरवर धाइही ॥
गलकांत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावही ॥ छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-देवत्त । (२) मो.-अनीति ।

गज वहत मदहद [1]मनहुं घन भद छुट्टि छिछन उब्भरै ॥
पग जोरि मोरि मरोरि सुर जनु दिष्षि सुरपति लुब्भरै ॥
वनि पीलवाननि ढाल हालनि वनिय वैरष साजही ॥
मनुं सिषर गिरि वर काम अगन छत्र चमर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अध धुधन चलत मग्गन सुनत वज्जन चल्लही ॥
वै कोट ओटन अगड मन्नत सिषर गिर रद भल्लही ॥
दल मुष्ष मंडिय मेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जय ॥
सुर सोम सोमह मझ्झ मोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जय ॥ छं ॥ ४५ ॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय सभरि रज्जय ॥
वर मगि वाजिय सिलह सजिय [2]वहै भोरा अज्जय ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर मे मुख्य सामतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के सग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयत । रोह रत्तौ प्रथिराज ॥
सोमेसर ढिल्लीस । सग सामत सुराज ॥
षीची राव प्रसग । जाम जद्दौ घट भारिय ॥
देवराज वग्गरिय । भान भट्टी षल हारिय ॥
उद्दिग्ग वाह [3]पग्गार भर । वलिय राव वलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्षि कैमास सँग । कालह क्रोच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ।

दूहा ॥ जिन काठन ढिल्ली नयर । ते रष्ष प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यतरह । कालह न [4]दुच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) मो मनल । (२) मो-वही ।
(३) ए कृ को पागार । (४) ए कृ को-इछत ।

सुनत पुकारह छोह छकि । सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चहू हयन । बिंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत । सज्जि सेन चतुरंग ॥
को बिद गुन मर्न ज्यौं रमत । ज्यौं भर जानत जंग ॥छं०॥५०॥

उसी समय पूर्व बैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग कल्लं मलि भार । सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक्क । भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोभत्ती बर बैर । बहुरि हालाहल मच्च्यौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव । लेष लंघै को रच्यौ ॥
करि [2]स्नान दान इष्टं सु जप । भट अभंग सज्जे समुद ॥
बिगसंत नयन दिय बयन । मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक । कुसुम संधन कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ । दैव बध्यौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय । राज सोमेसह कन्नं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज । गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुअ । ध्रुअ प्रमान पय [3]डड धरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय । गरिल ग्गागर उम्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार । सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस स्हूर बिचार । सजि चढे बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

(१) ए. कृ. को.-आउ । (२) मो.-कान्ह ।
(३) कृ. को. मो.-डड ।

*धरा धरा कपिय भार । ॥
चढि राइ चालुक पान । धर धरिय दिसि सुथान ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सुनि श्रवन सभरि राज । वर वज्जि [2]विजयत वाज ॥
तन [3]चविधि तूल तरंग । विधि मंडि वीर विजंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दल देपि सूर सुरंग । उर होत अरियन पंग ॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल । मधु माध नूत तमाल ॥ छं० ॥ ५६ ॥
छुटि अचग अच्छुतुपार । पाहार फारि प्रहारि ॥
उड्डि हत्त तिड्डिय सेन । मनों राम लंका लेन ॥छं० ॥ ५७ ॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का बल वर्णन ।

कवित्त ॥ त्रिविध साज वड्डिय । अवाज भेरी कोकिल सुर ॥
भवर झुंड झंकार । चौर मोरह दुरत वर ॥
वर वसंत सम वीर । नच्चि तोपार त्रिभंगिय ॥
[4]रन रत्तो सोमेस । भीम भारथ अनभंगिय ॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि । हरपि सूर वज्जिय करस ॥
कन्ह नरिंद प्रथिराज विन । सुभर कवा मंडिय सरस ॥छं०॥५८॥

युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ सुवर वीर मच्यौ समर । रन उतंग सोमेस ॥
दै दुवाह [1]दुज्जन धरी । धरी सु अंक नरेस ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याख्यान ।

कवित्त ॥ जा दिन जीव रु जम्म । कम्मता दिज जम पच्छै ॥
सुष्य दुष्य जय अजय । लोभ माया नन सुच्छै ॥

* यद्यपि यह पाठ मो प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चरण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए० कृ० को० प्रतियों में छं० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ वीर सुझार" पाठ है । अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छन्द भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है । (२) मो विजयसु । (३) ए० कृ० को० विधि । (४) को० कृ० नर, ए० मर । (१) ए० कृ० दुज्जनै ।

काल कालह संग्रह्यौ। मोह पंजर आरुह्यौ ॥
[1]मुगति मग्ग सुरग्गै न। ग्यान अंतह किन सुझ्यौ ॥
प्रतिच्चंब अंब अंबह जुगति। मुगति कग्ग सह उध्धरै ॥
केवल सु अप्प [2]षिच्चिय तनह। कन्ह कंक जौ सुध्धरै ॥ छं० ॥ ६०॥

दूहा ॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष। *नर निरदोष सदोष ॥
संभरवै [3]संभर सुमति। न्टप लगि सुमत अनोष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ।

कवित्त ॥ सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय ॥
सुमरि साह इक्क देव। द्रुवन दल देषि [4]दपट्टिय ॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना ॥
तेग वेग झम झमिय। मच्च आरोठ भयन्ना ॥
फूलह सु धार धर कन्ह वर। कर पर छुट्टिय छह धरिय ॥
पग सट्ठि नट्ठि भीरांग दल। वल अमृत कन्ह करिय ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन ।

दूहा ॥ कोल चंपि वर चंपि काल। नर निर्घोष निसान ॥
सुवर बीर हिंदुअ सयन। वर बीर। रस पान ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

†कलाकल ॥ कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस बियं ॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंचि भयानक अंत करं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

झमकंत सु दंतन असि झरी। जनु विज्जुलि पब्बत मेघ परी ॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगद्दि पनं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) कृ. को.-मुकाति, ए.-सुकाति । (२) ए कृ. को.-छत्री । (३) ए.-संभर ।
*ए. कृ. को.-नर निर घोस दोष । (४) ए.-दुपट्टिय, मो. को.-लपट्टिय ।
(५) मो.-नौ रस में । (६) मो -सज्जि ।
†इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छद में केवल चारही सगन है ।

वजि [1]डौरुग्र डक्क निसान घुर । जनु वीर जगावत वीर उर ॥
दुग्र सेन वर्ल ग्रसियो वरपी । नचि जुग्गनि पप्पर लै हरपी ॥
छं० ॥ ६६ ॥

[2]जिनके सिर मार दुग्रार झरै । वहुर्यौ नन पजर ग्राय परै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ कहर मगर जिम पेल । ठेल्ल सेलन सम ठिल्लहि ॥
इक्क धुकत धर तुट्टि । *इक्क वल्लन गल मिल्लहि ॥
इक्क पामध उठत । इक्क ग्रतन ग्रालुझ्झहि ॥
इक्क हथ्थ पग झारहि । टिकि पग[3]पग विन झुभझहि ॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु । रन रवन [6]छिचिन कर्‍यौ ॥
धन धाइ घुम्मि घट धुकि धर । इम सु जुद्ध कन्हेह [7]भिर्‍यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप ।

किन्न दंति विन दंत । सुभट सीसन विन किन्निय ॥
हय किन्निय विन नरनि । सेन भीमह करि झिन्निय ॥
[8]पुच्छा विन किय काल । वाल वर विगरिन दिष्पिय ॥
पल डारिय पल पूर । सूर कन्ह। भय भिष्पिय ॥
कीनी सुकित्ति भूमी ग्रचल । सचल सस्त्र सह झम्झरिय ॥
मदमत्त गध महियों [9]ढुरिय । मनो वाय दष्षह गुरिय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ सत्तह [10] ग्राराधिय सुमहि । हरि दाढा ग्रन जान ॥
[11]सो सभरि सोमेस वर । सो कीनी पहिचान ॥ छं० ॥ ७० ॥

(१) ए कृ को-डरुग्र । (२) मो जिन ।
* मो इक्क वल्ल भग्गल मिल्लहि ।
(३) ए कृ को पग । (४) मो-पग । (५) ए कृ को तरफत ।
(६) ए कृ को छत्री । (७) ए कृ को लर्‍यौ । (८) ए पुधा, कृ पुदया ।
(९) मो दुरत । (१०) ए कृ का आधारिय ।
(११) ए कृ को से भरिवे सोमेम वर ।

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का सेना में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त॥ मध्य रूप मध्यंत। मध्य [1]अग्यान तन मोचन॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। वृद्ध वय कामिति सोचन॥
[2]पुत्र विना बिन बंध। बल सु बंध्यो भीमंदे॥
सार सुक्रत आरद्ध। सुब्ब लष्षं तंमंदे॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। *नय तरत्त रत्ती सुगति॥
सोमेस सूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति॥ छं०॥ ७१॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ती, रनं [3]रोस पत्ती॥ छं०॥ ७२॥

मनों काल [4]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते॥ छं०॥ ७३॥

षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती॥ छं०॥ ७४॥

उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती॥ छं०॥ ७५॥

तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत भूमी, मनों मेघ भूमी॥ छं०॥ ७६॥

कवि की उक्ति।

कवित्त॥ सघन घाय निघाइ। †मन्यौ को मरन अहुट्टिय॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय॥
कोन षेत तजि गयौ। कोन हान्यौ को जित्तौ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस वित्तौ॥

(१) मो.-धूम्मं। (२) ए कृ. को.-पुत्रि।
* मो.-"नयन तरत तरती सुगाति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
† मो.-"मुन्यो कौमर आहुट्टिय"।

छह धरी श्रोन असिवर उछौ । धार मार रुधि धार चलि ॥
सजुत्त अग्गि धूमह स जुत । [1]छलि वलि वीर वलिष्ट वलि ॥ छ ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिद्धि रिद्ध विथ्थुरिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन सलिल वढि चलिय । मरन मन किंकान जुट्टिय ॥
कालमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि वास सु वासिय ॥
जध [2]मगरे कर मीन । कच्छ पुप्परि पग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच । अंगुलि पग करि झिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि । वहत सार असरार ॥
*मानो जालुग अंत कौ । आनि सँपत्तौ पार ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना ।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि सूर । ढाहि [3]दीनै [4]वरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा [5]तरु कानै ॥
वे सराप नारद प्रमान । दरसन हर लद्धिय ॥
इन तमग उत्तरै । सार कट्टे वर वद्धिय ॥
निघ्घात धात मत्तौ कलह । असुर सुरन मत्तौ [6]महन ॥
कट्टै सुरत्त कित्तिय सुभट । सु कविचद [7]कित्तौ कहन ॥ छं० ॥ ८० ॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजंगी ॥ वजे वीर वीर सु सार पनक्कै । महा मुत्ति वत्ते सु वीर रेनक्कै ॥
गजे वीर वह कारन्नाल सद्द । सनाह सत्थूर वहै सार हद्द ॥ छं० ॥ ८१ ॥
नचै जग रग ततथ्थे तथग । [8]लचै रंक चित्त मन सूर [9]पग ॥
बढै वक कवा ससकौ धरान । नग नग्ग जुट्टै अमग्ग परान ॥ छं० ॥ ८२ ॥

(१) ए कृ को वलि ।　　(२) ए कृ को मकर ।
*ए कृ को मनो जोग जुगति को ।　　(३) ए कृ को-दीनो ।
(४) ए कृ को-नर ।　　(५) मो तर ।　　(६) ए महन ।
(७) मो कीरति ।　　(८) ए कृ को जग ।
(०) ए कृ को-चलै ।

ठनकंत घंटं रनक्के नफेरी। मया मोह दीपन्न हरन्न [1]नेरी॥
धरं धार ढौरै ढंढोरैं सु ढालं। मनों चक्र फेरैं कि पंकं कुलालं॥
छं० ॥ ८३॥

जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ समर समुद भीमंग। मध्य वड़वानल राजं॥
चाहुआन चालुक। रोस जुट्टे बल साजं॥
दल दष्षिन जदु जाम। कालप अंती कर कुप्पौ॥
[2]ता मुष्षह षंगार। झार अग्गी झर रुप्पौ॥
बिरचे कि [3]महिष बलवंड बल। दल [4]समूह चवदंत हुअ॥
नप काम जाम इक जहर झर। बहर रूप पिष्षेति दुव॥ छं० ॥८४॥

रसावला॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं। भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं।
छं० ॥ ८५॥

करैं केलि कंकी, षुते लज्ज पंकी। कलरं करारे, मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ ८६॥

पियें लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा घीर धूनें, फिरं अर्द्ध ऊनें॥
छं० ॥ ८७॥

बिना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती। गिरैं कूट कारे, झरैं रत्त धारे॥
छं० ॥ ८८॥

परैं [5]सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरैं षेत केकं॥
छं० ॥ ८९॥

दुअं मुष्ष लग्गैं, डिगै नाति डिग्गैं। परैं लोह पूरं, गिनै नाति सूरं॥
छं० ॥ ९०॥

बहै श्रोन धारं, झरैं [6]सिन्न तारं। .... छं० ॥ ९१॥

उन दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भेरी। (२) मो.-तमु। (३) ए. कृ. को.-वलष।
(४) ए कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूर । ज्यों मत्त [1]वृषभ रोस रगाइ ॥
गरजैं धर पुर षुदे । तक्कै धाइ अप्प अगाइ ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ।

दूहा ॥ अमर धर पन्नग असुर । पिषि सह रष्षित नैन ॥
सुमन ससभ्रम पिष्षि क्रम । सुमन स [2]वृष्टिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
सघन धाइ धूमत विघट । पिलै कि पन्नग मत्त ॥
विस भोए डविस सबल । [3]सगति नही जुग [4]जत्त ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ वाम अग सजि सग । वलिय वलिभद्र विरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत । सेत गज झप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह । घट धूघर घनघोर ॥
वष्षर पष्षर जीन । सार दद्दुर दल रोर ॥
गज गाज बाजि नीसान धुनि । अति उभ्भर दल जोर वर ॥
बजि लाग राग सिधू स धुनि । करन सु उथल्ल [5]पत्थल्लधर ॥छं०॥९५॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढना ।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय । सजि सारंगी आइ ॥
पिभिर षेत घन धाइ मिलि । जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

(१) मो-मनय रोम ।　　(२) मो वृष्टिय ।
(३) मो सक्ति, ।　　(४) ए तत्र ।　　(५) मो पथ्थ ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं । वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है । कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्राय कूरभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है ।

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]सूरं करूरं करारे। छुटै बान कम्मान करि बार धारे॥
परै कत्तियं घात निरघात वीरं। फिरं रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं॥ छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे। मनों कज्जलं कूट अहि चंद दारे॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे। मनों सूर सीसं घसे चंद तारे॥ छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अप्पेव मानं। सरं पंजरं पथ्थ घंडेव जानं॥
मिले सेल मेलं भएकं भयंती। छुटै धान मानों धनं कूटकंती॥ छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वारुंत भूपाल भूपं॥
जिनं कछ्छ वर्चं धरं अग्ग धारै। तिनं झल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै॥ छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं अग्ग धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर भारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं॥ छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल। उत्त अनुझिय सार॥
गोल गहर गाजी अनी। सोमेसर अरि मार॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन वीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर सूर बल चूरं॥
मंडे निजर करूरं। छंडे मरन मोह सासूरं॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहल नैनयं॥

(१) ए. कृ. को.-सार। (२) मो.-तीरं।

जो वड कारवान कथित दलं, अज्जन आयातय ॥
श्री बीर चहुआन वानति बल, चालुक्क सधातय ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ बढे वान चहुआन चालुक्क षेत। महा मंत्र विद्या गुर सुक्क जेत॥
धनें घोर नीसान गज्जे गहार। उठे जानि प्रासाद वर्षा [1]प्रहार ॥
छं० ॥ १०५ ॥

बजी भेरि भंकार नफेरि नाद। तडक्कत विज्जू करनाल साद ॥
छुटी वान जंत्री उडी गेन अग्गी। [2]महादेव बीरं चष निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुर हर्ष वीर। नचें ताल समाल वेताल श्रीर ॥
नचें न्रत्य नीसान नारद्द धाई। चढी व्योम विम्मान अपछरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्प गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालय ब्याल [3]ब्याल विचारी ॥
दुव दिग्गपाल दुव छत्रधारी। दुव ढाल ढिचाल मल्लं करारी ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअ [4]तवल दार दुव विरद वान। दुअ भूमि सधार हिंदू हदान ॥
दुअ सूर पूत दुअ [5]कास्य पाए। दुअ दद दारुन्न वाजे बजाए ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअ लोह मेवाड मडूर मान। दुअ हकि हकार बढ्ढे व रान ॥
दुव सैन स्याही जल वद्दलान। दुअ गज्ज गुम्मानय तेज भान ॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चचरी लोह डंडं डरारी। प्रढ्ढीय वेरा अचती करारी ॥
[6]सर जाल भाल भिदै जंत्र जीव। हयं हीस मंडे गरज्जे करीव ॥
छं० ॥ १११ ॥

(१) मो पहारें। (२) ए कृ को महावीर देव।
(३) को पत्री, ए कृ को-क्षत्री। (४) ए-तन्न, कृ को-तल्व।
(५) को-अस्व, ए कृ-अर्स्य। (६) ए कृ को-रस।

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती। गहै अंत गिद्धी गयनं भमंती॥
उछै छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं दृष्ट बंधूक पूजं [1]भुतंगं॥
छं० ॥ ११२॥

छुटैं मभक्क सभ्भरां नरं केकि कायें। लरें जंग हथ्थं विना केक राये।
उड़ै षुप्परी षग्ग झारैं करारी। मनों चंद सूरं दधी पूज धारी।
छं० ॥ ११३॥

किते धाइ अघघाइ धट धूम लुट्टैं। [2]तिनं जग्ग अनं क्रमं बंध छुट्टैं।
किते लोह छक्के रनं भूमि धूमैं। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमैं।
छं० ॥ ११४॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुत्ति कै भूम त्यारे।
कहै कव्वि वष्यान किं वर्नि तेनं। फलै [3]कृष्यि पच्छं मरनं जितेनं।
छं० ॥ ११५॥

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ। सार सत्तौ कोलाहल॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पसु, पंषिन कोलाहल॥
धर परंत धुरि धरनि। उत्त मंगलिहि कारहिं॥
भरर झरंत षग्गाह। बीर डंकिनि ढक्कारहि॥
महि मच्चि मह्लरत मरन रन। सह जाइ जय सुर करिय॥
चहुआन सूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना।

हय गय नर भर परिय। भिरिय भारथ समानं॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचै उनमानं॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै॥
हक्कि मार धकि सार। झुम्मि भग सार [4]सु रारै॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहिं॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन षिलहिं॥छं०॥११७॥

(१) ए. कृ. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-ऋष्यि। (४) मो.-सुसारे।

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एव रावत सामतों की संख्या कथन ।

बाजि लषि सोमेस । सहस वर इक्क प्रमान ॥
[1]तिन मध काढ़ि पचास । वीर भारथ भरि पान ॥
तीन तीस पट परे । पऱ्यौ सोमेसर षेत ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल । कक बध्यौ सिर नेत ॥
लभ्भी सु सुगति अदभुत जुगति । हस हकि हसह मिल्यौ ॥
सोमेस करी सोमेस गति । पच तत्त पचह मिल्यौ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना ।

दूहा ॥ जुझ्झि पऱ्यौ सोमेस धर । डोला चालुक राय ॥
दुहू सेन झरि धर परे । वजी वत्त पग चाइ ॥ छं० ॥ ११९ ॥
नए भृत्य न्रप रिप्पि के । ज्यो फिरि करिहै झुझ्झ ॥
चतुरानन चिता भई । नर भारथ्थ अनुभ्भ ॥ छं० ॥ १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ।

गाथा ॥ जा [2]मुक्ति जोगिद । काल काइ अस्स असाइ ॥
सा मुत्ती सोमेस । इक्क छिने लभ्भिय राजा ॥ छं० ॥ १२१ ॥
भूमी भरत भरय । कलय कर कथ्थि कव्वे व ॥
जै जै जपि जगत्त । है है नभ्भ सद्द सुर थाय ॥ छं० ॥ १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना ।

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज । भूमि सिज्जा अवधारिय ॥
तात काज तिन पिड । दान षोडस विचारिय ॥
भद्द मद्द सद्दयौ । राज गति अब्ब प्रकार ॥

(१)मो -तिन मध्य सु पचास । (२) ए कृ को मुक्ति, मुक्ति ।

द्वादस दिन प्रथिराज। भूमि सज्या संथारं॥
विन भोग भोज इक टंक करि। सुहथ दान दिय राज बर॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ। इतौ दान जनमंत नर॥छं०॥१२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बांधूंगा न घी खाऊंगा।

अट्ठ सहस दिय धेंन॥ *तब प्रथ्थी विधि धारिय॥
हेम स्रृंग षुर हेम। तौल द्वादस हिमसारिय॥
जुगति जुगति विधि नान। दान षोड़स विस्तारं॥
तात वैर संग्रहन। लेन प्रथिराज विचारं॥
घ्रत मुक्कि पाघ बंधन तजिय। सुव्रत वीर लीनौ विषम॥
चालुक्क भीम भर गंजिकै। काढ़ौ तात उदरह सुषम॥छं०॥१२४॥
अरिल्ल॥ धिग ताहि तोहि जीवन प्रमान। सध्यौ न तात वैरह विनान॥
राजिंदु द्दष्टि रग तेत नेन। बढ्यौ सु रोसु उर उमडि गेन॥छं॥१२५॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा॥ सजन सेन चाहै नृपति। वैर तात प्रथिराज॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ। पच्छ सु जुद्धह काज॥ छं०॥१२६॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त॥ बोलि विप्र प्रथिराज। तत्त बुद्धी अधिकारिय॥
राज क्रंम सब जान। अग्ग आगाह तन धारिय॥
जग्य जाप मति जोग। क्रम्म बंधन बल बंधन॥
दिषत [1]मुष्ष जनु [2]ब्रह्म। पाप भंजन जन सज्जन॥

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।

(१) मो.-सुष्ष। (२) मो.-ब्रिम्म।

जोगिंद जोग पुच्छै नही । काल चिदस जानै सुमति ॥
सासँति सूर सोमह कारन । सुविधि सूर मडी सुमति ॥ छं० ॥ १२७ ॥

दूहा ॥ राज विप्र बोले सुहत । जजन सुजग्य पवित्र ॥
तत्र कोइ पुच्छै नहै । क्रम बारन बर मित्र ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरवार में वैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ कर तिलक करना ।

पद्धरी ॥ आएसु विप्र दरवार बार । [1]साधत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवत [3]रत्ति प्रथमौत जोग । जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव । तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति विप्र इन विधि प्रकार । जानत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥
छं० ॥ १३० ॥

महि मगन मडि नहि निकट फद । दिप्पत देह आनद कद ॥
प्रथिराज इद्र राजिद जोग । अप्पै सु मुत्ति अरु भुत्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज । सोवन्न भूमि मडी विराज ॥
पद सहस सहस बर हेम इक्क । अप्पै सु दान मानह विसिक्क ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]मत्ति प्रथिराज किन्न । बर वीर धीर साधत भिन्न ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरवार में नृत्य गान होना ।

दूहा ॥ विविध दान परिमाने करि । निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिप्पा जहा ब्रम्म सुत । करि अभिषेक न्हपान ॥ छं ॥ १३४ ॥

(१) क-सावरन । (२) ए क को चार ।
(३) ए क को-रत्त । (४) कृ ए नैन । (५) को मो राजन ।
(६) ए कृ को जोगिंद्र । (७) मो मति ।

भ्रमरावली ॥ नव बीर नवं रस बीर नयौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रयौ ॥ भुजंगी
सिधि बुद्धिय विप्र समान धरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं।
छं० ॥ १३५ ॥

गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं ॥ दूहा।
त्रिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु ब्रनन कित्ति करं ॥
तमकौ तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं ॥
छं० ॥ १३७ ॥ भुजं।

गुर सत्त वुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम कलन्न नसं ॥
षहकें नग ज्यौं गज मग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं।
छं० ॥ १३८ ॥

... ... । मनु तारक तेज ससी उचारं ॥
छलकै छिति मत्ति जराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं
छं० ॥ १३९ ॥ दूहा

गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्वार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुभ्भ रोचन कासमीरं ॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं ॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति ॥
संसार भेद अभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रघाति साधत [7]सुरति ॥ छं० ॥ १

(१) ए.-जरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगा
(७) मो.-सुगनि।

भुजगी ॥ कुरगी सु चगी द्रपगीति वाले । इक मोल अमोल लोलत भाले॥
गरे पुष्फ माला विसालाति धारैं । मयका मुषी कठ [1]कलयठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारत विधि । न्रप जै जै प्रथिराज ॥
मनो इदु सुरपुर गहन । उदै कारै मनु साज ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ सपते तिन महल । जहँ सामत नरिंद ॥
इच्छिनि अचल गठ जुरि । मनो इद्रानी इद्र ॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजगी ॥ न्रप इच्छिनी गठि बधी प्रकारे । मनो कामता काम की बुद्धि तारें॥
दुहू रग रगी सु रगीति साधी । मनों जीव गुर राह एकत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥
सही सत्त मत प्रकारे निनारे । मनो मेनिका रभ आषे अपारे ॥
वर देषि असमान अभिमान जानै । बनै कोन इन्नत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दै । सब सामतन सथ्थ ॥
जस जा हथ्थन बिप्प के । भौ कामिनिति समथ्थ ॥छं०॥१४७॥

गाथा ॥ उभै राम बर सूर । सामत सत्त घट दून ॥
ता अप्पन प्रथिराज । चौ अग्गा लच्छि सग्राम ॥ छं० ॥ १४८ ॥

इच्छनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर सबन्धी पूजन विधान करना ।

भुजगी ॥ भई कामना काम कामित्त राज । दियौ कन्ह चहुआन हथ्थी बिराज॥
उभै राज राजग जोगिंदु मित्त । मनो देवता जीव के जग्य जत्त ॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामतों का टीका करना ।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय । दुत्तिय निडर रठौर ॥
इन अग्गह सुभ सत करि । तापछ सुब्भर और ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो कलकक ।

कवित्त ॥ कियौ तिलक वर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। हथ्थ इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। ढुरत चावद्दिसि सीसं ॥
मनों भान पर धरिय। किरनि ससि कौ प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुअ्र सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छत्र। सुमत चौहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बढ्यौ अनंद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल व्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय
सोमेश बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ३९ ॥



अथ पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते*।

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना।

दूहा ॥ †सुनि कागद प्रथिराज जब । वध्यौ भीम सोमेस ॥
आतुर परि आयौ जहां । दिल्लि देस नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन ।

दूहा ॥ कित्ति कला कूरंम वस । कहत चंद वरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोरा राइ ॥ छं० ॥ २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । ख्याला रानिंग रूय ॥
विरद बुलावे महबली । छोंगा सज्यौ सधूय ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छौंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ।

कवित ॥ छोंगा ला सिर छत्र । सीस वध्यौ पज्जून ॥
जस जयपत्त जु आनि । करै परसन सह [1]जून ॥
अप्पाते घर रैंठ । रीस कीनी चालुका ॥
हीय पटक्के साल । वात सभरि चालुका ॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों । अप्पानौ दल टारियौ ॥
पज्जून भलयसी वीर वर । कारन कौच उचारयो ॥ छं० ॥ ४ ॥

* मो प्रति में "पज्जून कछवाहा छौगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है ।

† यह दोहा मो प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है ।

(१) ए कृ को दून ।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झागी भी कहते हैं । सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है ।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना ।

दल भोला भीमंग । साल चिंतिउ सोनिंगर ॥
किये कूच पर कूच । काल घेर्‍यौ कि कूट गिर ॥
चंद मंडि ओपमा । सरद राका परिमानं ॥
उदधि मझि जिम अनिल । जलधि लंका गई जानं ॥
दल दूत राज पिथ्थह कहिय । हक्कार्‍यौ पज्जून बल ॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ । हनौ राज भीमंग दल ॥ छं० ॥ ५ ॥

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ वर । सथ लिन्नौ अप [2]जत्ति ॥
समर धीर बीरत सबर । लज्जी परै न [3]भत्ति ॥ छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

पद्धरी ॥ चढ्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं । मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं ॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं । *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं । लगे पाइ छत्री उठी भोमि भोरं ॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक थानं । अपं सथ्थ बीरं सु लीनं जुवानं ॥
छं० ॥ ८ ॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै । सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कंपै ॥
इकं चित्त इष्टं [4]निजा साइ मानें । इसे बीर कूरंभ रैवान जानै ॥
छं० ॥ ९ ॥

तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं । अचानक्क बीरं दरब्बार आयं ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

(१) ए. कृ. को. ऊपर । (२) ए. कृ. को.-जित्ति ।
(३) ए. कृ. को.-भित्ति । * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जान ।
(४) ए. कृ. को.-जिन ।

दूहा ॥ *चौकी भीमानी चढ़ै । झोला रानिग सथ्थ ॥
छोंगा वीर महावली । वर वीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना । मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ चपि काल पज्जून । वीर भोरा भीमदे ॥
कै आयौ उप्परै । फुट्टि पायाल सवद्दे ॥
सकल सेन चमक्यौ । वीर भोरा उठि जग्यौ ॥
मलसीह मुष काल । हाल सम [1]व्याल सु [2]भग्यौ ॥
[3]बक्कारे वीर छौंगा गह्यौ । सिर मडन लिय हथ्थ धरि ॥
आए सु सीस पज्जून करि । समर वाल वीर सुवरि ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जाना।

दूहा ॥ लै छोंगा वर [4]वीर चलि । चावक भूल्यौ हथ्थ ॥
सात कोस तें बाहुर्‌यौ । वर वीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ १३ ॥
पट्टन हट्टन मझ्झ ते । लै आयौ फिरि धीर ॥
ता पाछें बाहर चढ्यौ । दल चालुकी वीर ॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजगी ॥ चढे पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेन । हकारे नरिंद सु कूरंभ तेन ॥
सुने सद्द कन्न फिरे तथ्थ वीर । छुटै तीर तीर मनो सिंधु नीर ॥
छं० ॥ १५ ॥
बजै धाइ अघ्धाइ गज्जै हवाई । बजै आवध मझ्झ आवद्ध झाई ॥
मिले वीर धीर स्वय सूर भारे । परे रंग जंम मनो मत्तवारे ॥
छं० ॥ १६ ॥
झरै सार सार चिनगीस उट्ठे । मनो झिंगन भद्दवं रैनि वुट्ठे ॥
घन रत्त घटै उमा वीर रत्त । परै अट्ठदह वीर कूरंभ पत्त ॥ छं० ॥ १७ ॥

* ए कृ को "पिक्षा विमान चिढ्ढयो" ।　　(१) ए कृ को व्याल्ह ।
(२) ए कृ को लग्यौ ।　　(३) ए चक्कार ।　　(४) ए वाले ।

परे सहस चालुक द्वै वीन वीरं। तहां इत्तनैं भान चालुक नीरं।

छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मलसीह पज्जून रा। दस दिसि किति अवाज ॥

दै छौंगा भोरा फिर्यौ। गयौ सुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कानै गिरि [1]लाज ॥

छौंगा कूरंभ रावलै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है वर आरोहि ॥

घटि चालुक [4]बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोह ॥ छं० ॥ २१ ॥

मलसिंह रानिंग सुत। सुम्भर भोरा राज ॥

कूर्म अचानक यों पर्यौ। ज्यों तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥

*पज्जुन राइ महाबली। मलसिंह धर पारि ॥

छौंगा लै पाछै फिर्यौ। सुनि चालुक पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज प्रथिराज ॥

भट्ट चंद कीरति [5]तवै। कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

---

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो. कर दीनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ। (४) मो.-चवि। (५) ए. कृ. को.-तवी। * छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाडने से वालुका राय सोलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ [1]वालुक्का हिंदू कमध । अौर सु गोरी साहि ॥
सास भेद जैचंद किय । पति दोली सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना।

कवित्त ॥ आइ पवरि चहुआन । [2]सु दल वालुकराइ सजि ॥
आइस पग नरेस । साह साहाव वैर कजि ॥
लष्य दोइ भर दोइ । पुरह पोपद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त । दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिर कारी कढ़िय । समह राम प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध वालुक कमध । [4]कहैं कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है।

चालुक्का परि राइ । वीर वज्जे नीसान ॥
सवाल सूर सामत । पग्ग मग्ग किय पान ॥
सवर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरंभ को दलै । न्टपति इह तथ्य उच्चारिय ॥
जो चियन वस्य नन द्रव्य वसि । मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ । वियौ काम चित्त न गनैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

(१) मो चालुक्का । (२) मो -"सुवर चालुक्का राह सज ।
(३) ए कृ को प्रोहि । (४) मो कहौ कान चढै ।

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना ।

दूहा ॥ बोलि राज प्रथिराज तब । पान हथ्थ दिय [1]साज ॥
कहौ जाइ कूरंभ [2]कौं । इहै किज्जै हम काज ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ सुनि सुवत्त कूरंभ । कोइ झिल्लै न पान वर ॥
बड़गुज्जर दाहिम्म । चूर चालुक्क चंपि धर ॥
परमारह कमधज्ज । वीर परिहारय भट्टिय ॥
सकल सूर बर नठे । काल चंपै मति घट्टिय ॥
पज्जूनराइ षग अग्गरौ । करै नाम निरमल सु धर ॥
इन सम न कोइ रजपूत रन । डरहि काल [3]दिष्षिय [4]निजर ॥
छं० ॥ ५ ॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना ।

ए कूरंभह बीर । धीर आहत धनुद्धर ॥
*जो मह नह पूजंत । जोग षल षंडन सब्बर ॥
इनह अप्प बल दौरि । जाइ असि असि अरि झारिय ॥
एकल्लै पज्जून सिंघ । परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सीस कूरंभ धरि । सकल सूर सामंत नटि ॥
चालुक्कराइ हिंदू दुसह । विषम काल ज्यालह सु जुटि ॥छं०॥६॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट से उपमा वर्णन ।

(१) ए. कृ. को. बाज । (२) ए. कृ. को.-सौं । (३) ए. कृ. को.-दिष्षै
(४) ए. कृ. को.-नजरि । ※ मो.-प्रति-जोगन पुज्जे जोग षल षडन बीर ।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल । कमध सु पपय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल । ते सजि धाए [1]ऊँट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के वीडा उठाने पर सभा मे आनन्द ध्वनि होना ।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभ राइ । स्वय जानते सोइ कीनी सु भाइ ॥
मिलि अग्गि कूरम सोचित्त जान । गई हट्ठ चहुआन सुरतान मान ॥
छं० ॥ ८ ॥
वजै दुदुभी देव देव सु थान । भयौ सुष्प कूरम चित स भान ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोडा देना ।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग वर । वगसि राज तव वाज ॥
लिय कूरँभ कुल उज्जले । सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पाचो भाइयो का साथ होना ।

कवित्त ॥ [2]पग्ग बधि कूरम । आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुवर वीर वलिभद्र । तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कान्ह वीर वर वीर । सिध पाल्हन्न सुधार ॥
मलयसिंह सब हथ्थ । सग लीने भर सार ॥
चित स्वामिध्रम सो अरि मिरन । लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग वीर काइर धरकि । वजिग वीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढाई की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ वजिग वीर नीसान घन । पावस सक्र समीर ॥
चढिग जोध पज्जून [3]भर । सज्जि हयग्गय वीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चढ्यौ वीर वलिभद्र कूरम राय । काला पथ्थ कोट सुजोट दिषाय ॥
छवी तेज सुष्प सु सोभत वीर । मनों केवल अग वीर सरीर ॥
छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए कृ को जूट । (२) छो को -पगा । (३) मो परि

चढ्यौ वीर संगं नरं सिंग रायं। दिठौ दिठ्ठ दिठ्ठौ मनों वेद गावं।
चढ्यौ राइ पज्जून छत्रं सुधारे। वदै आहि स्वामी रषी रत्त भारे।
छं० ॥ १४ ॥

द्रुमं सीस फेरै पजूनं सहेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तिथं पंचमी पूर आदीत वारं॥
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा॥ तिथि पंचमि रवि वार वर। छंडि पंच भर त्रास॥
चढ़े जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि॥ छं० ॥ १६॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटका॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम वली, पज्जून रायं वरं॥
जित्ते तं सुरतान मान सरसं, आहत्त बानं बिषं॥
भूयो वाल भुआल भारथ कृतं, कप्पो धरा धट्टियं॥
तं काजं वर वीर धीर धरयं, संसार मुत्तं वरं॥ छं० ॥ १७॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ वीर। डपटीय जानि साइर गंभीर॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत॥ छं० ॥ १८॥
तहाँ हुए सगुन ए सुभ्र रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप॥
दाहिनैं पूठ म्रग म्रगिय जाय। वामहु सुवीय सारस सुभाय॥
छं० ॥ १९॥

उत्तरै तार देवीति वार। डहकांत सद्द जुग्गिनिय भार॥
म्रगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदे सुराज पज्जून जान॥छं०॥२०॥

पज्जून राय का यवन सेना के गुवालियर पर पहुंचना।

दूहा॥ सकल सूर कूरंभ बर। मान मयग सुष वीर॥
तबै राइ चालुक्क वर। आइ [4]सँपत्तौ तीर॥ छं० ॥ २१॥

(१) ए. कृ. को.-मुक्ताति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-वद्धै, कृ.-वंदै। (४) ए. कृ. को.-संपनौ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ संपत्त सूर भर। सुरतान। कमधज्ज ॥
कूरमह पज्जून सम। चढे जोध गुर गज्ज ॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनों प्रतिपक्षी सेनाओं का अतक वर्णन।

पद्धरी ॥ दुअ दीन हिदु समुह प्रमान। चालुक्क राइ अरि मलन मान ॥
चहुआन सूर रवि जेम वीर। पट्टन सु राइ अरि नसन धीर ॥
छं० ॥ २३ ॥
कूरम्म दान पग रूप दीन। असान जान रज रूप कीन ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ करिग सेन समुप सुवर। गरुड व्यूह किय वीर ॥
लरन मरन मारथ्थ क्रत। जज्जर करन सरीर ॥ छं० ॥ २५ ॥
[1]निछ व्यूह कूरम करि। नाग व्यूह सुरतान ॥
पा ततार पुरसान पति। नडि फौज मैदान ॥ छं० ॥ २६ ॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण।

कवित्त ॥ [2]पग जद्दव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय ॥
भट्टी सेन विपम्म। पिड पाव अधिकारिय ॥
जानु होइ पुडीर। नष्प उर मस अस करि ॥
चच अप सुभ जीह। वीर कूरम पयद्धरि ॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि। [5]लहि लोहानो [6]ठौर बर ॥
छवह [7]मुजीक पज्जून सह। दौरि पर्यौ बलिभद्र बर ॥ छं० ॥ २७ ॥

युद्ध की तिथि।

धरिय सत्त दिन रह्यौ। वार नौमीति सुक्र बर ॥
पच बीस आवट्टि। * यट्टि लोध सुवधि थर ॥

(१) मो गरुड। (२) मो पग। (३) ए कृ को राइ धरि।
(४) ए कृ को ग्रीगह। (५) ए लरि। (६) मो मीठि। (७) मो मुनीक।
* ए कृ को -"लुध्धि पर लुध्धि वंधि थर"।

कूरंमाह षग झारि । सार भारथ्थ सु किन्नौ ॥
सार वज्ज धरियार । टोप टंकार सु गिन्नौ ॥
आचार चारु राजन वरे । मरे वीर रजपूत वर ॥
संग्राम सूर कूरंभ सम । नर न नाग दानव्व [1]सुर ॥ छं० ॥ २८ ॥

श्लोक ॥ मानवं दानवं नैवं । देवांनां कुरु पांडवो ॥
कूरंभ राइ समो बीरं । न भूतो न भविष्यते ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना।

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि छुट्ट । इट्ठ बलिभद्र अंमरिय ॥
वलिय तप्प कूरंम । सार साहित्त धुक्कारिय ॥
यों पजून दल मल्यौ । सोइ ओपम कवि भाइय ॥
कमल पंति गजराज । सरित मकराहह झुकि आहिय ॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ धट । करिय एम कूरंभ घट ॥
सुध्धाट आइ कुधधाट किय । सुभट घाइ भारथ्थ [2]थट ॥ छं० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि । ते अंगन दिष्षाइ ॥
रुधि सुकै कद्दम हुए । हय तरंग सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना।

जुद्ध सुचालुक राइ तहँ । च्यार बंध परि षेत ॥
पंच भ्रात कूरंभ वर । उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना।

कवित्त ॥ उप्पारिग पज्जून । बीर बलिभद्र उपारिग ॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु । घाव [3]सठ्ठ तन धारिग ॥
परि पंचाइन कान्ह । जैत जैसिंह जुवानं ॥
हिंदु बीर दस ज्ञान । मेच्छ गहुन परिमानं ॥

(१) मो.-अमर । (२) ए.-तट ।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठे ।

लुट्टे दरब्ब गज बाजि रथ। रिध राव उप्पारयौ ॥
जस जैत लियौ कूरंभ [१]रन। जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छं ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा।

दूहा ॥ * आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गज न सक्कै आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस पट्ट चहुआन वर। समुप राय वर वीर ॥
उभै वीस अरु पच दिन। न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥४१॥



(१) ए रु को नर।

* छन्द ३४ मो प्रति में नहीं है।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय।)

कविचन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ चलन [1]चित चंदह कर्‌यौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल अप सथ्थ ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियो का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है बर [3]विसाल । सत [4]वारुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक बेद जोजन प्रमान । घटे * सबल क्रत पाइय ॥
साज लष्य तन लष्य । सकल बल कोरि सजाइय ॥
धानुक्क धार सत अठ्ठ चलि । कारन तिथ्थ जानह चलिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[7]गज घट्टन चवाल । भेरि सहनाइय वज्जिय ॥
चलत आइ चित्रकोट । पुरन त्रियलोक [8]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
शृंगारिय गढ हट्ट । [9]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥

(१) मो चित्त । (२) मो पैं । (३) ए क को-विलास ।
(४) ए कृ को बारुनह । (५) मो समथ्थह ।
*पाठ अधिक है । (७) मो घज । (८) ए कृ का-पराष्षिय ।
(९) मो मनों इन्द्र थान विसिष्षिय ।

बजि चंब बंब वज्जन बहुल। मन उच्छाह मिष दान दिय॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [1]तथ्थ हेरा करिय॥छं०

चितौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा॥ गिरवर डूंगर गहर बन। प्रबल पेषि जल ठौर॥
चित्रंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर॥ छं०॥ ४॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर वर॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी॥
महलायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी॥
पागार पोरि आगोर करि। थान सदेवत पिष्षयौ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्षयौ॥ छं०॥ ५॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइब। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कढ्ढि पाषान महि। गिरि कंदर इक रिष्ष॥
मुहु अग्ग सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्ष॥ छं०॥ ७॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त॥ नगर अजोध्या न्टपति। नाम कीरत्ति धवल्लं॥
सर ऊसुरि तातटृ। रमत सिक्कार सयल्लं॥
तानि बान क़म्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय॥
तरफंरत अवलोकि। श्रोन घन धार अवंतिय॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल संजुगत॥
अड़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट महि तप तपत॥ छं०॥८॥

(१) ए. कृ. को.-सथ्थ। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्य्यंत मो.-प्रति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि । सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
सुनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥

अनुराग सुत्तपति को हरष्य । उठि चलिय मिलन मारग गवष्य ॥
चकचूर मद्दय परि पहुमि आइ । तडिता कि तेज तारक दिपाइ ॥
छं० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्य गिरि झप पात । पावहि न गत्ति इह सत्ति वात ॥
जप तप्प तिथ्थ असनान दान । काटिक्क पढहु पंडित पुरान ॥ छं०॥११॥

अतहु सुमत्ति गति होइ सोइ । अहकार उअर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ वधिनि होइ विकराल । आइ गिरि कदर प्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स । भजि अँग जगल नासिय ॥
दृत कति चमकत । जरित कुदन मय मेष ॥
ईहा [1]मोह करत । जनम पछिलो सपेष ॥
असराल चष्य अस्रु ढरत । पस्सरहि तुच मस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि । गय नगन उडि हस चरि ॥छं०॥१३॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि । श्रवन आइ उपकठ ॥
राम नाम समलाइ सुर । कुअर पाइ बैकुठ ॥ छं० ॥ १४ ॥
रघुवसी राजिद नें । मन हटक्कि रषि तन्न ॥
ग्रमवती हिरनी हनी । तिहि वदलो लिय अन्न ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना।

कवित्त ॥ कवि सु सथ्थ मति प्रबल । बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस मोहन । अनत इद्रानि इद्र घर ॥
रुप माल सु विसाल । मेघ माला सुभ मजरि ॥
मदन वेलि मालति । विसाल सत अट्ठ अनवर ॥

(१) कृ पोह।

नरकंध रथ्थ के आरुहिय । ढंकि छब्बि मनों अंब जल ॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद । मोध निरधि मनुराज थल ॥
छं० ॥ १६ ॥

कितक छब्बि वस्त्रंग । मद्धि माला मुत्तिय मनि ॥
सौतारामौ सहस । कनक थारी सत बीजनि ॥
अगर पान अड़सट्ठ । रजक पालिका पठाइय ॥
सुवन इक्क पुत्तरिय । कर सु सारंग [1]मुह गाइय ॥
मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहं । भरन भोर अन्नन भरिय ॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल । कवि सपियन आदर करिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

कवि का चित्तौर जाना ।

दूहा ॥ दिय बहोरि न्रप नगर कों । प्रिथ आसीस पढ़ाइ ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल । करिस [2]कूप कल नाइ ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि । मात भवानी भेटि ॥
फुनि नरिंद चित्रंग मिलि । चंद दंद तन मेटि ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का डेरा भोजन परोसना ।

अरिल्ल ॥ प्रतिहारन रावन पधराइय । बोलि मंच भोजन बुलवाइय ॥
करन प्रथा जेवन परिमानं । उड़ि धुगार अगार सु प्रमानं ॥
छं० ॥ २० ॥

[3]लोह कुंड रचे सुर सच्ची । कुरछून झारि दियंत सु षिच्ची ॥
मनों ओपमा में छबि [4]रच्ची । जेवैं बरन अठारह जच्ची ॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय । नारि केल पुज्जै नर नारिय ॥
कलिनि कलंक काल कटि मारिय । जेवैं सब परिगह परिवारिय ॥
छं० ॥ २२ ॥

(१) ए.-सुह ।
(२) ए कृ. को.-कूष, कूर ।
(३) मो लहो ।
(४) मो.-मेछ ते रंची ।

केसर अगर पौरि सब किद्धिय । पान सुपारि कपूर प्रसिद्धिय ॥
हथ्थीं है मोती नग विद्धिय । दान मान रावर कर दिद्धिय ।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज द्वै तुरी पठाइय । कान्ह एक गज मुत्तिय गाहिय ॥
अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय । जो चित्र ग भ्रत्य सम राइय ॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर । सुष्षासन आरोहिय उप्पर ॥
मोती जरित मोल धन सम्भर । दीय सु दान मान अपरपर ॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना ।

दूहा ॥ चलिय चंद पट्टन पुरह । अहि सिर पर धरि पीर ॥
पथ एक पथ्थह चलिय । द्रिग सागर दिपि नीर ॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना ।

कवित्त ॥ उत्तरि हथ्थिय वाजि । * पाइ प्रति मिले सु मगन ॥
दिट्ठिय देवल धज्ज । पाप परहरि अंग अगन ॥
गजत पिट्ठ गोमतिय । भान तप तेज विराजिय ॥
सागर जल उच्छलै । पाप भजन पाराजिय ॥
रिनछोर राइ दरसन करिय । परिय मोह मानुष्य पर ॥
सुरयान मान इतनौ सुचित । देवलोक कैलास दर ॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हाटक मंडप छत्र लहि । मुत्तिय [1]पतिन मोल ॥
मनों चंद बहु भान मभ्क । काल मप कट्टत कोल ॥ छं० ॥ २८ ॥
फिरि परदछ दरसन करिय । हुअ परतष्पि प्रमान ॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि । प्रभा विराजिय भान ॥ छं० ॥ २९ ॥

* मो पाइ प्रति चले सु मगल ।

(१) ए गतिय, पतिय ।

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति ।

रसावली ॥ तुअं देह हट्टी, तुअं मान वट्टी । तुअं बीर दट्टी, तुअं थान ।
छं० ॥ ३० ॥

तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं । तुअं भाल मालं, तुअं ।
छं० ॥ ३१ ॥

तुअं देस दष्षी, तुअं मीर भष्षी । तुअं द्रोप रष्षी, तुअं सर्ग सष्षी ॥
छं० ॥ ३२ ॥

तुअं तीन रष्षी, तुअं ब्रह्म सष्षी । तुअं पंप रोही, तुअं गोप मोही ॥
छं० ॥ ३३ ॥

तुअं सत्रु दोही, तुअं सथ सोही । तुअं सिद्धि तूंही, तुअं रिद्धि सोही ॥
छं० ॥ ३४ ॥

तुअं सर्व अंडं, तुअं तीन कुंडं । तुअं पित्त [1]पंडं, तुअं चार मुंडं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

तुअं ध्यान गट्टं, तुअं रंभ थट्टं, । कवीचंद पट्टं, गयौ दूर रट्टं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ हरिहर वच सच वारि वर । पुर धरि सिर पर इंद ॥
मनुँ गुर तरु फर भार नमि । गालमलि हलि गोविंद ॥ छं० ॥ ३७ ॥

देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी । नमो तुं नमो तुंज संसार सारी ॥
नमो तुं असष्षी नमो बीज भष्षी । नमो रिष्ष पूजंत सजंत सष्षी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई । नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥
नमो तंत जालं विकालंत राई । नमो विश्वथानं [3]गिरंजा गिराई ॥
छं० ॥ ३९ ॥

*नमो ससिपालं अकालं अभष्षी । नमो कालजन्मं न कालं न सष्षी ॥
नमो एक अग्नी भरत्तार पंचं । नमो कोरि कोरं करत्तार संचं ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. कृ. को.-पंडं । (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुज्झ, तुझे । (३) ए. कृ. को. गिरज्जा ।

* मो.-नमो ससि पाल अकालंत राई । नमो काल जमन्न कालं नसाई ॥

नमो सिद्ध तु रिद्ध तुं दद्धि पानी। नमो काल तुं माल तु साल रानी॥
नमो कित्ति तु मत्र तु गीत गानी। नमो आदि तु अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

नमो विश्व तु मित्त तु भार भारी। नमो जोग तु जीव तु जुग्ग चारी॥
नमो भूमि तु धूम तु अब पानी। नमो तप्प तु ताप तु अठ्ठरानी॥
छं० ॥ ४२ ॥

नमो बाल तु वृद्ध तू हाल चाली। नमो मान तु मान तु मुत्ति माली॥
नमो व्याध्र तुं सार तुं वाग वद्द। नमो मुंड मुंड तुही पारि सद्द॥
छं० ॥ ४३ ॥

नमो पत्र तुं छत्र तु छित्ति धारी। नमो दृष्ट तु दृष्ट तु अघ्घ हारी॥
नमो रूपतु रंग तुं राग [१]रत्ती। नमो भील तुं भाव तु सील [२]सत्ती॥
छं० ॥ ४४ ॥

नमो भ्रत्त तु दत्त तु वारु वानी। नमो चंद घड़ी सदा चारु मानी॥
छं० ॥ ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा॥ करि असतुति ससतुति सुवर। होम हवन हरि नाम॥
सोवन तुला सु साज वर। करि सुभट्ट मुंचि काम॥ छं० ॥ ४६ ॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रय रथ्थिय [३]द्रव दिद्ध॥
हाटक चीर [४]वसुधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७ ॥

द्वारिकापुरि मे छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नाहि दिवावहि॥
ते दरवारह चढ्हि। न्याय हय पिठ्ठ दगावहि॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [५]झूलत तर वर॥
दीनी न जिनहि परदच्छिना। दडदत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए ट को रत्ती।　(२) ए क. को -समा।　(३) ए रु को -घर।
(४) ए क को अनत अनि।　* छन्द ४८ और ४९ दोनों मो प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं।
(५) ए -झमत, को भूलत।

*कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [1]फिरंत नर ॥छं०॥
भद्र भेषनह हुए। जाइ गोमत्ति न न्हावै ॥
तजै न अम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन हन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
आह्र अंष परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न आद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम।
छं० ॥ ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अचग्गल ॥
पट्टन पति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर ॥
तिन सेवर वदि वद्द। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नगर पहुच्चौ चंद कवि। मनों कैलास समाष लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रबल। सघन साह [3]चाहन चलहि ॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इलो उप्पर इल भारं ॥
विप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस वीस वहु। दोइ गंजन वादह पऱ्यौ ॥
अन्नेक चीर स्रूपर फिरंग। मनों मेर कंठै भऱ्यौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को -फिरत। (२) ए. कृ को.-दारह।
※ "कविचन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।
(३) ए. कृ. को.-वाहन।

पलक विविध धन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुकत मति मजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि। किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान। रज्ज साला हिम माइन ॥
भाषन सु भाय कहुँ सुपह। सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब वसहु द्रय मानि मन। कवि मोहन दिष्षीय वल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन।

अर्द्धनराच ॥ वजान वज्जय धनं। सुरा सुर अनगनं ॥
सदान सद्द सागरे। समुद्दय पटा झरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]मय्य द कै गज बर।　　　　॥
हल मल हय गय। नरा नर नरिंद्य ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिर वर [2]सुरा धर। सवद्द सागर पुर ॥
अनेक रिद्धि भानय। नव निध सु जानय ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुभय घन। इला सु पानि गगन ॥
असा अनेक कुंडन।　　　　॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवर समानय। परीस रंभ जानय ॥
वतक्क सार समय। अनेक हंस क्रम्मय ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरे सु नीर कुंभय।　　　　॥
अरुद्ध काम रथ्थय। सु उत्तरी समथ्थय ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुढिग। जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय। मनहु कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में। हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति। भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए. कृ. को. मृगद कागज गर।　　　　(२) मो. सुधा।

किनक जान भोरा काह्यौ। दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई वर दान दुन। नाम चंद ब्रह्म वेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समप्पन ॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर वाद सपप्पन ॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐरा किय ॥
लै सु जाहु तुम लच्छि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहारिय ॥
षल दुष्ट भट्ट आयौ वरै। करि गुरुभ्मौ मंत्रह सुपरि ॥
आरंभ डंभ सुनियै वहुत। कर पिछानि मन षेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा ॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रूप दुरि। वेस अचंभम [3]नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सोमेसर किन बधिय। चंद जानौ वह गत्तिय ॥
आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया को राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥
इह सु जुद्ध तें वड़ौ। गाम धामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिको कहौं। बुरुभ्मौ नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥छं०॥६५॥
दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर ॥
वत्त धत्त भर सब्ब मिलि। [4]सह अष्पिय द्रव कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) मो. सलप्पन।
(२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट।
(४) मो.-"सह अप्पिय इव कोर"

साज बाज सब फेरि दिए। प्रथु किय किति अपार ॥
जगदेवह भोरा भनिय। [1]काह सु कवित्त उचार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना।

सोमेसर किन बधिय। सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर क्यों सहिय। किद्ध किन आबू कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस। वह सु दिल्ली विरदा मैं ॥
क्रूप पीर आदरै। धाम उद्दरे न्त धामे ॥
बागुरिन हत्त अवतार गनि। भिरि भुअंग भोरा सुवर ॥
अवतार लियौ कलि उप्परौ। कलि प्रगटिय मनु सहस कर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी। च्यार इडी [2]रधानिय ॥
इक गज्जनी सहाव। सुइ सूपौ तुर [3]तानिय ॥
इक राइ परमार। सधर सिर बानग जित्यौ ॥
कारन मद चालुक। दई तिहुवार विधुत्तौ ॥
मेल्हौ जु तीन तिहु राइ घर। सु इह बत्त जुग सब कीय ॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि। एक राइ तुम उद्धरिय ॥ छं ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दस लष्पन भष्पन करै। प्रथु सामंत कुमार ॥
भोरा उठि गोरा गयन। सब सिर छत्र उभार ॥ छं० ॥ ७० ॥
चढि भोरा तुम उप्परें। दरियापति दस लष्प ॥
[4]पग्ग साहि भजै सुभर। सित्त सूर पति भष्प ॥ छं० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ।

कवित्त ॥ दइय सीप जगदेव। जाहु तुम लै आओ प्रभु ॥
जदिन सूर सामंत। तदिन पिष्यौ सुरत्ति सुभ ॥
ताम करिग तुम सुथिर। पाव चंचल होइ जैहैं ॥

(१) का-कवि। (२) ए कृ को-रधानिग। (३) ए कृ को सुग्तानिग।
(४) ए कृ. मूग।

मेछ मिलै षट षंड। परम [1]उतमंग जुध जुरहैं ॥
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी हम वारै ॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा ॥ आइ सु भोर चंद थह। हय गय नर भर भार ॥
सथ्थ सपन्नौ तथ्थ सब। बज्जा बज्जिय सार ॥ छं० ॥ ७३ ॥
देषिय डेर। भीम न्रप। उच्चै थह आवास ॥
गौष पट्टिका बनि गउख। देषिय बादर [2]रास ॥ छं० ॥ ७४ ॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। सुअ भोर भीमंग ॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंध तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी ॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धौ विषंड। अनेक दीप वाहन उतंड ॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर ॥छं०॥७६॥
गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष ॥
प्रति तिरैं मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अनेक माल ॥
छं० ॥ ७७ ॥

तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सभझ्झ गुज्जर नरेस ॥
मझ्झि दीप रोम राहब कुसाब। संजाल दीप प्रति काल आव ॥
छं० ॥ ७८ ॥

गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन ग्रहझझ दक्खिझ आसिष्ष बीर ॥
हय मुष्ष ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]टेक ॥
छं० ॥ ७९ ॥

---

(१) ए. कृ. को -उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

वाहन अरोहि लीने असप । प्रति पान पुरोतन लड्ड पय ॥
अवतार सेस लीनौ अवन्नि । इन भंति चद्र कवि करि तवन्नि ॥
छं० ॥ ८० ॥

कविचन्द और अमर सिह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना ।

कवित्त ॥ तब पुच्छिय भीमग । तुम वरदान सु दिझिय ॥
वाद [1]वद्दि देवग । सुपन पिप्पिय मन सिझिय ॥
चद देव किय सेव । तिन सु अमरा बुलाइय ॥
थूल रथ्थ आरूढ । चद असमान चलाइय ॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह । फिरि न वाद कीनौ वलिय ॥
नट्टी जु सपी उपजी अनल । सुरस वचि नचौ कलिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

अरिल ॥ जीता वे जीता चदान । परि पिप्पिय रप्पिय रमान ॥
मुप बुल्लै जै जै चहुआन । नाटिक करि नचै निरवान ॥ छं० ॥ ८२ ॥
हल हलत तबू हल हिलिय । वदि मत्त है गै पति चलिय ॥
चद मत्र पट्टन चल चलिय । मनों अब ताराइन तुलिय ॥
छं० ॥ ८३ ॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना ।

दूहा ॥ आरोहिय असु उप्परह । उडी रेन पुर षेह ॥
भोरा चढि सोरा भयौ । गयौ अप्पने ग्रेह ॥ छं० ॥ ८४ ॥

कविचन्द का सुरतान की चढाई की खवर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना ।

प्रथु कागद चंदह पढिय । आयौ परि गजनेस ॥
कूच कूच मग चद परि । पहुच्यौ घर दानेस ॥ छं० ॥ ८५ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चद द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४२॥

(१) मो छद ।

अथ कैमास जुद्ध लिष्यते।

(तेंतालीसवां समय।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना।

गाथा॥ इक दिन साहि सहाव। अष्पिय समह पान तत्तारं॥
अरु षुरसान विचार। समर समुप राज प्रथिराज॥ छं०॥ १॥

तत्तार खां का वचन।

उच्चरि ताम तत्तार। अरि अति जोर सूर सम रार॥
सम कैमास विचार। पट्ट दिसि मंत साह साहाव॥ छं०॥ २॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन।

हनूफाल॥ बर मन्त किय सुरतान। कैंमास दिसि परवान॥
चहुआन दिल्लिय चित। पट्टूअ दिसि मन पति॥ छं०॥ ३॥
सवत्त हर च्यालीस। वदि चैत एकमि दीस॥
रवि वार पुष्य प्रमान। साहाव दिय मेलान॥ छं०॥ ४॥
चय लष्य [1]अस असवार। वानैत सहस चिआर॥
पयदल सु लष्य प्रचंड। चय सहस मद गल झुंड॥ छं०॥ ५॥
चलि फौज दुंदभि वज्जि। भद्दव कि अबर गज्जि॥
वानै सु गज्जि सिरज्जि। सुर राज विपन विरज्ज॥ छं०॥ ६॥
दस कोस दिय मेलान। यह पेह रुधिग भान॥ छं०॥ ७॥

(१) मो रूप।

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना।

दूहा। ॥ पारसपुर तहां सरित तट। उतरि आय साहाब ॥
[1]रबि उग्गत दल कूच किय। उलटि कि साइर आव ॥ छं० ॥ ८ ॥

हनूफाल ॥ उलथ्यौ कि साइर आव। सम चढ़े षोन नवाब ॥
तत्तार मंच सु प्रौढ़। षुरसान षानति [2]गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥
मारुफ षान [3]सुमन्न। बर लाल षान [4]नहन्न ॥
आकूब तेजम षान। ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥
सब लिए हय गय रिद्धि। उत्तरिय षानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तचर का आना।

दूहा। ॥ उतरि साह बर सिंधु नदि। किय मुकाम सब सथ्थ ॥
निसा महल सुरतान किय। बोले षान समथ्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥
आइ भट्ट केदार बर। दै दुवाहु तिन वार ॥
कहै साहि के दार सम। कहौ अर्थ गुन [5]चार ॥ छं० ॥ १३ ॥
[6]मंडि भट्ट रिन जंग गुन। साहि पथ्थ सम सोइ ॥
तन विभूति सिंगी गरै। आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
इस्माइल काइथ सुकर। इह लिष्षी अरदास ॥
आषेटक षेलन न्टपति। मन किय षट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

परी हक्क दस दिसि न्टपति। चढ़ि चल्लौ [7]चहुआन ॥
धर गुज्जर अरु मालवै। सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना।

सुनिय बत्त [8]इम दूत मुष। भय चलचित्त सुरतान ॥
[9]गुज्ज महल सब बोलिकै। बैठे कारन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

---

(१) मो.-रति। (२) मो.-सूढ़। (३) ए. कृ. को.-मुसन्न।
(४) ए. कृ. को.-षान हसन्न। (५) ए. कृ. को.-चाइ। (६) ए.-मनि।
(७) ए. कृ. को. सुरतान। (८) ए. कृ. को.-ए। (९) ए. कृ. को.-गुह्य।

पद्धरी ॥ साहाव कहै तात्तार पान । उपजै सुमच अप्पौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तैं जु प्रथिराज आय । कैमास आन कीनौ सहाय ॥ छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गये लोज घट्टै अनत । झुम्झत हारि तो सेन अत ॥
आपूव तम्मि आपैति वार । सम लालपान हस्सन हकार ॥छं०॥१९॥
हम च्यारि पान वधव सु प्रीति । साहाव साहि आनै सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस । कै गहैं पथ्थ मक्का विदेस ॥छं०॥२०॥
सामत कितक वल सूर कौन । लग्गे सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारौं सु वध हम वल [3]अछेह । देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥ छं० ॥ २१ ॥
जीवत वध आनै सु राज । हम जुद्ध करैं साहाव काज ॥छं०॥२२॥
दूहा ॥ सुनिय मन्त सव पान मुष । वध्धा जोर सहाव ॥
रह पट्टू दिसि चल्लियैं । उलट कि साइर आव ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना ।

कवित्त ॥ ग्यारह से च्यालीस । चैत विदि सस्सिय दूजौ ॥
चढ्यौ साहि साहाव । [5]आनि पजावह पूज्यौ ॥
लष्प तीन असवार । तीन सहस मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच । [7]फटिय जुग्गिनि पुर वत्तह ॥
सामत सूर विकसे उअर । काइर कपे कलह सुनि ॥
कैमास मन्नि मन्तह दियौ । ढिँग बैठे चामुड [8]फुनि ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामतों से सलाह करना ।

दूहा ॥ कह्यौ मत कैमास तहँ । सजि आयौ सुरतान ॥
अव विलव किज्जै नहीं । दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

(१) मो "ढिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो परि गए। (३) ए कृ को अछेक। (४) ए कृ को मेक। (५) मो आय पजाब सु पुज्यौ। (६) मो सत्तह। (७) मो पटिय। (८) मो पुनि।

बेर बेर आवंत इह। मानै मेछ न संधि॥
उरह लौन प्रथिराज कौ। आनौ साहि सु बंधि॥ छं० ॥ २६॥
सुनत बचन कैमास के। कही राव चावंड॥
आन राज चहुआन पिथ। हौं मारौं गज झुंड॥ छं० ॥ २७॥
सुनि संभरि नृप मौज दिय। हैवर सहस मँगाइ॥
मनि मोती सोवन रजक। हसती [2]सपत अमाइ॥ छं० ॥ २८॥
गैवर दस हय सात सै। दिय कैमासह राइ॥
तुरी तीन सै बीज गति। दै चावंड चितचाइ॥ छं० ॥ २९॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतों के नाम कथन।

भुजंगी॥ चढ़्यौ संभरी नाथ चहुआन राजं। चढ़े लष्ष [1]पावं समं सूर साजं॥
चले मुष्ष अग्गै सुहथ्थी हजूरं। मनो प्रब्बतं निर्झरं मद झरत पूरं॥
छं० ॥ ३०॥
चल्यौ मंत कैमास सा काम अग्गै। चियौ राइ चावंड सम बीर सग्गै
जूचल्यौ लंगरीराइ रन जंगं। सकै राइ गोइंद सा काम अंगं॥
छं० ॥ ३१॥
*चल्यौ चच्च कान्हा नरं नाह रन्नं। चले बीर पामार तेजं तिनन्नं॥
†बरं बीर नर सिंध हर सिंध दोऊ। भरं राम बड़ गुज्जरं कानका सोऊ॥
छं० ॥ ३२॥
चल्यौ अचल सूरं सुजंगं जुरन्नं। चल्यौ चन्द पुंडीर चन्दं बरन्नं॥
नरं निड्डुरं सूर कामधज्ज रायं। चल्यौ बग्घ बघेल रन जुरन चायं॥
छं० ॥ ३३॥

शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम।

भुजंगी। चल्यौ तमकि षुरसान साहाब भानं।
चली फौज तत्तार षुरसान षानं॥
वरं रुस्तमं षान [3]आषूब मानं।
सुभै फौज साजी किधौं समुद पानं॥ छं० ॥ ३४॥

(१) मो सत्त अनाइ। (२) मो-एकं।

* ए.कृ.को-चल्यौ सथ्थ काका नरनाह कन्हं। † ए कृ को.-वरं वीर हरसिंह वरसिंह दोऊ।

(३) मो.-आकूब।

दिपै पान दरियाव दरिया समान। लुथ्थौ अश्व [1]पुर पेह रवि आममान॥
चल्यौ पथ्थर धार पति पान पान। उभै सोर सिगी चली पति वान॥
छं० ॥ ३५ ॥

चल्यौ मलिक ममार षा ताजषान। फतेषान षाहारषा वध ज्वान॥
अलूषान [2]आलम ते अग्ग वान। सुभै गष्षरं षान कम्माल षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥

चल्ययौ [3]पतिक मारुफषा सो अमान। चल्यौ पहिलवान सु गाजी [4]पठान॥
चल्यौ हब्बसी एक हब्बीवषान। चल्यौ समसदीषान रुम्मी अषान॥
छं० ॥ ३७ ॥

चल्यौ ग्यास दीवत्त गरुअत्त षान। चल्यौ चिच षान गुर वीर दान॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पडना।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन। दोऊ समद समान॥
उत साहिब षुरसान कौ। इत सभरि चहुआन॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन।

भुजगी॥ चल्यौ साहि साहाव करि जुद्ध सोज। करी पच फौज सुभ तथ्य रोज॥
वर मद वारे अकारे गजान। [5]हले रत्त चौ सट्ठ वैरत्त वान॥छं०॥४०॥
परी फौज में सोस सुविहान छच। तिन देषते कपर्द चित्त सच॥
तहा धारि हथनारि कमनेत पच। ॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहा लष्ष पाइक्क पतौ सपेष। तहा रत्त वैरष्ष की वनिय रेष॥
तहा तीन षाहार मै मत्त जोरं। तिन गज्जतें मद मधवान सोर॥
छं० ॥ ४२ ॥

तहा सत्त उमराव सुरतान जोट। मनो पेषिये मध्य साहाव कोट॥
इम सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्प। विना राइ चहुआन को सद्दै तप्प॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) मो पुर हेवर। (२) ए कृ को आगम। (३) ए कृ को -मलिक।
(४) ए को -समान। (५) ए कृ को -"हलें रत्त चौर सबै रत्तवान"। (६) मो चढ्ढीय अप्प।

शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ कूच करना।

कवित्त ॥ षबरि आइ प्रथिराज। निकट सुरतान सुहाइय ॥
सज्जि सूर गज बाजि। धाक दुरजन दल पाइय ॥
किय मुकाम दिन च्यार। रहे गोइंदपुरा मह ॥
सुनि अवाज संसार। लष्ष नयमीर सु संग्रह ॥
सत लष्ष पच्छ भर आइ मिलि। कहै चंद बरदाइ वर ॥
चहुआन कलह सुरतान सम। धमधमंकि धुन्निय सु धर ॥छं०॥४४॥

दूहा ॥ चल्यौ साहि षट्टू दिसा। दिय मेलान मिलान ॥
लाल हसन आकूब सम। च्यारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडे में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ च्यारि षान अगवान। साहि सारुंड सु आइय ॥
सुनिय षबरि चहुआन। मंत्रि कैमास बुलाइय ॥
कहै राज प्रथिराज। साहि आयौ तुम उप्पर ॥
दल सज्यौ अप्पान। जुरें जिम आइ अडम्भर ॥
इह कहै राव चामंड तब। राज रहै षट्टू घरह ॥
हम जाइ जुरें सामंत सब। बंधि साह आने घरह ॥ छं० ॥ ४६

पृथ्वीराज का पांवडराय की प्रशंसा करना और प्रातः काल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना।

कहै राज प्रथिराज। राइ चामंड महा भर ॥
तुम कुलीन बर लज्ज। लज्ज मो तुमह कांध पर ॥
रहत घटै मुहि लज्ज। बंधि आनै लज बढ्ढै ॥
कहै तास कैमास। राज दिन सुध लै चढ्ढै ॥
इह कहिए धाव नीसान किय। भर सामंत सु बोलि लिय ॥
प्रथिराज चल्यौ रवि उग्गतह। पंच कोस मेलान दिय ॥छं०॥४७

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पचोसर मे डेरा डालना।

दूहा। ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पाचो[1]सर नाम ॥
सुनी षवरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रात काल पहुचने की खवर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षवर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौ। मो पच्छै दिषि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षवरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। जाइ सनमुष मडै [2]वप ॥
पच फौज साहाब। करिय भर पच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिषि लिषि तहा सुभ्भर ॥
मन्नी सु बत्त सामत मिलि। पच फौज राजन करिय ॥
अन भग जग [3]नृप नाह नर। कन्ह कक अग्गे धरिय ॥छं०॥५०॥

पृथ्वीराज की पचअनी सेना का वर्णन।

भुजगी ॥ [4]सजी नचि कैमास की फौज दूजी। सथें पच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभै पच हज्जार कमनैत पाले। वर पच मे मत मैं मत्त[5] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तहा कन्ह चहुआन सामत साजे। तवै [6]तीसरी फौज वाजिच बाजे॥
सहस पच असवार गैहै सु पच। सहस पच [7]माले सहै लोह अच ॥
छं० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइ दराज। चली फौज चौथी करै लोह साज ॥

(१) ए क्ट को रस, रस नाम। (२) मो पत्र। (३) मो नर नाह नृय।
(४) मो करी। (५) ए क्ट को चाले।
(६) मो तीस करि। (७) ए क्ट को वाले याले।

बरं पंच हथ्थी सहस पंच बाजं। सयं पंच हज्जार ढिंग [1]भंले पाजं॥
छं० ॥ ५३ ॥

सजी पंचमी फौज पामार जैतं। तहा पंच हज्जार असवार षेतं॥
सुभे पंच हज्जार पाले पचंडं। तिनं संग मै मत्त बर पंच [2]ठड्डं॥
छं० ॥ ५४ ॥

इसी पंच फौजें चल्यौ सज्जि अप्पं। विना साहि साहाव को सहै तप्पं॥
प्रथीराज चहुआन करि चल्यौ रीसं। सुभै दूधके फेन सम छत्र [3]सीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना।

दूहा॥ सुनी बत्त साहाब तब। सजि आयौ चहुआन॥
फौज पंच सज्जौ सु भर। मीर मलिक सब्बान॥ छं० ॥ ५६ ॥

भुजंगी॥ सुभै गोरियं जंग ठट्टौ गुमानं। उभै लष्ष बाजं सु तथ्थं प्रमानं॥
उभै लष्ष पाले लरै लोह पानं। ....॥ छं० ॥ ५७ ॥
अढ़ी सहस मैमत्त मद झार प्रनारं। दुजी ओपमा फिरत फिरना प्रहारं॥
भलै मीर देषे दिये देह [4]लष्षं। इमं चढ्ढियं षान तत्तार भष्षं॥
छं० ॥ ५८ ॥

तियं फौज षुरसान षां चढ्ढि तेजं। उभै लष्ष असवार बर बाज भेजं॥
उभै लष्ष कामनैत हथनारि हथ्थं। सजे फौज नौहथ्थ दस जुद्ध सथ्थं॥
छं० ॥ ५९ ॥

बनी फौज चौथी चल्यौ षान षानं। सुअं षान षंधार बर विरद वानं॥
दुअं लष्ष असवार पल्ले दुलष्षं। अढ़ी सहस हथ्थी कमनैत लष्षं॥
छं० ॥ ६० ॥

असी सहस असवार कारव लह[5] सेनं। सबै अंग सन्नाह विन दोइ नेनं॥
इकं षान षानं सुतं लाल षानं। चलै लष्ष द्वै जंग रस जुरन ज्वानं॥
छं० ॥ ६१ ॥

(१) मो.-भेले, भल्ले। (२) ए. कृ. को.-बड्ढं।
(३) मो.-बीसं। (४) मो.-लष्षैं, भष्षै। (५) ए. कृ.-सहेनं, को.-काव सनेहं।

सजी पचमी फौज वनि अन एव। गुर गप्पर पग्ग कहै रनेवं ॥
वली मरद कमाल या बध सथ्थ। लियै सवात मनसातकीगुर्ज हथ्थ॥
छं० ॥ ६२ ॥

सजे लप्प द्वै सुभट करि लोह सार। तहा देषि पाइदल दुप्प जार॥
तहा पच हज्जार गहै गयन्न। सजी पचय फौज सा [1]इद्र यन्न ॥
छं० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजो का वीच मे दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना।

दूहा ॥ [2]द्वै दल बीच सकोस द्वै। प्रथीराज कहि वात ॥
चौकी चढि चक्रह कटक। दल अरियन करि घात ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चौपाई ॥ चढिय सुचेक्र सेन चहुआन। सुवर सूर जोधा परिमान ॥
उत सज्ज्यौ चक्रह सुरतान। दीसै फौज मनो दधि पान ॥ छं० ॥ ६५ ॥
कटक चक्र रच्यौ सुरतान। प्रथीराज सज्जिग तिहि थान ॥
परी पवरि कहियौ परिमान। पच फौज पचौ [3]चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥

डामर ॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमकि कढी किरवान कसी।
मय मत्त सुमत, पढे वर पत। सहस द्वै सूर, सहस्स असी ॥
दस सठ्ठि हजार, चले [4]पयदाज, जमाति सु जुग्गिनि जानि हसी।
वर वान कमान, छयौ असमान, अरी मुप समुह, फौज धसी ॥
छं० ॥ ६७ ॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन।

कवित्त ॥ ग्यारह सै च्यालीस। सोम ग्यारसि वदि चतह ॥
भए साह चहुआन। [5]लरन ठाढे बनि षेतह ॥
पच फौज सुरतान। पच चहुआन बनाइय ॥
दानव देव समान। ज्वान लरन रिन धाइय ॥

(१) मो सावन्न इन्द। (२) ए. क को द्वै दल कोसह बीच द्वै।
(३) मो सुरतान। (४) मो पयदार। (५) मो मरन।

कहि चंद दंद दुनिया सुनौ। बीर कहर चक्कर जहर ॥
जोधान जोध जंगह जुरत। उभय मध्य वित्यौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध।

भुजंगी ॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं। मनों राम रावन्न संभरिय क्रोधं ॥
जुरे षान तत्तार कैमास मंची। दुअं षिग्गि लग्गो दुअं भूप छिची ॥
छं० ॥ ६९ ॥

समं का-९ षुरसान रिन जुरि क्रपानं। उड़ी षेह षुरयंन सुझ्झंत भानं ॥
गहिल्लौत राजंस गोइंद पानं। उतै धनिय षंधार षां षान षानं ॥
छं० ॥ ७० ॥

चल्यौ कोपि परचंड परमार जैतं। उतै गब्बरं श्याम कंमाल षेतं ॥
छुटै नारि हथनारि बानैत बानं। करै अत्य चहुआन सुरतान आनं ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तहां कोपि बाहंत बर तेग राजं। इकं एक ने जे [1]लरै छोह लीजं ॥
इकं एक सेलंत कढ्ढंत कोपं। इकं एक जमदढ्ढ करि सेइ धोपं ॥छं०॥७२॥

इकं एक फारसी सु कढ्ढंत हथ्थं। इकं एक गुरजं लरै सूर बथ्थं ॥
इकं एक हथ्थीय हथ्थी जुरंता। इकं एक सूरं उठैं भू[2] भिरंता ॥
छं० ॥ ७३ ॥

द्वादसी का युद्ध।

दूहा ॥ इम बित्ती एकादसी। होत द्वादसी प्रात ॥
रवि उग्गत सम द्वै लरैं। हिंदू तुरक -घात ॥ छं० ॥ ७४ ॥

भुजंगी ॥ कहूं एक न्यारे परैं रुंड मुंडं। उड़ै श्रोन छंछे जरे जानि [3]कुंडं॥
इकं सूर सेलं करं कढ्ढि तेगं। *इकं हथ्थ कम्मान संचत्त वेगं ॥
छं० ॥ ७५ ॥

इकं इक्क हथियार बिन लात धातं। इकं मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं॥
इमं वित्ति मध्यान अस्तमिति भानं। इकं जम्मदढ्ढं लरैं लै जुवानं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

(१) मो.-तरे। (२) ए. कृ. को.-तुरंता। (३) ए. कृ. को.-झुंड।
* मो.-"इक अस्व कीनं रिन वायु वेगं।"

इक बीर बर बीर बैठे [1]विमान। इक सूर सूर निरष्षत पान ॥
इम जाम द्वै जुद्ध करि रहे ठाढे। गुरे [2]बाज गजराज नरराज गाढे।
छं० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना मे अकेले घिर जाना और चामडराय का पराक्रम।

कवित्त ॥ घेर्‍यौ न्रप चहुआन। सग सब सथ्थिय छुट्टौ ॥
जग करै चामड। परिग गज झुडन जुट्टौ ॥
बाग लेइ वगमेलि। सेल मैगल सिर फुट्टौ ॥
कारन कढ़ि करिवार। दत सम भसुँड सु तुट्टौ ॥
तुट्टौ सु दत सम सुड मुप। रुप किन्निय सुरतान तन ॥
दल दत कारत दाहर सुतन। मद वारन दारुन दलन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ कलह राइ चामड [4]करि। इह मार्‍यौ गजराज ॥
साह गहन कौ मन कर्‍यौ। चल्यौ [5]हास लै बाज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ गुरि गयद गोरी नरिद। चतुरग दल सज्जिग ॥
उर निसान घुमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग ॥
जहा हक्यौ तहा भिर्‍यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय ॥
पग्ग ताल बाजत। नीव तरवर बन तुट्टिय ॥
[6]कतरीय पुरप गय घर मुरिग। चद वरद्दिय इम भन्यौ ॥
भाजत भीर तुष्पार चढि। चौडराव चावक हन्यौ ॥ छं० ॥ ८० ॥

चार यवन सरदारो का मिलकर चामड राय पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ लाल पान मारुफ षा। हसन षान आकूब ॥
च्यार लरे चामड सौ। पग्ग गहौ तुम पूब ॥ छं० ॥ ८१ ॥

(१) ए कृ को गुमान। (२) मो राज।
(३) मो -नत। (४) ए कृ को काहि।
(५) मो हस। (६) ए कृ को कसरी।

कवित्त ॥ षूब षान तहाँ लाल । बान वरषंत बीर पर ॥
हद्द मरद्द मारुफ । [1]नेज फेरंत कहर कर ॥
हसन षान सेहथ्थ । षग्ग बाहंत सीस पर ॥
कड्ढि कटारिय जंग । अंग आकूब इक्क भर ॥
भर भार सह्यौ भुज दुअन पर । दाहिम्मै कीनो समर ॥
कविचन्द कहै बरदाइ वर । कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
लाल षान दुअ बान । तानि सुरतान आन किय ॥
एक लग्गि हय अंग । एक चामंड बंधि हिय ॥
सकति छंडि मारूफ । जंघ [2]हय उर महि भिद्दिय ॥
हसन षान तरवारि । मारि द्वै धा मुष किद्धिय ॥
आकूब कटारी कढ्ढि कर । घल्लिय चामंडह गरें ॥
सुभ्भिय सुभट्ट संग्राम इम । मगल षेल नट्टह करें ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कैमास का चामंड राय की सहायता करना ।

दूहा ॥ च्यारि षान चामंड इक । एकाकी जुरि जोध ॥
अंग अम्म दाहिम्म कौ । भिर्‍यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना ।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग । [3]अंग चावँडराइ जुरि ॥
षग्ग जग्गि करि रीस । सीस सिप्पर समेत ढुरि ॥
एक घाव आकूब । षूब जस लियौ लोह लरि ॥
हसन मारि कट्टारि । पारि मारूफ मुर्‍यौ धर ॥
मारूफ मुर्‍यौ उछर्‍यौ हसन । आकूबह सिर धर पर्‍यौ ॥
सह दूअ आन चहुआन किय । लाल षान रन विफ्फुर्‍यौ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

लाल खाँ का वर्णन ।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग । [4]लाल बरन हय अंग ॥
लाल सीस सिंधुर धजा । लाल षान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेज । (२) मो.-हथ ।
(३) ए. कृ. को.-इह । (४) ए. कृ. को.-अंग ।

कवित्त ॥ लाल वर्न वानैत । षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
पान पान किय धाउ । कध कटि गिर्‍यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड । निरषि फिरि बीर पचार्‍यौ ॥
गहिय तेग षा लाल । अग्ग न्रप धरनि पछार्‍यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय । केस गहे वकुरि करहि ॥
एकथ्य सुनौ हिंदू तुरक । जै जै सुर नारद [1]करहि ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खा का मारा जाना ।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि । सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम बल । रन ठठ्ठौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप ।

कवित्त ॥ रन ठठ्ठौ चामंड । मंत्रि कैमास पहुत्तौ ॥
[2]हयह चढायौ आइ । वहुरि सुष वचन कहतौ ॥
तू मेरौ लघु बंध । इतौ दुष कौन सहतौ ॥
[3]तो विन जग सब धंध । अंध हुअ अवनि रहतौ ॥
चढि वाज आज संग्राम में । राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आकूब से । पल पडे ते अंग वर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ पल पडे तुम अंग वर । [4]रंगत वरन किय अंग ॥
रहि ठठ्ठौ इक पिनक रन । कारौ निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तब । तुम मेरे वड भ्रात ॥
क्यो पिची देषै परै । कलि न अमर इह [5]गात ॥
कलि न अमर इह गात । वान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय हक्कारि । वधि सुरतानह लिज्जै ॥
विरचि मार मचाइ । तवहि गज्जन पति [6]ग्रहिहै ॥
भरत कित्ति होइ तुरत । तुरक हिंदू सब [7]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) मो-कहिय ।　　(२) मो-हयानि ।
(३) मो-"तौ विन जग जनु धध अध हुअ अवनि परतौ ।"　　(४) ए कृ को रकत ।
(५) मो घात ।　　(६) ए कृ को ग्रहियै ।　　(७) ए कृ को कहियै ।

कैमास का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ ताज बाज सहबाज पां । जाज षान महबूब ॥
मान अदन कैमास कौ । लगि षुरसानह पूब ॥ छं० ॥ ९२ ॥

कवित्त ॥ सुनत साहि की बत्त । सत्त सब मित्त सम्हारै ॥
करत कलह [1]अस्मान । बान कम्मान प्रहारै ॥
सस्त्र सार की मार । हक्क मंची तहां टेर्‍यौ ॥
जबरजंग नीसान । मनहुं बद्दल घन घेर्‍यौ ॥
जिम पथ्थवान कर वेग गहि । च्यार्‍यौ कैमासह लगे ॥
दिष्षेव सबल संग्राम भर । ब्रह्म जोग निंद्रह जगे ॥ छं० ॥ ९३ ॥
नीर मीर [2]सक सरल । मंचि कैमास तमकि तम ॥
कर गहि कठिन कमान । बान वाहंत पथ्थ जिम ॥
जाज षान दुअ बान । तानि मार्‍यौति पर्‍यौ घम ॥
तष्षि बाज सहबाज । मरद [3]महबूब मुरहि किम ॥
अहंकार धर बिमन मह्हि । जाइ जुर्‍यौ चामंड सम ॥
दुअ करत जुद्ध मंची सरिस । लरत धाव दुअ घरिय श्रम ॥छं०॥९४॥

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में घमसान युद्ध होना ।

भुजंगी ॥ घरियजुद्ध द्वै षरिय बितीमध्यानं । जुरे ज्वान हथ्थं सुबथ्थं जुधानं ॥
दलं दोई वीरं बरं जुद्ध बानं । धकं धक्क हक्कंत षेतं सु ढानं ॥छं०॥९५॥
बहै सस्त्र अस्मान कम्मान बानं । गिरैं तथ्थ हिंदू तुरक्कं अधानं ॥
करै सूर सूरं सु धावं कृपानं । इकं तेग लग्गे सु ठढ्ढे [4]घुमानं ॥
छं० ॥ ९६ ॥
मनों घुमाई ध्यानं जोगिंद बानं । लरै सूर सामंत जो जाउ मानं ॥
जुरे जंम रंगं सु ठढ्ढे गुमानं । तहा मंचि कैमास महबूब षानं ॥छं०॥९७॥
पछै पच्छवानं तता तेज ज्वानं । इसे सुम्भियै तथ्थलै षग्ग पानं ॥

(१) मो.-असमान । (२) मो.-सब ।
(३) मो.-महमूद । (४) मो.-गुमानं ।

धन धाव वज्जत सो द्दै समान। जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठान।
छं० ॥ ९८ ॥

जुरे च्यार पानं सु चावड [1]मान। जुरै अग अग करै अप्प [2]मान॥
भजै काइर कलह देषे कपान। छं० ॥ ९९ ॥

रुप्पौ मच महबूब दुअ जुद्ध थट्ट। तिन बाहिय उअर नह तेग तुट्टं॥
तबै थरहरे काइर कपि नट्ठ। तहा ताज पा पान रापत पुट्ठ॥
छं० ॥ १०० ॥

दल देवता जुद्ध देषे विमान। तहा देव निवरत अछरीय गान॥
तहा चौसठी करत भरि पच चल्ली। तहा रंभ धालत गर माल भल्ली॥
छं० ॥ १०१ ॥

तहा स्वामि काम लरै हिंदु मीर। इम सस्त्र वस्त्र छुटे तीर तीर॥
तहा मल्ल जिम लरै बलवत और। छं० ॥ १०२ ॥

तहा लसत धसत सुवान धतान। जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतान॥
तिसे दरसिय ह्वर दत दँतान। तहा हथ्थजोर सु हस्ती हतान॥
छं० ॥ १०३ ॥

सुभै ठाम ठाम परे तुरका झुड। तहा हद्द हिंदू भये षड षड॥
तहा करत सरितान में मगर तुड। छं० ॥ १०४ ॥

तहा कच्छ सिर मच्छ फरके भुजान। तहा केस कुस दत बगपति मान॥
तहा भोर ज्यो भँवर हथ्थ करार। तहा कंज कर धार उरधार धारं॥
छं० ॥ १०५ ॥

तहा चक्क चक्की सु सोभत नैन। तहा तीसरी नदिय वहिपाध ऐन॥
तहा श्रोन कीसरित जलपूर भल्ली। तहा चौसठी पच भरि कुभ चल्ली॥
छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष। मगल बारसि सुद्ध॥
कैमासह चामड सम। किय सहाव बर जुद्ध॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) ए कृ को समान। (२) ए कृ को पान। (३) मो लहै षग्ग वीर।

दोनों सेनाओं के मुखिया सरदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ धरिय दोइ बर जुद्ध। क्रुद्ध जोधा रन जुट्टे ॥
मंचि मिया महबूब। [1]जंग से अंग निहट्टे ॥
धरिय मीर [2]सिर मार। मार दुअ भुज बर पिल्लै ॥
घायत्तन धन धुंमि। चाय पिची षग पिल्लै ॥
षग षेल मेल महबूब सिर। कैमासह कर टारियौ ॥
तकि बाज षान बल [3]चंड करि। गहि गिरदान पछारियौ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

चिंति राइ चामंड। इतें उत निरषि उभय तन ॥
षग्ग करह षनकंत। मंचि सहबाज धाव धन ॥
पहुँचि जाज परिहार। धार मीरन सिर वढ्ढिय ॥
रन जित्यौ दाहिम्म। कित्ति पहुमी पर चढ्ढिय ॥
दल दल्यौ सबल दाहर सुतन। कहै धन्य हिंदू तुरक ॥
सुनि बत्त साह संमुहौ अरिय। जनु असि वर उग्यौ अरक ॥
छं० ॥ १०९ ॥

अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना।

रसावला॥ मत्त मत्तं भरी, मेछ दाहिम्मरी। सेन साहाबरी, सूरिमा संभरी ॥
छं० ॥ ११० ॥

काइरं कंपरी, जुद्ध देषे डरी। जेन पष्षंबरी, तेन धीरं धरी ॥
छं० ॥ १११ ॥

षग्ग षग्गें जुरी, सस्त्र कट्टे अरी। रंभ आयं बरी, प्रेम बीरं बरी ॥
छं० ॥ ११२ ॥

ईस मालं धरी, [4]अग्ग जालंधरी। राइ चामंडरी, जैत लड्डी धरी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जंम।
(२) मो-पर।
(३) ए. कृ. को.-षंड।
(४) ए. कृ. को.-ढिल्या।

तेग लग्गीतरी, मेच्छ भ्रम्मटरी। मीर छुट्टे धरी, साहि ढिल्यौ करी॥ छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे वढ़ने पर यवन सेना का उत्साह वढ़ना।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेलत। मीर छक्कत प्रवल दल॥
पा ततार रुस्तम्म। मीर मंगोल सवल वल॥
चक्रसेन चहुआन। लोह वाहत आय पल॥
नर हय गय गुजार। लोह लग्गत हयदल॥
असि मार धार आकास उडि। उठ्ठि जुरत कमध रिन॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि। तन तिपड पडे [1]करिन॥ छं० ॥ ११५ ॥

शहावुद्दीन का वान वर्षा करके सामंतो को घायल करना।

तव सहाव सुरतान। वान कमान कोपि धरि॥
अलूषान आलम। सार वहि [2]कढी सु षुप्परि॥
चक्रसेन सिर पडि। कियौ दह भरें लोह लरि॥
पा ततार रुस्तम। षान षुरसान रहै डरि॥
उर डरपि धरकि हिंदू तुरक। सूर नूर सामंत मुष॥
कविचन्द देषि कीरति करत। लरत अप्प अपनी सु रुप॥ छं०॥११६॥

दूहा॥ अप्प अपानी रुप लरत। करत अंग अँग मार॥
चक्र सेन चहुआन कौ। भरनि सह्यौ भुज भार॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त॥ भरनि सह्यौ भुज भार। साह सकवान प्रहारिय॥
एक वान चामंड। लग्गि भुज दंड मुहारिय॥
दुतिय वान सिर वहिग। चक्रसेनह सिर सधे॥
सुकार कढ्ढि अप वान। पचि वसतर [3]सम सधे॥
वर वधि धायक पग्ग गहि। विजल पान वगसी वह्यौ॥
कैमास राइ चामंड मिलि। धन्य दुअन जै जैं कह्यौ॥ छं० ॥११८॥

(१) मो किरन, करन। (२) ए मो कढ्ढि।
(३) ए कु-सस।

कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना।

कैमास रु चामंड। साहि गज तेग प्रहारिय॥
अलूषान आलंम। सीस दुअ धाइन पारिय॥
चक्रसेन षग वहिग। चमर कर सिर सम तुट्टिय॥
बहि कृपान कासिग्ग। [1]लरत धर पर धर लुट्टिय॥
लुट्टैति मीर तिहि साह रिन। छत्र धार छत्तिय षगन॥
दाहिम्म जुद्ध दिषि ब्रह्म सुर। भय तुंमर नारद मगन॥ छं० ॥११९॥

चक्रसेन का मारा जाना।

अलूषान धर उठिग। पानि धरि षग्ग षनंक्यौ॥
चक्रसेन कटि कंध। सिलह फुटि तनह ननंक्यौ॥
उमड़ि उट्ठि अधकाइ। घुमड़ि घन घाइ घनंक्यौ॥
तीन भरन किय धाउ। ठाम तिन तनह [2]ठनंक्यौ॥
जुध करत षग्ग तिय जोध सम। चक्रसेन सिर धर पर्‌यौ॥
बोहिथ्थ बीर तरवारि सर। उभय हथ्थ धर [3]रन तिर्‌यौ॥ छं० ॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन।

*धर कर गहि तरवार। हेत हिंगोल सँभारिय॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि। बाज सिर ताज बिहारिय॥
सत्तह बरस सपन्न। राय बाहर को जायौ॥
कलिजुग जस बिस्तारिय। बहुरि बैकुंठ सु आयौ॥
बिन सिर कमंध करिवार गहि। षगन [4]मारि षल षंड किय॥
मार्‌यौ मीर [5]जद्दव मलिक। बीर परे पारंत बिय॥ छं० ॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना।

(१) मो.-लगान। (२) ए. कृ. को.-तंक्यौ।
(३) ए. कृ. को.-रत रिग्यौ। * मो.-धर तर कर करिवार। (४) मो.-सार।
(५) ए. कृ. को.-जत्र दल।

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की । गयौ लरत बुधवार ॥
समर साह चहुआन सम । भर भारथ किय सार ॥ छं० ॥ १२२ ॥

भुजगी ॥ भर भारथ कीय तिन वेर वीर । जुरे समरी साहि सिरदार ऑर ॥
नर काइर क्षम्मले भग्ग भीर । चढौ मीर मारूफ मुष नीर धीर ॥
छं० ॥ १२३ ॥
तहा च्यारि बधौ भए एक सूर । लगे मच कैमास दिष्षै करूर ॥
लगे वान कमान फुट्टै परार । किय छिन्न सन्नाह देही विहार ॥
छं० ॥ १२४ ॥
तहा राग मारू बजै तबल तूर । घुरै घोर नीसान ईसान दूर ॥
तहा षान हिंदवान भए चक्क चूर । तहा हूर रंभा वरै वरह सूर ॥
छं० ॥ १२५ ॥
तहा मेछ भग्गे भए प्रात तारे । तहा मंत्रि कैमास जित्यौ अपारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूहा ॥ जित्ति मंत्रि सुरतान घर । बधव चोंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के । मेटि प्रबल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना ।

कवित्त ॥ मेटि प्रबल दल पूर । साह समुह गज पिल्ल्यौ ॥
बाज राज चामंड । मंत्रि बधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
सगि बाहि कैमास । पीत बाने विच थट्टिय ॥
गहिय समर चामंड । तुंड पर करिय निहट्टिय ॥
काट्टिय सु सुंड गज दंत सम । गिरत गज्ज साहाब धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर । जय जय सुर सद्दे अमर ॥छं०॥१२८॥

चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगास । साह सहाब ग्रह्यौ कैमास ॥
सत्तह षान परे चिहु पास । जै जै सबद भयौ आयास ॥छं०॥१२९॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड कर पृथ्वीराज के पास लेजाना।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार । डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंत्री सुरतान । बंधि विय राज पास गय ॥

दिष्षि न्रपति सोहाव। ताम अप्पन हिय डर्यौ ॥
किय हुकम्म चहुआन। आनि सुष्यासन धर्यौ ॥
न्रप जोति चल्यौ दिल्ली पुरह। उप्पार्यौ चामंड बर ॥
ढुंढयौ षेत दाहिम तहां। उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढ़वाना।

उप्पारिग चहुआन। राज बंधव सु चक्रधर ॥
रामकिस्न गहिलोत। बंध रावर सु समर बर ॥
उप्पारिग नरसिंघ। बीर कैमास अनुज्जिय ॥
सामल्ल सेषा टांक। नेह जंजरिय बंध बिय ॥
उप्पारि षेत सामंत षट। पट्टूपुर मारथ परिग ॥
दल हिंदु सहस असुरह अयुत। रहे षेत कंदल करिग ॥छं०॥१३१॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा।

दूहा ॥ जे भग्गे तेऊ मरे। तिन कुल लाइय षेह ॥
मिरे सु नर गय जोति मिलि। बसे अमरपुर तेह ॥छं०॥१३२॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह दंड सामंतों को बांट देना।

कवित्त ॥ गय ढिल्ली प्रथिराज। दंड सुरतान सीस किय ॥
गज द्वादस दल सोभ। बाज हज्जार अठ्ठ दिय ॥
अरध दंड प्रथिराज। दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
दंड अरध दिय राज। सुभर उप्पारि मंभ रिन ॥
पतिसाह गयौ गज्जनपुरह। बह्वाइय सामंत बर ॥
जै जै सु सबद सब लोक किय। चंद अष्षि कीरति अमर ॥छं०॥१३३॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके षट्टू बन मध्ये कैमास पातिसाह ग्रहनं नाम तेंतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४३॥

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमग न्टप । नित्त पटक्कै धाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सत्तु बुझाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता वैर सिर ससहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल श्रोन सम । पियै सत्तु अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय वत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सद्दि रन ॥
हरि हरि मुष उच्चार । किन प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्ष चहुआन । बरजि पमार सिंघ तहां ॥
आदि भ्रम [1]पिचीय । करै संताप तात कहा ॥
पग धार पडि तन मंडि जस । तव सुर लोकह संचरै ॥
आजानवाह अवनीस सम । आवूवै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के बचन ।

कहै सिंघ पामार । वत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि सभरिय लज्ज भुअ ॥
कितक वत्त चालुक्क । किम सु ऋगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि काकर जहां । तह थानौ मंडौ भलौ ॥
तुछ सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पन ग्रेहा चलौ ॥ छं० ॥ ४

(१) मो-छत्रिय ।

पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना।

दूहा ॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय । पुनि सु पिंड दै तात ॥
सहस धेन संकलप करि । ग्रंथौ कथ्य व्रतांत ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज । सुनहु सामंत सूर [1]सम ॥
जो निरमान भवस्य । सोई संपजै क्रमक्रम ॥
जदिन भीम संग्रह्यौ । सोम उग्रह्यौ तदिन रन ॥
जोगिनि बीर बेताल । करौं संतुष्ट [2]नपति तिन ॥
घ्रत छंडि पाद्य बंधन तजिय । सजिय अप्प संभरि दिसह ॥
अवतार भूत दानव प्रबल । अगनि अंग प्रज्वलि रिसह ॥छं०॥६॥

गाथा ॥ जाइ संपते सूरं । ग्रेहं ग्रेह अप्प अप्पानं ॥
पिष्पिय नैरवि रूपं । भूपं बिना दुब्बलं [3]सहरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिकों की सभा करके अपने वैर लेने का पण उनसे कहना।

दूहा ॥ भूमि सयन प्रथिराज करि । निसा बिहानी निट्ठ ॥
[4]अरुन समै उद्योत हीं । मंडि सभा सुभ विट्ठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

पद्धरी ॥ बोले सु कन्ह चहुआन राइ । [5]आनंद चित्त सब बैठि आइ ॥
कर जोरि सभा सब उट्ठ ताह । नरनाह बिरद [6]छज्जंत जाहि ॥छं०॥९॥
चष पटी रहत जिन रत्ति दीह । बज्रंग अंग [7]संगऱ्यौ सीह ॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै धट्ट घुम्मि । तब बीर सूर सोमेस भुम्मि ॥
छं० ॥ १० ॥

(१) मो.-सव ।
(२) मो.-नृपति ।
(३) ए. कृ. को.-सहयं ।
(४) मो.-असन ।
(५) ए. कृ. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत ।
(६) ए. कृ. को.-सज्जंत ।
(७) ए. कृ. को.-संकऱ्यौ ।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-11.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B A

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU

CANTOS XLIV to XLVIII



महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया।

सर्ग ४४ से ४८ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1907

Issued 15th September 1907

सूचीपत्र ।

फुनि आइ जाम जद्दव नरिंद । जमनेस भेम वज्र ग ज्यंद ॥
बलिभद्र आइ कूरम देव । बहु भति भूय जिन करत सेव ॥छं०॥११॥
पुंडीर आइ तहा चंद वीर । सम इष्ट इष्ट सृंगार श्रीर ॥
अततांइ आइ चहुआन चंड । जनु भीम भयानक सभा पंड ॥
छं० ॥ १२ ॥

लगरी राव तहां बैठि आइ । जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
गहिलौत आइ गोइंद राउ । पर भूम झूम देयत दाउ ॥ छं० ॥१३॥
लघु दिष्ष सूर सामंत सब्ब । बैठे जु आइ दरबार तब्ब ॥
फुनि चंद चंड [1]बरदाइ आय । जिन प्रसन देव द्रुग्गा सदाय ॥
छं० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही [2]सब्बहि सुनाइ । सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
सजि सेन जुरौ गुज्जर नरिंद । पनि षोदि [3]काढौ चालुक कंद ॥
छं० ॥ १५ ॥

अप्रमान बत्त भीमंग कीन । जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
गर्भनी गर्भ कढ्ढौ नरीन । प्रथिराज नाम तौ विप्र दीन ॥ छं० ॥१६॥
जहां जहां लिसक बके मवास । पनि षोदि डारि दीजै अवास ॥
छं० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढाई के लिये मुहूर्त साधन करना।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामंत सब । बोलिय जोतिगराइ ॥
सद्धि महूरत चढ्ढियै । जिम अग्गै [4]जीताइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
व्यास आन दिष्षिय लगन । धरी महूरत जोइ ॥
इन समयै जो सज्जियै । सही जैत तौ होइ ॥ छं० ॥ १९ ॥
हक्कार्‌यौ जगजोति न्रप । कहौ महूरत सद्धि ॥
जीति होइ सद्दो बयर । सिचो अग्गि समद्धि ॥ छं० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना।

(१) मो-दरबार ।   (२) मो-सब्बन ।
(३) ए चढौं ।   (४) ए कृ को जैपाय ।

कवित्त ॥ केंद्रीय ससि सोम। भोम पंचम अधिकारिय ॥
राहु बीर अष्टमो। वक्र सत्तम सुद्धारिय ॥
जंगम थावर धरिय। हलिय तिन नाम सेन भर ॥
कहै विप्र प्रथिराज। राज पंचम एंचम गुर ॥
[1]मन काम होइ सो किज्जियै। अरि जित्तह पद्धर दिवस ॥
पिट्ठीय पवन रष्षै महन। तौन बसाइय काल बस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैनि परै संमुह अरिय। चक्र जोगिनी अग्ग ॥
दई होइ दुज्जन सयन। तौ तन भग्गै षग्ग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जगजोति। राज चहुआन प्रमानिय ॥
गुज्जर गुज्जर सयन। बैर सोमेसर ठानिय ॥
एक लष्ष आरुहहि। लष्ष लष्षन षग रुंधहि ॥
होइ जैत चहुआन। पानि भीमंग सु बंधहि ॥
[2]गुजरात होइ तुअ ग्रेहनिय। एक बत्त संमुह मंडौं ॥
जो मिटै बत्त इह जोग कोइ। तौ हथ्थह पत्रो छंडौं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न साध कर अपनी तय्यारी करना।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन न्रप। पर धरती सकबंध ॥
असम समै साहस [3]हसह। हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥
चढ़ि चल्लिय सज्ज्यौ सयन। बोलि अत्थ प्रथिराज ॥
लगन महूरत सद्धि कै। बढ्ढि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जित्ति राज बर सार्ज। बीर बीरह रस सज्जिय ॥
विजे जिति विजैपाल। सोइ राजन जस [4]छज्जिय ॥
तर उतंग इल [5]मूल। भूप [6]बल्लिय चित चढ्ढिय ॥
जय जय जय उच्चार। देव दानव नर पढ्ढिय ॥
सामंत गत्ति साअग्ग धरे। उद्धारन बर बैर षल ॥
चहुआन सज्जि चालुक्क पर। बीर बीर बढ्ढे [7]सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

(१) मो.-मम। (२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर। (३) मो.-करान।
(४) ए. कृ. को -सज्जिय। (५) ए. कृ. को. रूप।
(६) ए.-चाल्लिय। (७) ए.-सकल।

गाथा ॥ इच्छिनि अच्छित मान। वितीत जाम मग्गयो नथ्थ ॥
अरूनोदय चहुआन। मृगया आइ पच्छिम थान ॥ छं० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना।

कवित्त ॥ सा मृगया चहुआन। राज सज्जी दिसि पच्छिम ॥
सब सेना जानी न। राज एकग सु अच्छम ॥
आषेटक सजि वीर। भयौ अरुनोदय जोगं ॥
चिहू दिसिन सभरिय। सेन सज्जी मति भोग ॥
जित्त तित्त फौजन हलिय। चलिय सूर सामंत वर ॥
सपत्त जाइ चहुआन कौं। निढ्ढुर करिय जुहार सिर ॥छं०॥२८॥

राजा के साथ सैन्य सहित निढ्ढुर राय का आन मिलना।

दूहा ॥ निढ्ढुर मन सजुरि सयन। मिलिय आन प्रथिराज्ज ॥
[1]मनु टिड्डिय धरि उल्लटिय। कै त्रिकूट पर कप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
पंच सबद बाजे गहिर। घन घुमर वरजोर ॥
जंग जुझाऊ बज्जियं। बढ्यौ श्रवनन सोर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तैयारी करना।

पद्धरी ॥ चढि चल्यौ राज प्रथिराज सेन। कपि चले कोपि जनु लंक लेन॥
जनु उदधि उलटि छंडिय मृजाद। दहवट्ट करन गुज्जर प्रसाद ॥
छं० ॥ ३१ ॥
चर चरत चरित जंगल नरेस। वढि चले मध्य भीमंग देस ॥
सब खबरि कही भीमंग जाइ। सजि सेन सूर चहुआन आइ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सामंत नाथ सामंत जोर। बढ्ढे कि जानि दरिया हिलोर ॥
चौसठि हजार परिमान [2]तेह। अनभंग जंग बढ्ढे बलेह ॥छं०॥३३॥
इत तज्यौ पान चहुआन राइ। चिंतै सु चित्त बल विषम धाइ ॥

(१) मो-ज्यों। (२) मो. तेन, बलेन।

चहुआन कन्ह गोयंदराइ। सिव सीस उदक छंड्यौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर भरे अन्य भट घट [१]अभंग। अप अप्प विहसि सिर लगिन भंग॥
अप्पान बंध अप करौ राइ। जिम जुरो षग्ग षल विषम धाइ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब कही षबर सो सुनी दूत। [२]झलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फारकंत बांह थरकंत कंध। चष [३]चढ़ि कपाल भुअ हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुल्लाइ सब्ब भर राजकाज। सम कह्यौ जुद्ध तिन कारन सोज ॥
परवान फट्ट देसान देस। तिन के सु चढ्ढि आए नरेस ॥छं०॥३७॥

दुअ सहस षान तेजी पठान। हथनारि धारि सँग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस कच्छी बलान। हय सहस तीन पष्षर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस देड़ सोरट्ठ ठाट। तिन सहस विषम [४]अवघट्ट घाट ॥
चढ़ि काकरेच कोली करूर। कामनेत कहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि झाला अभंग। तिन लरत लोह रवि उगिन भंग ॥
चढ़ि मचि [४]मुकुंद कावा नरेस। तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस।
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि काठवार काठी नरिंद। तिन सत्रु सुष न दिन राति न्यंद ॥
लघु दिग्घ और को गने देस। इतने कटक्क आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर [५]गुरज षंड। जनु [६]जुरन जुद्ध कुरु षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

(१) मो.-अनंट। (२) मो.-झलहलत।
(३) ए. कृ. को.-चरि। (४) मो.-कुद।
(५) ए. कृ को.-गुजर। (६) ए.-जुरत।

दूहा ॥ चढे देषि चालुक्क दल । बहुरे सभरि दूत ॥
मेष दिगवर दुति तनह । जे अवधूत न धूत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
गनि गनिका कविचद की । ठग विद्या परवीन ॥
दूत धूत अनभूत मन । नवनि राज तिन कीन ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गाथा ॥ समुष पिष्पिय राज । वुल्ले वयन सुहित्त सुभाज ॥
चढि चालुकी गाज । नर भर समुद उलटि जनु पाज ॥छं०॥४५॥
दूहा ॥ एक लष्य सेना सकल । अकल कलीनह जाइ ॥
इक्क सहस मद गज करी । दिष्पिय जानि वलाइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ इम भजो भीमग । जुद्ध जौ माहि जुरै रन ॥
ग्रीषम [1]पवन सहाय । दग जरि जात सघन घन ॥
इम भजो भीमग । भीम कुलनद पछारिय ॥
यों भजो भीमग । सगति महिया सुर मारिय ॥
इम जुरों जुद्ध भीमग सम । अगनि तेज वाय हिता ॥
प्रथिराज नाम तहिन धरौ । उदर फारि कढ्ढौ पिता ॥छं०॥४७॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढना ।

दूहा ॥ आषेटक खेलन चलिय । करिय पति भर साज ॥
चावद्दिसि बन बिटि कै । मद्धि सपतौ राज ॥ छं० ॥ ४८ ॥
*अरिल्ल ॥ मन इच्छा आषेटक लग्गिय । षग षतौ मन ममझह जग्गिय ॥
जमुन विहड बिटिय बहु बक्के । मालि सिह वाराहन हक्के ॥छं०॥४९॥

पृथ्वीराज का गहन वन में पडाव पडना ।

दूहा ॥ जमुन बड बक्के विषम । हकात पत्तिय सझ ॥
जो जहा हतौ सो तहा । हुअ डेरा बन मझ ॥ छं० ॥ ५० ॥
सूर उदय जे [2]बढि हुते । उत्तरि सध्या सूर ॥
अन्न पान पहुच्यौ सकल । कहा नीरे कहा दूर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए कृ को जनों पचम । * मो मुरिल्ल ।
(२) ए कृ को -चढे ।

हुकम नकीबत कह फिरै। डेरा डेरा गाहि ॥
जो जिय जा ढिग निक्करै। राज न षिज्जै ताहि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना।

गाथा ॥ उत्तरि सेन सुराजं। निद्रा छुमित सब्ब सेनायं ॥
पासं न्टप कयमासं। सो सुत्ते षग्ग बंधाइं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
यों सुत्ता सब सेनं। सा निद्रा चंपियं वीरं ॥
मोह चंपि विग्यानं। [1]निद्रा ग्यान [2]नट्ठियं कालं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ राज पास कैमास। कन्ह कनक्क सब्बूरा ॥
सबर सूर पांमार। जैत साहिब अब्बूरा ॥
[3]सलष अलष पुंडीर। दई दाहिंम चामंडं ॥
*सागुर गुर सिरमौर। राज हंमीरति षंडं ॥
सारंग सूर कूरंभ वलि। बर पहार तूंअर सुभर ॥
लंगरीराव लोहान बर। गहिग सेन बर वीर पर ॥ छं० ॥ ५५ ॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह।

जाम एक निसि पच्छ। वत्त आषेट विचारिय ॥
सुनौ सब्ब सामंत। मंत्त इह चित्त सु धारिय ॥
जंत जीव जग्गै न। तंत क्रम सिद्ध न होई ॥
पुब्ब श्रवन संभव्यो। निगम [4]जंपे बर लोई ॥
चिंतयौ चित्त चिंता सुमन। मास तीय तिय सद्द सुनि ॥
निरवान राज प्रथिराज गुन। [5]सुवर सगुन बज्जे सु धुनि ॥
छं० ॥ ५६ ॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा।

(१) को.-निज। (२) ए. कृ. को.-नट्ठियं।
(३) ए. कृ. को. सकल।
* मो.-"सागर गुर सिर मौर राज संभीराति षंड"।
(४) ए. कृ. को.-चंपे। (५) मो.-सुगुर सुवन।

अरिल्ल ॥ इहै चित्त चिती चहुआन। वर मासत्ति सद्द सुनि कान ॥
　　धरी अङ्ग अङ्ग निरमान। कहै वीर कन्हा चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ प्रात प्रगट वत्तौ कहिय। आगम चिति प्रमान ॥
　　सुवर काल वित्तौ घरिय। कलह परै परथान ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ श्रवन [1]सुनि सामंत। रत्त आचिज्ज मत्तय [2]युद्ध ॥
　　आगम होइ प्रमान। भूकंप पकंय पड ॥ छं० ॥ ५९ ॥

मुरिल्ल ॥ काल सुचपि काल कराल। इन सगुन स्हर आरत्त ताल ॥
　　आमुक्क सुक्क नजिय प्रकार। वर वीर भीर विस्तार भार ॥
　　　　छं० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल।

दूहा ॥ कहिग स्हर सामंत सव। कहि आगम सत काज ॥
　　सिघ दीप दुज्जन भिरन। मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
　　जिहित स्हर सोमेस हनि। सोइ सगुन रन भीम ॥
　　सोई सगुन ए सद्धिये। काल न चपै सीम ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सवेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन।

　　अरुन उदै जग्गो न्रपति। निकट भट्ट सिरनाइ ॥
　　सरन कमल थल भेरन सुप। फूले आनंद पाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भान। विसत वसमति अभ्भत थान ॥
　　को चपै कै मरन जरूर। यों मत मत विमत करूर ॥ छं० ॥ ६४ ॥
　　चढि पति घट्टि सु सब्ब रसाल। अर वरि वीर अर वरि माल ॥
　　जिते सगुन दिपि रत्ति प्रमान। तिते कहे चक्रित चहुआन ॥
　　　　छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ सभरि रा सभरि सुकथ। सगुन सु प्रातय राज ॥
　　कछु सगुन निसि उच्चऱ्यौ। सुनहु सु जपहु काज ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए कृ को-सुर।　　(२) ए कृ को सुर।　　(३) मो कीनय।

काहे सब्ब पयलग्गि भर। भर निहचै सामंत ॥
जु काछु राज दिष्यौ नयन। जंपि झंपि वर कंत ॥ छं० ॥ ६७ ॥
गाथा ॥ सो संधौ निसि सद्दं। बद्दे कन्ह तीनयो सद्दं ॥
नं जानय किंमानं। परिमानं किंनयं होइं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

राजा के स्वप्न का फल।

चोटक ॥ दिन सद्द सगुन्नन मद्द घरी। कलहंत विषंमति वीर भरी ॥
कलि कारन मोकलि वानि रसं। धरि एक धरी महि जुद्ध रसं ॥
छं० ॥ ६९ ॥
भय [1]अत्त भयानक वीर भटं। कलहंत कलेवर वीर घटं ॥
छं० ॥ ७० ॥
दूहा। कलह कलेवर वीर घट। सगुन सु छत्तिय पान ॥
सुवर राज बट्टै विषम। देवासुर जु समान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह के ज्ञानमय वचन।

नको जियत दिष्यौ नयन। न को मरत दिष्यान ॥
मात गरभ आवन [2]गमन। कर नंच्यौ बंधान ॥ छं० ॥ ७२ ॥
[3]धंधौ नट्ट सुभट्ट भ्रम। जस अपजस लभ [4]हानि ॥
जिन जिन जुरि धर नष्षयौ। सो दुरजोधन जानि ॥ छं० ॥ ७३ ॥
सो दुरजोधन जोधवर। सग्गुन बंधिय पान ॥
सुई अग्र नन भूमि दिय। वर भारथ्थ प्रमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥

पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, वन की हकाई होना।

गाथा ॥ वर भारथ्थ प्रमानं। जानं जुद्धाय बीतयौ घटयं ॥
अट्टत छत्तं चारौ। सगुनानं लभ्भियं पारें ॥ छं० । ७५ ॥
मुरिल्ल ॥ चढ्ढिय पत्ति घटि आवरि सूरं। सुघट घटय जमुना जल पूरं ॥
पथ इंदय अवत्ति पति सूरं। मयति काल विग्यानति सूरं ॥छं०॥७६॥
दूहा ॥ सुर विग्यान विग्यान पति। मयति मयंतर जुद्ध ॥
कानन वीर सु हक्कयौ। सुवर वीर गुन सुद्ध ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-अत्य।
(२) ए. कृ. को.-जनम।
(३) मो.-वन्धौ।
(४) ए. कृ. को.-भांन।

वन हकन नृप हुकम भय। जहँ तहँ गज्जत सूर ॥
तबल तूल चबक चहिय। कह नीरे कह दूर ॥ छं० ॥ ७८ ॥
धुधर गज घटानि धुनि। हय गय हस मह लच्छ ॥
सयन सब्ब सोवत जगिय। कानन हांकिय पच्छ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

वन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना।

कवित्त ॥ छुटत तीर चिहु पष्प। सद्द बज्यौ सु सूर धन ॥
सिंह सद्द पर सद्द। वज्जि पर सद्द मत्त पल ॥
रद्द विमद्द गज मद्दग। वान भग्गे मन आरि ॥
हाइ हाइ आरिष। दिठ्ठ लग्गे पति गारि ॥
गौश्रत भूत पचाप नय। कानन पति कानन झुकिय ॥
कोई सु भज्जि मूलन रजिय। जत्ति काल कालह बकिय ॥ छं० ॥ ८० ॥
दूहा ॥ सिंघ छुधित निद्रा ग्रसित। सिंघनि सिसु यह पथ्थ ॥
काल नाग नागिन जग्यौ। बर वीरा रस हथ्थ ॥ छं० ॥ ८१ ॥

सिंह का वर्णन।

पद्धरी ॥ भाख्यौ सु सिंघ इक षेल वार। हूतौ सु मद्ध कादर लवार ॥
लद्धौ सु वास नर निकट जानि। गज्ज्यौ सु गर्ज्ज नभ घोर वानि॥
छं० ॥ ८२ ॥
पुच्छिय पटकि मंडिय सु सीस। बक्कारि उच सिर दुद्दस दीस ॥
छुट्टत झाल जुगनेन दीस। चाटत सुच्छ रिस अधिक हीस ॥ छं० ॥ ८३ ॥
तिष्षे सु जोर जमदट्ठ वत। फट्टत धरनि हथ्थल तुरत ॥
हथ्थीन सीस नष हनि तुपार। देषत दंत जनु काल धार ॥
छं० ॥ ८४ ॥
सिंघनि सु पास ससि दोइ तथ्थ। लीनौ सु घेरि सामंत सथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना।

कवित्त ॥ झपटि लपटि जनु अग्ग। कन्ह दिसि किन्न लटक्किय ॥

अतुल पाइ बल अतुल। अग्गि जनु जग्गि भटकिय ॥
जाजुल्लित गंभीर। गरुअ सद्द उच्चारिय ॥
हाइ हाइ आरिट्ठ। राज हक्कम बक्कारिय ॥
असवार चूकि चप्पौति हय। करि कुंडल कग्गान रजि ॥
नर नाह वाहँ अवसान फबि। परिय बथ्थ नर अश्व तजि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना।

इत सु कन्ह उत सिंघ। जन्न जुग जानि प्रलै वर ॥
दुअ दंतिन दल दलन। दुअह [1]जम जोध अडर डर ॥
कंध कंध तिन चंपि। कन्ह कट्टिय कट्टारिय ॥
पेट फारि धर डारि। फेरि पग भूमि पछारिय ॥
सिर फट्टि भेज भेजिय उडिय। हड्ड मंस नस भूर हुअ ॥
जय जय सु सद्द षह भूमि भय। बलि बलि कन्ह नरिंद भुअ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

भंज्यो सिंघह सूर। कन्ह जंगह चहुआनं ॥
भयौ नूर मुष सूर। सगुन लद्धौ परिमानं ॥
उछांइ सेन सजि राज। गुज्ज बुझझौ न मल्हरति ॥
कूच कूच उप्परे। देस पट्टन धर चूरति ॥
आकास मग्ग तारा तुटै। यों तुट्टौ अरि सेन पर ॥
काल मलत सेस काइर कंपत। कीजहि उप्पार जारि धर ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उसकी वीरता की प्रशंसा।

गाथा ॥ सूरं किन्न प्रकारं। सारं भार जुद्ध मय मत्तं ॥
कै देवत्त विछुट्टा। कै [2]जुट्टा कालयं करनी ॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामंतों सहित राजा का आगे कूच करना।

(१) मो.-सु। (२) मो.-तुट्टा।

कवित्त ॥ सज्जि सिलह सामंत। मत्त मत्तं जनु चल्लिय ॥
'सो चौसट्ठि हजार। भार भारथ वै हल्लिय ॥
चामर छत्र रपत्त। छत्र दीनौ सिर कन्ह ॥
छुट्टियि पट्टिय अपि। बिरद नरनाह जिनन्ह ॥
सेनाधि पत्ति कन्हा कियौ। अग्ग फौज प्रथिराज वर ॥
पच्छली फौज निड्डुर वलिय। ता पच्छैं पमार भर ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ कूच कूच जिम जिम चले। तिम तिम छडत मोह ॥
ज्यौं ²वच्यौ दुज राज ने। तिथि पचानह सोह ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यो राज चहुआन सूर। दैवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
गुज्जर नरेस पट्टन प्रवास। दल वढ़ै राज जंगल सु वास ॥ छं० ॥९२॥
कलमलिय काय ककह कठोर। *सारथ्थ किन्न सम राज जोर ॥
करि गिरद सेन सज्जी समति। मानों कि भांति किरनाल पति ॥
छं० ॥ ९३ ॥
कलमलित कमठ भर पिठ्ठ भूमि। सल सलित सेस सामंत भूमि ॥
हलमलत ग्राव वंके मेवास। पल भलत पपि सम सहि न त्रास ॥
छं० ॥ ९४ ॥
चल मलत रैन सुझ्झै न पथ। भल मलत सूर जनु समय अथ॥
नल टलत चित्त कादर सु सेक। गल वलत सूर जनु कम्पि लंक ॥
छं० ॥ ९५ ॥
नल कलत अश्व रह वग्ग सु चाल। तल फलत ढाल हिरनाल फाल॥
दल हलत जानि सरिता सपूर। भलहलत छौल सादर हिलूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥
थल जलत ढक्क मिलि कीच उठ्ठि। मिलि चलित ससि सामंत सुठ्ठि ॥
फल फलित मरन वछत जिन्हैं न। कल कलत चंद कवि बल तिन्हैं न॥
छं० ॥ ९७ ॥

---

(१) मो सौ, क. सी। (२) मा-बच्यौ। * मो "सारथ्थ कि सर सम राज जोर"।

पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक *चुल्लू भेजना।

दूहा ॥ अहो चंद चंदह मरन। दिन दिन [1]सल्लै दुष्य ॥
कहौ जाइ चालुक्क सम। मंगै बैर समुष्य ॥ छं० ॥ ९८ ॥
*ले चल्लौ न्टप भीम कों। चंगी दोय रसाल ॥
एक सुरंगी पथधरी। इक कंचुकी भुजाल ॥ छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ। करिव चित्तं इकतारं ॥
इह संसार सुपन्न। अपन झुझ्झै इक वारं ॥
चंद हथ्थ कहि पठय। भीम सम संभरि वारं ॥
तात बैर संग्रहन। वचन तत्तं उच्चारं ॥
गज भाट सुभर घट भंजि तुअ। सरित चलाउं रुधिर की ॥
धार सिंचि सोमेस कहुं। तपति बुझाउं उअर की ॥ छं० ॥ १०० ॥
रामाइन मघवान। बरषि धन अम्रत धारं ॥
वालमीक पीयूष। सींच लव रघुपति रारं ॥
अरजुन सयन समेत। आनि बब्बर पताल मनि ॥
बेद व्यास भारथ्थ। सकल छोहनि दीपक बनि ॥
चहुआन काहाइय चंदकर। पिता बैर कज इह बयन ॥
*चालुक्क भीम उन सम सुनहु। तुमह जिवावन अब कवन ॥
छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्ति पूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है।

चल्यौ चंद गुज्जरह। गरै जारी जंजारह ॥
नीसरनी कुद्दाल। दीप अंकुस आधारह ॥

(१) ए कृ को.-चल्लै।

* चुल्लू=स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है। यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुन्देलखंड मे चिन्नू चुन्नू भी कहते है। इसका अर्थ "किसी को अपने मुकाबले के लिये धमकी देना भड़काना या उभाड़ना है।

+ छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्य्यन्त मो. प्रति में नहीं है।

कस्त सूल सग्रहे। गयौ चालुक दरवारह॥
इह अधम जन देषि। मिल्यौ पेषन ससारह॥
भेव्यौ सु भीम भोरा सुभर। कहिय बत्ति समरि वयन॥
हो भट्ट चट्ट बोलहु कथन। कहा इहै उवर सेयन॥ छं०॥ १०२॥
एन जाल सग्रहो। जाम जल भीतर पडयौ॥
इन नीसरनी ग्रहो। जाम आकासह चढयौ॥
इन कुद्दालै पनौ। जाम पायाल पनट्ठौ॥
इन दीपक सग्रहौ। जाम अधारै नट्ठौ॥
इन अकुस असिवसि करौं। इन त्रिसूल हनि हनि सिरौं॥
जगमगै जोति जग उप्परै। तोडर प्रथम नरिंदरै॥ छं०॥ १०३॥

भीमदेव का उत्तर देना कि मै भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे समुख आवे।

जाल ज्वाल करि भसम। करस नीसरनी कट्टौ।
धन भज्जौं कुद्दाल। दीप कर पवन झपट्टौ॥
अकुस अकुर मोडि। तिनह त्रसूल सकोडौं॥
हनन कहै ता हनौ। जोति जग मच्छर मोडो॥
हौ भीम भीम कदल करौ। मो डर उक अधम नर॥
मम कारइ ग्रब्ब धरि लज्ज अव। वित्तक पुत्र परच्चि पर॥ छं०॥ १०४॥
रे उदर [1]विहाल। कोइ कारन भिर मच्चौ॥
रे गिद्धिन सिर हस। दैव जोगह सिर नच्चौ॥
रे म्रग वघ सँग्राम। लरै वर अप्पन आयौ॥
रे अप्पह सो समर। करै मडुक जस पायौ॥
आचम ब्रह्म गति वह नही। वार वार तुहि सिष्यियै॥
प्रज्जरै झार तरवर गिरह। का दीपक लै दिष्यियै॥ छं०॥ १०५॥
वैन वाद सो करै। होइ भट्टह कौ जायौ॥
गारि रारि सो भिरै। जेन रस पप्प न पायौ॥
हथ्थ वथ्थ सो भिरै। घरह धन वधव [2]वट्टै॥
इह सोमेसर वैर। लेहु अप्पन सिर सट्टै॥

(१) ए. कृ. को-विह्लाउ। (२) ए. बट्टै।

तुम कहौ जाइ संभरि वयन। इन डिंभन डिंभरु डरै॥
संचऱ्यौ दरका हक्कै चरत। [1]सज्ज फट्टक्कै निक्करै॥ छं० ॥ १०६॥

चन्द का भीमदेव के दरबार से कुपित होकर चला आना।

दूहा॥ चंद मंद मन आतुरह। ज्यौं रत्त करि नैंन॥
फिरि पहुंच्यौ न्रप पिथ्थ पै। कहैं चरक्का बैंन॥ छं० ॥ १०७॥

भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पास भेज कर अपनी तय्यारी की सूचना देना।

कवित्त॥ सुनौ भट्ट जगदेव। कहै भोरा भीमंदे॥
तुमहु चंद पै जाहु। षबरि पायान दियंदे॥
जो कछु तुम बुल्लए। ज्वाब मंगन हो आयौ॥
ज्यौं सुत्तौ सुष उरग। मोड़ि बर पुंछ जगायौ॥
आयौ नरिंद गुज्जर सबर। करिय सेन चतुरंग भर॥
मो दिट्ठ दिट्ठ पुच्छिय सयन। बयन [2]वाद मनो न उर॥
छं० ॥ १०८॥

जगदेव वचन।

कहु मिसरे छेड़्यौ। राउ गुज्जरौ नरेसर॥
दीवो जाल कुदोल। कहमि वह सह आडंवर॥
कह मिसरै कैमास। जास पुच्छंत विचष्षन॥
चामँड रा कहां गयौ। बहुत राया बर दष्षन॥
कह मिसरे कन्ह विष्पनौ। जग्गदेव संचौ चविय॥
वंभन हय या दिद्ध धर। कह मिसरें संभरि धनिय॥ छं० ॥ १०९॥

चन्द वचन।

वार वार षेलयौ। सरस वत्तडिया गुज्जर॥
अव विगत्ति [3]लभ्भिमहै। [4]मिरच चज्जै ज्यों गज्जर॥

(१) मो.-"क्यो छज्ज फट्टकै निक्करै"। (२) ए. कृ. को.-झुठ।
(३) ए कृ. को.-लाग्गे है। (४) मो.-मिरच चढ्ढे ज्यों गज्जर।

तूअनि राव मजाम। जिके रन अगन जित्ता ॥
इन सभरिवै राव। कोडि सै सहस विधत्ता॥
भेद्यौ नही गुर अप्परौ। कविय वयन सन्हौ सरै ॥
कर नही मच बौछिय तनौ। धत्त हथ्थ सप्पा हरै ॥ छं० ॥ ११०॥

जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव के पास फिर जाना।

दूहा॥ सुनि सु वेंन जगदेव फिरि। कहि भोरा भीमग॥
आयौ न्टप बहुआन सजि। हय गय भर चतुरंग॥ छं० ॥ १११॥

पृथ्वीराज का निड्डुर को युद्ध का भार सौंपना।

कवित्त॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज। हथ्थ निड्डुर कर धारिय॥
सकल सूर सामंत। जुद्ध मग्गह अधिकारिय॥
आदि राज पहु आदि। आदि सम जुद्ध समंडौ॥
दैव काल सग्रहौ। वलह भारथ जिम पंडौ॥
मन्नै अनन्य संसार सह। छिति छचिन महि छजत रज॥
एकंग अग जगह अटल। कारन जुरौ सामंत सज॥ छं० ॥ ११२॥

निड्डुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना।

कहि निभ्भर सामंत। जूह जगन दल मंडन॥
समर समै रति स्वामि। तनह तिनुका सम पंडन॥
इक उभत जुध उद्ध। इक्क गज दंत उपारहि॥
इक कमध उठि लरहि। इक्क रुधि बीर बकारहि॥
संभरि नरिंद तुम संभरौ। धरिय उदर इम एह बल॥
बड बंस अंस दानव [1]प्रबल। करहु मोह हम भाग बल॥ छं० ॥११३॥

निड्डुर का कन्ह राय की प्रशंसा करना।

दूहा॥ बालप्पन जोवन विरध। [2]रन रत्तौ जोधार॥
कन्ह दलन अरि मर्द्दय। नन तिरका करि डार॥ छं० ॥ ११४॥

(१) मो अचल। (२) ए क को नर।

जिन अंषिन भर पट रहै। सोइ छुट्टै है ठाम ॥
कै सज्या वामा रमत। कै छुट्टत संग्राम ॥ छं० ॥ ११५ ॥
जे बंके विरदन वहै। नरन नाह जग जप्प ॥
कै भारथ भीषम सुभट। कै रामायन कप्प ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना।

अमुल माल मुत्तिय सजल। मोल लष्ष गुन मान ॥
अप उरतें उत्तारि न्रप। दीनौ निढ्ढुर दान ॥ छं० ॥ ११७ ॥

निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना।

कवित्त ॥ हालाहल उर माल। माल मुत्तिय दुति राजै ॥
रबि कंठह जनु गंग ॥ ईस जनु सीस विराजै ॥
सुभर निडर रठ्ठौर। बज्जि नीसान गराजै ॥
जैसै बज्जत डंक। बीर बढ्ढत बल ताजै ॥
मंडई मरन मन अरि कलन। चलन चित्त मन अटल हुअ ॥
सब सेन मध्य इम राजई। षह मग्गह ज्यौं जानि धुअ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना।

दूहा ॥ फुनि कन्हा प्रथिराज न्रप। [1]पाव पवंग परट्ठि ॥
लेइ नहीं मन संक मल। निठ्ठ चढ़ाईय हठ्ठि ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना।

कन्ह कहै न्रप जंगल। मोहि सजीवन भिठ्ठ ॥
सोम अरिन तन सद्दयौ। पंजर हंस न नठ्ठ ॥ छं० ॥ १२० ॥

निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना।

कवित्त ॥ एक समै सुग्रीव। चिया न रष्षिय अप्प बल ॥
एक समै द्रुज्जोध। कारन रष्ष्यो न जित्ति षल ॥

(१) ए. कृ. को.-पाट। (२) मो.-भीमंग।

एक समै श्री राम। सीय बनवास अग्नि ग्रहि ॥
एक समै पंडवन। चीर रष्यौ न द्रौपदह ॥
तुम कन्ह कक अकलंक कहि। इष्ट रूप हम सब जपहि ॥
तुम तेज अपि देषत नयन। मोर अप्प सम भर जपहिं॥छं०॥१२१॥
दूहा ॥ निट्ठुर कन्ह प्रमोधि इम। सोलंकी सौभग्ग ॥
सुनि आए धाए दुसह। दल दारुन भीमग ॥ छं० ॥ १२२ ॥

सेना का सज कर आगे बढना।

गाथा ॥ जाइ सपते सूर। पट्टन सेनाय मंड भोरथ्थ ॥
तात वैर प्रमान। वड्ढे वीराइ वीर पल याइ ॥ छं० ॥ १२३ ॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड होना।

दूहा ॥ दिपादिपी दुअ सेन भय। नारि गोर गहरानि ॥
कुहकवानं आघात उठि। उडिय अग्गि असमान ॥ छं० ॥ १२४ ॥
अग्ग पच्छ बाजू वियन। दल मंडै दुअ राइ ॥
तत्त तुरी जे तत भरे। असि कड्ढै धन धाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

भीमदेव के घोडे की चचलता का वर्णन।

कुंडलिया ॥ फिरत तुरी चालुक्क रन। वर रष्यै चिहु कौंन ॥
नस चपै न सु ढिल्लवै। ज्यौं बदर को छौन ॥
ज्यौं बदर को छौन। मुष्प भजै नन पचै ॥
तेज तुरी नष्पते। जानि आसन मन सचै ॥
राग समचै वाग। सीर लष्पै पति हेरै ॥
लिषिय चित्र असवार। मत्त मत्ते हय फेरै ॥ छं० ॥ १२६ ॥

दोनो सेनाओ का परस्पर एक दूसरे मे भिडना और उनका विषम युद्ध।

दूहा ॥ कढत वैर वकम विषम। विषम ज्वाल छिति सार ॥

सार सरीरन झेल नह। भए [1]निचिंत पहार ॥ छं० ॥ छं० ॥१२७॥

रेसावला ॥ [2]मिले बीर भट्टं, सुरंग सुथट्टं। हवी हथ्थ छुट्टं, नरं सूर लुट्टं॥ छं० ॥ १२८ ॥

मनों लागि नट्टं, झरैं हड्ड फाट्टं। मनों काढ [3]कंठ, वहै तेग तट्टं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं। फुटै दद्धि मट्टं, पगं गे उहट्टं ॥ छं० ॥ १३० ॥

परै सीस कट्टं, धपै लोह थट्टं। मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ह पट्टं ॥ छं० ॥ १३१ ॥

अगी ज्यों लपट्टं, परै बट्ट वट्टं। धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत भट्टं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

मनों कांद जट्टं, मिले बथ्थ चट्टं। मनों मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं ॥ छं० ॥ १३३ ॥

मनों भीम हट्टं, ढहै ढाल वट्टं। मनों चट अट्टं, लगौ तीर तट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

उरं फारि फाट्टं, नचै ईस नट्टं। उमा अग्ग थट्टं, रुधं काल चट्टं ॥ छं० ॥ १३५ ॥

[4]धरं माल अट्टं, पलं गिद्धि गट्टं। लगे गैन घट्टं, वहै सुरं वट्टं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

मगं मग्ग [5]थट्टं, मुकत्ती स लुट्टं। [6]रिनं पत्त फाटं, ... ॥छं॥१३७॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना।

दूहा ॥ पट्ट छुट्टत कन्ह चष। षल धारा धर वज्जि ॥
मानों मेघन मंडली। वीर बीजली रज्जि ॥ छं० ॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ दूत सु कन्ह चहुआन। उतह सारंग मकवानो ॥
बल बड्ढ बल बंड। जानि कंठीर लोहाना ॥

(१) मो.-तिचित्त। (२) मो.-जुरे। (३) ए. कृ. को. कट्ठं।
(४) को.-वरं,मो.-रवं। (५) मो.-हट्टं। (६) मो.-रिषं।

कर कट्टे करिवारि । भार ठिल्लिय भर भारी ॥
स्वामिधर्म सुढरै । वार इत्ती सु करारी ॥
लिष्षे जु अक विधि कक जिहि । आनि सपत्तिय सो धरिय ॥
अद्भूत रुद्र रस विस्तऱ्यो । सु कविचद छदह धरिय ॥छं०॥१३८॥

मकवान का माराजाना।

दूहा ॥ पत फट्टे सारग ने । रस जम कान्हों वत ॥
[1]झुकि पऱ्यौ मकवान रिन । गल गज्जे सामत ॥ छं० ॥ १४० ॥

सामतो का परक्रम और शूरवीर योद्धाओ की निरपेक्ष वीरता की प्रशसा।

रडरि धर [2]सारग की । परत पहुमि मकवान ॥
सूर सु गज्जै जगली । भै भग्गौ अरियान ॥ छं० ॥ १४१ ॥
सिद्धि न लब्भै सिद्धि जै । ते लद्दी सामत ॥
छाया माया मोह विन । विमन सुमन धावत ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ द्रुमति तजत वर अत । रत्त चच्चर सी झारन ॥
अप्प अप्प सग्रहै । पार दुज्जनन उतारन ॥
सार सुगति सग्रहै । जियन सुपनौ करि जानै ॥
राति दिष्पि जजाल । प्रात पीछे न पछानै ॥
यों जानि सूर सद्धत रनह । वन सु अग्गि जनु वाय वसि ॥
स्वामित्त तेज तिम तन तपन । दोप न लग्गे जोर जस ॥छं०॥१४३॥

गाथा ॥ उट्ठय आवत झार । धार पाहार पति सुभटाय ॥
घहर घोप घन भट्ट । यों वरषत वीर वकाय ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दूहा ॥ वहुरि न हसा पजरह । जे पजर तुटि धार ॥
हस उडा जव [3]नट्टयौ । पजर सार असार ॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ पहर एक भर भरह । टोप असिवर वर वज्जिय ॥
वपर पपर जिन सोल । सूर सामत न भज्जिय ॥

(१) मो झुक्कि। (२) ए कृ० को चालुक।
(३) ए कृ को लट्टयौ।

हय हय हय उच्चार। धाय घायल घट गज्जिय॥
चहं चहं चवंक बज्जिय। तुट्टि पाइक बिन तज्जिय॥
रोस रसि वसिय सामंत रसिय। अथुत युद्ध उद्धह गतिय॥
सामंत सूर दिसि सुर लरत। कहत धन्य राजन रतिय॥छं०॥१४६॥

रणक्षेत्र की रक्त सरिताओं से उपमा वर्णन।

गाथा॥ साभर मती सरित्तं। गुज्जर पंडेव धार धारायं॥
दुअ तद रुधिर उपट्टं। वहे प्रवाह हत्थियं वाजं॥ छं० ॥ १४७॥

दूहा॥ हत्थि वाजि नर भर वहत। सिंधनि धुनि गरजंत॥
एक घरी अदभूत रस। रुद्र भयो विसमंत॥ छं० ॥ १४८॥

मोतीदाम॥ मिले चहुआन सु सत्तय बीर। तजै भव मोह भजै पग और॥
झरै सिर झार दुधार प्रवाह। परें रन में ज्युं मदंध गवार॥
छं० ॥ १४९॥

उठै धर ओनिय छिछ उतंग। सु पावक ज्वाल मनों गिरि शृंग॥
उड़ै धन सार झनंकत षग्ग। मनों जुग जुग्गिनि लग्गिय मग्ग॥
छं० ॥ १५०॥

भनंत कि भौंर कि तोरन तार। विठं तजि पंकज फुट्टत फार॥
परे बहु पंतिय सोलंक सेन। लियौ तिन तात सुबैर वलेन॥
छं० ॥ १५१॥

इसे रन रंग सुभैत सुढार। मनों मय मत्त परे विकरार॥
छुटंतय तीर सुभंत सुमार। उड़ै जनु झिंगन भद्दव पार॥छं०॥१५२
[1]दमंकत तेज सु बंकिय बज्जि। रहै रन राज फवज्जा सु सज्जि॥
॥ छं० ॥ १५३॥

प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन।

कवित्त॥ षिग्गि षीची परसंग। समुद्द अरि ग्रहन कि गज्जिय॥
बड़वानल वलिबंड। षग्ग षोहनि दल षज्जिय॥
बढ़त सेन तेइ जरहि। पढ़त जनु भस्स कुढ़ी हुय॥

(१) ए. कृ. को.-मदंकत।

जह तह जगल सूर। काढ़ि सुप सकै न आन कुय ॥
कर पच मच जुग्गिनि जगहि। रजि पलहारिय पुद्ध विन ॥
चमरैत वैत जनु किसु वन। इम तन रज्जिय सोभ तिन ॥छं०॥१५४॥
पिष्षि नरिंद हय नपि। वज्जि घुरतार कपि भुअ ॥
अष्ट सु चल [1]दस विचल। कपि सपात पात हुअ ॥
उठिय [2]मुप्प मुछ वक। सीस लग्यौ असमान ॥
पपि जान पावै न। कारहि कुडल कमान ॥
घरि एक घावि विभ्रम भयौ। हाइ हाइ मच्चौ कलह ॥
तिन सह सिभ सिभासनह। उघरि वीर दिष्यौ पलह ॥छं०॥१५५॥

गाथा ॥ यों कुट्टे सुर सार। घाव घडय घन सु लोहार ॥
भद्र सूर प्रकार। आभद्र द्रुज्जनो ग्रेह ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव की फौज का विचलना।

साटक ॥ आभद्र वर ग्रेह दुज्जन वर, भद्र न्रप राजय।
जे भग्गा सामत वीर वसुधा, तत्तव जीवतय ॥
भग्गा सनेय वीर चालुक रन, मुत्ती वर मुक्कय ॥
अती अत सु अत अतरु रत, जुत्ती तुमत करी ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा।

दूहा ॥ काल व्याल सम कर ग्रहन। भिरत परत अरि तथ्थ ॥
दिव देवासुर उच्चरै। धन्न सु छत्तिय हथ्थ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
सूर हथ्थ हथ्थिय ग्रहिग। चरत मान आनद ॥
सूरज मडल भेदिते। जोति जगत्ति न इद ॥ छं० ॥ १५९ ॥
घट [4]घट्टै लुट्टै मुगति। छिति छुट्ट रति चाव ॥
यो मत भत्त रत्त रन। ज्यों वलि वावन पाव ॥ छं० ॥ १६० ॥

गाथा ॥ वामन दिद्व सु पाव। ईस जचि सुवीय सहय ॥
एवक पाइक सूर। सो जित्ते तीनय लोक ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए कृ को दल। (२) ए कृ को मुछठ भुर। (३) मो रन।
(४) मो मेदिकै। (५) मो घुटै।

खामिभ्रमा सुध मत्तं । सुधयं मत्ताइ तत्त गुनयं मो ॥
धीरं धीर अधीरं । धीरं छुट्टेव हथ्थयं दिध्धं ॥ छं० ॥ १६२ ॥

परस्पर घमसान युद्ध का दृश्य वर्णन ।

चोटक ॥ सुमिले चहुआन चलुक्क अनी । जु [1]वजे जनु देवय दिव्य धुनी ॥
रनकावत षग्गत हथ्थ करैं । मनु बीर जगावत बीर उरैं ॥
छं० ॥ १६३ ॥

गहि चच्चरसी चवरंग रजं । मनों भद्दव वद्दल मद्द गजं ॥
सपरै गज कांक करंन भरं । सु उड़ै जनु पंतिय पंघ भरं ॥
छं० ॥ ॥ १६४ ॥

झननंकय बीरति बीर सयं । स नचै जनु रुद्रय बीर हयं ॥
ततथे ततथुंगय सार रजी । उड़ि काम किरच्चिन मंत गजी ॥
छं० ॥ १६५ ॥

पल में पल वित्तय पंच उड़ै । बहु-यौ नन कालय बीर बुड़ै ॥
मसुरत्ति सरत्ति सरत्त रसी । सु उड़ै जनु सार सपत्ति वसी ॥
छं० ॥ १६६ ॥

मय मंत सु मंति न दंति यता । भजि बीर डरावन साज हिता ॥
रननंकत तुंग तुरंग रनं । झननंकहि षग्ग सुमग्ग घनं ॥
छं० ॥ १६७ ॥

दुअ बीर दुहाइय हथ्थ पढ़ैं । सु बढ़ै तनु विज्जुल हथ्थ कढ़ैं ॥
॥ छं० ॥ १६८ ॥

दूहा ॥ बढ़ि विज्जल सय हत्ति कर । गुर धर धंमति वाउ ॥
देव दिषै देवत रिझै । धनि सामंत सु धाउ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है ।

गाथा ॥ तब कैमास सु जुद्धं । बुधं किन्न तीनयो वारं ॥
आदत्त द्रत्तिय चायं । न चायं नेह नारियं बीरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
बंचै सुगत्ति [2]न बंचै । बंचै खामित्त जुद्धनो वरयं ॥
सा घट घट भौ थिरयं । जंगम जुत्ताय थावरं बीरं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

(१) मो.-वने । (२) मो.-सु ।

चौपाई ॥ थिर थावर जंगम नह वीर । वज्र गी धर वज्र सरीर ॥
वज्र धाइ आघात न छुट्टै । फिरि फिरि मुत्त रास करि लुट्टै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ ढाहि सेन चालुक्क वर । घटिय सेन चहुआन ॥
दुहु मझ्झै कोविद ज्यौं । धर छंडै नह थान ॥ छं० ॥ १७३ ॥

चौपाई ॥ धूम्र धूम्र थानय नन छंडै । मान सम्झ सम्मथा गुन पंडै ॥
कैवर रत्त अहत्तत चाई । कैवर स्तूर परे धन धाई ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ वजहि धाव घरियार जिम । राइन दोऊ सेन ॥
चालुक्क चोहान रिन । भयौ भयानक गैन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना ।

मोतीदाम ॥ मिले रिन चालुक संभरिनाथ । वजी वाल कुह सु वज्जन हाथ ॥
ढहे गज गुंजत रोस चिकार । परें हय तुट्टि अदब्भुत रारि ॥
छं० ॥ १७६ ॥

जहां तहां सग फुटै धर पार । बहै सर श्रोन कि जावक धार ॥
भई सिर छाह कमानन तीर । फुटै धर पंजर धुक्कि गहीर ॥
छं० ॥ १७७ ॥

भयानक भेष भय असकाक । थलप्पल रुद्धि मची जनु पंक ॥
अदब्भुत काक विरच्चिय वीर । कढी अस कोह भरक्किय भीर ॥
छं० ॥ १७८ ॥

उतें न्टप भीम इतें [1]चहुआन । गही कर नागनि सी असि [2]पान ॥
[3]धनहिन भीम रह्यौ घट जंत । सु आनि के आज [4]पहूंचिय अंत ॥
छं० ॥ १७९ ॥

करौ धर रुडरि गुज्जर देस । हकारिय भीम भयानक भेस ॥
हहकिय भीम न पावहि जानि । [5]विठाउन सोमह सुर्ग ढिगान ॥
छं० ॥ १८० ॥

(१) ए कृ० को प्रथिराज । (२) ए कृ० को साज ।
(३) ए कृ० को धनहन । (४) मो-सिपत । (५) मो-वैठे ऊत ।

पचारिय कन्ह सु पिथ्थ पछाय। हनै किन ष्ट्टन निकारि आइ॥
कियं सुनि घाव सु संभरि वार। वही असि कंध जनेउ उतारि॥
छं०॥ १८१॥

धुकंत सु घाव कियौ भर भीम। सु रेपसि सेप बही असि हीस॥
जयं जय जंपय देव दिवान। रही धरे अच्छरि अच्छ विमान॥
छं०॥ १८२॥

धरें सिर राजन अंमर फूल। परी सुनि चालुक सेनह हूलि॥
जितं तित उठ्ठहिं छिंछ अनंत। निपज्जिय षेत प्रवालिय [1]भंत॥
छं०॥ १८३॥

जितं तित हक्कत सीस धरंन। भयानक भेप वकंत वरंन॥
कमंध करंत जितंतित धाइ। हनंत फरंत कि भूत विसाइ॥
छं०॥ १८४॥

जितं तित धाइल घूमत सार। [2]रनंकिन छक्कि कि छक्कि गमार॥
जितं तित तफ्फत लुथ्थि विहार। [3]जलं मझि डारि कै मीन कहार॥
छं०॥ १८५॥

जितं तित हथ्थिय लुट्टत भूमि। रची जनु भीम भयानक भूमि॥
जितं तित धाइल पारत चीस। लरै जनु प्रेत करी कल रीस॥
छं०॥ १८६॥

जितं तित श्रोन भभक्कत घाइ। फटै जनु नाव दर्याव मझाइ॥
भयं इम भीम भयानक अंत। सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत॥
छं०॥ १८७॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज। बजे रनथंच सबद्दय बाज॥
जपै सुर चारन गंध्रब भाट। मिले सब आनि फवज्जनि थाट॥
छं०॥ १८८॥

जयं जय सद्द सु जंपिय भेव। झरै सिर पुप्फ सु अंबर देव॥
॥ छं०॥ १८९॥

(१) मो.-नंत। (२) ए. कृ. को.-रनंमाने। (३) मो.-लछं।

कन्हे की तलवार की प्रशसा।

कवित्त ॥ सिलह मभ्भ पग धार। बीय उग्यौ ससि सोभै ॥
कै नव वधु नप पित्त। काम आकार अलोभै ॥
मरम वीर कत्तरी। दिसा वर तिलक पुघ्र वर ॥
कै कुची भ्रृंगार। वहुरि सोभै ओपम धर ॥
सोभंत चद की काला नभ। काल काल क सोभै न तन ॥
ढुल्यौ जु षेत सामत नै। बुभयौ राज तामस मन ॥ छं० ॥ १९० ॥

चहुआन का पितृ वैर वदलने पर कवि का वधाई देना।

दूहा ॥ लियौ वैर चहुआन न्रप। वजि निरघोप सु धाव ॥
चावद्दिसि सेना फिरी। वर वीरा रस चाव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

पृथ्वीराज के सामतों की प्रशसा।

वीरा रस वर वढिय भर। षट्टिय घट तन पत ॥
जम तजत जोगिनि सुजस। धनि सामत सु मति ॥ छं० ॥ १९२ ॥
गाथा ॥ लज्जौ कज्ज मरिज्जैं। उदर हत्त धाव घन घडय ॥
कठिन क्रप्प कालहत। मरन परछ निपज्जै साइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
गरजि तवै वेताल। रन रगेव रचिय काली ॥
पलहारी पल पूर। क्रूरं स्तूर वरन वरनाई ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का वद होना।

सभ्भ सपत्तय स्तूर। भेष भयान भतिय क्रूर ॥
कल्न वीर रस पूर। नूर दुअ सेन दिष्याइ ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मैं। सव सामत [1]घट स्तूर ॥
धाइ रहै घट धाइ सौं। भयौ प्रात वर नूर ॥ छं० ॥ १९६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ निस सुमाय सत पच। मुक्कि अलि [2]भ्रम तक सारस ॥
[3]गय तारका फटि तिमर। चद भग्यौ गुन पारस ॥

(१) ए रु को सत।　(२) ए क्र को भ्रमन।　(३) ए क्रु को गत।

देव क्रम्म उच्चरहि। बीर बर क्रम्म सुनिज्जहि॥
सोर चक्र तिय तजिय। नयन घुघ्घू रस भिज्जहि॥
पहु फट्टि फट्टि गय तिमर नभ। बजिग देव धुनि संघ धुर॥
भय भान पनान न उच्चर्यौ। करहि [1]रोर द्रुम पष्प तर॥छं०॥१९७॥
सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तोरन किरनिय तम॥
उग्गि किरन वर भान। देव बंदहि सु सेव क्रम॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन संभारति रथ्थै॥
जमुन तात जम तात। करन कंचन कर बरषै॥
ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद। अरुन वरुन तारक चसहि॥
सामंत सूर दरसन दिषिय। पाप धरम तन वसि लसहि॥छं०॥१९८॥
मुरिल्ल॥ के विगया महि मंडल सूरं। पग पंडे बर बीर सपूरं॥
हनिग राव भीमंग सु हथ्थं। बढ्ढी किति जित्ति मनमथ्थं॥
छं०॥१९९॥

रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढ़ी गईं।

कवित्त॥ भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि पर लुथ्थि अरुझिय॥
सघन घाव पग्गार। बीर बीरां रस जुट्टिय॥
[2]बढ़वि सेन दोउ वीर। षेत हुंच्यौ न वीर दुहुं॥
उतर भुग्गि भारथ्थ। सार नंष्यौति सार मुह॥
वय ध्यान मान सम स्याम दिष। किय कीरत्ति अचल कलह॥
सामंत सूर सम सूरतन। कवि सु चंद जंपै बलह॥ छं०॥२००॥

युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी घोड़ों की संख्या।

डेढ़ हजार तुरंग। परे रन बीर बीर भट॥
अद्ध सहस हथ्थी प्रमान। आरुहिय मेघ घट॥
पंच सहस परि लुथ्थि। दंत सों अंत अलुझ्झिय॥
दइय काल संग्रहे। लिषे बिन कोइ न सुझ्झिय॥
है धरी श्रोन बरषंत धर। पति पहार धर डोलयौ॥
सामंत सूर स्वामित्त पति। जीभ चंद जस बोलयौ॥ छं०॥२०१॥

(१) ए. कृ. को.-रोम। (२) ए. कृ. को.-चढ़वि।

संसार की असारता का वर्णन ।

है संसार प्रमान । सुपन सोभै सु वस्त सव ॥
दिष्टमान बिनसिहै । मोह बंध्यौ सु काल अव ॥
काल हत्थ षट्टीक । आज वंध्यौ नर ग्रेही ॥
दया देह संभवै । दया वधै तिन देही ॥
सामंत सूर साधम्म धनि । सज्जिय भज्जिय जानियै ॥
संसार असत आसत्त गति । इहै तत्त करि मानियै ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ बँध्यौ भीम जब राज प्रथि । वैर लियौ षगवाहि ॥
दोहित सजम सूर कौ । कीनौ काचरा राइ ॥ छं० ॥ २०३ ॥
दस वद्दर काचरा दिये । दियौ चमर छत्र सोज ॥
चौरासी वदर मद्दे । और रयै प्रथिराज ॥ छं० ॥ २०४ ॥
भीम दई दीनौं तिलक । लीनौ काचरा संग ॥
*प्रथीराज दिल्ली चले । काढि वैर अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना ।

कवित्त ॥ तात वैर संग्रह्यौ । जीति जैपत्त सु लिन्नौ ॥
ढीली पत्तौ राज । किति संसार स भिन्नौ ॥
न्रिप संधव [1]सो उद्दर । सोइ सामंतनि रष्षिय ॥
एक [2]मग्ग उग्रहै । एक मग्गह रस भष्षिय ॥
पंचमी दिवस रवि वार वर । इंद्र जोग तहा बरति तिथ ॥
दिन चढै राज प्रथिराज जय । जै हय गय नर भर समथ ॥छं०॥२०६॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग वधो नाम चौवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४४ ॥

* छन्द २०३ से२०५तक मो प्रति में नहीं है ।
(१) मो जो ।   (२) ए क को मया ।

अथसंयोगिता पूर्वजन्म प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पैतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन ।

दूहा ॥ कहै चडि सुरपति सुनहि । धरनि [1]अधावहु लोहि ॥
रामाइन भारथ्थ [2]छुध । रही निहारै तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ [3]सा वसुमति वर चवै । सुनहु वर चड दड सुर ॥
रामायन रन वद्द । राम रावेन मान [4]भुर ॥
[5]धर मुष्पै क्यों [6]रहै । वाहन हर हार तार गर ॥
सूर समर सुर धष्पि । अष्पि जन पष्पि तष्पि कर ॥
धक धार सार करिवार कर । मार मार मुष उच्चरिय ॥
असुचर अचभ चव मस चर । रुधिर केम अचिपत परिय ॥छं०॥२॥

दूहा ॥ कर जोरै सुर राज सो । कहत असभम बात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति । कौन श्रोन आघात ॥ छं० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध ।

सिर स्यंदन लोचर्न अलग । घोरन अनि जग घोर ॥
बरपि वीर रस वहुल सर । सोसि सार रत घोर ॥ छं० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतक ।

हनूफाल ॥ हक हकि देव अदेव । धर कपि धर धरकेव ॥
पिठ कमठ कट्ठ कहर । अत कजत काइर नूर ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) मो अघावहि । (२) मो वृध । (३) मो सच सुमति ।
(४) मो सुर । (५) मो - तुम । (६) मो रहौं ।

बलि मथ्थ बीर कारूर। जग पग्ग लग्गि [1]गरूर॥
पथ पथ्थ अंमर सूर। दह दिग्ग सुष्षम [2]नूर॥ छं०॥ ६॥
चवअंत अंत नमंत। छुय लोक चामर अंत॥
विमान [3]मानिय रूढ़। [4]अंबरन रचिय गूढ़॥ छं०॥ ७॥
छत [5]विछति [6]रघु लछिराय। रथ निगछ सुर हय चाय॥
भाल मयंक जाम अतंक। सेन सु भूमि सेन पतंक॥ छं०॥ ८॥
बातन तात तेज अपान। उपट उपट्टि दोन सु धान॥
लगि रघुपग्ग अंग उतंग। गो परिवान दग्गि पतंग॥ छं०॥ ९॥
सुर सुर राज सोच दिवांन। जय जय अच्छि कच्छि विमान॥
॥ छं०॥ १०॥

मुरिल्ल॥ अंमर जय जय सद्दिय अंमर। रेनि रेनि अक बद्दिय संमर॥
संमर अंमर [7]कोतिक अच्छिन। छाय छलं छिति भद्र सु पच्छनि॥
छं०॥ ११॥

गीता मालची॥ सुमिरंत सुमिरिय मंच मूरध उरध हंकह धकयं॥
*किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि जलकि किलय कालयं॥
बक [8]बकय डोरू डमर अंमर चमर बपुअस पंगुरं॥
झलमलत भाल विसाल विधु बर अंब रालक अंमरं॥ छं०॥ १२॥
जट विकट तट जल उछत हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं॥
[9]चव अग्ग सठ्ठिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं॥
भुअ इंद जीति समीति ह्वै अरि अभै लच्छिन जाइयं॥
उड़ि अरुन अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरघर छाइयं॥छं०॥१३॥
बिनि रंग अच्छरि व्योम व्योमनि ताल बाल बितालयं॥
सुर अवर्त्त अम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं॥
छं०॥ १४॥

(१) ए. कृ. को.-करूर। (२) ए. कृ. को.-तूर। (३) मो.-मानिन।
(४) ए. कृ. को.-अंमरन। (५) ए. कृ. को.-विछकि।
(६) ए.-रषु। (७) ए. कृ. को.-कोतक।
*मो.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जल के किलयति कल्लयं।
(८) ए. कृ. को.-बहुय। (९) ए..अब।

कवित्त ॥ पजलि दग चवरंग । छत्त रत छिछ्छ छाइ भर ॥
अग्ग रित्ति रिति राइ । चाइ नक कोप रग बर ॥
निसचर बन चर चमर । अरिन लग्गे अरि [1]धाइन ॥
जुत्त तत्त करि सीस । पाइ कर कजन छाइन ॥
अरि इन्द्रजीत भय भीत ह्वै । भूत भति तडव चरनि ॥
किल किलकि अमर अजुल पहुय । लच्छि राइ मूरध धरनि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढि [2]चढि गूढ़ मंच अमच । हक्कि सु हूक चक्किय वत ॥
नत नुत्त चाप सु इष्य । सरसाइ भू भरतिष्य ॥ छं० ॥ १६ ॥
देह तिसूल सेल [3]सवान । बलि मुष उरवि सेज सजान ॥
वेस निसक स्यदन रुढ । वकवि कूल रासिव रूढ ॥ छं० ॥ १७ ॥
कपिय कोपि कप करूर । नागति गोपि गरनि गरूर ॥
अनुचित लच्छि रघुपति चेत । किनर नाद नारद केत ॥छं०॥१८॥
फिरि परदच्छि दच्छिन देव । त्रिभुवन स्वामि अमित अनेव ॥
हरि हर हर न होरन ताप । निकट निकठ काटत जाप ॥छं०॥१९॥
आसन असन अनल [4]गरूत । रघुपत्ति रघुकुल धूत ॥
धारत धरनि धारनि हेत । सोपन करहु धोरन चेत ॥ छं० ॥ २० ॥
राधव धरन [5]प्रपन प्रचाल । पग सुर गवन कित्ती काल ॥
तजि [6]भज्जि अहि गन वान । जय जय चवत सेवग थान ॥छं०॥२१॥

दूहा ॥ तजी तूक्क भजि भजि सरै । भजि भजि रघुपति रूढ ॥
गोप गोप गर गर [7]गरनि । छिन इक गुनपति गूढ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ [8]निसि निसक स्यदन सु । वक काल काक तग लुपि ॥
चढिय देव मडल मरुत्त । आवर्न्न धूप धुपि ॥
काष्य गोप गहि गोप । डारि जरन अग लगि ॥

(१) ए को धाइय, छाइय । (२) मो वढि । (३) ए कृ को-तिवान ।
(४) मो गत रूत । (५) ए कृ को प्रसंन ।
(६) ए कृ को-भति । (७) मो सिरनि ।
(८) मो निकसि सक ।

भाष साप म्रग मंकु । सैन मुमि सैन प्रान द्रगि ॥
जय जयति सद्द नारद चवत । कर किन्नर तारच्छि भजि ॥
तजि पासि पास तन दर विकार । कहि रधुपति [1]अम भित्त रजि ॥
छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ भज्जि ताप तन मानि मन । बाल व्याल उड्डि सेन ॥
सोपि श्रोन तद्दिन सरनि । रह्यौ राज विनु चेन ॥ छं० ॥ २४ ॥
लच्छि राइ भर पंच मिलि । मंडि सरस धनुवान ॥
इंद्रजीत भर अवनि परि । छयौ अमर असमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
हय बज्यौ दस मुष दरनि । भय मंदोदरि वाम ॥
जाइ जगावहु कुंभ कहुं । हनै रिपुन धन जाम ॥ छं० ॥ २६ ॥
उठ्यौ कुंभ अवनी सु रर । करि जग्गत धन रीस ॥
सुर किंनर धुनि सवद वर । पिष्षहु पग्गन सीस ॥ छं० ॥ २७ ॥

गाथा ॥ दानं प्रमद प्रमादं । परयं भर कुंभ वड्डि लासायं ॥
सम गुच्छन धर धारं । चढ़ि चढ़ि अटन रटन [2]रित जेयं ॥
छं० ॥ २८ ॥

विज्जुमाल ॥ किलकि किलकि कूक । बज्ज दनु गन भूक ॥
तजि वद्द बध्धन थूर । भज्जि सुरगन भूर ॥ छं० ॥ २९ ॥
कहकि कुंभ कनंक । चिहूं दिग्ग बर नंक ॥
मुरि [3]मुरि मेर षंड । जुर छरि जूर मंडि ॥ छं० ॥ ३० ॥
रन रेन छय सूर । मिल कहक विसूर ॥
दह दिग्ग जगि अग्य । बर मंस रम लग्य ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नचि नचि भय भूत । रमत सुरेस सूत ॥
चव चव [4]सद्दि ताल । भवति भल कराल ॥ छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुम । (२) ए. कृ. को.-जित ।
(३) ए. कृ. को.-मर । (४) ए. कृ. को.-सद्धि ।

[1]कुपित कुभक रप्पि। गरुत्र गहु गरपि॥
थेइ थेइ पुर नाद। वितल उचित माद॥ छं०॥ ३३॥
प्रगटि [2]दानव दल। प्रलय सम त्रस मल॥
गहवर धुन पान। रोस रघु असमान॥ छं०॥ ३४॥
रिन तत नित्त पच। तनकि तनकि रच॥
उडि भर भुज भूर। तरसि मष वतूर॥ छं०॥ ३५॥
पच्छ छिन छिनवान। करि रघुराय रन॥
जरध मूरध पड। मरि कुभ राइ दड॥ छं०॥ ३६॥
समर अमर ऐन। अवत चवत चैन॥ छं०॥ ३७॥

दूहा॥ पच्यौ कुभ धरनी सु धर। पड पड तन तेह॥
मानो प्रवल सनूर ढरि। चढि पछी नल छेह॥ छं०॥ ३८॥
सजि डवर घन सीस पर। सज स्यदन [4]षर षेह॥
चढि दससिर रघुपति विहसि। ररसि वढी रन कोह॥ छं०॥ ३९॥
हल हल सेनन चर चरन। उडि आडवर धूरि॥
वजे तूर वनचर चमू। देव पचजन पूर॥ छं०॥ ४०॥

राम रावण का युद्ध।

गीतामालची॥ मौसद नहि निसान स्यदन सेन अकुरि सेनय॥
झिलि रहसि रघुपति राइ रावन गज्जि आनक ऐनय॥
थिर भान व्योम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अच्छनी॥
[5]नग नाग नागिनि पच्च पनन मत्त मत्तन [6]वच्छनी॥ छं०॥ ४१॥
किल किलक काल वितालं मालनि व्याल जालन तडव॥
डव डवरु डोरु अ करह किन्नर करत कुडल पडव॥
मिलि दैत्य वस अदैत्य असह सधि सिधुर नद्दय॥
गन गिद्धि अवर छाइ पच्छिन डकि डकि नरद्दय॥ छं०॥ ४२॥
तन तुनकि चामर चाप चपिय ताप कपिय तिष्पुर॥

(१) मा कुपित।　(२) ए कृ को-दानव।　(३) मो-सम चख नूर।
(४) ए कृ को पन।　(५) ए कृ को गन।
(६) ए कृ को चच्छनी।

तर तरकि त्रिकुट चक्र चक्रिय धक्क पंकिय ईसुरं ॥
उड़ि चक्र स्यंदन चूर चामर षेर चव्वर पंडयं ॥
दानव दुरासय पलं आसय समर धन वर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धुर सेत पीत सुरंग [1]सातकं स्रोन नील अकासयं ॥
जनु जून द्रुज भूभंति अंतर पत्त रिति निल तासयं ॥
परि सूर सुरगन चवत जय सुर अंचि कर मुकतामरं ॥
बढ़ि कंध दस कुल पित्त पंचर बड्ढि वर रन [2]धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गिरि गिरिन दस ग्रव सोपि सर सिग रह्यौ राज अभय्ययं ॥
सुरपत्ति मुष अग मंडि जंपिय राम रावन कथ्थयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

रामचन्द्र जी की उदारता।

दूहा ॥ चवत राज सुरराज सौं। इह रघुकुल व्यौहार ॥
लेत लंक छिन इक लगी। देत न लग्गी वार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कहै देवि सुर देव सौं। लंक भभीषन अप्पि ॥
रघुपति से सांई सिरह। तूं किम रही अथप्प ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन।

घन तोमर अरि दल अलय। सस्त्र सस्त्र वर मंत ॥
तिन रत चपत न छिन भई। ढवि ढुरि ढुंढि भ्रमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
अब कनवज दिल्ली वयर। दलन दुअन वड़ि षेद ॥
रुंड मुंड षंडन षलन। विधि बंधी बदि वेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
चंडि बरन पुज्जाइ चिष। मंडि मुंड उर माल ॥
जो कनवज दिल्लिय वयर। भरहि पत्र रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले।

कवित्त ॥ मति प्रधान गंधर्व। देव दिव राज बुलायौ ॥
कलह करौ भारथ्थ। मत्ति अप्पनी बढ़ायौ ॥
भूमि भार उत्तार। कलह कित्तिय विस्तारौ ॥

(१) ए. कृ. को -सायक। (२) ए. कृ. को.-धीमरं।

चाहुआन कमधज्ज । वीर विग्रह जग्गारौ ॥
करि कीरे रुप कनवज गयौ । उभय दिवस दिष्षिय पुरिय ॥
वभनिय मदन अगन सु तरु । निसि निवास तहाँ उत्तरिय ॥
छं० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन ।

श्लोक ॥ सतयुगे काश्मिकोदुर्गे । त्रेतायां च अयोध्यया ॥
द्वापरे हस्तिनावास । कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

गधर्व की स्त्री का उससे सयोग के पूर्व जन्म की कथा पूछना ।

दूहा ॥ गध्रव त्रिय प्रिय पुच्छि [1]वर । नाथ कथा समुझाय ॥
सजोगिय अवतार कहि । न्रप ग्रह ज्यों [2]जमि आइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।

राज पुत्रि उतपत्ति सुनि । इह अच्छरि अवतार ॥
[3]सुमन श्राप म्रत लोक महि । सूरन कारन सहार ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कविचद का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना ।

सुकी सुनै सुक उच्चरै । पुब्ब [4]सजोय प्रताप ॥
जिहि छर अच्छर मुनि छर्‌यौ । जिन त्रिय भयौ सराप ॥छं०॥५५॥

शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।

चोपाई ॥ जटा वीर प्रकार सिव थान । गिरिजा गहिर गग परिमान ॥
साधत रिष्षि तहा जर नाम । गइ दस इद्र हन्यौ तिन काम ॥
छं० ॥ ५६ ॥

श्लोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्य, नासा कर्णय जिह्वया ॥
हृदय जघ सुमासश्च, दस इन्द्रिय पराक्रम ॥ छं० ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो रस । (२) ए कृ को जम ।
(३) ए कृ को सुमत । (४) मो-संजोग ।

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना।

[1]जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं। मनों ईस तहं आतम जानं॥
गुरु मुक्ती थह भ्रम्यौ विसेषं। षिमा नाम एक सुंदरी देषं॥
छं० ॥ ५८॥

कवित्त॥ बाल नाल सरिता उतंग। आनंग अंग सुज॥
[2]रूप सु तट मोहन तडाग। भ्रम मण कटाच्छ दुज॥
प्रेम पूर विस्तार। जोग मनसा विध्वंसन॥
दुति ग्रह नेह अथाह। चित्त करषन पिय तुट्टन॥
मन विसुद्ध बोहिथ्थ वर। नहि थिर चित जोगिंद तिहि॥
उत्तरन पार पावै नहीं। मीन तलफि लगि मत्त विहि॥छं०॥५९॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन।

पद्धरी॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि। जनु लता जोग कै काम धारि॥
मनमथ बजार मनमथ्थ धाम। मनमथ्थ तड़ाग कै प्रेम [3]वाम॥
छं० ॥ ६०॥

जौवनि सु मुत्ति छिन एक रंग। मन मीन फंद जनु चरि अनंग॥
षंचन कितक्कि कुचि इष्ट जानि। रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि॥
छं० ॥ ६१॥

दिठि दिठ्ठ टरिय नह नैन चास। चकोर चंद जनु अमिय ग्रास॥
देषंत नैन नह चैन अंग। विंध्यौ सु वाम नैनन निषंग॥
छं० ॥ ६२॥

स्वर भंग कंप वेपथ्थ पथ्थ। फुरकंत नयन इम भय अवथ्थ॥
पल्लव समान मन नैन मिंटि। फुट्यौ सु दूध मनु छाछ छंटि॥
छं० ॥ ६३॥

बद्दल समूह सब गगन छाइ। फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाइ॥
मुरछाइ रह्यौ इम ब्रह्म बाल। व्यापंत सीत जनु तरु तमाल॥
छं० ॥ ६४॥

(१) मो-तहां। (२) ए. कृ. को.-सूप। (३) ए. कृ. को.-वानि।

साटक ॥ जा जीवत पसार पार सुमती, रत्त हरी ध्यानय ॥
[1]पिमया कामय चित्त सित्त पिमया, पिमया रस [2]द्दय ॥
सा सुपनतर दीह रत्ते सुप, प्रानपि पिमया रुप ॥
ना सुक्कौ विय ध्यान [3]पन्नर [4]रुष, पिमयाय पिमया सुप ॥छं०॥६५॥

परंतु ऋषि का पुन अपने मन को साधकर वदरिकाश्रम पर्य्यंत पर्य्यटन करके घोर तप करना।

गाथा ॥ पिमया सुप मय अमिय। रमयाइ अग कोटयो मनय ॥
चित्त न जिन लषि सुअग। सो भिद्देव काम वामाइ ॥छं॥६६॥

कवित्त ॥ प्रथम तित्थ अडसट्ठि। न्हाय वद्री [5]तप रत्तौ ॥
जठरागनि करि चपत। छुधा निद्रा वस जित्तौ ॥
हिम रित हिम तन तुटहि। पचगिन ग्रीसम सहयौ ॥
वरषा काल प्रचड। [6]मेध धारह वपु [7]वहयौ ॥
कर धूम पान मुष अद्ध रहि। कर अगुर नर देव हरि ॥
सत वरष ध्यान लग्गौ भयौ। जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र का भयभीत होना।

दूहा ॥ तप वल कपत सुभर भुअ। रह्यौ ध्यान दिव देव ॥
सुत्त तेज द्रिग सियल हुअ। लह्यौ सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तव चितिय सुरराज मन। का विचित्र वर वाम ॥
आदि अत सोधिय सकल। अप्छरि अप्छरि नाम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

इन्द्र का अप्सारओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भ्रष्ट करें।

(१) मो वृज्जय। (२) क पडर।
(३) ए क को दूग। (४) ए क को-पति।
(५) ए कृ को मेघ। (६) ए क को सहया।

बोलि घृताची मेनिका। रंभ उरबसी रूप ॥
जानि सुकेस तिलोत्तमा। मंजुघोष सुनि भूप ॥ छं० ॥ ७० ॥
अति आदर आदर कियौ। कह्यौ आप इह बैन ॥
छलहु सुमंतन जाइ कै। रहै राज सुष चैन ॥ छं० ॥ ७१ ॥

अप्सराओं का सौंदर्य्य वर्णन।

गाथा ॥ नयनं नलिन नवीनं। गवनं गयं मत्त तुलायं ॥
बैनं पर भ्रत दीनं। झीनं कटि भ्रगंराजेसं ॥ छं० ॥ ७२ ॥
अर्य्या ॥ *सपत सुर गान निपुना। न्रत्य कला कोटि आलया मानं ॥
तार तरलेव भ्रमरी। भ्रमरी भ्रमरी सय सयसं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

मंजुघोषा का सुमंत ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना।

कवित्त ॥ भो आयसि सुरराज। मंजुघोषा सुनि बत्तिय ॥
म्रत्य लोक मैं जाहु। सुमति छल छलौ तुरत्तिय ॥
दुसह तेज को सहै। मोहि आसन डर डुल्लिय ॥
सेस संकि कलमलिय। नैन तिय तालिय षुल्लिय ॥
जल पंचि सुरन हिय दुष्ष धरि। नहिन सु रस उड्डगन भुअन ॥
तप ताप देव सब कलमलत। सुकाज काज रष्पहि दुअन ॥
छं० ॥ ७४ ॥
दूहा ॥ षग षगपति आसन ग्रह्यौ। गए बित्ति बहु काल ॥
रंभ षिमा सम रूप धरि। आय [1]सपत्ती ताल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानि बैन सुरराज लिय। नरपुर पत्तिय आइ ॥
जहं ताली लग्गी सुमति। तहं नूपुर बज्जाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन।

अच्छरि अट्ठ विमान [2]बनि। कुसुम समान सरीर ॥
नग जगमग अंग अंग सुबनि। कनक प्रभा दुति चीर ॥ छं० ॥७७॥

* छन्द ७३ मो.-प्रति में नहीं है।

(१) ए. कृ. को.-संपतौ। (२) ए. कृ. को.-रचि।

नराज ॥ वनी विमान कामिनी। मनों दिपत दामिनी ॥
दुती उपम सोभय। कि इंद्र चाप सोभय ॥ छं० ॥ ७८ ॥
उरवसी सु केसय। तिलोत्तमा सुदेसय ॥
सु मुजघोप रंभय। घृताचि मेनका सुय ॥ छं० ॥ ७९ ॥
सुरंग अंग सोहनी। मनों कि अष्ट मोहनी ॥
मुसक्कि मंद हासय। विगास कौल भासय ॥ छं० ॥ ८० ॥
सु नेन डोल भौंरहो। कि कौल भौर भौंरहो ॥
तिहाइ भाइ ठानहो। जुगिंद चित्त [1]भानहो ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मरोरि अंग मारहो। सकेलि सुद्ध सारहो ॥
विलास नेन लग्गवै। तिमुन्हि काम जग्गवै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
विराज मान मोहनी। सु कौल माल सोहनी ॥
चवंत वेन माधुरी। न कोकिला सु माधुरी ॥ छं० ॥ ८३ ॥
प्रवीन कोक केलय। कुकी कुकेकि केलय ॥
सुभाय वास अंग की। सुगंध [2]गंध भंग की ॥ छं० ॥ ८४ ॥
विमान छंडि उत्तरी। मनों कि चित्र पुत्तरि ॥
सुमंत सुष्प ठढ्ढिय। प्रवान पान [3]पढ्ढिय ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दिपंत मैंन लग्गय। जिहाज जोग भग्गय ॥ छं० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणेक के लिये डगमगाई।

दूहा ॥ करिय गान विविधान सुर। ताल काल रस भाइ ॥
छिनक पलक मुष उध्धरिय। अच्छरि रही लजाइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्त्तव्य विचारना।

उलटि गयै सुरपति हँसै। [4]रहै रषीस रिसाइ ॥
इह चिंता मन उप्पज्जिय। फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जौ न छरौ तौ देव डर। रिषि तप जप्प प्रचंड ॥
[5]दुहु विधि संकत कामिनी। आप ताप सुर दंड ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए कृ को -तानहीं।　　(२) ए कृ का -भग।
(३) ए कृ को ठढ्ढिय।
(४) मो रह रिषि भाय रिसाय।　　(५) मो -दादु विधि सक न सामिंन।

उलटि गई सुर धरनि धर। देवन देव बुलाइ ॥
इंद्र रोस कै डर डरौ। आप ताप डर पाइ ॥ छं० ॥ ९० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना।

मन माया भ्रम दूरि करि। फिरि लग्यौ रिषि ध्यान ॥
ब्रह्म जोति प्रगटी उरह। रंभ प्रगट्टिय आन ॥ छं० ॥ ९१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ बहुरि गई रिषि पास। सांस जिन गहिय उरध गति ॥
मूल पवन दिग बंधि। गरजि ब्रह्मंड मेघ अति ॥
बंक नाल जल षंचि। [1]सींचि उर कमल प्रफूल्लिय ॥
ब्रह्म अगनि प्रज्जरिय। पाप करि भसम सम्मूलिय ॥
तब मारग सुज्झौ मीन जल। पंछि षोज पायौ सगुन ॥
सुनि तार सु बज्झौ कारन बिन। सह स्वाद छंडिय त्रिगुन ॥छं०॥९२॥
तालिय लग्गिय ब्रह्म। लीन मन जोति जोति मलि ॥
कमल अमल उद्घरिय। हृदय अवनीय धरनि [2]अलि ॥
त्रिकुटिय तारक लग्गि। भ्रगुटि गंगा तन मंडिय ॥
रिज्झि सवह श्रवन्न। नद्द अनहद्द सु बज्जिय ॥
अधमुष ऊरध चरन करि। गति पत्तिय मंडल गगन ॥
ता रिषहि जगावत सुंदरिय। रह्यौ सु धुनि मस्सह्ह गगन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

वाद्य बजना और अप्सरा का गाना।

दूहा ॥ जंत्र मृदंग उपंग सुर। धुनि झंझर झनकार ॥
करत राग श्रीराग सुर। कर बर बज्जत तार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
चट्टवात माठा धुआ। गीत प्रबंध प्रवीन ॥
[3]उघटत ललिता ललित पिय। पुजवति सुर कर बीन ॥छं०॥९५॥

(१) ए. कृ. को.-सिंचि कमर उर फूलिय।
(२) ए. कृ. को.-उर। (३) ए. कृ. को.-उघटन।

श्लोक ॥ [1]मृदगी दडिका ताली । धुरधुरी स्तुति काहली ॥
गीत राग प्रबध च । अष्टाग नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ ९६ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सोर सुनि के सुर जग्यौ । भग्यौ ध्यान जगईस ॥
चित्त चक्रित करि सोच मन । इह अपुव्व काहा दीस ॥ छं० ॥ ९७ ॥
नूपुर धुनि श्रवननि सुनत । भई ध्यानगति पग ॥
ताली छुट्टिय गगन मय । षुल्लिय पलक मन लग्ग ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कहिय रिष्य सुर अच्छरी । कन्या गध्रव जक्ष ॥
कै नागिनि जनमी कुअरि । तो सिव [2]रष्या रक्ष ॥ छं० ॥ ९९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना ।

कामातुर चिय कर गह्यौ । तप जप छडिय आस ॥
[3]हँसि छुडाइ कर तडित मन । गई अवास अयास ॥ छं० ॥ १०० ॥

मुनि का मुर्छित हो जाना, परतु पुन सम्हल कर ध्यानावस्थित होना ।

छिन इक धर मूरछि पऱ्यौ । चित कलमल्यौ अधीर ॥
बहुर ध्यान मन आनि कै । मुनि वर भयौ [4]सधीर ॥ छं० ॥ १०१ ॥
कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धऱ्यौ । हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥
चित्त ब्रह्म लवलीन । वरध सित कियौ तेम करि ॥
छुधा पिपासा जीति । नीद निसि नसिय इद्रि तस ॥
बहुत जतन तप कियौ । बधि दृढ पवन उरध बस ॥
पीवत वाम दक्षिन मुचै । कुभक पूरक जोग बल ॥
करि उर्द्ध चरन ध्यान सु रह्यौ । गह्यौ पथ गगनह अकल ॥
छं० ॥ १०२ ॥

(१) मा मृदकी ।　　(२) मो रछ्या ।
(३) ए कृ को सहि ।　　(४) ए कृ को -अधीर ।

कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौंदर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना।

दूहा ॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि। नष सिष बरनहु ताहि ॥
जा दिष्षन मुनि मन टर्यौ। रह्यौ टगट्टग चाहि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

अप्सरा का नख सिख वर्णन।

साटक ॥ चरने रत्तय पत्त राइ रितए, कंजाय [1]चंद्रानने ॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने ॥
मध्यं छीन मृगेन्द्र भार जघना, नाभिंच कामालए ॥
सिंमे सिंभ उरज्ज नयनयौ, एने ससी भालयौ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अर्धमालची ॥ तल चरन अरुनति रत्तए। जल नलिन सोक सपत्तए ॥
नष पंति कंतिय मुत्तए। जनु चंद अम्रत जुत्तए ॥ छं० ॥ १०५ ॥
नग जरति नूपुर बज्जए। कलहंस सबद विलज्जए ॥
गति मत्त गरव गयंदए। छवि कहत कविवर चंदए ॥ छं० ॥ १०६ ॥
गहि पिंड कनक विमानयं। रँग रंग बंदन सानयं ॥
कर करिय जंघति ओपमं। रंग फटिक केसरि सोपमं ॥छं०॥१०७॥
घन जघन सघन नितंबयं। छिन काम केलि विलंबयं ॥
कटि सोभ बर म्रग राजयं। कहि चंद यौं कविराजयं ॥छं०॥१०८॥
बनि नाभि कोस सुकज्जयं। मनु काम भ्रमरय रंजयं ॥
रव मधुर म्रदु कटि किंकिनी। झलमलत नग फननी [2]कनी ॥
छं० ॥ १०९ ॥
सलि उदर त्रिवलि त्रिरेषयौ। कुच जघन मंडि सु भेषयौ ॥
बनि रोमराजि सपंतयं। प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं ॥ छं० ॥११०॥
उर उरज जलज बिराजही। कलधूत श्रीफल लाजही ॥
उर पुहप हार उहासियं। इक होत जोजन वासियं ॥छं०॥१११॥
गर लजति कंठतु कामिनी। कलयंठ कोक सुधामिनी ॥
रचि चिबुक बिंद सु स्यामए। जनु कमल बसि अलि धामए॥छं०॥११२॥

(१) मो.-चन्द्रायने। (२) मो.-कली।

बलि पुहप तिलक सु नासिका। जनु कीर [1]चुंच प्रहासिकौ ॥
तिन मुत्ति बेसर सोभए। ससि सुक्र मिलि रसि लोभए ॥छं०॥११३॥
तस नयन पजन कजए। सुरराज सुर मन रजए ॥
चाटक नग जर जगमगै। विय चक्र करि ससि पर जगै ॥छं० ॥११४॥
विय भौंह वकित श्रकुरी। जनु धनुक कामति [2]सकुरी ॥
तसु मध्य तिलक जराइ कौ। [3]रविचद मिलि रस आइ कौ ॥छं०॥११५॥
गुथि केस चिक्कन वेनिय। जनु असित अहि ससि ऐनय ॥
सित दिव्य अमर अमर। नह मलिन होत अडवर ॥ छं० ॥ ११६ ॥
अगवास [4]आस सुगधय। सग चलत मधुव्रत सगयं ॥
सम उदधि मथि कीनौ हरी। फटि फेन प्रगटित सुदरी ॥छं०॥११७॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य की प्रशसा।

मालिनी ॥ हरित कनक कांति कापि चपेव गोरी।
रसित पद्म गधा फुल्ल राजीव नेत्रा ॥
उरज जलज सोभा [5]नमिकोस सरोज।
चरन कमल हस्ती लीलया राजहसी ॥ छं० ॥ ११८ ॥

दूहा ॥ कामालय सो सदरो। जिम अरि अग्गि अनग ॥
विधि विधान मति चुक्कयौ। कियै मेन रन अग ॥ छं० ॥ ११९ ॥

मालिनी ॥ अधर मधुर बिंब, कठ कलयठ रावे।
दलित दलक भ्रमरे, भ्रिग भ्रकुटीय भावे ॥
तिल सुमन समान, नासिका सोभयती।
कलित दसन कुंद, पूर्न चद्राननं च ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियो के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है।

दूहा ॥ न्याय छुऱ्यौ मुनि रूप इन। सुरति प्रीय चिय आहि ॥
जा मोहै सुर नर असुर। रहै ब्रह्म [6]सुष चाहि ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए कृ को हस। (२) ए कृ को सहरा। (३) ए कृ को रचि।
(४) ए कृ को सास। (५) ए कृ को नासिका। (६) मो-मुष।

कवित्त ॥ इनह कोज सुर धरत । सूर तन तजत ततच्छिन ॥
परत कंध नंचत कमंध । परे हनत स्वामि रन ॥
भरत पत्र जुग्गिनि समत्त । रति पिवत पिवावति ॥
चरम चष्य पल भवत । पंछि जंबुक न अघावत ॥
पुनि वपु किरचि करतें समर । तब लहंत रस अच्छरिय ॥
तजि मोह पुत्त पुत्तिय सु तिय । वरत वरंग नभच्छरिय ॥छं०॥१२२॥

दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि । मोहे इंद्र फुनिंद ॥
नर नरिंद जुग जोग रत । उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमंत ऋषि के पास आना।

कवित्त ॥ तीय धर्यौ तन जोग । श्रवन मुद्रा सु [१]फटिक मय ॥
करि अष्टंग विभूति । न्हाय जनु निकसि सिंधु पय ॥
जटाजूट सिर बंधि । दिसा दस अंमर मानिय ॥
सिंगी कंठ धराइ । जोग जंगम सिव जानिय ॥
पवनं सु अरध ऊरध चढ़ै । बंक नालि पूरै गगन ॥
धरि ध्यान सुमन नासिक धरै । रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥छं०॥१२४॥

दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि । निकट सुमंतह आइ ॥
करिवर डंवरु डहडह्यौ । अंवर सब सिव माइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग । गंगनह झलक अलक जल ॥
भूतन प्रेत पिचास । [२]नयन नह त्रतिय गरल गल ॥
कटिन बंधि गज चर्म । [३]पहरि अंग अंग दिगंवर ॥
नह गनेस षट बदन । पुत्र गननंदि संग सुर ॥
नहविय लिलाट पट तिलक ससि । व्याल न माल बनाइ उर ॥
नाहिन त्रिशूल त्रिपुरारि षल । नह कर लग्गिय धवल धुर ॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-फटिक। (२) ए. कृ. को.-नयन। (३) मो.-पहिर अंग अगनि वर।

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादार आसन देकर बातें करना ।

बहु आदर आदरिय । [1]अरध आतिथि तिहि दिन्नौ ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट । कष्ट बहु तप करि किन्नौ ॥
उलिग इद्र रवि चद्र । इद्र सुर लोकह मानिय ॥
मो अग्गै कर जोरि । देव सब तजत गुमानिय ॥
तग्गह सु ग्यान मन उप्पज्यौ । देव दुषी करि सुष लह्यौ ॥
चिदनद ब्रह्मपद अनुसरिय । धरिय ध्यान [2]गगनह रह्यौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का सक्षेप प्रस्तार वर्णन ।

दूहा ॥ मात गरभ आवागमन । मेटि [3]भ्रमन ससार ॥
ज्यो कचन कचन मिलै । पय पय मझ्झ सचार ॥ छं० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सौं कहौ । निरगुन गुन विस्तार ॥
बरन्यौ वपु वैराट हरि । जा मुनि लहै न पार ॥ छं० ॥ १२९ ॥
पद्धरी ॥ कहौ ग्यान मत सुमत विचारौ । गहौ अद्ध मूल उरद्ध सचारौ ॥
धरौ ध्यान नासा चिदानद रूप । त्रिकुट्टी [4]त्रिलोकी स्वय जोतिरूप॥
छं० ॥ १३० ॥
पियौं बकनाल चढै दड मेरैं । सुनै सद्द अनहद्द अनहत्त टेरे ॥
धुनी अतर जोति जानौ गियानी । जपै मच हस सु सोह विनानी॥
छं० ॥ १३१ ॥
सर नाभि मूल सरोज प्रकासै । दल अष्ट [5]पद्म तहा सो उहासै ॥
तपत्त कनक्क वरन्न [6]झलक्कै । दस अगुल नालि हिरदै ढलक्कै ॥
छं० ॥ १३२ ॥
जिम पुप्फ कल्ली तिम कज फूलै । करै जोग उद्ध धरै वाय मूलै ॥
तहा देव अगुष्ट मानत वासै । धरै अष्ट वाह वसै देव वासै ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो-अरध ।		(२) मो-गगन ।		(३) ए कृ को-भ्रिमन ।
(४) मो त्रलोक ।		(५) मो सत ।		(६) ए चलक्कै ।

दलं अष्ट कंजं सु रुद्रान देवं । रहै मध्य भानं अलष्यं अछेवं ॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरत्तं । ससी मध्य अग्नी रहै रूप रत्तं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तामें विराजै । तहां पिट्ठ सिंघासनं देव साजै ।
रतन्नं जरे वज्र [1]कोटीस कोटी । तहां देव नाराइनी जोति मोटी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

[2]अगुं लच्छिनं वक्ष कौस्तुभ्भ सोहै । धरै चक्र पद्मं गदा कंवु रोहै
धरैं [3]पानि पग्गं धनुं [4]वान सस्सं । इसौ ध्यान दिव्यौ महा जोग वस्सं ।
छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासी । महा उज्जलं कांति फटिकं [5]प्रभासी ॥
तहां सूर कोटी ससी कोटि सीतं । वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं॥
छं० ॥ १३७ ॥

[6]क्रितं सेत ब्रनं [7]अरतं सु नेता । जुगं द्वापरं पीत कलि कृष्ण [8]नेता ॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं । रहै आप आपं गुरं पच्छि यानं ॥
छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अभेदं प्रमानं न मानं । अकासं न वासं न जानं पुरानं ॥
न रूपं निरूपं अरूपं समथ्थं । रहै [9]सास मैवास करि देह रथ्थं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रूप वैराट गुर जौ वतायौ । जिसौ अरजुनं कृष्ण भारथ [9]सुनायौ ।
महाकास सीसं चरनं पतालं । कढी नाभि सुर्गं दिसा वाहु पालं ॥
छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इर्म्भं । गिरं अस्त नैनं ससी [10]सूर नभ्भं॥
नदी तास नारी महा [11]प्रान प्रानी । कहै देव वेदं [12]न जानंत जानी॥
छं० ॥ १४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सूरं । (२) ए. कृ. को.-श्रिय । (३) ए. कृ. को.-सांग ।
(४) ए. कृ. को.-मुसल्लं । (५) ए. कृ. को.-प्रभा ।
(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अरस्तु । (७) मो.-त्रेता ।
(८) ए. कृ. को.-साम । (९) ए. कृ. को.-वनायौ ।
(१०) ए. कृ. को. रूर । (११) ए. कृ. को.-बाहु । (१२) ए. कृ. को.-जनासं न ।

जगै रैनि दीह मह। जोग जोगी । विराट सरुप कहै भोग्य भोगी ॥
निराकार आकार दोऊ विभायो । कहै देव औतार गुर जो वतायौ ॥
छं० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना ।

दूहा ॥ मन मानै सोई भजहु । कष्ट तजहु तुम देह ॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै । उर मेटहु संदेह ॥ छं० ॥ १४३ ॥
सुरग वसै फिरि धर वसै । मनो ग्यान मन ईस ॥
गरभ दोष मेटहु प्रवल । उर धरि ध्यान जगीस ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दसों अवतारों का संक्षिप्त वर्णन ।

दूहा ॥ कहै ब्रह्म अवतार दस । धरे भगत हित काज ॥
रूप रूप अति दैत्य दलि । द्रुपद सुता रपि लाज ॥ छं० ॥ १४५ ॥
कवित्त ॥ मच्छ कच्छ वाराह । अप्प नरसिंह रूप किय ॥
वामन बलि छलि दान । राम छिति छत्र छीन लिय ॥
लंकापती संहऱ्यौ । उभय बलदेव हलायुध ॥
दयापाल प्रभु बुद्ध । रहे धरि ध्यान निरायुध ॥
कलि अंत कलकी अवतरहि । सत्य भ्रम्म रष्षन सकल ॥
करि सरस रास राधा रमन । भवन ग्यान ब्रह्मह अकल ॥छं०॥१४६॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो ।

दूहा ॥ कपट ग्यान मुष उच्चरै । मन छल धूत अधूत ॥
कपट रुप कठोर कर । चरन चित्त अवधूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल सध्यौ तिनह । मै विन प्रीति न होइ ॥
हर छल तजि हर रूप करि । मान प्रगट्टिय सोइ ॥ छं० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन ।

कवित्त ॥ पीत वरन कजलीय । छोह आरोह सरप जनु ॥
दसन सु तिष्प कुदाल । नयन विय वज्र धऱ्यौ तनु ॥
वज्र वंक अंकुस गयंद । नष कुंभ विदारन ॥

उर्द्ध केस काग सद्द। गरव दंती [1]दल गारन ॥
धर पटकि पुंछ मुंछाल छल। पीठ दिठ्ठ अवधू पर्‍यौ ॥
भय भीति कपि कामिनि कुटिल। धाय विप्र अंकह भर्‍यौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना।

दूहा॥ उर उरोज लग्गत सु मुनि। सर सरोज हति काम ॥
रोमंचित अंग अंग सिथल। मन मोह्यौ सुरवाम ॥ छं० ॥ १५० ॥
दिष्षत अच्छरि अष्ष उन। रह्यौ नैन मन लाइ ॥
देह भुलानौ नेह कै। और न सूझै काय ॥ छं० ॥ १५१ ॥
भ्रमन भयानक सुपन छल। सिंघन अवधू संग ॥
जानिक पंष परेवना। करि डंवरू इन अंग ॥ छं० ॥ १५२ ॥
कामजारि सिव भसम किय। कर विभूत रति सोक ॥
भोग भुगति रति सुंदरी। द्रिढ़ नह जोग न जोग ॥ छं० ॥ १५३ ॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं।

गाथा॥ वनिता वदंत विप्पं। जोगं जुगति [2]केन कमायं ॥
स्यामा सनेह रमनं। जनमं फल पुन्न दत्ताइं ॥ छं० ॥ १५४ ॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना।

दूहा॥ चित्त चल्यौ मन डगमग्यौ। रच्यौ रूप रस रंग ॥
आनि पहुंतौ जरज रिषि। दही भात ज्यों डंग ॥ छं० ॥ १५५ ॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना।

अरिल्ल॥ पहर एक पर निठ्ठ। जगाइय अप्प गुर ॥
भौ लज्जा लवलीन। विचारत अप्प उर ॥
जाइ सु पत्तौ तात। सु नैनन भेदयौ ॥
भेट्यौ अंगन अंग। अनंगह षेदयौ ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दूहा॥ देषि तात परदच्छ फिरि। भय लज्जा लवलीन ॥
षिमा अरथ तप रंभ कै। काम कामना भीन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो.-लगरन। (२) मो.-कवन।

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना ।

पहचानी रिषि सुंदरी । कुस गहि कीनौ दाप ॥
भ्रगुटि बक रिस नैन रत । दिय अच्छरी सराप ॥ छं० ॥ १५८ ॥
हम रिष्षीसर बन वसत । रसह न जानै एक ॥
कद भषत तन कष्ट करि । लेइ आप इक मेक ॥ छं० ॥ १५९ ॥

सुमत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना ।

कवित्त ॥ नयन चकित दुअ बाल । भाल भ्रकुटी दिषि तातह ॥
गयौ वदन कुमिलाइ । जानि दीपक लषि प्रातह ॥
पुत्र कवन तप तप्यौ । भयौ वसि काम वाम रत ॥
इनहि आप करो भस्म । कवन छंडेय तोहि हित ॥
वपु क्रोधवंत रिषि देषि करि । रंभ अरभ न कछु रह्यौ ॥
सम अग्नि रूप दिष्षीस रिषि । तवह आप रंभह कह्यौ ॥छं०॥१६०॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन ।

कलह [1]करहौ डहि कुबुधि । कलहंतर कहि एह ॥
पुहवी भार उतारनह । जनमि पग कै ग्रेह ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कवित्त ॥ [2]एम छल्यौ चयवार । रोस करि आप आप दिय ॥
म्रत्य लोक अवतार । नाम तुअ कलहप्रिया किय ॥
इन अवधू मन छल्यौ । सुप्पनन लहहि चीय तन ॥
पित पति कुल सहरहि । पीय तो हथ्थ रहै जिन ॥
जैचंदराइ कमधज्ज कुल । उअरे जुन्हाइय पुत्र छल ॥
संजोग नाम प्रथिराज बर । दुअ सुमार अनभग दल ॥छं०॥१६२॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना ।

दूहा ॥ श्रवन सुने रंभह डरिय । रही जोर कर दोइ ॥

(१) ए कृ का करनहि ।　　　　(२) ए एंक ।

अब साँईं अपराध सुहि। सुगति कहो कब होइ॥ छं० ॥ १६३ ॥

पद्धरी ॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
संसार रूप साइर समाज। कट्टनह पार तुम तहं जिहाज ॥
छं० ॥ १६४ ॥

[2]पाले सु अग्ग रिषि क्रम्म जोग। चैकाल क्रम्म पट रहत जोग ॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग गेह ॥
छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ ॥
सुग्गीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]ध्यार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष मय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
गइ सुरग लोग सब सषिन संग। [5]कुम्हिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त ॥ एक दीह वर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
ता देषन त्रयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रुक्कै ॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-साक्षात रंभ। (२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ। (४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

धरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि धात सुर उच्चरिय ॥
ज्ञानेन काल न्निमान गति। तिन विधान विधि सचरिय ॥छं०॥१६९

विष्णु का सनत्कुमरो के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जपि आश्रम्म। इद्र दरवान न जानिय ॥
सुक सनकादि सनक्क। सनद सनातन [1]न्यानिय ॥
ए दरवान अवुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय ॥
सनत सनदन देव। [2]मुनी व्रत आदि मिमानिय ॥
ए कुअर पच पचो हटकि। पच वाल पचो प्रकृति ॥
रिषि वर न होइ तामस कबहुँ। सो ओपम कवि राज मति ॥
छं० ॥ १७० ॥

गाथा ॥ हटकि सु अग्रप्रमान। अज्ञान साध दारूनो वरय ॥
ज्यों रिपि नाम समथ्थी। तामसय द्वार पालक ॥ छं० ॥ १७१ ॥

साटक ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घने, उच्चापित वुदवुदौ ॥
नारेप नासेप उच्चते नन, दीर्घं न रुप [3]वर ॥
नमाया चलय वलति किरिया, एकस्य जोती तह ॥
वैकुठ गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहु ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ मापत्ते रिपि थान तिन। दै सराप तिन वार ॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सध्यौ करतार ॥ ॥ छं० ॥ १७३ ॥

पद्धरी ॥ पाधरी छद वरनत मुझ्झ। [4]वस्वरन वीर काल वरन रुझ्झ ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससिपाल दत [5]वक्रह विधार ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कान्ह मडि। अवतार किष्ण गोकुलह छडि ॥
तिन काज किष्ण अवतार कीन। भूभार हरन अवतार लीन ॥
छं० ॥ १७५ ॥

(१) ए कृ को न्यारि। (२) ए कृ को -मुनि। (३) मो पर।
(४) ए कृ को नल्वीर वीर कल बरून रझ्झ। (५) मो चक्र"।

अब सांईं अपराध मुहि। मुगति कहो कब होइ॥ छं० ॥ १६३ ॥

पद्धरी ॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
संसार रूप सादर समाज। कट्टनह पार तुम तहं जिहाज ॥
छं० ॥ १६४ ॥

[2]पालै सु ध्रम्म रिषि क्रम्म जोग। त्रैकाल क्रम्म षट रहत जोग ॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग गेह ॥
छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ ॥
भुम्मीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]थ्यार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष मय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
गइ सुरग लोग सब सषिन संग। [5]कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त ॥ एक दीह वर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
ता देषन त्रयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रुक्कै ॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-साक्षात रंभ। (२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ। (४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

घरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि धात सुर उचरिय ॥
जानेन काल न्निमान गति। तिन विधान विधि सचरिय ॥छं०॥१६९॥

विष्णु का सनत्कुमरों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जपि आश्रम्म। इन्द्र दरवान न जानिय ॥
सुक सनकादि सनक। सनद सनातन [1]न्चानिय ॥
ए दरवान अबुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय ॥
सनत सनदन देव। [2]मुनी व्रत आदि मिमानिय ॥
ए कुअर पच पचौ हटकि। पच वाल पचौ प्रकृति ॥
रिषि वर न होइ तामस कबहुँ। सो ओपम कवि राज मति ॥
छं० ॥ १७० ॥

गाथा ॥ हटकि सु अग्रप्रमान। अग्रान साध दारूनो वरय ॥
ज्यों रिषि नाम समथ्यौ। तामसय द्वार पालक ॥ छं० ॥ १७१ ॥

त्राटक ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति धने, उद्यापित वुदवुदो ॥
नारेप नासेप उच्चत नन, दीर्घ न रुप [3]वर ॥
नमाया चलय वलति किरिया, एकस्य जोती तह ॥
वैकुंठ गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुं ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ मापत्ते रिषि थान तिन। दै सराप तिन वार ॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सध्यौ करतार ॥ ॥ छं० ॥ १७३ ॥

पद्धरी ॥ पाधरी छंद वरनत सुभक्ष। [4]वस्वरन वीर काल वरन रुभक्ष ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससिपाल दंत [5]वक्रह विधार ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कह्न मंडि। अवतार किष्ण गोकुलह छंडि ॥
तिन काज किष्ण अवतार कीन। भूभार हरन अवतार लीन ॥
छं० ॥ १७५ ॥

(१) ए कृ को च्यारि।　(२) ए कृ को मुनि।　(३) मो पर।
(४) ए कृ को वल्वीर वीर कल बरन रहस।　(५) मो चक्र।

अवतार दुतिय चयबर विरोध। राजस्सू जग्य सुत अग्ग सोध॥
अवतार दुतिय हिरनाकुसग्ग। हरिमेव कुग्ग विय बंध [1]गग्ग॥
छं० ॥ १७६ ॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न। मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न॥
छायान धाम [2]नन सत्थ [3]धाय। सिव को प्रसाद लीनों [4]सुचाय॥
छं० ॥ १७७ ॥

भरभरिय भार वर पच काज। रामहति राम जंपै विराज॥
छं० ॥ १७८ ॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश बध।

दूहा॥ हरी लच्छि हरनंकुसह। दुअ [5]विजुद्ध किय देव॥
एकं त्यों पाताल प्रति। एक थंभ प्रति सेव॥ छं० ॥ १७९ ॥

गाथा॥ सो षिग्गियं प्रहलादं। किं थंभं मज्झयौ भनई॥
जंजं थानन हुत्तौ। तौ किन्नौ थंभयं मारं॥ छं० ॥ १८० ॥

दूहा॥ थंभ भार फुट्यौ सुबर। नष हति धाम न छाह॥
बर सिंघासन बैठि कै। बर बैकुंठह जांह॥ छं० ॥ १८१ ॥

रावण और कुम्भकरण बध।

साटक॥ राजा रामवतार रावन [6]बधं, कुंभ हत्तौ कर्नयं॥
सीतायं प्रति बोधितं प्रति [7]लतं, प्रत्यंग [8]प्रत्यंगितं॥
सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं॥
जंहस्सी धर धार उप्पम कवी, चक्कीय चक्कं फिरं॥ छं० ॥ १८२ ॥

गाथा॥ यों उद्धा कपि कंक। प्रब तर गाम प्रस्थरं लोयं॥
जिम धर सराय थानं। उट्ठै सा भाजनं मुत्ति॥ छं० ॥ १८३ ॥

दूहा॥ यों उड्डी लंका सुधर। त्रिया बैर प्रतिपाल॥
हर बंदे गोविंद कथ। बर बैकुंठह हाल॥ छं० ॥ १८४ ॥

(१) मो.- कस्स। (२) मो.-तन। (३) ए. कृ. को.-पाय।
(४) मो. सुभाय। (५) मो.-सु।
(६) मो -विधं। (७) मो.-लनं। (८) ए. कृ. को.-प्रसगिनं।

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना ।

चौपाई ॥ सो बोलिय इंद्रह परदार । हरि रुक्यौ तिय देव सँसार ॥
सुनि सु इंद्र अस्तुति वर कीनिय । चरन सुरज वर सीस सु दीनिय ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भुजंगी ॥ तुही देवता देवत विष्णु रूप । किते इंद्र कोट नचै कोटि रूप ॥
नचैं कोटि ब्रह्म रवि कोटि तेज । ससी कोटि सीत सुधा राज सेज ॥
छं० ॥ १८६ ॥

किते कोटि ज कोटि से दुष्ट ढाहे । किते कोटि कदर्प्प लावन्य लाहे ॥
किते कोठि सामुद्र म्रज्जाद दिद्धि । किते कोटि कल्प तर मुक्ति सिद्ध ॥
छं० ॥ १८७ ॥

वल कोटि पोन द्रिगं कोति भारी । तुही तारन तेज ससार सारी ॥
तुही विष्णु माया अमायात तूही । तुही रत्ति दीह तुही तेज जूही ॥
छं० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुही तू तुही सर्व भूत । तुही आदि अंत तुही मध्य हूत ॥
जहा हू न हू तूतहा तू न नाही । गनो हू न देही रहै तू समाही ॥
छं० ॥ १८९ ॥

तुही ताप सताप [1]आत्ताप तूही । कह्यौ इंद्र लग्यौ चरन समूही ॥
छं० ॥ १९० ॥

इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना ।

दूहा ॥ कहि रु इंद्र सचीव सो । पय लग्यौ त्रय देव ॥
हरिचरनन छुडै नही । लोहरु चमक भेव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

स्लोक ॥ कोटि सक्र विलासस्य । कोटि देव महावर ॥
इंद्र ध्यान समो सिधो । [2]पंचाननस्य राजय ॥ छं० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना ।

(१) ए कृ को-अत्तातु, अतात । (२) मो-पंजाननस्य ।

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन । अट्ठ परी संग साज ॥
हाहा हुहू संग सजि । ए गुन गंध्रव गाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥

चोटक ॥ गुन ग्रंध्रव गंध्रव लीन गुनं । इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतं बरनं बरनं रति राजं । नचै गुन अच्छरि अच्छरि काजं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

रचै वर इंद्रति इंद्रह [1]साज । .... ॥
लई पहु पंजलि वाम प्रकार । जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १९५ ॥

षिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार । तजै चय देव कह्यौ इंद्र सार ॥
कह्यौ गुन मंत गनेस प्रकार । भयौ तहं शंकर आप सु सार ॥
छं० ॥ १९६ ॥

पतंन पतंन कह्यौ तियवार । परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १९७ ॥

अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना।

दूहा ॥ गहि चरन्न मुक्कै न हरि । रंभ कंपि इन भाइ ॥
मांनौ चल दल पत्तसौ । छीन वाइ विरुझाइ ॥ छं० ॥ १९८ ॥

गाथा ॥ कहु कब मुज उद्धारं । सुद्धारं कब्बयं होई ॥
तो पत्ती प्राकारं । इंद्रं चरन कब्ब सेवाइं ॥ छं० ॥ १९९ ॥

उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कनौज के राजा के घर जन्म लेना।

कवित्त ॥ सुनहि रंभ पहुपंग । पुच्छि बर ग्रेह देव गुर ॥
बर कन्नवज्ज प्रमान । गंग अस्नान सार कर ॥
इंद्र मरन बंछई । गंग स्नान जिय काजं ॥
ता कारन तुहि चीय । आप सुध्यौ गुन भाजं ॥
पहुपंग ग्रेह जनमिय तद्दिन । तिय सराय तरुनिय भइग ॥
आरंभ विनेमंगल पढ़न । तद्दिन महूरत बर लइग ॥छं०॥ २००॥

(१) ए. कृ. को.-काज।

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढाई करना।

कानवज्जह कामधज्ज। राज विजपाल राज वर॥
हय गय नर वर भीर। सकल किय सेन जित्त पर॥
वीर धीर वर सगुन। भार उद्धार महामति॥
मत्तिराम चितविद्ध। वीय [1]रमाधि राज रति॥
सचऱ्यौ सेन सजि विजै नग। सकल जीति भर राज घर॥
सुरवस्य दिस्य न्रप संग किय। कम्यौ [2]देस दक्षिन सुघर॥ छं०॥२०१॥

समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोम वंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना।

सोम वंस राजाधिराज। मुकंद देव प्रभु॥
सरित समुद्र सुतटह। कटक मय मग्गि न्टयन नभु॥
तीस लष्य तोषार। लष्य गैंवर गल गज्जहि॥
दसह लष्य पयदलह। पुलत दस छत्रति रज्जहि॥
दिव दिवस रीति मचह जपति। जगन्नाथ पूजत दिनह॥
दिगविजय करन विजपाल न्टप। सपत कोस भिर्यौ तिनह॥
छं०॥२०२॥

मुकंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना।

अति आदर आदरिय। सहस दस दीन गयदहु॥
धन असष धन मुत्ति। [3]रतन घट समुनि मनंदहु॥
सौ प्रजक रजकति। कोटि दस पाट पटंवर॥
दिय पुत्री सु विसाल। दासि सें [4]सत्त अडंवर॥
परयौ सु पुत्ति जयचंद दिषि। सुभ्भ जुन्हाइय आसरिग॥
वर संवर पंच दंपति दिनह। पानि ग्रहन उत्तिम करिग॥
छं०॥२०३॥

(१) ए कृ को रमादि। (२) मो देह स दछिन।
(३) ए कृ को-रतन समुनि वन मनिंदह। (४) ए कृ को-सपत।

दूहा ॥ अति सु ललित्त सरूप त्रिय । रमहित राजन संग ॥
इक्क थार भोजन करहिं । अति सुष न्रपति प्रसंग ॥छं०॥२०४॥

विजयपाल का रामेश्वर लौं विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना ।

परिग देव दच्छिन दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥
सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥
तोरन तिलंगति बंधि न्रप । विप चढ़ि चिफिर चिकोट ॥
विद्या नैर सुजीति न्रप । सेत समुद्र सञोट ॥ छं० ॥ २०६ ॥

नराज । करन्न नाट संकला पनेक भूप राजनं ॥
समुद्र ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥
सुचंब कोटि मच्छरी सुरंग राय कुंकनं ।
पुलिंग देश पैं फिरी फिरंग जीति संषिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥
असेर देस षानयं गंभीर गुज्जरी धरं ।
जु मंडवी मलेच्छ नठ्ठ गुंड देस सो धरं ॥
जु मागधं [१]मवल्ल सुष्प चंद्रकास नठ्ठयं ।
गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पठ्ठयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सुप्रच्छते प्रकार साध काम कग्गलं मिलं ।
अधंम अग्ग सद्ध भूमि पंग राज संषिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥

कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोव्रन्न । कोट भंज्यौ पर कोटह ॥
गोपाचल गैनंग । चक्रित बज्जी सिर चोटह ॥
सोव्रन गिर सिरताज । तट्ट लग्गे भग्गे पल ॥
दिय भोरा भीमंग । एक हथ्थी मद सब्बल ॥
दिय सीष कुंअर गज अठ सुवर । भोरा चलि पट्टन भनिय ॥
विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥
छं० ॥ २१० ॥

सेतबन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना ।

(१) ए. कृ. को.-मवील ।

दूहा ॥ सेतुजा डेरा सु पहु । लिय रसाल सिधराइ ॥
मानक मुत्तिय दिव्य [1]नग । लै पैलगि भोराइ ॥ छं० ॥ २११ ॥
दस कुजाब सजावरी । दस पट वानी सिद्ध ॥
हथ्थिय सथ्थिय सौपकिय । दिध दीनी नव निद्ध ॥छं०॥२१२॥

कवित्त ॥ भोरा कुअर सु भेट । सिध लग्यौ तट सागर ॥
लाप दोय वाजी विलड । नगर भग्ग बहु नागर ॥
सत्त लष्य तोपार । पति कनवज्ज प्रमान ॥
लष सत्तरि गय गुरहि । तपै ग्रीषम जिम भान ॥
जलथान जाइ धूलग्गि रह । रह्यौ एक वडवानलह ॥
चहुआन देस तष्यह सुधर । पच पड कनवज्ज पह ॥छं०॥२१३॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना।

गाथा ॥ किय दिगविजै विहार । जित्तवि सकल राइ किय सगे ॥
पुर कनवज्ज सपत्तं । वज्जन वहुल वज्जि आनद ॥छं०॥२१४॥

दूहा ॥ मडि जग्य विजपाल न्रप । भूपन तुग विनास ॥
जय जयचद विरद, वर । हठ लग्गो [2]इतिहास ॥ छं० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचद की पत्नी को गर्भ रहना और उससे सयोगिता का जन्म लेना।

अरिल्ल ॥ अति वरजो वा जुन्हाइय नारि । चद्र जेम रोहनि उनहारि ॥
अति सुप वरस दुअट्ठ प्रमान । ता उर आनि सजोगिन थान ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ धटि वढि कालह न अनुसरै । पेम सदीरघ होत ॥
कलि कनवज दीपक सुमति । चद्र जुन्हाई [3]जोति ॥ छं० ॥ २१७ ॥

कवित्त ॥ जिते जुन्हाइय जोति । राज गवरी गुर बध्यौ ॥
जिन जुन्हाइय चद । अष्ट पर्वत वित नध्यौ ॥

(१) ए कृ का गन।
(२) ए कृ को अतिहास।　　　　(३) मो सौति।

जिनं जु-ल्हाइय चंद । तुंग तिरहन विप्रानय ॥
जिनं जु-ल्हाइय चंद्र । कंठ कंठेर सु बानय ॥
जयचंद जु-ल्हाइय पंगुरै । असी लष्ष हैवर [1]परिग ॥
जयचंद जु-ल्हाइय राज बर । बरनिय अरधंगह धरिग ॥छं०॥२१८॥

दूहा ॥ पुब्बकथा संजोग की । कही चंद बरदाइ ॥
पंग धरह जुल्हाइ उर । आनि प्रगट्टिय लाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जन्म नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥



(१) ए. कृ. को.-परिग।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुब्ब कथा सजोग की । कहत चद बरदाइ ॥

इस पृष्ट (१२५६) मे संयोगिता के जन्म का संवत् जो ११३६ दिया है वह ११३३ चाहिए ।

बर पचम ससि तीय ग्रह । जनम सयोग विषड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्त्रिमल पूरन उग्यौ । निसि निरमल्ल अति रूप ।
न्त्रिप न्त्रिप कन्या व्याहता । मरन अद्भुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
जज बालते पढै गुन । तत बढ्ढति काम ॥
सिद्धि [2]विभतर तिय सहज । लछि लच्छिन विश्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) ए कृ को-तत्त रस लिन्नौं । (२) ए कृ को त्रिपतर ।

※ छन्द ४ के अत में विखण्ड शब्द "सवत ११३६" की सूचना देता है-यथा (वि = दो+ खण्ड = टुकडा) जनम सयोग-विखण्ड = सयोगता की आयु के आधेआध समय मे अर्थात् सवत् ११४४ में राजा पग ने राजसूययज्ञ आरम्भ किया ।

जिनं जु-हाइय चंद। तुंग तिरुहन विप्रानय॥
जिनं जु-हाइय चंद्र। कंठ कंठेर सु बानय॥
जयचंद जु-हाइय पंगुरै। असौ लष्य हैवर [1]परिग॥
जयचंद जु-हाइय राज बर। बरनिय अरधंगह धरिग॥छं०॥२१८॥

दूहा॥ पुब्बकथा संजोग की। कही चंद बरदाइ॥
पंग धरह जुन्हाइ उर। आनि प्रगट्टिय लाइ॥ छं०॥२१९॥

इति श्रीकवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जनम नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४५॥

(१) ए. कृ. को.-षरिग।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुत्र कथा सजोग की । कहत चंद वरदाइ ॥
सुनत सुगध्रव गध्रवी । अति आनद सुहाइ ॥ छं० ॥ १ ॥
जनम सयोग सजोग विधि । कहि कविराज प्रकार ॥
जिम भविष्य भव निरमयौ । तिम सराप उद्धार ॥ छं० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमत का तप मे दत्तचित्त होना ।

चौपाई ॥ एक सराप धिम्। अवतार । जरित रिष्य हरद्वार सुधार ॥
तिन सिव सिध्यि छिमाहत लिन्नौ । मनो तत्त [1]रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* सवत ११३६ मे सयोगिता का जन्म वर्णन ।

दूहा ॥ ग्यारह सै च्यालीस चव । पग राज रू मडि ॥
बर पचम ससि तीय ग्रह । जनम सयोग विपड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्रिमल पूरन उग्यौ । निसि निरमल अति रूप ।
न्रिप न्रिप कन्या व्याहता । मरन अद्‌ब्बुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
जग बालत पढै गुन । तत बहुति काम ॥
सिद्धि [2]विभितर तिय सहज । लछि लच्छिन विश्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) ए कृ को-तत्त रस लिन्नौं ।   (२) ए कृ को त्रिपतर ।

* छन्द ४ के अत में विखण्ड शब्द "सवत ११३६" की सूचना देता है-यथा (वि = दो+ खण्ड = टुकडा) जनम सयोग-विखण्ड = सयोगता की आयु के आधेआध समय मे अर्थात् सवत् ११४४ में राजा पग ने राजसयज्ञ आरम्भ किया ।

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना। और आयु के तेरहवें वर्ष में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह। धरिय सो बढ़ै म सुंदरि॥
और बढ़ै इक मास। पाष बढ्ढै रस गुंदरि॥
मास बढ़ै षटमास। रित्त बढ्ढै सु बरष वर॥
बरष बढ़ै सुंदरी। होइ षट मध्य बरष भर॥
पूरंन बाल षट विय बरष। नव मासह दिन पंच वर॥
ता दिनह बाल संजोग उर। मदन वृद्ध मंडिय [1]सुधर॥ छं०॥ ७॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना।

इह संजोइय राज। पुत्ति बत्तीसह लच्छिन॥
रची विधाता काम। धाम कर अप्प विचच्छिन्न॥
छाजै छजिय गोष। [2]गुमट कलसा छबि छाजिय॥
करिय रास आवास। सरस रस रंग विराजिय॥
तिन चित्रसाल चित्रत सुरंग। मनसिज आगम अंग अँग॥
मन आस वास बसि मंदिरह। प्रथम दीप दीनौ सुरंग॥ छं०॥ ८॥

संयोगता के सौन्दर्य्य की बड़ाई।

दूहा॥ उड़गन सम सहचरि सकल। उड़पति राजकुमारि॥
नव रस आए देह धरि। कौन तिया अनुहारि॥ छं०॥ ९॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन।

हनूफाल॥ संजोगि नाम सुजान। जिन तात विजय किआनि॥
इह लच्छिनेव बतीस। इह पच्छ छत्त विदीस॥ छं०॥ १०॥
इह उंच ग्रेह समान। सुभ्र राहनी छत आनि॥
इन पानि वर चहुआन। जिन बंधिलिय सुरतान॥ छं०॥ ११॥

(१) मो.-सुघर। (२) ए-मुगट।

इन काज राजसू जय। मिलि रोइ सहस विभग्य ॥
कलहंत काज सरूप छिति रत्ति श्रोनित भूप ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन रूप याचत देव। इन इट वधु अह भेव ॥
इन सुरन षोडस दीन। इकतीस लच्छन भीन ॥ छं० ॥ १३ ॥
भौ रुद्र माल विसेष। पर कलह कामिनि लेष ॥
इन सब-यौ बह राज। भिरि सहस छत्रिय [1]छाज ॥ छं० ॥ १४ ॥
घटि मुकुट मुकुटनि पान। रवि कोटि उग्गिय जान ॥
मिलि छत्र छत्रन घोह। सोइ छाह मंडय वाह ॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनि सोति [2]सत्तत काज। रन पानि वर भृत आज ॥
इन कलह कामिनि नाम। ससार सेमनह वाम ॥ छं० ॥ १६ ॥
इन पाइ पौरुष इंद्र। [3]ज्यों रुपमिनी रु गोविंद ॥
दुञ दुजन दुर्जन लोग। सुक सुनत श्रवन विभोग ॥ छं० ॥ १७ ॥
दस सहस छत्र विभंग। रुधि भिन्न षोनिय अग ॥
परि लष्य छत्रिय जुद्ध। इन वरह कित्ति असुद्ध ॥ छं० ॥१८॥
छिति छत्र वधन व्याह। तिहि सुधरे मंडल थाह ॥
वर मिलन वेस विरूप। चढ़ि चलन मनमथ भूप ॥ छं० ॥ १९ ॥
जिहि जियन मरन सु [4]लाह। दुअ नयर मंगल [5]धाह ॥
षट भाय भापन जान। सजोग जोवन पान ॥ छं० ॥ २० ॥
बँधि पड राज सुराज। कनवज्ज राजन साज ॥
धम्मादि काम विलास। सजोग रूप प्रहास ॥ छं० ॥ २१ ॥
सुक सुकी केलि विभग। सुनि श्रवन भव अनुराग ॥
चित विलपि उलपि कुमारि। लगि पठन केलि धमारि॥ छं० ॥२२॥
अस ससिर रिति अत्तीति। पति तात ग्रह छिति जीति ॥
सजोगि वारिय मंडि। दुञ दुजन गध्रव छंडि ॥ छं० ॥ २३ ॥
उअ मेह [6]मोर मराल। पप्पीप सद्द सराल ॥
उअ दब्य अबर मंडि। मधु माधुरी सुव छंडि ॥ छं० ॥ २४ ॥

---

(१) मो काज।   (२) ए सतन।
(३) ए कृ को-ज्यों रुपमनी रू गुविंद।   (४) ए कृ को लार।
(५) ए कृ का-धार।   (६) ए कृ को मोह।

इह लग्गि केलि अहार। तिय तास तेह सहार॥
इह कोतकिय सब छंडि। नव नलिन नागिन चंडि॥ छं० ॥ २५॥
इय चंद एह प्रहास। घट एह मध्य दुवास॥
कनवज्ज राजन मग्गि। दिस षंड राइ सु मग्गि॥ छं० ॥ २६॥
श्लोक॥ *अन्यथा नैव पिष्यंति। द्विजस्य वचनं यथा॥
प्राप्ते च योगिनी नाथे। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं० ॥ २७॥

संयोगता प्रति जयचन्द का स्नेह।

दूहा॥ सुअ संयोग [1]समुब्भ सुष। दिष्ष समोजन राइ॥
अति हित नित निसह करै। तिय रयनी न बिहाइ॥ छं० ॥ २८॥
सुअट्ठ आरि अपनी करै। सरै न सोषह तीत॥
पढ़न केलि कलरव करै। कहत अपूरब बात॥ छं० ॥ २९॥
नेवज पुप्फ सुगंध रस। वज्जन सद्द सुढार॥
सुरति काम पूजन मिलहि। एक समै चयवार॥ छं० ॥ ३०॥

संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि।

पद्धरी॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग। दिन धऱ्यौ देव पंचमि संजोग॥
संजोग बहुत उर पढ़न गत्ति। दिन धऱ्यौ देव राजन सु मत्ति॥
छं० ॥ ३१॥
दूहा॥ अति विचित्र मंडप सुरँग। अंगन [2]सस सहकार॥
अध सु लाल कूंअरि पढ़त। सद्रिस प्रतंम सु मारि॥ छं० ॥ ३२॥
पढ़त सु कन्या पंगजा। सुंदर लच्छिन रूप॥
मानहु अंदर देषियै। मदन पचासन भूप॥ छं० ॥ ३३॥
लहु भगिनि तारा सुअन। अति सु चंग प्रति रूप॥
जिन जिन भेद अभेद गति। जं जं मंडहि धूप॥ छं० ॥ ३४॥

संयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है।
(१) को.-संमुब्भ सुख। (२) ए.-तस।

अरिल्ल ॥ ए लज्जा सौं लज्जहि बाल। दिगंबरह वस्त्र गुन चाल ॥
जगत वस्त्र सो रामय भोग। वस्त्र रचै नहि राचै जोग ॥छं०॥३५॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन।

दूहा ॥ सो रच्यो सुंदरि सु विधि। मदन दृष्ठि दिय हथ्थ ॥
सो कीनी मदन सुदृष्ठि। अति कोविद गुन कथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ अति कोविद गुन कथ्थ। मदन कीनी भँति दृढ्ढह ॥
जोग जिहाजन जाइ। ताहि जल मड्डित [1]सड्डह ॥
अति भय मित्तिय बाल। रूप राजति गुन साजति ॥
आभूषन पट धरै। देव वड्ढ दिषि लाजति ॥
आरंभ अवतां धाम मधि। अति विसुद्ध चिहु पास सषि ॥
सजीव जोग जगम [2]सवै। तप सुतप्प मध्या सु लिषि ॥ छं० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढना और पाठिका का उसे पढाना।

दूहा ॥ लय लग्गिय मग्गीय गुन। अति सुंदर तिन साय ॥
एक मत्त दस अग्गरिय। विनय पढावत गाय ॥ छं० ॥ ३८ ॥
इक सत पचत अग्गरी। राज कन्य रज रूप ॥
तिन मध्धे मध्यात में। काम विराजत भूप ॥ छं० ॥ ३९ ॥
तादिन तें द्वै दुजन वर। पढ़िय सु शास्त्र विचार ॥
उन आरंभ अरंभ करि। आप सपत्तिय बार ॥ छं० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना।

आय सपत्तिय बाल बर। वेदिपि चष सह बाल ॥
मानो रस अलि अलिनि कौ। लै आयहु ग्रह काल ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए कृ को सद्दिय।   (२) ए कृ-वसे।

पढ़ि संजोग सजोग ह्त । विजय सु देवह दाव ॥
चकह चक्र सु बेन बस । दिषि संजोग अनहाव ॥ छं० ॥ ४२

जाम एक निसि पच्छिली । दुजनिय दुजवर पुच्छि ॥
प्रात अप्प घर दिसि उड़ै । जे लच्छिन काहि अच्छि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना ।

कवित्त ॥ इन लच्छिन सुनि बाल । नृपति करि रुधिर प्रकारह ॥
बहु छत्रिय गहिहैं । रुंड हरि हार अधारह ॥
गिद्ध सिद्ध वेताल । करैं त्रत्यह कोलाहल ॥
इह लच्छिन सुनि सब्ब । बाल लच्छित जिन चाहल ॥
संजोग फूल फल नन दियन । ए कन्या जिम प्रथम तिम ॥
कलहंत राज छची सुबर । भविस बात होवै सु तिम ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ तिन कारनहों जक्ष गुन । भुगति मुगति सह देन ॥
सो कन्या पहुपग कै । आय सपत्तिय मेन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

जयति जग्य संजोग वर । दिषि अंगन लष चार ॥
एक अलष्पन भिन्नहै । सो कलहंतर सार ॥ छं० ॥ ४६ ॥

कलहंतरि सुंदरिय वर । अति उतंग छिति रूप ॥
तिन समान दुज पिष्प कै । मदन लभ्भ तन [1]भूप ॥ छं० ॥ ४७ ॥

गीतामालती ॥ लषि लषित अच्छिर, सषिन सच्छिर, नमित गुरजन, अंगुरं ।
लहु गुरु सुमंडित. अगन छंडित, दूह गाह, समुद्धरं ॥
सक [2]सगन संचित, अगन वंचित, जगन भगन, प्रबंधयं ॥
उग्गाह गाह, विगाह चंचल, नष्ट निहचल, छंदयं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
छिति छत्र बंधति, चित्त बित्त, सु नगन निंधति, अंभयं ॥
हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं ॥
सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाष पटक सु संचयं ॥छं०॥४९॥
संजोग जोगय, सुमति भोगय, थप्पि जोगय, भोगयं ॥
इन काल विद्धं सब्ब सिद्धं, एक दोष संजोगयं ॥

(१) को.-सूल । (२) को.-लगन ।

मय मत मतिय, काम कतिय, विज्ज जतिय उच्चय ॥
ज कहे अच्छरि, पढे तच्छिर, लिपै नच्छिर, मडिय ॥
छ० ॥ ५० ॥

पाषान लीह, दीह तीह, काम सीह, विच्छुरै ॥
कवि करै किरिय, मत्ति इत्तिय, जीह तित्तिय, उच्चरै ॥
छ० ॥ ५१ ॥

सयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढने जाना और सयोगिता का योवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मगल पढाना।

कवित्त ॥ मदन व्रह्म वभनिय। ग्रेह हिडोल सजोगिय ॥
कनक डड परचड। इद्र इद्रिय वर जोइय ॥
परहि लत्त हिडोल। दुजन उप्पम तिन पाइय ॥
कनक पभ पर काम। चद चकडोल फिराइय ॥
लग्गें नितब बेनिउ [1]वढि। सो कवि इह उप्पम कही ॥
सैसव पयान कै करतही। कामय [2]वग्गी कर गही ॥ छ० ॥ ५२ ॥

अरिल्ल ॥ धुत्तं अव कादव कुरगो। तैं किरपल पछै अनभगा ॥
चक्रित वत्त सुनि बाल प्रकार। सह सुदरि सोभत सिरदार ॥
छ० ॥ ५३ ॥

दूहा ॥ सजि सु पग वर व्याह क्रत। बहु रचना गुन लाहु ॥
बाल सु वय जिम बाल मुन। त्यो समुझै गुन चाह ॥ छ० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ एक सु पुत्तिय पग। देव दक्षिन देवग्रह ॥
मेनहीन माननी। हीन उपजै अरम कह ॥
मनमोहन मोहनी। निगम करि बत्त प्रकार ॥
आसमान इच्छियै। नाग नर सुर नहि [3]भार ॥
अप्पौ उमाह मगलविनय। ब्रम्म सकल जिम सुगति मति ॥
सुनि मत्ति गत्ति रत्तिय सुबर। विधि विधान निरमान गति ॥
छ० ॥ ५५ ॥

(१) ए कृ बेनी उगटि। (२) ए का काम अग्गी। (३) ए नार।

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ।

वचनिका॥ मदन वृद्ध बंभनी संजोगिता कों विनय मंगल पढ़ावति है। सु कैसो विनय मंगल॥

दूहा॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल। सुकल सु जुव्वति चरित्त॥
विनय विनय बंभनि कहै। विनय सु मंगल वत्त॥छं०॥५६॥
*मुगध [1]मुद्ध प्रौढ़ा प्रकृति। सुवर नमौकर चित्त॥
सुनि विचित्र बाला विनय। श्रवन मवद्धिन चित्त॥ छं० ॥ ५७॥

विनय मंगल की भूमिका।

त्रोटका॥ प्रथमं उठि प्रात मुषं दरसं। उतमंग सुअंग पयं परसं॥
विनया गुन तुच्छ विमच्छ मनं। हरहं जय काम सु तामे मनं॥
छं० ॥ ५८॥

ग्रह गामिय रेनि परप्परसं। प्रगटी तय भावन ताम रसं॥
द्रिग द्रप्पन लेह बदन्न [2]हसं। प्रति प्रीतय चारु चषं दरसं॥
छं० ॥ ५९॥

भय कामिनि काम मनं हतलौ। मिषि नासिप पानि कुअंटत जौ॥
मन वृत्ति सु गत्ति मनं गहनं। रह रत्त सु व्रत्त बरं बहनं॥
छं० ॥ ६०॥

जियं जिय रत्त रसं रसनं। भय भीर उवत्त पयं बसनं॥
परि पिम्मह पिम्म सबक्क कसं। जह ईजहे दिष्षित हीय [3]ससं॥
छं० ॥ ६१॥

भुगतं वर अंन वरं विनयं। प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं॥
भव रूप चिरूप तनं लहनं। अनि ईस नसीस समं वहनं॥छं०॥६२॥
अनि पूज न जाप न ईसगनं। पति पूज मनोरथ लभ्भि मनं॥
पिय दिष्षहि दिष्षि मुगद्ध मनं। वय बढ्ढिय ताम सुकाम वनं॥
छं० ॥ ६३॥

बसनं रुचि पीय सुकीय धरं। तन मंडन भूषत ताम करं॥

(१) ए.-सुद्ध। *यहा से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है।
(२) ए. कृ. को.-इसं। (३) मो.-सरस।

गहन रस सार शृंगार वन। गति गठिय ग्रथ सु काम मन॥
छं० ॥ ६४॥

इति गत्ति चरित्त जुधाम धरं। सु जितै त्रिय वात अधीन करं॥
छं० ॥ ६५॥

पति का गौरव कथन।

दूहा॥ जो वनाय वनिता वनिय। सषी न मंगल माल॥
सषि आग्रह मानै नहीं। पिय छंडै ततकाल॥ छं०॥ ६६॥
उव निस वस दूती ग्रहन। सपिन[1] विलुब न वग्ग॥
पियन पियहि अतह करन। करहित सुभग अभग्ग॥ छं०॥ ६७॥
ध धीरज विरहै वनह। आतमेछ अप सिद्ध॥
त तन मन मान न धरहिं। करै सु कामह विद्ध॥ छं०॥ ६८॥

स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना।

मुरिल्ल॥ तू धनय मनय तुअ[3] मत्तिय। तू हियय जियय तुअ गत्तिय॥
तू वरय धरय तुअ तत्तिय। तू पियय नियग्र निज रत्तिय॥छं०॥६९॥
तूं ग्रहय नरय नय नत्तिय। तू गनय जपय जक जत्तिय॥
तू सहय वसय धन घत्तिय। तू द्रियय छियय छवि हत्तिय॥
छं०॥ ७०॥

तू सहय दुहय दुह कत्तिय। तू विनय दिनय दिन गत्तिय॥
तू तपय अपय अप नत्तिय। तू सथय नथय सथ सत्तिय॥
छं०॥ ७१॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना।

कवित्त॥ विलसि भाइ भामिनिय। जाम जामनिय प्रमानहि॥
विलसि काम कामिनिय। ताम तामिनिय प्रमानहि॥
हों सुवभ वभनिय। रस रमान सिपावन॥
श्रवन सूढ मन मूढ। रूढ रजन गहि दावन॥

(१) मो-सखिय। (२) मो अभग। (३) ए कृ को मुत्तिय।

तन तुंग द्रुग्ग उग्रह हिम सु। सुनि सु बाल हर धवलु [1]हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम। तन त्रिधान त्रिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की मर्यादा गौरव और प्रशंसा।

जुगति न मंगल बिना। भुगति बिन शंकर धारी ॥
सुगति न हरि बिन लहिय। नेह बिन बाल वृथारी ॥
जल बिन उज्जल नथ्थि। नथ्थि निमान ग्यान बिन ॥
कित्ति न कर बिन लहिय। छित्ति बिन सस्त्र लहिय किन ॥
बिन मात मोह पावै न नर। बिनय बिना सुष असिन तन ॥
[2]संसार माह विनयौ बड़ौ। विनय बयन मुहि श्रवन सुनि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं।

दूहा ॥ [3]निकट सुकी सुक उच्चरय। कर अवलंबित डार ॥
मवरिय अंब [4]सु अंब लगि। सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल [5]सुक सुकनि दिषि। सर संभरिय अपार ॥
मानो मदन सुमत्त की। विधि संजोगि सु सार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा।

साटक ॥ मानं भंजन नेहमान [6]त्रगुना, सज्जन्न सा दुज्जनं ॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, मानेव मंदं पिमं ॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नस्यं बुरं ॥
इकं मानय बार मारथ गुरं, आवंत मानं लघुं ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ न भवति मान संसार गुन। मान दुष्ष को मूल ॥
सो परहरि संयोग तूं। मान सुहागिनि [7]सूल ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को -सुनइ। (२) ए. कृ. को -सारसा।
(३) ए. कृ. को. निकर। (४) ए. कृ. को.-नंत।
(५) मो.-विनय सार सुक्कीय दिष्षि। (६) मो -त्रगुना। (७) मो.-मूल।

विनय का गौरव ।

एक विनय गरुअंत गुन । अव्वह विनयति सार ॥
सीतल मोन सु जपियै । तौ वन दह्मै ¹तुसार ॥ छं० ॥ ७८ ॥

विनय की प्रशंसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित साधनो का वर्णन ।

विनय महा रस भतिगुन । अवगुन विनय न कोइ ॥
जोगीसर विनय जु पढै । सुगति सलभ्भै सोइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥
विनय नहो जौ पयियन । तरु नहिं दोष दियत ॥
फल चष्पै पत्तइ हतें । मानय गुनय गहत ॥ छं० ॥ ८० ॥
एकै विनय सभग्ग गुन । तजत न विनय अरिष्ट ॥
जाने घर सूना हुआ । भोइ नता करि मिष्ट ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मो पुच्छै जौ सुदरी । तौ जिन तजै सुरग ॥
जिम जिम विनय अभ्यासिहै । तिम तिम पिय मनपग ॥छं० ॥८२॥

कवित्त ॥ विनय देव रजिये । विनय बहु विद्य देइ गुर ॥
विनय द्रव्य लहि सेव । विनय विष तजै अप्प सुर ॥
विनय दत्त अदतार । विनय भरतार हार उर ॥
विनय करह करतार । विनै ससार सार सुर ॥
वय चढत चढै विनया सुवर । सव श्रृंगारति भार वपु ॥
वभनिय भनै सजोग सुनि । विनय विना सब आर तपु ॥छं०॥८३॥

चौपाई ॥ वभनिय भनिय सजोई । वयसध्या सु सुधा बुधि भोई ॥
तू सकौ सौतिन पिय बसि होई । विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही ॥
छं० ॥ ८४ ॥

दूहा ॥ विनय उचारन चारु मुष । द्रिष्पिय सारन सार ॥
कामत्तन सुद्दै सगुन । कत करै उरहार ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चंद्रायन ॥ काम धरा धरकत सुरत्तौ । तब सजोगिनी बोल अहित्तौ ॥
²अच्छिर छद सु चद विरत्तौ । सकरया पय सुप्पह पित्तौ॥छं०॥८६॥

(१) ए रु को तुपर। (२) ए रु को-अछिर छद सुछन्द सु ।पत्तौ ।

गाथा ॥ मुष पित्तौ पति रोगै। लग्गै विषमाइ सक्करं मुषयं ॥
जंतुर पये सुबाले। कामं रत्ताय मोहनो धरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान।

कवित्त ॥ एक काल सुंदरी। दोइ भगनी अधिकारी ॥
एक मान सद्धयौ। एक बनिया विचारी ॥
जिन त्रय किन्नौ मान। सुष्य तिन देह न लद्धौ ॥
अंतकाल संग्रहे। चित्त तन मोह विलुद्धौ ॥
जामंति अंति सा गत्ति हुई। ता मत्ती सारन [1]सुबर ॥
ऊरद्ध नरक बहु भोगि कै। जग्ग लभ्भ पसु पंषि [2]तर ॥ छं० ॥ ८८ ॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता।

दूहा ॥ जिन त्रिय लभ्यौ विनय रस। सुष लद्धौ तन मंझ ॥
विनय बिना सुंदर इसी। बिन दीपक ग्रह संझ ॥ छं० ॥ ८९ ॥
कवित्त ॥ ज्यों बिन दीपक ग्रेह। जीव बिन देह प्रकारं ॥
देवल प्रतिम बिहून। कंत बिन सुंदरि सारं ॥
लज्जा बिन रजपूत। बुद्धि बिनु भोग न जानिय ॥
वेद बिना वर विप्र। करन बिन कित्ति न ठानिय ॥
विनय बिना [3]सुंदरि अद्धम। कंत देइ दूनौ सु दुष ॥
संजोगि भोग विनयौ बड़ौ। लहै विनयमंगल सुसुष ॥ छं० ॥ ९० ॥

विनयहीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती।

गाथा ॥ [4]वेदयौ बंचितं विप्रं। भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥
सब जंजार सु जानं। जुन्हाई नेव जानयं तत्तं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
तं तू विनय बिहूनी। युं दिट्ठाइ सुंदरी तनयं ॥
यो [5]वासंतति काल। पत्रं बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनर। (२) ए. कृ. को.-तन।
(३) ए. कृ. को -सुभर। (४) ए. कृ. को.-वेदया बचित विप्पौ।
(५) मो.-यौ वासंत सुकालं।

दूहा ॥ वह लज्जा कहि जात त्रिय । तन मंडन अवलान ॥
[1]काल बसत रु बाल ग्रह । सो मनिमत सुजान ॥ छं० ॥ ९३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन।

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय बध्यौ जु जगत सब ॥
विनय काल निकाल । विनय संसार सूर [2]अब ॥
विनय बिना संसार । पलक लब्भै न सुष्य तनु ॥
जहा जाइ सो रिष्य । ग्राह संग्रह्यौ देह जनु ॥
नृप रीति विनय लग्गी रवनि । विनय उचारन चार रस ॥
विनय बिना सुंदरि इसी । सुपन होइ उद्यान [3]जस ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल । विनय होइ जुब्बन दिनन ॥
तौ परसै प्रतिपाल । विनय सु हृदय बधि रस ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस । विनय भाय जस साप ॥
जिम जिम विनय सु संग्रहै । तिम लब्भै अभिलाप ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय सागर रसधारी ॥
विनय उतारन पार । मुक्ति अप्पन अधिकारी ॥
विनय लहै सब जुगति । विनय बिन भक्ति न होई ॥
विनय सुरस उच्चार । पार कहून रस होई ॥
गुनवंत निगुन सग्गुन अगुन । विनय बिना तन बालयौ ॥
गुन बिना धनुष फ्रम बिन सुफल । [4]उभभार मठ देवालयौ ॥
छं० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ विनय सुबंधी सुबुध हिय । जौ सुष चाहत बाल ॥
विनय न छंडय सुंदरी । तिन पनन प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गाथा ॥ बाखे विनयति सार । देह मध्य तत्त ज्यौ जीव ॥
त्यों जीव सुष देही । विनय बिनो बालय नेह ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ विनय सुरस बभनि कहै । पढन सुपंग कुआरि ॥
बलह बस्सि दूजै सुबल । तौ वसि बलह सु नारि ॥ छं० ॥ १०० ॥

(१) मो काल बसैं तरु बालग्रह। (२) मो रस, कृ को -सत्र।
(३) मो -तस। (४) ए कृ को -उज्जर मढ।

प्रथम सुरस हथ्थै अपन। तौ हथ्थै अप पीव ॥
सुनि संजोग सजोग है। जीव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्य संजोग। पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय सजोग। तीय पिय बदन न जोई ॥
सोई विनय सजोग। अप्प छोडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग। दई किज्जै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी। बढ़ी मत्ति चढ़ि चंद बिय ॥
रति छंडि मान क्रिमबीय चिय। तौ ग्रह जोवन मंचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कं बसि कीनी कंत। विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै। सुष्य तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल। सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अम्रत-संग्रहौ। मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय बिना नारीन क्यौं। विनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय। विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंत्तं। अप्पं होइ विनय बसि बाले ॥
षट नवरस दुत्र सद्दं। गारुड़ विना मंच सागरियं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सम्थ्र जस जीव। विनय भोगवन सुष्य वर ॥
विनय देन रसषान। विनय आचरन अम्रत धर ॥
अद्ध रयनि अंतरै। विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै। मान भंजै गुन भासै ॥
इम बिनै बाल मुक्कै न तूं। सुनहिं सुकी सुक श्रवन कथ ॥
लच्छिन सहज्ज अरु विनय गुन। दिषित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पच्यौ संजोग सुभ। तन में विनय सुभंत ॥
ज्यों जल बलि जलहीं जियै। विनय जियै बर कंत ॥ छं० ॥१०६॥

इति विनय मंगल कांड समाप्त ।

चन्द्रायन ॥ सुनि सजोग सिंयावन सावन सम्भरिय ।
हीय हितानिय पीर न पावै बज्झरिय ॥
गुर [1]गुज्ज नन कन्न जमावन जुग्ग हुअ ।
अच्छिर अथ्थ प्रमान विराजत मक्क धुअ ॥ छं० ॥ १०७ ॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुन: अपने पति से सयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना ।

मुरिल्ल ॥ सु धरता तर रत्तिर रत्तिय । दुज्ज दुजानी वत्तर मत्तिय ॥
प्रेग प्रिय रज राजन मडिय । जीहा जाम उभै पट [2]पडिय ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना ।

कवित्त ॥ मदन हट्ट बभनिय । मार मानिनिय मनोवसि ॥
कामपाल सजोग । विनय मगलति पढति रस ॥
तहा सहारतर एक । अग अगन घन मौरिय ॥
सुक पिक पषि असष । वसहि वासर निसि घोरिय ॥
इक वार दुजी दुज सों कहै । सुनहि न पुब्ब अपुब्ब कथ ॥
उतकठ वधै मन उल्लसै । रहहि नीद आवै [3]सुनत ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दुज का उत्तर ।

दूहा ॥ दुज पुनि दुजि सो उच्चरिग । कहि राजन वर वत्त ॥
जोग भोग जुद्धह जुरन । कारन सु कारन हित्त ॥ छं० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक राव सभरीय । दुतिय जोगिनि पुर भूपति ॥
तेज भोज अजमेर । उअर उद्दारति मूरति ॥
वान मध्य वय मध्य । मध्य मह महि तन मोचन ॥

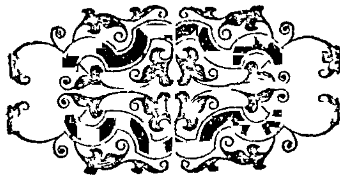
(१) ए क्रु को-गुरसनन ।
(२) मो घट पडिय ।
(३) ए क्रु को सुनत ।

छिति छितान धर अग्ग। आम धर हिय रति रोचन ॥
छचि देव देव मंडल समा। इक इक अष्पि अषंडलिय ॥
सुरतान बंधि षुरसान रति। मंत अषंड सुदंड लिय ॥ छं० ॥१११॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना।

दूहा ॥ सुनत कथा अछिवत्तरी। गइ रत्तरी बिहाय ॥
दुज्ज कह्यौ दुजि संभस्यौ। जिहि सुष श्रवन सुहाय ॥ छं० ॥ ११२॥
होत प्रात तव पठन तजि। धाइ हिंडोरन आइ ॥
इह चरित्त दुज देषि कौ। पछ जुग्गिनिपुर जाइ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संयोगिता कौ विनय मंगल वरननो नाम छियालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४६ ॥



अथ सुक वर्णन लिष्यते ।

(सैतालीसवां समय ।)

संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन वृद्ध ग्रह बभनिय । पढन कुँआरिक वृंद ॥
वार वार लोकन करहि । जिम नछित्र विच चंद ॥ छं० ॥ १ ॥
बालप्पन अप्पान सुष । सुष्ष कि जुव्वन मैंन ॥
सुभर श्रवन सा।।पिन करहि । ढुरि ढुरि पुच्छत नैंन ॥ छं० ॥ २ ॥
[1]स्लोक ॥ प्रात च पंग ग्रेह । जग्य [2]जापय होमन ॥
तच बध दंड देहा । राजा मध्य महोवत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनूफाल ॥ इति हनुफालय छंद । गुरु च्यार नभ जिम चंद ॥
उडि चले दंपति जोर । चित्तइ स [3]पिथ्थह ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥

शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।

जित सभरी हतथान । वर मंच इष्ट समान ॥
पते सुढिल्लिय थान । अपमेद किय परिमान ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरभेष धरि साकार । दुज भेज सुवक्यौ सार ॥
दिपि ब्रह्म भेस अकार । किय मान अर्ध अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बहु तरवर उडि जानि ॥
सो सहार संजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय मे चर्चा करना ।

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।
(२) ए जाय । (३) को कु पिथ्थिह ।

कवित्त ॥ कहै सु दुज दुजनीय। सुनौ संभरि न्नप राजं ॥
तीन लोक हम गवन। भवन दिष्षे हम साजं ॥
जं हम दिष्षिय एक। तेह नभ तड़िक अकारं ॥
मदन बंभनिय ग्रेह। नाम संजोगि कुमारिं ॥
सित पंच कन्य तिन मध्य अव। अवर सोभ तिन समुद बन ॥
आकास मद्धि जिम उडगनिन। चंद विराजै मनों भुवन ॥छं०॥८॥
दूहा ॥ मदन चरित्त सु बंभनिय। मदन कुंआरि सु अंग ॥
सोइ बस्स कनवज्ज पुर। पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्षं। सिष्षं भेदाइ दुष्पनो गीवी ॥
दुष्षं संभरि राइं। कहियं आज आगमं मीरं ॥ छं० ॥ १० ॥
दूहा ॥ अप्पन तन छवि देषि कै। सुष भरि दिष्षी नाहि ॥
दुष्ष संभरिय अनूरँग। वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥
कवित्त ॥ भाजन अग्गि उतिष्ठ। मध्य चमकंत गरिष्ठं ॥
मिलि नषत्र मंजनं। नाभि दिव चरित सु मिष्टं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार। कह्यौ रषि जरजित नामं ॥
गरभ जुन्हाइय जाह। होइ सुष किति सु तामं ॥
जैचंद पुत्ति कलहंत गति। विधि अनेक वन्नंन करिय ॥
कनवज्ज वास गंगा सु तट। संत सुमंत सु बिस्तारिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज न्नप। जनम पत्रिका बाल ॥
जन्म सुषादी उद्धरिय। की यह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छयौ। दुज्ज दुजराज कवथ्थै ॥
मंगल बुध गुरु सक्र। सन्नि सोमार चवथ्थै ॥
केइंद्री गुर केत। राह अष्टम अधिकारिय ॥
इन लछिन दुज कहै। देव जगि पंगह ढारिय ॥
निरमान रंभ अवतार धरि। काम गनं गुन बिस्तारिय ॥
कलहंत नाम कलि जुग्ग महि। बर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं०॥१४॥
स्लोक ॥ जन्मस्य पंचमो चैव। राहकेतं नक्षत्रया ॥
पंगानी च जया पुत्री। मूल भारथ्य मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

छ महीने में विनय मगल प्रकरण का समाप्त होना।

दूहा ॥ इह चाहत षट मास गय। लिपि अक्षरा बाल ॥
परछ दीय वर कढि कौं। लिपि जनमोति रसाल ॥ छ० ॥ १६ ॥

विनय मगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना।

पद्धरी ॥ लिपि छद बध जनमोति ताम। तिहि दीह ध-यौ वर वाम काम ॥
तिन दिना तुच्छ हर नयन काज। जानियै वीर बाला विराज ॥
छ० ॥ १७ ॥

तन त्रिगुन भए देवत्त लाज। आवत लाज की लाज साज ॥
दिन धरउ पढन जपन सुबोल। मगलति विनय मगल विसाल ॥
छ० ॥ १८ ॥

अनगपाल के हृदय में वैराग उतपन्न होने का वर्णन।

इह पढहि बाल अप ग्रह थान। ढिल्ली नरिंद कग्गर सु ताम ॥
वरजै न कोइ मची प्रमान। जिन देहि भुम्मि दुरजनति दान ॥
छ० ॥ १९ ॥

सिगार सग अनगेस राज। पायौ न पुच फल नीठ साज ॥
सत्तरिक्ष सत्त वर्षह रसाल। पयौ सुदीह अन्न सु काल ॥छ०॥२०॥
आना नरिंद तस वस गाज। चित्यौ जु अप्प दोहित्त काज ॥
चितिय अचित मनि मित्त मित्त। जधार भीम ओडन विअत्त ॥
छ० ॥ २१ ॥

अनगेस ईस अनगेत पुज्ज। लिपि भोज ब्रध प्रारभ काज्ज ॥
छ० ॥ २२ ॥

दूहा ॥ अनग सपत्ता काव्य कथि। सोधि सु बधव वीर ॥
करि अप्पन तिथ्थह गवन। की साधन सरीर ॥ छ० ॥ २३ ॥

मंत्रियों का अनगपाल को राज्य देने के लिये मना करना।

चोटक ॥ मय मत गुरू दस हार पयौ। सह काकन चामर तौन नयौ ॥
पट हाटक चोटक छद बली। सु कही कविचद उपंग भली ॥छ०॥२४॥

जिन ठौर वरजंत मंच पथं। नन मानिय राज कथा न कथं ॥
मिरि भंजय रंजय प्रज्ज सबै। जिन जाइ सु तिथ्थ अनंग अबै ॥
छं० ॥ २५ ॥

धर रषिय लच्छि सुमंत मनं। उपजै तिम मद्धि विकार सनं ॥
कृत काम कला लषि षोडसयं। बरदाइ कहै सोइ दैवतयं ॥
छं० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ उत्तर दिसि औरह उड्डाई। कागद लिषि प्रोहित्त बधाई ॥
तब राजंन सुनत लै लग्गौ। बढ़ि आनंद हृदय तब जग्गौ ॥छं०॥२७॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देदना।

भुजंगी ॥ लबं चित्त चिंता सुचिंता बिचारी। ननं मंच मानै गुरं धीर कारी ॥
चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं। मयं बीर बीरं लघू दिव्व पानं ॥
छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित्त पुत्तं। तिनं वंस मातुल्ल अति प्रीत पत्तं ॥
मलक्के मँगूरं लिषे पेषि हथ्थं। हितं राज अंगं अनंगेस पुत्तं ॥
छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनीति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर। संभ धरद्धर काज ॥
नवन रीत राजस कही। जानि कुलंगन बाज ॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः वदरिकाश्रम को चला जाना।

कवित्त ॥ संचरि सीच सुदत्त। राज पत्तौ सु धाम न्रप ॥
फल सु प्रीति हित हेम। सेत दिष्षयौ रजक अप ॥
अनंग पाल छितिपाल। मुक्कि चल्ल्यौ सु तिथ्थ स्रम ॥
हैवर चीर रतंन। गयो वदरी सुदत्त क्रम ॥
यौं मिले सब्ब परिगह न्रपति। ज्यों जल झर बोहिथ्थ फटि ॥
दिसि दिसा च्यार अचरिज्ज वर। बजि निसान नीसान घटि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ ऐरापति फनिगग । चामर मराल मालती पहुय ॥
ता अ वीय प्रमान । उज्जल कित्तीय सोमजा स्रर ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दसों दिशाओं मे सुविस्त्रित पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना ।

अति कित्ती अति उज्जली । बरने वा चदयो कत्री ॥
जानिज्जै परिमान । राजान समयो नथ्थि ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मडल न्रप देषि कै । चद सु ओपम पाइ ॥
मानौ चद सरद्द कौ । सग उडग्गन आइ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दै दुज्जनि दुज उत्तरह । दुहू रूप चमकात ॥
कोइ कहै प्रतिव्यंव है । को कहै प्रीति अनत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन ।

कवित्त ॥ चद वदनि म्रगनयनि । भोह असित को वड वनि ॥
गग मग तरलति तरग । वैनी भुअ ग वनि ॥
कीर नास अगु दिपति । दसन दामिनि दारमकन ॥
छीन लक श्रीफल अपीन । च पक वरन तन ॥
इच्छति भ्रतार प्रथिराज तुहि । अहनिसि पूजति सिव सकति ॥
अध तेरह वरष पदमिनी । हस गमनि पिष्पहु न्रपति ॥छं०॥३६॥

वारह के वाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वय.संधि अवस्था होती है उसका वर्णन ।

दूहा ॥ तिहि तन वन न्रप सों कहै । दुहु अ तर सिसु वेस ॥
जुब्बन तन उद्दिम कियौ । वालप्पन घटनेस ॥ छं० ॥ ३७ ॥

वालप्पन तन मध्य वय । गादरि तन चष नूर ॥
ज्यों वसत तरु पल्लवन । इछ उठ्ठन अ कूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥

वय वालत्तन मध्य इम । प्रगट किसोर किसोर ॥
राकापति गोधूर कह । आभा उद्दित जोर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

ज्यों दिन रत्तिय संध गुन। ज्यों उब्बह हिम संधि ॥
यों सिस जुब्बन अंकुरिय। कछु जुब्बन गुन बंधि ॥ छं० ॥ ४० ॥
ज्यों करकादिक मकर में। राति दिवस संक्रांति।
यों जुब्बन सैसव समथ। आनि सपत्तिय कांति ॥ छं० ॥ ४१ ॥
यों सरिता अरु सिंध सँधि। मिलत दुहून हिलोर ॥
त्यों सैसव जल संधि में। जोवन प्रापत जोर ॥ छं० ॥ ४२ ॥
यों क्राम क्राम बनिता सु वंथ। सैसब मध्य रहंत ॥
सीतकाल रबि तेज ससि। धामरु छांह सुहंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सैसव मध्य सु जोबनह। कहि सोभा कविचंद ॥
पाव उठै तर छांह छबि। षोज न नीच रहंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥
जीति जंग सैसव सुबय। इह दिष्षिय उनमान ॥
मानों बाल बिदेस पिय। आगम सुनि फुलिकाम ॥ छं० ॥ ४५ ॥
गाथा ॥ यों राजति वय राजं। सैसव मध्येय सोभियं सारं ॥
ज्यों जल जोर प्रमानं। कमलानं कोर उच्चयं होइं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
दूहा ॥ यों सैसव जुब्बन समय। विधि वर कौन प्रकार ॥
ज्यों हथलेवहु दंपती। फेरे फिरिअन पार ॥ छं० ॥ ४७ ॥
यों राजत अवनी कला। सैसव में कछु स्याम ॥
ज्यों नभ परिवा चंद तुछ। राहु रेह बल ताम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ। अह संधि जिसें निसि संधि पाइ ॥
जुब्बनह अवन सैसव सुनाइ। कछु संक अंग पै निडर ताइ॥छं०॥४९॥
सैसव सुससिर रितुराज थान। मानहिं बसंत जुब्बन न आन ॥
अनभंध मधुप मधु धुनि करंत। पंचहि कोटक सिसिरह वसंत ॥
छं० ॥ ५० ॥
भुअ नीच नैन नच्चै नवाय। आवंत जुवन जंनु करि बधाय ॥
जिम सीत मंद सुगंध वाय। कछु सकुच एम बर करहि पाइ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

जुब्बन नवत्त सिसु सरिर मद। बिरही सँजोग रस दुअनि छद॥
मीन मन मत अहि सुनि बसत। जुब्बन उछाह सिसु सिसर जत॥
छं० ॥ ५२॥
अंकुरिन पत्त गङ्घरित डार। सिसु मध्य स्याम ज्यों सोमि सार॥
पिय ओर पिया जिम दिष्षि लुक्कि। सिसु मध्य वेस इम आइ ढुक्कि॥
छं० ॥ ५३॥
उर धक्कि सिद्ध सैसव सु सुट्ठ। जिम मैन मोज जुब्बन सउट्ठ॥
कलयठ कठ रष्यै सवारि। मिलिहै वसत करिहै धमारि॥छं०॥५४॥
चिय तरस पुच्छ उट्ठीय कोर। जल मीन जाल ज्यौं हलत डोर॥
मुकलित वाय तरु हलत छीन। त्यों काम तेज चलि नेन मीन॥
छं० ॥ ५५॥
सजोगि अग जोवन चढत। तह उट्ठि ससिर आयौ वसत॥
वयभोग वुद्धि सुदरि सहज्ज। रितुराज गयै जिम रैनि लज्ज॥
छं० ॥ ५६॥
दूहा॥ जनम सुष्य जोवन जई। उई सु सैसव ठार॥
सभरि न्वप सभरि धनी। तनह सु भौ रति मार॥ छं० ॥ ५७॥
सजि सुपग राजा सुभर। दिसि दिसि जित्तन वान॥
उभै दिसा वर मच जित। अठ्ठदिसा भर पान॥ छं० ॥ ५८॥

संयोगिता की बडी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता।

कवित्त॥ एक सु पुत्रिय पग। दीय दक्षिन सु देव ग्रह॥
मान हीन माननिय। रूप उप्पम रभा कहि॥
सुवर काम रति वाम। मनो फेरिय सो आनिय॥
कमल अनूपम काज। कछू ओपम मन मानिय॥
लष्छन वतीस वयसधि इह। सो ओपम अग कथ्थयौ॥
चढनह सुमनमथ चित्त रथ। चढन मत्ति चित रथ्थयौ॥
छं० ॥ ५९॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन।

पद्धरी॥ सजोग सधि जोवन प्रवेस। चितमंडि सुनौ सभरि नरेस॥

श्रीषंड पंक कुंकम सुरंग। मानों सु केरी करि मरदि गल॥
छं० ॥ ६० ॥

उप्पमा नष्ष आवै न कब्बि। तिन पड़ी छोड़ मयुषन सरब्ब ॥
दुका अंग उपम कहियै सुदुत्ति। तारकान तेज द्रष्षन सु मुत्ति ॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग अकलकंत सु रूर। मनुं रत्त रंग कंचन कि चूर ॥
ओपमा नष्ष फिरि कहि उपाइ। कन्नैर कली फूलंत राइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत वाम। अँभ श्रोन षंभ मोवन्न वाम ॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग। गज सुंड डिंभ कै श्रोन रंग ॥
छं० ॥ ६३ ॥

नित्तंब तुंग दून भाइ कब्बि। धरि चक्र सँवारि दुज वाम रब्बि ॥
नित्तंब भाग उत्तंग छंड। मनुं तुलत काम धरि लंक दंड ॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकह प्रमान मुट्ठीत धट्टि। बैनी ढलक दीसंत पुट्ठि ॥
चिंतै सुकब्बि ओपंम ओर। नागिनि सु हेम षंमह सुजोर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार। मानों पपील बंधी विलार ॥
गति हंस चलत मुक्कत विचार। सिषवंत रूप गहि बंधि भार ॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग। मरदे कि कुंक कंचन उपंग ॥
जोवन प्रसंग दुह रूप हद्द। छुर करी हरी मुक्कै मसद्द ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लग्गि होत हम थान भत्ति। जब लग्गि आन सैसव किरत्ति ॥
अधवीच बात हम सुनी तास। कहि लेषि लोग आवै न हास ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलग्रीव रहे त्रिवलीय चाह। बैठोति चंद आसनति राह ॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग। जानै कि बिंब फल चंद जंग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

ओपम सुचंद बरदाइ लीन। मनु अगर चंद मिलि संग कीन॥
मधु मधुर बानि सद सहति रंग। कलयठ कंठ केकीन लघ॥
छं० ॥ ७० ॥
बर दसन पंति दुति यों सुभाइ। मोइक चंद जुब्बन बनाइ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ। मनों दीप भवन न्त्रिध्धात पाइ॥
छं० ॥ ७१ ॥
सुंदरि बदन दूनो बनाइ। मानों रथ्थरवि दीपंह मनाइ॥
कहां लगि कहों चहुआन बाम। संसव सुवाल कंपैति काम॥
छं० ॥ ७२ ॥
अंबुज नयन्न मधुकार सहित्त। षंजन चकोर चमकंत चित्त॥
बैनीति साल सोभै बिसाल। मनों अरध उरग चढि कनक साल॥
छं० ॥ ७३ ॥
दूहा॥ इह सुनि न्त्रपति नरिंद दिन। भय श्रोतान सुराग॥
तब लगि पंग नरिंद कौं। बाजे बाजन लाग॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौदर्य्य की कथा सुनकर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना।

सुनि संजोगि अपुब्ब कथ। पंग चरित्त न काज॥
मंच मदन बंभनि उभै। जोगिनि मुक्कै राज॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरिच चितै मनह। सोई रूपक [1]राइ॥
न्त्रिप अग्गै हर वधि कै। कल कनवज्जह जाइ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त॥ भय अनंग न्त्रप अंग। श्रवन श्रोतान सु वड्ढिय॥
संभरि संभरिनाथ। पंच बानन तन दड्ढिय॥
मध्य हिय न छिन टरहि। श्रवन मन नैंन निरष्षै॥
चित्त गयदह फेरि। रति न मानै बिन दिष्षै॥
संभरि सुवत्त संभरि न्त्रपति। फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ॥
बुधि मदन सु बंभनि केलि सुनि। कुटिल तमकि चढ्यौ सु रथ॥
छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. राह।

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन।

कुटिल तमकि रथ चढ़त। वढ़िय ओतान काल न तन॥
निसा दिवस सुपनंत। राज रष्योति मझि मन॥
फिरै संजोगिअ पास। और रस मुक्किलि राजं॥
देउं द्रव्य मन बंछि। जोइ प्रमुधै चिय आजं॥
दुज चलै उझि कनवज्ज दिसि। ग्रेह सपत्त बंभनिय॥
चहुआन तेज गुन दुति सबल। सुनत संजोगी तं गुनिय॥छं०॥७८॥

रानी का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना।

दूहा॥ दुज सबद्द उच्चै कहै। काव कहि नीचं बैन॥
देषि संयोगि अचिज्ज बहु। तव करि उंचे नैन॥ छं० ॥ ७९ ॥
देषि संयोगि अचिज्ज हुअ। पुच्छत पंग कुमारि॥
कोन देस को भेस बनि। क्यों आवन सु विचार॥ छं० ॥ ८० ॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना।

पद्धरी॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस। षुरसान षान बंधे असेस॥
धनु धनुक धार अज्जुन समान। मनि रतन निद्धि जस आसमान॥
छं० ॥ ८१ ॥
वर तेज ओज जमजोर जोर। अरि छिपै तेज मनु चंद चोर॥
जिन बान तेज गज सुक्कि मद्द। चतुरंग सज्जि चव कलन हद्द॥
छं० ॥ ८२ ॥
इह जोग बीर सुर्वौं न बीर। वेधत्त सत्त वर एक तीर॥
कनवज्ज रीति बजि जेय कंध। इह धक्कि राज सह होइ [1]निंध॥
छं० ॥ ८३ ॥
जोगिनी भूप औधूत रूप। कहां कहौं रूप पंषी अनूप॥छं०॥८४॥

पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

(१) ए-निद्द।

साटक ॥ लज्जारूपगुणेन नैषध सुतो, वाचा च धर्मो सुतं ॥
वाने पार्थिव भूपति समुदिता, मानेषु दुर्योधन ॥
तेजे सूर सम ससी अमिगुन, सत् विक्रमो विक्रम ॥
इद्रो दान सुशोमनो सुरतरू । कामी रमावल्लभ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ दुज सुकही उप्पम भली । कथा सु उत्तम रीति ॥
बढ़ि आनद सु छद नन । सुनिग रीति सा रीति ॥ छं० ॥ ८६ ॥
दुज्ज दिसा अलिय जु श्रवन । द्रिग अच्छरि दिसि जाइ ॥
मनु सैसव जोवन विचै । बाल वसीठ कराइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना ।

जिमि जिमि सुदरि दुजि वयन । कही जु कथ्थ सँवारि ॥
बरनन सुनि प्रथिराज कौ । भय अभिलाष कुँआरि ॥ छं० ॥ ८८ ॥
असन सेन सोभा तजी । सुनित श्रवन्न कुआरि ॥
मन मिलिवे की रुचि वढी । और न चित्त दुआर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गाथा । अमिए अमिय वचने । रचने बाल ध्यान प्रथिराज
गोलक डुलै न थान । जानै लिष्यि चित्रय चरितं ॥ छं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ अमग्गत दान कहै दुज पान । सुनी सुनि मान कथा चहुआन ॥
इक इक बत्त सवै न्रप पाइ । सवै चहुआन दुती तन छाइ ॥
छं० ॥ ९१ ॥
सक विय विक्रम ज्यों परमान । सत सत ज्यों सिवरी उन मान ॥
बलद्द बाह सहस्सयराज । प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
छं० ॥ ९२ ॥
विधि विधि मागति पूरन तेज । ससी सस सीतल ज्यों न्रप केज ॥
सति सत्तह ज्यों हरिचद समान । बलवुल्लि साइर ज्यों उनमान ॥
छं० ॥ ९३ ॥
रस रज राजत जोति प्रकार । मयकर भीषम ज्यों करसार ॥

सयंक्रात पालग पंचव जोति । तिनं मति एक अमंतिय कोति ॥
छं० ॥ ९४ ॥

प्रतिं प्रति पारथ ज्यों प्रथिराज । करी कविचंद सु ओपम साज ॥
मघवा सुमहीपति कौ बल बीर । तिनै वर विद्र वरष्षत नीर ॥
छं० ॥ ९५ ॥

धराधर हिंम सुतं लछिराज । ज्यौं मनु इंद्र सु प्राचिय काज ॥
छं० ॥ ९६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है।

दूहा ॥ या समान जो राज होय । तौ कहियै प्रति जोति ॥
ना समान चहुआन कौ । तौ कहि ओपम कोति ॥ छं० ॥ ९७ ॥
कंत सुकंति सु दिष्षि इम । दुहु ओतनि बढ़ाय ॥
दुहु दिसि पंग नरिंद दल । व्रत्त अव्रत्त समाय ॥ छं० ॥ ९८ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ सीय लीय व्रत राम । सुव्रत नलराज दमंती ॥
सिव व्रत लीनौ सिवा । कृष्ण व्रत रुकमनि कंती ॥
व्रत ज्यों काली धर्‍यौ । बीर बाहन संकर बर ॥
ज्यौं व्रत लिय व्रतमान । भान पत्ती सुमंत वर ॥
व्रत लियौ देव देवत न्रपत । व्रत संयोगि चहुआन वर ॥
वर वरौं एक एकह सु व्रत । कै चहुआन विसाल नर ॥छं०॥९९॥
मन अभिलाष सु राज । वरन सुंदरी मद्‍य मति ॥
जौ तन मध्यें सास । मोहि संभरिय नाथ पति ॥
कै कुआंर पन मरौं । धरौं फिरि अंग पहुमि पर ॥
तौ राजा प्रथिराज । आन मन इंछ नहीं वर ॥
इम चिंत चित्त कुंअरी सु व्रत । रही मोद्द मन मोन अहि ॥
कलहंत वीज महि मंडि दुज । अप्प सपत्ते ग्रेह कहि ॥छं०॥१००॥

दूहा ॥ यों व्रत लीनौ सुंदरी । ज्यौं दमयंती पुब्ब ॥
कै हथलेवौ पिय करौं । कै जल मध्यें दुब्ब ॥ छं० ॥ १०१ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना।

मुरिल्ल ॥ बिय पगानि कुमारि सुमार सुमार तजि ।
घरी पहर दिन राति रहै गुन पिथ्थ भजि ॥
भेद भजै और जोर मन में लजिहि ।
लषि पुच्छहि चिय वत्त न तत्त प्रकास किहि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

बसत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत। मधु माधव वल मडि ॥
भार अष्टदस वेल तरु। पत्त पुरातन छडि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मजरि धरिय। परिमल प्रगटि सुवास ॥
छत्र रुचिर छवि काम जनु। अलि तुट्टत सुर रास ॥ छं० ॥ १०४ ॥

पद्धरी ॥ आगम वसत तरु पत्त डार। उठि किसल नइय रँग रत्त धार ॥
अकुरित पत्त गहरति डार। लहलहति जग अठ्ठार भार ॥
छं० ॥ १०५ ॥
मधुपुज गुज कमलनि अधीन। जनु काम कोक सगीत कीन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार। विरहिनी दीन दपति अधार ॥
छं० ॥ १०६ ॥
कलरव करत षग द्रुमति रोर। निसि बीति सिसिर रतिराज भोर ॥
चिय पुरुष चपनि रुचि अनँग बढ्ढि। दपति अनग विरहिनी जढ्ढि ॥
छं० ॥ १०७ ॥
द्रुम अवनि राजरित गवन कीन। नव मुग्ध मध्य कतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायत नारि। मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छं० ॥ १०८ ॥
तन भरति रक्त रग पीत पानि। हिय मोद प्रगट तन धरत जान ॥
द्रुम हुअ वसत आगम अवन्नि। मदमत्त करिय जनु गवन वन्नि ॥
छं० ॥ १०९ ॥
मसि भींज दिननि पिय तन वनग। अवतार अवनि जनु धरि अनग ॥

मुष हर्ष गंड मंडल प्रकास । फरकंत अधर मधु रस विलास ॥
छं० ॥ ११० ॥

विगसंत कमल छवि नयन मंडि । बंधूक अरुन रुचि षंडि छंडि ॥
मधुमास सुक्ल निसि रुचिर चंद । वहि गंधपवन छवि सीत मंद ॥
छं० ॥ १११ ॥

हुअ रोम पंचसरे अंच देह । कलमलिय ज्वलिय वनिता सनेह ॥
निसि प्रथम प्रहर तट गवन कीन । सुभ सोभ बाग मन हुअ अधीन
छं० ॥ ११२ ॥

सगपन्न धार इक लिय चढ़ाइ । जसैव इक्क अँग पवन पाइ ॥
पिष्षे सु बाग बानिक रसाल । निरषंत नयन सोभा विसाल ॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन ।

दूहा ॥ उपवन धन बद्दल बरन । सीत पवन द्रुम जाल ॥
चित्ररेष वल्लिय विटप । अवलंबि ताल तमाल ॥ छं० ॥ ११४ ॥

तरु तल जल उज्जल अमल । टपकत फल रस भार ॥
कुंज कुंज विगसत बसन । तन बढ़ि धात अपार ॥ छं० ॥ ११५ ॥

पतत पच नहिं धर रहत । बानक बान उजास ॥
चंद जोति जल बानि बनि । होड़ होत रस भास ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ फलन भार नमि साष । जीभ रस स्वाद विवस षट ॥
सुमन सघन बरषंत । गीत संगीत कोक रट ॥
बँधि चहबच्चनि नीर । छछि छचन रंग धानिय ॥
मंडित मंडप गौष । सुभग सालनि छवि न्यारिय ॥
संमरिय राव बैठक बनक । कनक अलक कंचन पुरिय ॥
प्रथिराज मुदित मादक तनह । बाज राज नंच्यौ तुरिय ॥ छं० ॥११७॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना ।

कढ़ि धरनि धुरतार । भार भर सेस ससंकिय ॥
उड्ढि नाल असमान । उग्गि आकास चंद विय ॥
पत पंषिय भर हरिग । अंग थर हरिग रष्षि कान ॥

इक्क श्रवन झंकारिग । कठिन कैवियान अप्प तन ॥
तुट्टिय पटाटि दवि अंग तुटि । विफरि अग तूरिय सु रहिय ॥
सोमेस स्हूर चहुआन सुअ । तास किति चंदह कहिय ॥छं०॥११८॥
बीग गिरद बर कोट । तास दरवान हुकम किय ॥
ऐकाकी हम रमत । कोइ न आवन लहै विय ॥
बैठि दरह दरवान । जानि जमदंड हथ्थ धरि ॥
पिथ्थ कारह कम्मान । टक पचीस जोर जुर ॥
लग्गो सु फिरन द्रुम द्रुम निकट । जपनी जप दरसन भयौ ॥
देपत सोभ भुल्लिये नयन । मैन रत्ति आनंग ठयौ ॥ छं० ॥ ११९ ॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप ।

दिष्षि जष्य प्रथुनाथ । हाथ जुग जोरि नवनि किय ॥
कवन काज इत अवन । नाम तुम कवन पुरुष त्रिय ॥
जष्य नाम दुष दवन । नाम रवनी रस वल्लिये ॥
नाटिक विविध विचित्र । करन आगम रस रल्लिय ॥
सिर नाइ पिथ्थ कीनिये नवनि । कछू मोहि अग्या कहौ ॥
स्रु गंध धूप मिष्टान फल । करौं प्रगट बन पुर लहौ ॥ छं० ॥ १२० ॥

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हौ ।

दूहा ॥ कहिय जष्य प्रथिराज सम । बानक इक्क अनूप ॥
दुरि पिष्यो द्रुम सघन तर । तुम कोइ भूप अनूप ॥ छं० ॥ १२१ ॥

पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना ।

पद्धरी ॥ सेवकन बोलि करि हुकम कीन । स्रगंध धूप रस फल रसीन ॥
आवत्त वस्त लग्गै न वार । जह तहँति आनि कीनै अमार ॥
छं० ॥ १२२ ॥
सुष होत हुकम सेवक प्रवीन । सब वस्त आनि अम्मार कीन ॥
भरि कनक कुंड वर कासमीर । म्रिगमद जवादि अनपार भीर ॥
छं० ॥ १२३ ॥

कपूर कलस तहं धरिय आनि। कुमकुमनि कुंड सुभ भरिय थान ॥
केतकि कमल केवर कुसुम्भ। मालती वेल जाती सुरभ ॥ छं० ॥ १२४ ॥

चंपक फूल पड्डुर अपार। जहं तहँति आनि किन्ने अमार ॥
तंबोल तच बानक अनंत। बुध विविध जाहि भूलत गनंत ॥
छं० ॥ १२५ ॥

दारिम दाष केला रसीन। अषरोट नासपाती नवीन ॥
नारियर पिंड षज्जूर आनि। बिज्जौर और फल विविध बानि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

घृत दुग्ध मिश्र पकवान ढेर। आनंत तिनह लग्गी न बेर ॥
किय बिदा सब्ब सेवक बहोरि। दुरि बैठि पिष्षि इक षष्प ओर ॥
छं० ॥ १२७ ॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना।

दूहा ॥ निमष होत गंध्रव्व इक। संग नाटिक आरंभ ॥
तंतिताल बीना म्रदंग। सँग अच्छरि लिए रंभ ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अप्सराओं का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन।

पद्धरी ॥ कुमकुमनि नीर कर मुष पषारि। अचवंत अमिय बर गंगधार ॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ। रचि कुसुम अंग गहने बनाइ ॥
छं० ॥ १२९ ॥

तंबोल बरनि कपूर षंड। फुनि करो नित्य नाटक मंडि ॥
स्वर सपत ताल कल मनहरंत। बनि बीन जंच हम्मन धरंत ॥
छं० ॥ १३० ॥

कटतार तार पट तार पाइ। संगीत भेद बरन्यो न जाइ ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि। धुनि धरत सिद्ध तन धर्म षंडि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

जब रची रुचिर बीना प्रवीन। नारद नाद तंती अधीन ॥
रस सरस हास बरन्यौ न जाइ। सुभ कर्म धर्म सुभ्र सोम पाइ ॥
छं० ॥ १३२ ॥

नाटक उठि फुनि बैठि देव । करि भोग भोज मिष्टान सेव ॥
हुअ नृपति अन कपूर मंडि । तंबोल तत्त कर विरी षंडि ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सब सथ्य बहुरि इक रह्यो जग्ग्य । तिहि सथ्य इक गंध्रब्ब हुय्य ॥
तिहि कह्यो जष्य रस रह्यो आज । इह कवन आनि सब संचिय साज ॥
छं० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्वसिद्ध कवच देना।

तिहि कही जष्य जिहि आत काम । सोमेस पुत्त प्रथिराज नाम ॥
गंध्रब्ब कही सुष प्रसन होइ । इक देउ मंत्र तन अभय सोइ ॥
छं० ॥ १३५ ॥

सुनि जष्य लीन प्रथिराज ताहि । मन मुदित अंग सुष रहे चाहि ॥
गंध्रब्ब मंत्र दीनो स धीस । सिर धारि हथ्थ दीनी असीस ॥
छं० ॥ १३६ ॥

गंधर्व जष्य बहुरे अकास । तिहि निसा पिथ्थ तहं किन्न वास ॥
छं० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम सैंतालिसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४७ ॥



अथ बालुका राइ सम्यौ लिष्यते ॥

(अडतालिसवां समय।)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमन्त्रण भेजे जाना।

कवित्त ॥ राज राज सब काम। करैं राजसु आरंभै ॥
नीच काम अरु ऊच। अर्थ कामह प्रारंभै ॥
नीति काम अरु ध्रम्म। बाज गज क्रम परिहार ॥
देस देस फुरमान। दिए पहुपग अपार ॥
मची सुमत मति बधि कै। सबै देस फौजें फटी ॥
बर कित्ति करन जुग जुग लगै। इह कमध जैचंद यटी ॥छं०॥१॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन।

नराज ॥ हियत सोधि राजस्रू जुराज जग्गि जोगय।
सवस्र राज सामद्ड मेदि बध भोगय ॥
सु दांन मान अप्पि पान दैवय न बोधय ॥
सवर्त्त वत्तमान रे अनेक निद्धि सोधय ॥ छं० ॥ २ ॥
सुबेन्न भार लाष एक मुत्ति भार साठय।
रजक भार कोटि एक धातु भार नाठय ॥
तुरंग भार लावए गजेंद्र ग्रेह लष्यय।
कपूर कासमीरय अनेक भार सष्यय ॥ छं० ॥ ३ ॥
पटबर स अबर सुगध धूप डबर।
सटत्त लोप च्यारि वा सदासि [1]नेस अतर ॥
सुमत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न सतर ॥
॥ छं० ॥ ॥ ४ ॥

(१) ए नेम।

षटानु अंस भाग विप्र संग्रने सुपचयं ॥
सु षोडसा प्रमान दौन वेद वान अप्पयं।
विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं।
विचारि वीर राजसू जयंति [1]जोति जागयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

यश के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय। सेंवर सहित सँजोग ॥
मिलि मंगल मंडप रचिय। जहां विविध विधि [2]भोग ॥छं०॥६॥
दिसि मंडल षँड षंडलह। पंग फिरे जु बसीठ।
बल बंधौ दल हिंदु जौ। बंधौ मेच्छ सा ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
मत मंडित छंडित कलह। बल दीरघ प्रति बाम ॥
कहै पंग न्रप ऊंच मति। रहै सु रष्षौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं। वज्जाए दीह दसहांई ॥
विपफुरे जास कित्ती। तेगया न विगया हुंतीं ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ। नाग जीतयौ मंच बल ॥
बल जीते द्रिगपाल। चढ़वि है वै अभंग भर ॥
सुगत माल द्रगपाल। जित्त छल गोरे मारे ॥
द्रव्य सबल बल अग्ग। जग्य कारनह अधिकारे ॥
चिहुं तेज चक्क ससि काल ज्यौं। तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
संसार मान न्रप तेज बल। यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥छं०॥१०॥

गाथा ॥ पहुवी कालह बलियं। कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
जे नर कालह छलयं। ते कित्ती संजीवनं करयं ॥ छं० ॥११॥

जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट देने के लिये संदेशा भेजने की इच्छा करना।

(१) ए.-जोगि। (२) ए.-जोग।

पद्धरी ॥ उत्तरै वीर पहुपंगराइ। हम मात तात द्रिग विजय चाइ ॥
मुकलै दूत वर मत्त काज। मातुलह वस प्रथिराज राज ॥छं०१२॥
छिद्र न जानि गुरु गुरुअ पत्ति। चित्रग राइ सोहसह हत्त ॥
धर धरनि बटि विभ्भाइ लच्छि। जानै सु राज जिन तजो गच्छि ॥
छं० ॥ १३ ॥
बधौ समेत जिन बलह भूमि। बरयै सुराज ताम्रत्त [1]अतूमि ॥
बर मिलै आइ पहुपग पाइ। ढिल्ली समेत सोरों लगाइ ॥छं०॥१४॥
अप्पैज भूमि तुम सेव जाइ। ॥
जिम जिम सु बमौ तुम चित चढ़ंत। तिम तिम सु दान पगहु बढंत॥
छं० ॥ १५ ॥
अनि ठौर षेद जिन करौ चित्त। अप्पै सु भूमि दस गुनिय हित्त॥
को करै पग सों वल्ल प्रमान। दिष्यौ न तीन लोकह निदान ॥
छं० ॥ १६ ॥
अब अमित मत इह तत्त जानि। गुरुवत्त तत्त मत्री सु ठानि ॥
पय लग्गि सुनि रु परधान तब्ब। पहुपंग राइ बर हुकम सब्ब॥छं०॥१७॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा।

कवित्त ॥ मातुल हम तुम इक्क। इक्कि बसह निरधारिय ॥
आदि वस कमधज्ज। बरन छत्रिय अधिकारिय ॥
तुम सभरि चहुआन। बसौ अजमेरति वीर ॥
पग देस सब भूमि। मंगै सो अब्ब उरीर ॥
यों कियौ मत ग्रह अप्प बर। सुमति बोलि परधान न्रप ॥
छिति मत्ति छिक्ति जीपन धरा। सुवर सूर साहस सु तप ॥छं०॥१८॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढना और मंत्री सुमंत का जयचन्द को यज्ञ करने से मना करना।

(१) ए अनमि।

पद्धरी ॥ थप्पै सुमट्ट राजसू पंग । नर हरै पाप कारवत गंग ॥
धुनि धुनि सु विप्र बोलेति वेद । तन करै निमल अघ करै छेद ॥
छं० ॥ १६ ॥

ग्रह ग्रहन हेम कलसि कसि सु नारि । मानों कि सूर ससि छिन्न तारि॥
जगमगै हेम विधि विधि बनाइ। जिम निगम अंत वसि बरुन ओइ ॥
छं० ॥ २० ॥

ग्रह ग्रहन कलस तोरन समान । कैलास सिषर प्रतपै सुमान ॥
ग्रह ग्रहन गोष रष्षत बनाइ । कैलास डरह ससि अद्ध पाइ ॥
छं० ॥ २१ ॥

ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ । कैलास लग्गि नवग्रह रिसाइ ॥
*कलि अंत पथ्थ कनवज्ज राइ । .... छं० ॥ २२ ॥

सतपती सील धर ग्रम्म चाव । सुनि रोस कियौ पहु पंग राव ॥
मागधहु सूत बंदनि बुलाव । .... छं० ॥ २३ ॥

पुच्छयौ सु बंस कमधज्ज ग्रब्ब । हम बंस जग्य किहि कियौ पुब्ब ॥
जिहि बंस जग्य नन होइ राज । भुगतौ न भूप सुष सर समाज ॥
छं० ॥ २४ ॥

तुम बंस भए कमधज्ज सूर । कीनौ सु राज राजस्स भूर ॥
तव बंस भयौ वाहन नरिंद । अंतरिष रथ्थ चलि अग्ग कंद ॥
छं० ॥ २५ ॥

तुम बंस भयौ पूरूर (१)सूर । रथ च्यारि चक्र जिहि जीति सूर ॥
सतसिंधु सूर जिह रथ्थ चीन्ह । तुम बंस भयौ नृप राज नील॥
छं० ॥ २६ ॥

तुम बंस भयौ नलराइ अंद । नैषद्ध हार हौ धऱ्यौ बंध ॥
षट चक्र भए कमधज्ज आदि । किन्नौ नरिंद जिह्न बरुन बाद ॥
छं० ॥ २७ ॥

जीमूत धऱ्यौ जिहि चक्र सीस । संसार कित्ति कीनी जगीस ॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अश खडित मालूम होते हैं क्योंकि यहा के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है ।

(१) सूर ।

की कहै पग सों दुष्ट [1]आय। मंडै सुजग्य निहचैत राय॥
छं० ॥ २८ ॥

वारुन्न भूमि हय गय अनग्ग। परठंत पुन्न राजहू जग्ग॥
सोधिग पुरान वलि वस वीर। भूगोल लिषित दिष्षित सहीर॥
छं० ॥ २९ ॥

छिति छत्र बंध राजन समान। जित्तेति सकल हय गय प्रमान॥
पुच्छै सुमत परधान तथ्थ। अब करहु जग्य जिम चलहि कथ्थ॥
छं० ॥ ३० ॥

उत्तर सु दीन मंत्री सुजानि। कलिजुग्ग नांहि वियजुग प्रमान॥
करि ध्रम्म देव देवल अनेक। षोडसा दान दिन देहु देव॥
छं० ॥ ३१ ॥

मो सीष मानि न्रप पग जीव। कलिजुग्ग नही अर्जुन सु भीव॥
झुकि पगराव मंत्री समान। लहु लोह अब्ब बोलहु अयान॥
छं० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना।

दूहा॥ पग वचन मंत्रीस उर। मन भिट्यौ न प्रमान॥
ज्यौं सायक फुट्टै नही। गुरु पथ्थर परजान॥ छं० ॥ ३३ ॥
पग परट्ठिय जग्य जव। बत्त विविध धर बज्जि॥
वर बंभन दिन धरहु सुभ। लगन महूरत रज्जि॥ छं० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना।

मानि हुकम पहुपंग को। चलि मंत्री बुधि वीर॥
कै साधै चहुआन को। कै धर वटै धीर॥ छं० ॥ ३५ ॥
राज वचन सेवक सुध्रम। तत्व वचन करि जानि॥
दिस दिल्ली ढिल्ली धरा। सभरि वै परिमान॥ छं० ॥ ३६ ॥

भुजंगी॥ सभारिय राज चित्त पुनीत। जहां साधिय मंत्र मंत्री अनीत॥

(१) ए अग्रह।

मनं वृत्त जान्यौ त्रितं वक्र सूरं। मनों साधनं वृत्त संसार चूरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥
निपं अम्म जानैं इसे सूर पांचौ। मनों पंग देही दुती अंग सांचौ ॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना।

दूहा ॥ सुक्कलि धर पत्ते न्रपति। दूत सु अम्म सुचार ॥
मनों पंग देही दुती। सुबरि बुद्धि उद्धार ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना।

कवित्त ॥ मिलत राज प्रथिराज। करिय आदर अधिकारिय ॥
देव भगति परमान। देव जिम अचत सु चारिय ॥
वर मिष्टान सु पान। मध्य अम्रत फल धारिय ॥
रंग रंग घनसार। अंग म्रगमद अधिकारिय ॥
मतवंत वृत्ति छोड़ें नहीं। डर न चित्त मन उच्चरहि ॥
षट थोंस गए बित्तें सुभर। है कम्मद गुन बिस्तारिय ॥छं०॥४०॥

मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना।

कवित्त ॥ हरन दच्छ ज्यों जग्य। सेव कीनी कुवेर वर ॥
यों सेवा प्रथिराज। जानि पहुपंग करै नर ॥
भगति भाव विश्राम। ताप जप जाप देव सम ॥
षट सुद्दीह कम्मर प्रमान। उच्चर्‍यौ बीर भ्रम ॥
जं कह्यौ गुज्ज जैचंद वर। विधि विधान निरमान गति ॥
जैचंद मंत जो गूढ़ कौ। कह्यौ राज राजन सुगति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

साटक ॥ सोयं इंद्रयप्रस्थ कारन वरं, जुक्कोव गंध्रव गुरं ॥
सोयं ता परचंड देवि बलयं, पंचे छठं [1]बंधवं।
नायं भीम द्रुयोध सूमित बलं, एवा किता अग्गजं ॥
सोयं मंगय राज राजन वरं, मातुल्ल मातुल वरं ॥ छं०॥ ४२ ॥

(१) ए.-बंधकं।

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना।

पद्धरी ॥ तिहि मत काज प्रथिराज राज। बोले सु बीर भर वर विराज ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सत्त। इक अग अग पचौ सु रत्त ॥
छं० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत्त सा ब्रम्म सूर। देषत नरिंद बल कारि करूर ॥
बोल्यौ सु गुरुअ गोयंद राज। आहुट्ठ मभ्भ सामंत लाज ॥
छं० ॥ ४४ ॥

बोल्यौ सु धनिय धारा नरिंद। आरंभ सलष पामार इंद ॥
गंभीर गरुअ भारोति भुम्मि। साइरह मद्धि नमनद्धि घुम्मि ॥
छं० ॥ ४५ ॥

बोलयौ बीर नरनाह स्वामि। भारथ्थ बीर पारथ्थ जामि ॥
छल छत्र छित्ति निढ्ढुर नरिंद। जैचंद वध भारथ्थ कंद ॥
छं० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरू पट ब्रम पवित्त। बोलए अवर जैसत सत्त ॥
इहि विधि प्रमान सामंत रत्त। बोलै न बोल ते चित्त मत्त ॥
छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों की सत्कीर्ति।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामंत सब। अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लष्य वर। लष्य लष्य सिरताज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना।

पद्धरी ॥ पहुपंग राव राजसू जग्य। आरंभ रंभ कीनौ अचग्ग ॥
जित्तए राज सब सिंध बार। मिल्लए कंठ जनु मुत्ति हार ॥
छं० ॥ ४९ ॥

जुग्गिनिय पुरह सुनि भयौ षेद। आवहि न माल मझ्झह अभेद ॥
मुक्कले दूत तब तिन रिसाइ। असमथ्थ सेस किम भूमि पाइ ॥
छं० ॥ ५० ॥

बंधो समेत सामंत सथ्थ। उत्तारेहि आनि दरबार अथ्थ ॥
सुनि दूत चले दिल्लिय सु थान। आजानबाहं जहं चाहुआन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

पहुंचे सु इंद्र पथ्थह सु थान। गुदराइ बत्त जैचंद नाम ॥
हज्जूर बोलि पठ्ठाय राज। क्यों आइ दुत्त सो जंपि काज ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिल कर जयचन्द का संदेशा कहना।

तब दूत कहिय दिल्ली नरेस। आएस जंपि जैचंद नरेस ॥
राजस्व जग्य आरंभ कीन। दस दिसन भूप फुरमान दीन ॥
छं० ॥ ५३ ॥

छिति छत्र बंध आए सु सब्ब। तुम चलहु बेगि नह विरम अब्ब ॥
फुरमान दीन चहुआन तोहि। कर छरिय दावि दरबान होहि ॥
छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना।

बुल्लै न बैन प्रथिराज ताह। संकरै सिंध गुर जननि चाह ॥
उच्चरे गरुअ गोयंद राज। कलि मझ्झ जग्य को करै आज ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सतजुग्ग कहहि बलिराय कीन। तिहि कित्ति काज चिहु लोक दीन ॥
त्रेता सु कीन रघुवंसराइ। कुब्बेर कनक बरष्यौ सु आइ ॥
छं० ॥ ५६ ॥

धर अग्ग पुच द्वापर सु नाइ। तिहि पथ्थ वीर अरु हरि सहाइ ॥
[1]इल दर्व गर्व तुम अप्रमान। बोलहुत बोल देवन समान ॥
छं० ॥ ५७ ॥

(१) कृ. ८ल।

जानीव तुम्ह वनी न कोइ। निरवीर पहुमि कबहू न होइ॥
जगलह वास कालिद कूल। जानै न राज जैचद सूल॥
छं० ॥ ५८ ॥

जानहित देस जोगिन पुरेस। आनल्ल वस प्रथिय नरेस॥
कै बार साह बधयौ जेन। भजिय सु भूप भिरि भीमसेन॥
छं० ॥ ५९ ॥

सभरि सकोप सोमेस पूत। दामित्त रूप अवतार भूत॥
तिहि कध सीस किम जग्य होइ। जो प्रथिय नहीं चहुआन कोइ॥
छं० ॥ ६० ॥

देषी सु सभा तिन सिंघ रूप। मानै न जग्य मन अन्य भूप॥
आदरहु मद उठि चलि वसीठ। श्रामिनी सभा बुधजन बईठ॥
छं० ॥ ६१ ॥

कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना।

कवित्त ॥ मन विचारि वसीठ। आप आयन दै तारी॥
बछै जवुक मरन। वथ्थ पचानन भारी॥
मरन लोइ बछैत। हथ्थ जमदढ्ढ घोलै॥
अजा मरन बछैत। वार दीपो सग डोलै॥
बछई मरन कातर वितर। सूर हक्क पचारई॥
गामी गमार घर बैठि कै। पग राइ बक्कारई॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ जौ वरपग नरिद है। हौं जानू बर जोर॥
ज्यौ अगस्ति साइर पियौ। त्यौं ढिल्ली धर तोर॥ छं० ॥ ६३ ॥
जोवन वैवर विनै वर। कहै पग सो अज्ज॥
मत अवैठौ गैठ है। आन मान कामधज्ज॥ छं० ॥ ६४ ॥

दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और चालुका राय का उसे समझा कर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना।

पद्धरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज संफ। मय मलिन मुष्प जनु कमल संफ॥
तिन दूत पंग अग कहिय बैन। अति रोस कीन रग तैत नैन ॥
छं० ॥ ६५ ॥

बुल्ल्यौ सुमंत परधान तब्ब। कनवज्ज नाथ करि जग्य अब्ब ॥
बोलै सुमंत मंत्री प्रमान। उद्धरन जग्य कलि जुग्ग पान ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बालुका राइ बोल्यौ हकारि। साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
षुरसानषान बंदेति मीर। सो भाग दसम अप्पै सरीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार। अप्पैति सेछ पहुपंग बार ॥
नीसान बार बज्जेति चंग। बज्जी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥
छं० ॥ ६८ ॥

षोषंद बाद बालुकाराज। रष्पियै जग्य को रहै साज ॥
जब लग्गि गहौ चहुआन वाहि। तव लग्गि ताहि टरि काल जाहि॥
छं० ॥ ६९ ॥

ए आससंद न्रप करहि सेव। उच्चरहिं काम सो होइ देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि। थप्पियै पवरि दरबार बानि ॥
छं० ॥ ७० ॥

सेंवर सँजोग अरु जग्य काज। बुध जननि बोलि दिन धरहु आज॥
मंत्रीन राव परमोधि जामि। धुम्मे सबार नीसान ताम ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सब सदन बंधि बंदरनि बार। कोटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दान सुर सम अचार। आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥
छं० ॥ ७२ ॥

धवलियै धाम देवल सु चीय। तम हरन कलस रविव्यंब बीय ॥
धज मगन रोर जनु मधु अछीय। जनु रचिय बंभ कैलास बीय ॥
छं० ॥ ७३ ॥

इके बार संजोइय सषिन प्रत्ति। मुसकाय मंद इह कहिय वत्त ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अत्ति। वद्दलीय बिद्धि मो मनह गत्ति ॥
छं० ॥ ७४ ॥

संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का सचार होना।

गाथा ॥ वबुरे मलय मरुत । जगुरे पिक पराग पर पच ॥
उतकठ भार तस्सा । मन मान सके सप मत्ति ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानीय दाह वाले । पुत्तलिका पानि ग्रहनाय ॥
एकात सेज सहव्वे । लज्जा विया विनया साई ॥ छं० ॥ ७६ ॥

चद्रायन ॥ कचन ग्रेह सु मोतिय वदर वार हुअ ।
ता ओपम वर भट्ट विचार सु एम जुअ ॥
मेर चरनन गग तरगनि जानको ।
कि मेर चरन्न किरन्न भई लगि भान की ॥ छं० ॥ ७७ ॥
तिन ग्रेहनि में फिरत सजोगी सोभई ।
रति की रूप न होइ काम तन लोभई ॥
मनो मधुक मन मधि मन मधि ही करी ।
कोटि रत्ति की तेज रत्ति वह उन्हरी ॥ छं० ॥ ७८ ॥

अरिल्ल ॥ अकुर पान चरावत वच्छ । मनो माननि मिस दिष्पि अनुच्छ ॥
सहचरि चरित परस पर वत्तय । मनों सजोइ सँजोग मनमथ्थय ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ वज्जाइ गाह श्रवन । नयन चित्तं हि दिट्ठ लग्गाह ॥
आमान ग्राम लज्जा । आनगा अकुरी वाला ॥ छं० ॥ ८० ॥

सयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एव दैहिक अवस्था का वर्णन।

पद्धरी ॥ राजन अनेक पुचीति सग । पटवीय वरप नन लसति अग ॥
के जुवति सग द्वासद सुरग । मिल लिपहि भाम नव नव अनग ॥
छं० ॥ ८१ ॥
सजोगि सग जुवती प्रवीन । आनद गान तिन कठ कीन ॥
। ॥ छं० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछग चिवुकी । आलोली इछ सजोगी ॥
वरनीय पानि पत्तो । दीहास तामि अठ मझामि ॥ छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग। अधरें तंमोर अच्छें दुरंग ॥
सुभ सरल बाल वल्लीस थोर। अंकुरहि मान मनमथ्थ ओर ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जुब्बन जुवत्ति रचि कहहि बत्त। श्रवननि सीर निकु नयन रत्त ॥
मुक्कहि न लोई लज्जा सुरत्त। निरधनिय मनहु धन गहिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत सा सखिन्ना। या सुंदरि काय वर यामि ॥
बालियं विधि विहिन्ना। संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उस के स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन।

मोतीदाम ॥ बयजोग संजोग वसंतह जोग। कहै कविचंद समावरि भोग ॥
अनं मधु मद्ध मधुं धुनि होइ। विना रस जोवन तीय अलोइ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

मनं मिन लीन वसंतत राज। सु इच्छत सैसव जोवन वाज ॥
कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि। तहां विन सैसव जोवन जाहि ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरी जगि होपति आज। भई नृप वार वसंतह राज ॥
तहां बजि धुंधर जोवन माइ। जगावहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ। कछु वसंत धरि भाव ॥
मानों अलि दूतनि भई। नीदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ अधर तपत पल्लव सु वास। मंजरिय तिलक पंजरिय पास ॥
अलि अलक कंठ कलयंठ मंत। संयोगि भोग बर सुअ वसंत ॥
छं० ॥ ९१ ॥

मधुरे हिमंत रितुराज मंत। परसपर प्रेम सो पियन कंत ॥
लुट्टहित भोर सुगंध वास। मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
छं० ॥ ९२ ॥

बन वग्ग मग्ग हलि अव मोर। सिर ढरत जानि मनमथ्थ चोर॥
चलि सीत मंद सुगंध वात। पावक मनौं विरहनी पात॥
छं० ॥ ९३ ॥

कुह कुह करत कलयंठ जोट। दल मिलहि जानि आनंग कोट॥
तरु पल्लव पीत अरु रत्त नील। हरि चलहि जानि मनमथ्थ पील॥
छं० ॥ ९४ ॥

कुसमेष कुसुम नवधनुक साज। भंगी सुपति गुन गरुअ गाज॥
संजर सुवोन सो मनहु नेह। विद्धारि जानि जुअ जननि देह॥
छं० ॥ ९५ ॥

ऊपलिय चलिय चंपक सरूप। प्रज्जरहि प्रगट मंद्रप्प कूप॥
कर वत्त पत्त केतुकि सुकांति। विहरत रत्त विछुरत छत्ति॥
छं० ॥ ९६ ॥

परिरंभ अनिल कदलि दपान। सिर धुनहि सरस धुनि जान तान॥
मौरि भ्रमर अभिराम रम्म। नन करहि पीय परदेस गम्म॥
छं० ॥ ९७ ॥

फूलिग पलास तजि पत रत्त। रन रंग ससिर जीतौ वसंत॥
दिष्यहि तपत जिहि कंत दूर। थकि वोलि वोलि जल रहिय पूरि॥
छं० ॥ ९८ ॥

संजोग भोग जुवती प्रवीन। पै कंठ नहि दुह भगिअ लीन॥
रवि जोग भोग ससि नीय थान। दिन धऱ्यौ देव पंचमि प्रमान॥
छं० ॥ ९९ ॥

सोय जग्य उद्दीपन वाल काज। विलसन विलास मंडौज साज॥
पर उछव दपिन दीनौ मिलोन। विग्रहन देस चढि चाहुआन॥
छं० ॥ १०० ॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना।

स्लोक॥ अन्यथा नैव पिष्यति। दुज वाक्य न मुंचते।
प्रोपत जोगिनी नाथो। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ जगत बत्त जोगिन पुरह । सुनिय किंत्ति कमधज्ज ॥
भनै अप्प विस्रंम मन । नमि सामंत सुरज्ज ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूत वचन कग्गद सयन । थप्पि वत्त सासत्त ॥
चमकि चित्त चहुआन न्टप । तमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥
सुनिय वत्त दिल्ली न्रपति । थप्पो पोरि प्रथिराज ॥
अब जीवन बंछौ न्टपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ मो उम्भै पहुपंग । जग्य मंडै अवुद्धि कर ॥
जो भंजौं इह जग्य । देव विध्वंसि धुंम परि ॥
कच करवत पाषान । हथ्थ जुट्टै बर मग्गै ॥
प्रजा पंग आरुही । बहुरि हथ्था नन लग्गै ॥
प्रथिराज राज हंकारि बर । मत सामंत सु मंडि घर ॥
कैमास बीर गुज्जर अठिल । करौ सूर एकट्ठ बर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना।

मत्त मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उचारिय ॥
पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥
साष बीर मथ्थियै । गयन कंकन प्रति साजन ॥
बनसी मथ्थ समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥
धरधकि धंकि राजन गरै । पहुमि कही चहुआन नहिं ॥
निरबीर पहुमि सोइ होय बर । पंग जग्य कलजुग्ग महिं ॥
छं० ॥ १०६ ॥

पंच सूर एकंग । सथ्थ सामंत सत्त भर ॥
धाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥
राज गुरू दुजराम । राज रष्षन बल राषन ॥
अप्प सजिय सामंत । सज्जि सब सूर एक मन ॥
सामंत सूर षोयंद कजि । पंग भज्जि अग्गर सुधर ॥
बालुकराव निंदह कढ़िय । पग्ग मग्ग मंगै गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जयचन्द के भाई वालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होना।

दूहा ॥ काज वीर वालुक सु क्रत । सज्जि सेन चतुरंग ॥
तिन कारन भजन सु अगि । बाजि वीर अनभग ॥ छं० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामतों का कहना कि कन्नोज पर ही चढ़ाई की जाय।

पद्धरी ॥ सुनि मत तत जुग्गिनि पुरेस । मनेव भेव मन मंडि तेस ॥
काज मत सत जोगीय थान । सब वढ्यौ कोप भर आसमान ॥
छं० ॥ १०९ ॥

वुल्लाइ सबें भर राज काज । पमार सलप सम जैत आज ॥
निद्दुरह राव जामानि जाद । चदेल भूप भोहा सु वाद ॥छं०॥११०
कैमास मासई तेज रासि । दाहिम्म बोलि अग्गै उहासि ॥
पुडीर चद लगा अभग । वग्गरी देव पीची प्रसग ॥ छं० ॥ १११ ॥
सामत सूर मिलि एक थान । मतेव मत विधि चाहुआन ॥
तुम सुनिय तुम　　।　　,　　॥ छं० ॥ ११२ ॥ ॥
हम लाज राज तुम सीस साज । तुम रचिय वुद्धि सो कत्यकाज ॥
तमि कहिय राव गोयद तब्ब । भजों निकट्ट कनवज्ज सब्ब ॥
छं० ॥ ११३ ॥

तब कही कन्ह सुनि चाहुआन । सजि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥
मचाइ कूह कनवज्ज थाह । पडहि सु रान विधि जग्य राह ॥
छं० ॥ ११४ ॥

उचरिग वत्त जामानि जद्द । सजि चढ़ौ जूह कजि कूह नद्द ॥
भजियै देस कमधज्ज राज । उज्जारि थान जचान राज ॥छं०॥११५॥
पुकार कूह उट्ठे करार । भजहि सु जेन भय जग्य भार ॥
उच्चऱ्यौ चद पुडीर ताम । कैमास मत पुच्छौ सु हाम ॥छं०॥११६॥
मति सिंधु सह गुन अग्गरेस । वुद्धत वुद्ध मनजा असेस ॥

आनंद सुनिय सामंत सब्ब । भय मोद मंन अस सुनिय तब्ब ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कैमास ताम जंपै सुमेस । कामधज्ज सुवल दल अस्स हेस ॥
बालुकाराय षोषंद थान । भंजियै तास हनि गूह जान ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दग्गियै धाम पुर नैर नेस । पुकार भार फुट्टै असेस ॥
बिग्गारै जग्य जैचंद राज । जस होइ किति सुअ सोम काज ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दाहिंम मंत सुनि भर उहास । मन्नेव मंत सो धंनि हास ॥
आनंद राज प्रथिराज ताम । थपि मंत पत्त निज निज्ज धाम ॥
छं० ॥ १२० ॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है।

कवित्त ॥ रष्पि थान षोषंद । राइ बालुक्क प्रमानं ॥
दिय अड्डौ चहुआन । जग्य मूलं रषि वानं ॥
रष्पि सेन समरथ्थ । गरू आदर भर मन्निय ॥
सो संभरि चहुआन । बीर अंकुरि चित्तवन्निय ॥
सामंत सूर वर बोलि बर । मंति बैठ ढीलीस पहु ॥
चय जाम सिंघ घरियार बजि । बीर बीर लग्गे सु पहु ॥ छं० ॥ १२१ ॥

गाथा ॥ दिढ़ करि मंच सहाओ । पत्तो धाम राज सा भृत्तं ॥
अंतर महल उहासौ । आअं मेस तथ्थ चहुआनं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना।

अरिल्ल ॥ बोलि तथ्थ मंची कयमासं । राजा मानिय टू आमासं ॥
और सबै सामंत सुरेसं । दिय सनमानि बहोरि नरेसं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

गाथा ॥ सिंधासने सुरेसं । सम अरोहि धीर ढीलीसं ॥
अस पयान विचारं । .... ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ बोल्यौ बम्भन सूर तहां । कही सु जिय की बात ॥
सो दिन पंडित देषि हम । जिन दिन चलैं सघात ॥ छं० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना ।

दूहा ॥ तब बंभन कर जोर कहि । सुनौ सु बात नरिंद ॥
पुष्य नषित रविवार है । तिन दिन करौ अनंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोडे देना ।

पद्धरी ॥ रवि जोग्य पुष्य ससि तीय थान । दिन धर्यौ देव पंचमि प्रमान॥
पर उछह दिपन कीनौ मिलान । विग्रहन देस चढि चाहुआन ॥
छं० ॥ १२७ ॥

साहनिय ताम सद्यौ सुरेस । विलहान वाह अप्पौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकुट ऐराक वस । चहुआन कान्ह अप्पौ उतस ॥
छं० ॥ १२८ ॥

आरब्ब उच जति पपराव । समपौ सु राव गोयद ताव ॥
मानिक्क महोदधि मध्य जात । निरषत नैन थक्कै न गात ॥
छं० ॥ १२९ ॥

चमकंत घुरिय विज्जल्ल विभास । समयौ सु राव निढ्ढुरह तास ॥
लहराक तेज अग्गाध भाल । मापत छौनि पुज्जै न ताल ॥
छं० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गरुअत भेस । समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति पधार मझ्झ । समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

रेसमी रोस मानै न मग्ग । कूदत मत पय धर अलग्ग ॥
हयरोह सोह मन्नै सु भेस । विलहान जैत अप्पौ जु हेस ॥
छं० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरवाह बस । कैमास तास अप्पौ सु हस ॥

चेटकी चित्ररूपी रसाल। समयौ सु अद्द जामोन ताल॥
छं०॥ १३३॥

सोभाल मंझ नाचंत थाल। गति रंभ जेम रचंत ताल॥
नप जीह जीह जंपै सुभाइ। समपौ सु साज चावंडराइ॥
छं०॥ १३४॥

गति सुबर भ्रमर महरेस ताजि। समदेहु राज पाहार गाजि॥
रंगेस उंच लछ्छन सु भेस। समपौ सु राव लंगी नरेस॥
छं०॥ १३५॥

रा राम देहु मदनेस साजि। माथुरह सरस कनक्कय मांझि॥
पटखूत पटे परसंग राव। परमार सिंघ कंकन सुभाव॥
छं०॥ १३६॥

बग्गरी देव दै तेजदाम। सिंघली सिंध पामार ताम॥
बहरी सु चाल तेजाल काल। समपौ सु राव मौंहा मुंहाल॥
छं०॥ १३७॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि। महनसी सु जंगम देहु साजि॥
हय बाज साज साजे सुभेस। सो देउ बरन बंधव सुरेस॥
छं०॥ १३८॥

बहुत कुरंगगति कुरंगवाह। बलिभद्र अप्पि उतंग राह॥
सोभाल फाल कनक्क सु देव। रंगाल राव विग्रह बिरेव॥
छं०॥ १३९॥

महरीस जाति महरेस थान। आजानबाह अप्पौ लुहान॥
कनक्क कनक रूपी सु तेव। पहुमीस पाय मनों दस्सदेव॥
छं०॥ १४०॥

गिरवर उतंग गरुअत्त गात। पाहार फट्टि गुरु पाइ घात॥
साकत्ति साज सब्बै सुभाइ। चहुआन समप्यौ अत्तताइ॥
छं०॥ १४१॥

सारसी सूर रथ कित्ति कीम। किंगन समप्पि लोहान धीम॥
हैअवरह अवर मत देहु जाम। बोले समंझ गुरराम ताम॥
छं०॥ १४२॥

आरस दीन सा साहनेस। विलहान देहु सत अवर जेस ॥
सदेव अप्प सुप सिलह दार। समदेहु सिलह सत गात सार ॥
छं० ॥ १४३ ॥

अदर प्रवेस पावक पुज्जि। आसीस मन्त्र दिय गरुअ गज्जि ॥
दिय अतिथ दान हय मगि राज। आनयौ ताम साकत्ति साज ॥
छं० ॥ १४४ ॥

वर पात्र जेम परठत पाइ। मडैति थाल जिम तत्त थाइ ॥
कालमोर जेम मडै काराल। मझ्झमि पीठ मनु कट्ठताल ॥
छं० ॥ १४५ ॥

विसाल उअर अच्छौ पडच्छि। निरपत रथ्थ सूरिज्ज सच्छि ॥
मानिक मनोहर छब्बि लाल। हर वास भास गौसम विसाल ॥
छं० ॥ १४६ ॥

विन चसम चसम समकति दीस। लालप्पि लोह चपैति रीस ॥
अचवत सुच्छ अजुलिय अप्प। चमकात छाह भय तेज वप्प ॥
छं० ॥ १४७ ॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग वाग। वर नह जेम लेयत लाग ॥
मडत उद्ध तडव सु उच। परसत पाइ मनु ध्यान रुच ॥
छं० ॥ १४८ ॥

अति उच हद्ध भर षुरासान। पित मात विमल कुल समवान ॥
अनिय सु साजि सिगार पाट। विजति चोर जिम पुछ राट ॥
छं० ॥ १४९ ॥

चमकात षुरिय दामिनि दमकि। पटतार तार धरनिय धमकि ॥
मगेव चल्यौ चहुआन जाम। जै जया सवद आयास ताम ॥
छं० ॥ १५० ॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन।

दूहा ॥ चढि चलौ प्रथिराज हय। जै मुष वदी जपि ॥
विकसे सूर सुभट्ट तन। कलच सु कातर कपि ॥ छं० ॥ १५१ ॥

जग्य विध्वंसे पंग कौ। धर लुट्टै परवान ॥
मंति सूर सामंत सह। चढ़ि चल्लौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

तैयारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ इक तौ सहबलयं। एक तौ होइ सहसयं वरयं ॥
एक तौ दस दूनं। एक तौ परबलं लष्षं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ सुबर बीर मिलि सकल। सेन राजी रंजन बर ॥
बज्रपाट निरघात। राज चिहुं अप्परि मंगुर ॥
मनों सूर छुटि किरन। समुद छुट्टिय बडवानल ॥
सजे सेन चतुरंग। राज आभंग बीर बल ॥
षोषंद काज जीपन प्रथम। बालुका भंजन सुभर ॥
निड्डुर नरिंद पुंडीर भर। कारन राज अग्गों सगुर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

सेना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना।

दूहा ॥ गोडंडा षल मित्तरी। धर जंगली विहान ॥
यों बंधे सह सूर बर। चढ़ि चल्लौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५५ ॥
है गै बधि बंधन विविध। धन सद्धी ग्रह बीर ॥
चावद्दिसि धर पंग की। ज्यों कलपंतर तीर ॥ छं० ॥ १५६ ॥

गथा ॥ जो धर पंग नरिंद। सो भंजे सूरयं धीरं ॥
ज्यों गुर सूलत अंगं। सौ लग्गे सिंघयं पानं ॥ छं० ॥ १५७ ॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना।

मुरिल्ल ॥ संवर काम चढ्यौ चहुआनं। बालुक्का परदेस प्रमानं ॥
है गै दल चतुरंगी पानं। भ्रम भंजन मन उग्यौ भानं ॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढि चल्यौ राज चुहान। बोलेव सूर समान ॥
गिन लिए सूर सु छित्त। भर सहस सजि दह सत्त ॥ छं० ॥१५९॥
नीसान दून समान। भेरीय साद सुरान ॥
बल बढिय राजस वीर। जनु उपटि समुद गँभीर ॥ छं० ॥ १६० ॥
भए सकल एकत जाम। गुन सकल ग्रह विदु राम ।
अग्गौ सु कान्ह चहुआन। ता पच्छ बलिभद्र जान ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उच्छग अग सनाह। सथ लिए सूर सबाह ॥
मह्देस जंगल देस। चढि चलिय दिल्लि नरेस ॥ छं० ॥ १६२ ॥
मिसि सज्यौ जानि काराल। दाहत ग्राम सु ढाल ॥
मिलि चलिग पोपंद पास। बढ़ि वीर जुद्धस आस ॥ छं० ॥ १६३॥
मन मुष्य साजहि जुद्ध। हनि ताहि कम्महि सुद्ध ॥
कलि कूह मचि करार। धर अग्नि कूटहि धार ॥ छं० ॥ १६४ ॥
पिनि पेह लोपिय व्योम। दिसि विदिसि धुधरि धोम ॥
रिधि मधि लुट्टहि अप्प। वर सत्व सत्व सुदप्प ॥ छं० ॥ १६५ ॥
धर ढरहि भाजहि एक। मधि हनहि आप अनेक ।
बहु मोल वस्त्र समोच। सम हरहि सह्व हि सोच ॥ छं० ॥ १६६ ॥
सचरिय धाह विधाह। टहाय दिसि दिसि राह ॥
द्रुम सैल व्योम सपूर। कलि कूह रत्ति करूर ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सव नैर झगर कूक। सज्जियै अतम ऊक ॥
पोपद नर सुर थान। समपत्त अत्ति उतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

वालुका राय की प्रजा का पीडित होकर हाहाकार मचाना।

मुरिल्ल ॥ छुट्टे दिसा दिसा चहुआन। समर काम समावर जान ॥
परजा मिलिय करै बुबान। [1]सभरि भारथ रह रिसवान ॥
छं० ॥ १६९ ॥

चाहुआन की चढाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ दिसि पहु उड्डिय धोम। भोम लग्गिय आयासह ।

(१) ए कृ-"सभरित भर थर हरि सवान"

निधि लुट्टिय चतुरंग। रंक हुअ राज राजसुं॥
निधि पति निधि घट्टिय। सु रंक बड्डिय लच्छिय पन॥
बाला संधि विसंधि। राग ग्रीषम रिति सुध्धन॥
घरियार घरिय बद्धय घटै। सो ओपम परमानियै॥
निधि पति रंक रंका सु पति। विषम गत्ति गुर जानियै॥
छं० ॥ १७० ॥

पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना।

सुपति पत्ति षोषंद। सुनिय बालुकाराय बर॥
धर धामह कामधज्ज। भुज्ज मंडिय कापाट भर॥
अरि भय किम औसेर। बढ़िय अग्गर न्रप दीनिय॥
राज तेज यों लग्ग। जोग माया क्रम चीनिय॥
अद्यपि न्रपत्ति बहु बल कियौ। नट विद्या चित्तह धरिय॥
प्रथिराज पानि जल बढ़ि विषम। आगत्ति रूप होइ अनुसरिय॥
छं० ॥ १७१ ॥

धोम अंपि देषीय। कान संभरि पुकार बर॥
समै जागि लषि कलंक। जीव अरु रहे नहीं धर॥
रवि नठ्ठौ ससि छिप्यौ। चंद भग्गौ भग्गा सुर॥
पवन गवन नन करै। सीत पालै न अत्ति बर॥
जो चलै मेर धूवह चलै। मिलै सात जोगी तदप॥
जो चलै अरक पच्छिम परक। बल छुट्टै बालुक बय॥
छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुनकर बालुका राय का आश्चर्य्यान्वित और कुपित होना।

धाइ थाइ षो षंद। सुनिय बालुक राव रव॥
लघु बंधव जैचंद। राइ संकेस असंभव॥
सो संभलि कलि क्रुद्ध। जक्क छुड्डिय दिसि दिसि दर॥
नह सुन्यिै अस्तुत्ति। नयर सब गाजि गहब्बर॥
बालुका राइ इम उच्चरै। कहौ बत्त कारन सु कल॥

मम करहु धाह थिर होइ करि। कवन तेग बधी सु काल ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना ।

किन रुद्यौ सुअ तरनि । कहै नैरोपति सजम ॥
आज राज अैचद । कवन उद्दंग करै दम ॥
तबै जाइ धाह्वन । सुनहि मवेस राउ सुअ ॥
दीलीवै चहुआन । तेन उज्जारि जारि सुअ ॥
सुनि वाद वादि नीसान किय । अप्प बोलि सज्जे [1]सुभर ॥
सज होइ चढ़ौ बद्धौ सिलह । अनी बधि आषाढ बर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना ।

चढि आयौ चहुआन । देस विध्वसिय अग्गिय ॥
बर बालुका राइ । वीर बाजे रन जग्गिय ॥
अवित ढीठ चहुआन । बरै वीर सुअ आनी ॥
धर धूसे धन लुट्टि । जम्य धूसे पगानी ॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि । बालुकाराव सु स्रुक्किया ॥
प्रथिराज सेन सम्हौ विहर । ताजी तुग सु नच्चिया ॥ छं० ॥१७५॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन ।

चढ़त राव बालुक्क । आस लग्गी भो भग्गा ॥
सो ओपम कविचद । देव बानीन चिरग्गा ॥
ज्यों नव बल्लभ प्रीति । काम कामी सो जग्गा ॥
सोइ सनेह सुबध । प्रीति लागी तन लग्गा ॥
पुकार सथ्थ सायें चल्यौ । काल सथ्यें गोली चलै ॥
रोर चमक सायें उठै । त्यों बर कवि ओपम षुलै ॥ छं० ॥ १७६ ॥

(१) ए को सुनर ।

चहुआना संजुट्टौ। राव वालुक उठि धायौ॥
छीन लगन पथ दूरि। बरन बरसें बर आयौ॥
तुच्छ दिवस काज बहुत। कान्ह आतुर चित चाइय॥
सबै सेन संमूह। नीर रोसह बरखाइय॥
लग्गयौ रोस सामंत सथ। अप्प थान नन तज्यौ किहं॥
दिठ परत राइ चहुआन बर। बालुक वर साज्यौ समहं॥
छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या।

दूहा॥ सेन सहस बत्तीस भर। चढ्यौ स जंगल जूह॥
नैर छंडि बाहिर चले। तब रज इप्पिय फूह॥ छं० ॥ १७८ ॥

दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना।

कवित्त॥ पंथे षेत करसनी। छूर धावै चावद्दिसि॥
धन लूटत ज्यों रंक। लज्ज लग्गै न वरं तस॥
अंबरीष अस आप। जेम दुर्वास चक्र कस॥
जिम देवासुर देव। सबद जिम तरै कव्वि रस॥
अट्टत्त जुद्ध हिंदू तुरुन। सुनर वीर लग्गे बिरद॥
संप्रत्ति वीर बाराह बर। रुधिर भए निंमल सरद॥ छं० ॥ १७९॥

गाथा॥ रन डंबर अंबर उत्तानं। देषे डहर सेन सगरानं॥
सज किय सेन अप्प परसंसे। आप जाति गुन नाम सरंसे॥
छं० ॥ १८० ॥

सुनियं तामं नाद निसानं। आयौ सेन सम्मुष चहुआनं॥
दल दुअ ताम हुअं दे ठालं। बज्जे नद्द सद्द झूझालं॥छं०॥१८१॥

गाथा॥ दल दुअ हुअ देठालं। गज्जे नाद बीर विसरालं॥
सज्जे सेन सु चालं। बंधे फौज कमध फासि कालं॥
छं० ॥ १८२ ॥

बालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना।

अरिल्ल ॥ बँधी फौज देपी चहुआन। सज्जि किय सेन आप सधान ॥
वधे सिलह सूर सूरान। गज्जै सीस सुभर असमान ॥ छं० ॥१८३॥
सज्जि सेन सामंत सूर वर। गज्जे गेन सु लग्गि मछभर ॥
वधे गरट चले गति मद। मानि सूर सामंत अनद ॥छं०॥१८४॥

दोनो हिन्दू सेनाओ का परस्पर युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ जीवतह कीरति सु लभ। मरन अपच्छर हूर ॥
दो हथान लड्डू मिलै। न्याय करै वर सूर ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चले सज्जि दूनौं सयन। दिट्ठ दिट्ठ करूर ॥
सामिध्रम्म सा क्रम गुर। सो सभारै सूर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रसावला ॥ हिंदु हिंदू भिर। काल हत्ते सुर ॥
एक एका गर। वीर डक्क वार ॥ छं० ॥ १८७ ॥
तार वाजे इर। गेन लग्गा नर ॥
अत दती जर। नाल कड्डै सर ॥ छं० ॥ १८८ ॥
हस्त चीछ पर। धात सोभै सर ॥
झार वडफ्फार। लोह लोह कर ॥ छं० ॥ १८९ ॥
देवतौ सेन र। वज्र नाली कर ॥
पग वीर छर। सूर मत्त गुर ॥ छं० ॥ १९० ॥
सिध छुट्टै पल। वीर मत्त दल ॥
ढाल ढाल ढल। वीर चंपे मिल ॥ छं० ॥ १९१ ॥

वालुकाराय का युद्ध करना।

कवित्त ॥ वर वालुका विसाल। सस्त्र वाहन उचारिय ॥
पग भूमि रतनन। स हथ धार अधिकारिय ॥
मझि ससुद वालुका। पुब्ब छोरा गल लग्गा ॥
रतन पटू सत छंडि। गिरह लय लरनें लग्गा ॥
दल मझि एम पोपद पति। ज्यौं ग्रीषम मावसि रवै ॥
डोलन सु चित्त वन वायते। चल पत्तन कर कानवै ॥छं०॥१९२॥

वालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन।

अँग षतेन बेहि हथ्थ। सस्त्र लागत जड़ धारिय॥
लोह लगत सिलहान। दोष परगत्तिय हारिय॥
लोह संक नन करै। लाज संका न दिसा करि॥
छच प्रगा चूकंत। सूर संकै न पग्ग धर॥
नव बधुअ संक रत्ता गरुअ। कुल संकै कुल बधु सकल॥
कामधज्ज जुध चहुआन सों। सुबर बीर धरि पंच छल॥ छं०॥१९३॥
घरिय पंच साधंत। सूर साधै असि मर नर॥
बालुका अरि राज। सबै भगा जु कग्ग धर॥
पग पुच्छानन दियै। षेल असिवार परिमानं॥
मोष मद्द असि देष। परज रज बंने धानं॥
अति बीर सुधट्ट तजि रोस बर। इम उकांस चहुआन रिन॥
त्रिप जैत बीर बिम्भर भगति। सुबर वीर आरन्न घन॥ छं०॥१९४॥

बालुकाराय का रणकौशल।

बाज सस्त्र छितिमंत। बीर बरषंत संच असि॥
सस्त्र धार बाजै प्रहार। वेताल ताल रसि॥
कमल विमल विछुरंत। कमल नंचत बर बरतन॥
डक्क च्यारि सिर च्यारि। नीर किन्नौ जु बीर गुन॥
सुर बचन रचन सुरलोक गति। काम धाम धामार तजि॥
बालुकाराव चहुआन सों। दुतयि बीर भारथ्थ सजि॥ छं०॥१९५॥

सूरता की प्रशंसा।

चर चालै पय रहै। मान चालै न अचल हुअ॥
मंत अचल कर सुचल। इक न चलंत सूर सुअ॥
अति उतंग दिसि जोति। जोति ऐसे गतिमानं॥
कुटिल चिया चंचल सु। बीज चाव दिसि धानं॥
जिन सुष सु वीर त्रिम्मल सु बर। सार झालै ते जलझली॥
मैं मंत पंथ रुक्के सुबर। सुगति पंथ पंथा षुली॥ छं०॥१९६॥

दूहा॥ सुगति मग्ग पंथा षुली। सबर थापि पति सूर॥
जिन गुन प्रगटित पंड कुल। तिहि सँधारिग सूर॥ छं०॥१९७॥

वालुकाराय का घिर जाना और उसका पराक्रम।

कवित्त ॥ वीर कुंड मंडलिय। परिय वालुकाराय पुनि ॥
चद मंडि ओपम। मनों पावस्स मोर धुनि ॥
सिंधु समान भए। तेज वडवानल तुंग ॥
हेम मभिझ नग धरिय। सूर फिरि मेर सुरंग ॥
जयपत्त जुद्ध वोलिय सुभर। ज वोल्यौ त कर कियौ ॥
चहुआन सिंधु लग्गो मिलन। [1]घर अगस्ति मतइ नयौ ॥
छं० ॥ १६८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन।

त्रोटक ॥ घरिएक भयानक वीर हुअ। वर वज्ज निसान निसोन धुअ ॥
अमय अम षेद कटंत वर। मिटि गाँवर सीस नवाइ गुर ॥
छं० ॥ १६६ ॥

दुहु वीरन वीरह हथ्थ धक। सु मनो कर तोर निसान डक ॥
दुहु वीर विरोधत हथ्थन ही। दुहु दीनह आनि गुमान गही ॥
छं० ॥ २०० ॥

जु परे रुधि सीस कमंछ धरे। सुमनों गिर तिदुअ अग्ग जरै ॥
गज दंतनि सूर दुलग्गि फिरै। तिनकी उपमा [2]कविचंद धरै ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम प्रनार परै। निकसी जनु मध्य भ्रसल ग तिरै ॥
सु किधों ससि निक्करि हथ्थ धरी। निकसो वल लागत फूल झरी॥
घन घाव किये सिर सूर तुटै। तिन की उपमा कविचंद रटै ॥
मनों धर वामन मापन को। वलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
छं० ॥ २०२ ॥

वालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना।

(१) ए चमू। (२) को मति।

कवित्त ॥ मोर परी प्रथिराज। दैपि बालुका मंत गज ॥
चंपि मुट्ठि दिढ़ पानि। सीस बाहीय कुंभ रजि ॥
टुट्टि सीस लुति वरसि। रुधिर भीजै लग्गे भ्रमि॥
सुमनौं मग्ग छुति पान। चंपि निकलिय ओपम तम ॥
जुद्ध स एह मंजी जलह। आदि चंपि सो दिन चरिय ॥
दैवत्त वजह प्रथिराज दुति। छंद चंदकवि उच्चरिय ॥ छं० ॥ २०३॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना। व्यूह का वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ सँभारे सबै स्वामि भ्रम्मिंति सूरं। वरं वंसरम्मं असंसंस नूरं॥
तबै उच्चर्यौ .. दिराजं सहाजं। समं मंत ईसं सु दाहिम्म राजं ॥
छं० ॥ २०४ ॥
समं साजियं फौजं सु औजं कमंधं। करौं साज आजं अनी अन्न मंधं॥
तबै जंपि राजं सु दाहिम्म दष्यौ। नरंनाह कंधं तुसं कास अष्यौ ॥
छं० ॥ २०५ ॥
सुषं अग्ग कारु सु सामंत राजं। गुरूराव गोयंद सम दच्छ नाजं॥
बरं सज्जियं बाइयं निद्दुरेसं। मध्यं रक्षियं अप्प राजगं तेसं ॥
छं० ॥ २०६ ॥
सचे सब्ब रावे सु सामंत सूरं। गुरं बीर वाजिन्न वज्जे करूरं ॥
चलं फौज सज्जे समं भट्ट थट्टं। गहारं भरं सेन देषे गिरट्टं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना।

तबै उच्चर्यौ जंच बालुक रायं। निजं नाम आभासि अप्पं सहायं॥
सनंमुष्ष इष्षै अनी चाहुआनं। दहे देस सीसं गुरं ग्रास थानं ॥
छं० ॥ २०८ ॥
भयौ काम काजं जपं चंद आजं। निजं भ्रम्म मन्ने कुलं क्रत्य लाजं॥
सुने गज्जियं दट्ठ जुद्धं सनट्ठं। मुषं रत्त नेनं तनं तेन बट्ठं ॥छं०॥२०९॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। संग्राम वर्णन।

मिल्यौ चौलुकाराइ गज्जं नरिंद। सम सेल चहुआन करि पग्ग दंद॥
सजी सेन चतुरंग तारंग रुप्प। लग्यौ चंपि प्रथिराज ता गज्ज मुप्प॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उभारी कमान। भिरे सेन कमधज्ज अरु चाहुआनं॥
चले दून सेन मिल बान बान। मनों बूंद भद्द मह मेघ जान॥
छं० ॥ २११ ॥

गजे सूर सूर लगे हथ्थ वथ्थ। दुअ उच्चरे आन ईस दुअथ्थ॥
बजी सार धार सम सार सार। मुष उच्चरे मार मार करार॥
छं० ॥ २१२ ॥

सम बीर बाजिच बाजिच बाजे। धरक्कें धरार सु गो गैंन गाजे॥
तुटैं सीस दीस रुरें रुंड मुंड। परें गज्ज भाजें सु तुट्टै भुसुंड॥
छं० ॥ २१३ ॥

फटै जठ्ठर सठ्ठर स विहार। फारे फेफार डिभरू तुट्टि भार॥
विछुट्टैं उर डिल्लर अंतरेस। भभक्कत श्रोन सश्रोन अनेस॥
छं० ॥ २१४ ॥

कटैं कट्ट बाजत पग्ग करार। मनों कट्ठ कठ्ठारि कूटे कुहार॥
उरा फार फूटत पट्टे उलट्टे। मिले हथ्थवथ्थ सम भट्ट चट्टे॥
छं० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्म दट्ट सनट्ट प्रहार। जराद जर तुट्टि उट्ठत सोर॥
तटक्कत टोप गुरज्ज प्रहार। फटै सीस दीसें विकट्ट विहार॥
छं० ॥ २१६ ॥

मुडक्कत कंध कडक्कत हड्ड। फडक्कत फेफ सरे फस मड्ड॥
दडक्कत श्रोन प्रहारे सपूर। गडक्कत कंध सु धायति जूरं॥
छं० ॥ २१७ ॥

धर सीस हक्कत धक्कक जीह। नचै पग्ग कमंध धप्पंत दीह॥
हहक्कंत हक्कत नाचत वीरं। पल चारु गोमाय गाजत तीरं॥
छं० ॥ २१८ ॥

धहं राइ चौसट्ठि उपट्टि मद्द। नचे ईस मीसं डकं डक नद्द॥
गहै अंत गिद्धी झड़प्पंत तुट्टं। पलं चार चारं अहारंत लुट्टं॥
छं० ॥ २१९ ॥

प्रसारं प्रवारं धनं श्रोन भारं। गहं राइ नादं नदी जेम नारं॥
धलं मंस हड्डं सुथट्टं असेसं। गहै हंस चारी भरै हंस एसं॥
छं० ॥ २२० ॥

हहकार हंकार हकार हकं। हवक्कं हवक्का धरे धीर धकं॥
गहै केस केसं प्रहारै परेसं। हनै छंडि आवद्ध आवद्धनेसं॥
छं० ॥ २२१ ॥

समं सूर वथ्थं लहै सूर सथ्थं। विनानं सु मसं पयं ढीक पच्छं॥
वुलं अप्प ईषे बरै आन ईसं। उकासंत कासं रजे वीर रीसं॥
छं० ॥ २२२ ॥

बिना पाइ घायं करै पग्ग टेकं। हुये षंड षंडं विहंडं विसेकं॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं। परे हथ्थ सामंत सो सूर भारं॥
छं० ॥ २२३ ॥

बरे इच्छि थोरथ्थ नीवीर हूंदं। रसं वीर नारद्द नंचै अनंदं॥
इसों जुद्ध हूतें दुअं जास वित्तं। मिरें मंत माहिप्प ज्यों मंस चित्तं॥
छं० ॥ २२४ ॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना।

दिषे कन्ह चौहान बालुक्क रायं। उदै दिट्ठ सोकी समं सज्जि घायं॥
तवै बालुकाराइ उम्भारीय पग्गं। करै कन्ह हेलं सुहेलं चिभंगं॥
छं० ॥ २२५ ॥

हने बालुकाराइ सो षग्ग झट्टं। कढ्यौ कन्ह गात्तं सु सेलंनि हट्टं॥
हयौ सेल षंडं कमंडं सजरं। सिल्लै फौरि फुट्टै पटे पुट्टि भूरं॥
छं० ॥ २२६ ॥

धरं झारियं कन्ह सेलं जु नंषे। पऱ्यौ बालुकाराइ सो भूमि धप्पे॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं। सबं देषि सामंत आमंत हथ्थं॥
छं० ॥ २२७ ॥

भगी फौज कमधज्ज सा छडि पत। हन्यौ वालुकाराइ देष्यौ समथ्थ
छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ पऱ्यौ राव सारंग। वीर सङ्यौ वडगुज्जर ॥
ईस सीस संभऱ्यौ। सोइ लीनौ स वधि उर ॥
गग दुचित नदि कपि। उमा भै दीन प्रमान ॥
सीस ईस ससिकंठ। हथ्थ वडगुज्जर यान ॥
रुधेव पच पचौ मिलिय। सबर वीर तत्तौ सँगति ॥
पोपद राव झुम्भयौ सरस। स वर बीर भारथ्थपति ॥ छं० ॥ २२९ ॥

वालुकाराय के मारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं का जूझ जाना ।

परतन नर भर भीर। सिधु वढ्यौ चहुआन ॥
जे हरुए उत्तरे। गयौ वहु हथ्थ निधान ॥
कुल भारे रजपूत। रहे पथ्थर परिमान ॥
। राज चढ्यौ चहुआन ॥
वालुकाराइ भारे कुलह। पथ्थर ज्यों सङे रह्यौ ॥
चहुआन वार वज्जी विषम। तत वेर उह्नि न गयौ ॥ छं० ॥ २३० ॥

वालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना ।

चाहुआन भय राज। सुभर वालुका राज वर ॥
अव लुट्टौ घर धेन। अवहि दक्खिझयै पद्दर ॥
धर किपाट वालुका। सूर अतर सपत्ते ॥
पूरन आहुति दीय। पग जग्यह आहुत्ते ॥
वालुकाराइ पजर पऱ्यौ। देपि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भजि दोइ व धि धरि। चर नट्ठा कासी वहर ॥छं०॥२३१॥
तजि सु नारि भजि पीय। विसरि आतुर भय पजर ॥
पिय कोमल सुदरी। परत पिच्छल सस्हर धर ॥
कंचन पत्त पराम। सूर कल मोती धारे ॥
नूत पच परिहार। चद ओपम विचारे ॥
तारक वाल मगलति ग्रह। कै नप सुदरि पारियै ॥

ओपम चंद बरदाइ कवि। जातें चालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥

बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन।

दूहा। ॥ परत सु बालुक राय रन। सहस पंच सम सथ्थ ॥
उभय घटी मध्यान उध। धनि सामंत सु हथ्थ ॥ छं० ॥ २३३ ॥
ढिल्ली ईसय सत्त क्षत। परे सु कटि रन थान ॥
सबे सत्त सामंत कुसल। जै लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि बालुक्काराय। सेन सध्यौ चहुआनं ॥
पंग जग्य बिगरंत। अंग नित मान सु सानं ॥
सार धार झिल्लोर। सेन धुंसे दुज्जन दै ॥
प्रथम रारि परि काम। बलि बारन्न बंमन वै ॥
सामंत सेन एकठ्ठ हुअ। संमुह सेन सु धाइया ॥
गोदंड संड नीसान बर। चंपि चुहान बजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन।

पऱ्यौ जुद्ध बालुका। मीर बद्धा षंधारं ॥
ते सम पंग कुमार। षग्ग बज्ज्यौ बर सारं ॥
मिलि सामंत सरोस। रीठ बज्जी झारारहर ॥
मनों मेघ मह्हि बीज। बाल झंझरि ओराझर ॥
सौ सठि सहस मंभर्भ मिलिय। धनि सामंत सु हथ्थ हिय ॥
मारथ्थ पथ्थ दुत्तौ विषम। चंद छंद बत्त कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयास तूरं। गज्जियं काल आषाढ धूरं ॥
*सजी सेन नाइक दिन मानं। सजियं पति दंती विमानं ॥
छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुसलमान सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना।

* इस छन्द में नीचे की दोनो पंक्तिया तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनो पंक्तिया छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं। पाठ तीनों प्रतियों में समान है।

भुजगप्रयात ॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआन । वजी सार सार सुधार प्रमान ॥
लगी डंबरी रज्ज आयास छाय । निसा पति गिद्दी रुधिरन्न पाय ॥
छं० ॥ २३८ ॥

तहा चद बरदाय ओपम तव्वी । मनों बाद गठी परे जगि रव्वी ॥
मिले जोध हथ्थ तिवथ्थ बकारे । परे चद मद्दीन छुट्ट पचारे ॥
छं० ॥ २३९ ॥

वजे धाइ आधाय धाय घरक्की । मनों नीर मभ्भें तिरजे तुरक्की ॥
लगै टोप तेगा सु तूटत दीसै । मनो मुक्ति छुच्छू छुटे बीज दीसै ॥
छं० ॥ २४० ॥

धरी अद्ध दीह रह्यौ ता प्रमान । तबै बाह्यौ पग पाइक्क सान ॥
सबै मीर वदा तुरक्काम पान । कहैं पकरौ चाहते चाहुआन ॥
छं० ॥ २४१ ॥

धह्यौ पग मोरी सु पधार सारौ । निनें रोकिय कान्ह चहुआन भारौ ॥
छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिन आनि स वीट वर । मिलि रोवरौ प्रथिराज ॥
पति पग हय जग परि । तिहु पुर वज्जन बाज ॥ छं० ॥ २४३ ॥
परि पारस भृत पग धन । लाग निसानति बान ॥
विटि सेन प्रथिराज वर । जानि समुद प्रमान ॥ छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय मे कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज । रच्यौ सामत सूर सँग ॥
चतुरानन वर दिप्प । पह्यौ चिता सजीव अँग ॥
सिरजत लग्गै वार । मरत इन वार न लग्गै ॥
चित्त चेत सिरजू सु जूह । उतकाठ सु भग्गै ॥
इतनौ सु एह अ देह मनि । मरन जुद्ध संग्राम मन ॥
ए जीव रचि फेर न परे । मुगति बध बधे सधन ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दोनो सेनाओं का परस्पर मिलना ।

घरिय अद्धदिन चढ़त। सूर छुटि जुरन सु बद्दे ॥
अप्प अप्प मुष रोकि। अरिन मुष दोऊ सद्दे ॥
अनी सुप्प जरि सुप्प। सोइ उच्चाय सु डारिय ॥
घरिय च्यार सौ च्यारि। जानि धरियार सु मारिय ॥
तट छुट्टि कमंध सु बंधि उठि। भगर थट्ट नट पिल्लयौ ॥
चामंडराय दाहर तनौ। बर दुज्जन भर ढिल्लयौ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चहुआन और मुसलमान सेना का घोर युद्ध।

भुजंगप्रयात ॥ करी ठेलि दूनौ अनी एकमेकं। षटं लष्प दूनं भिरे राव एकं।
पियै बारुनी सार तुट्टै दुहीनं। उतं उथ्थलै मेजि अग्गानि धीनं ॥
छं० ॥ २४७ ॥

गड़े मद्धि अग्गी सजोगीन होई। रजं सत्त सासत्त संसत्त लोई ॥
लगें लोह तत्ते रुधिं घुट घुट्टै। परें कुंभ षग्गे अघं कन्न छुट्टै ॥
छं० ॥ २४८ ॥

परें बथ्थ बथ्थं विरुझझाय छुट्टें। मनों सुक्ति सारी दुअं हथ्थ लुट्टें।
बहें बान कंमान जंबूर गोरं। सकें उड्डि नाहीं तहां पंषि तोरं ॥
छं० ॥ २४९ ॥

महाबीर धीरं लरें ते तरप्फैं। मनों पंग जंगी बली पंष अप्पैं ॥
तहां बीर सों बीर बीरं डकारं। तहां कोपियं राम बारड उपारं ॥
छं० ॥ २५० ॥

हयं असवारं समेतं उठायौ। मनों तापसी ताप भाते उचायौ ॥
घरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्यौ। रिनं संभरीराव चै वेर जित्यौ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जीत होना।

कवित्त ॥ भगिय सेन सा पंग । भगिय चतुरंग सुज मोरिय ॥
बर बालुका सु राय। सेन चहुआन ढंढोरिय ॥
बर श्रृंगार प्रथिराज। हुअ सु तिन बेर प्रमानं ॥
कायर हथिय प्रमान। समुद उत्तरि चहुआनं ॥

वालुकाराय मारौ कुलह । पारथ जिम मध्यह रयौ ॥
दोहित्त पग कमधज्ज कौ । सभरि वै हथ्थह थप्यौ ॥ छं० ॥ २५२ ॥
दूहा ॥ बर वालुका सु राय नृप । निधि लुट्टिय चतुरग ॥
विय सुदेस वर भंजनह । वज्जा वज्जि सु जग ॥ छं० ॥ २५३ ॥

वालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भील गत हुत । सोइ कीनिय करतार ॥
जध गत्ति धरि लक । लक जधा मति सार ॥
नेनह दिद्ध सरोज । केस अहि विध सु किन्निय ॥
परवत सक्क चढ त । मेलि साई सुध वन्निय ॥
भय भज्जि राज प्रथिराज वर । गामनि जित राजन सु गति ॥
तजि आस वास सासन सु पिय । सुवर वीर वीराधि मति ॥
छं० ॥ २५४ ॥

वालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

भुजगप्रयात ॥ जिनें साजतें धूम धूमें नरिंद । लगी धूम आयास सो भजि चद ॥
तुरी वारज राय पोपद वद । तहा वालुकाराय सग्राम सद ॥
छं० ॥ २५५ ॥
तहा वालुकाराय दानै सु मानै । तिनै भजिया भूप घटि चाहुआन ॥
पग पग्ग पद्दे सु धक्का हलाई । जहा पारसीराव सूर गुराई ॥
छं० ॥ २५६ ॥
छतेरी छनेरी मडेरी बरारी । तिन चद चदेरि नैरी निहारी ॥
जिने तारिया कालपी कन्दराय । जिने मडिया जुद्ध प्रथिराज साय ॥
छं० ॥ २५७ ॥
जिने आल पिडाइ राचक चक्के । वर रोरिया दाइ सग्राम सक्के ॥
जिने जग्य जारे धरे गग पारे । जिने सभरी याट तडे निवारे ॥
छं० ॥ २५८ ॥
जिने भजिय भीम पुर भीम भजे । जिने भजिया जाय गोधग हज्जे ॥
जिने भजिय जाय प्रथम सु कासी । भए सूर सामत उत्त उदासी ॥
छं० ॥ २५९ ॥

जिने भंजियं जाय मेवात थ्रामं। जिने बैर सों सेन सज्जे समानं ॥
जिने भंजियं भीम सोमेस भारी जिने राजधानीं सवें पाय पारी ॥
छं० ॥ २६० ॥

जिने आलगी जोग पंडे षषेली। जिने माथुरी मोह मोहंत लेली ॥
जि सारीपुरं रोरि पारा जगायं। .... . . छं० ॥ २६१ ॥

कियं दीन बंबारि प्रथिराज तोरी। घगं षीच षंगार बल्लोच मोरी ॥
तहां ग्रीव बंबारि अग्रीव फूटी। तहां गोधनं धेन चौनान लूटी ॥
छं० ॥ २६२ ॥

जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी। ते तजें पो पीय कांठं सुगोरी ॥
तिनं तीर नह चालहं चाल झांषे। तहां झंपरहि जेम गज झांप लष्षे ॥
छं० ॥ २६३ ॥

तिनं चीर संमीर झारंत तुट्टे। मनों रत्ति रंजं तरं पत्त छुट्टे ॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै। .... ॥ छं० ॥ २६४ ॥

तमंचे सिषर जमदाह लग्गे। .. . . ॥
तिनं अस्त्र प्रज्जारि मिटी म्रग्गएनी। तहां चलहि तिन तेज सुषचंद रेनी॥
छं० ॥ २६५ ॥

तहां बीज फल जानि घन कीर धाए। तहां दसन बालमे दसनं छिपाए॥
तिनं सद्द सहरोस सहरोस संकी। तहां थर हरे थकि रही हीन लंकी ॥
छं० ॥ २६६ ॥

कव्वि रटि रटति पिय पीअ जंपै। एम रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै ॥
॥ छं० ॥ २६७ ॥

वाधा ॥ संबर काम चढ्यौ चहुआनं। कंपै भै चिय दुज्जन वानं ॥
बर छुट्टत नीवी न सम्हारै। लेहिं उसास प्रहार प्रहारै ॥छं०॥२६८॥

अंगुरि एक ग्रहै कर बालं। दूजै कीर निवारति जालं ॥
थान थान विह्वल भइ बालं। मुत्तिन उर बर तुट्टित मालं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

सो ओपम कविचंद सु पाई। मनों हंस कटि पंछ चिलाइ ॥
छं० ॥ २७० ॥

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-12

THE PRITHVÍRÁJ RASO

OF

CHAND BARDAI,

12

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU

CANTOS XLVIII to LIV



महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया।

सर्गे ४८ से ५४ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1908

सूचीपत्र ।

०

दूहा ॥ गय मदा चप चंचला । गुर जघा कटि रंच ॥
　　पिय प्रथिराज सु रिपु कियौ । विपरित करन विरंच ॥छं०॥२७१॥

कवित्त ॥ सुभट सतें सहस । घरिनि तिन पुलिय सुरन बल ॥
　　कुसुम कप धन उअर । भमरे भर करय जु अलि तन ॥
　　कपि करग तारन । अब पल्लव कि कीर मति ॥
　　धाह सबद उच्छलीय । कग्ग कलाठ कंठगति ॥
　　सिर चिहर मोर विसहर गिलिय । भनिस चंद कवियन वयनं ॥
　　चहुआन राव सोमेस सुअ । प्रथियराज इम तुअ दुअन ॥छं०॥२७२॥

पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना।

　　हनिग राव बालुका । भजि पोपद मह्लापुर ॥
　　लुट्टि रिद्धि नव दिद्धि । कनक पट ऋल नग धुर ॥
　　करत सास उद्दास । छोहि जोरी वर दंपति ॥
　　फिर्यौ राज चहुआन । प्रान देषे हरि संपति ॥
　　बाजंत नद्द नीसान वर । धाह प्रकास हिलोर धर ॥
　　भजेव जग्य जैचंद न्टप । थान वयट्ठौ कपि पर ॥ छं० ॥ २७३ ॥

गत घटना का परिणाम वर्णन।

　　सुनि विधात अब दुष्य । जायषे मानव दुष्य ॥
　　चंद दुट्ट अजह्न दहै । विरहिन अप रुष्य ॥
　　रिपु जानत चहुआन । मत इह गत्त न कित्तौ ॥
　　चप चंचल गति मंद । गुरन जंघा फिरि धत्तौ ॥
　　पावर सुगत्ति धरतौ तनह । मन अगम गिरि चढ़न कौ ॥
　　विचारि बत्त भवपित्त मन । तौ बैठति हम गढ़न कौ ॥छं०॥२७४॥

बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना।

दूहा ॥ रन हारी पुकार पुनि । गई पग पंधाहि ॥
　　जग्य विध्व सिय न्टप दुलह । पति जुग्गिनिपुर प्राहि ॥ छं० ॥ २७५ ॥

इति कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके बालुकाराय वधनो नाम अडतालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४८ ॥



अथ पंग जग्य विध्वंसनो नाम प्रस्ताव ।

(उंचासवां समय ।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुँचना ।

दूहा ॥ जग्य उजाये अट्ठ दिन । अठ्ठ रहे दिन अग्ग ॥
तेरसि माधह पुब्ब पष । सुदर पुकारह जग्य ॥ छं० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना ।

पद्धरी ॥ तिन समय ताम कनवज नरेस । क्रत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँवर सँजोग सम जग्य काज । विथ्थुरिय रिद्धि गति विविध राज ॥
छं० ॥ २ ॥

शृंगारि सहर विविधं बिनान । आनद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजै सु भाइ । जगमगत षंभ हिम जरित ताइ ॥
छं० ॥ ३ ॥

बासन विचित्र उत्तान ताम । मंडप्प उच सज्जे सु धाम ॥
बासनह स्रेन विधि बधि बान । सोभत धज्ज बधे सु थान ॥
छं० ॥ ४ ॥

छोनी पवित्र स्रद्धी सवारि । द्रावै सु मंडि सुर सम अपार ॥
गावत थानथानह सु गेव । मंगल अनेक साजो सु भेव ॥
छं० ॥ ५ ॥

जलजात माल तोरन कुसुम्म । बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्म ॥
आये सु न्रपति अनेक थान । उद्दार मत्ति पिति आसमान ॥
छं० ॥ ६ ॥

संमर संजोग लष्षे सु भूप। संपत्त लाज हय गय अनूप ॥
देवंत अत्ति उत्तान थान। प्रगटंत अप्प गुन आसमान॥ छं० ॥ ७॥
चिंतै सु चित्त कामधज राइ। केहरि कंठेर वर मुत्ति[1] काय ॥
संजोग सज्जि नयरी प्रकार। सम कारह साज हय गय सुमार ॥
छं० ॥ ८ ॥

वाजे अनंत बज्जे विवान। बहु नृत्य भारत रंजंत तान ॥
कौतिग सु राज राजै अनूप। क्रीतयंत कंठ सो दिष्ट रूप ॥
छं० ॥ ९ ॥

भूलंत नेन देषत विनान। मग्गंम चित्त साक्षत्य जान ॥
आतस चरित्त साजे अनेव। नाटिक्क कोटि नाचंत भेव ॥छं०॥१०॥
देषहि विवान साजहि सु देव। वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव ॥
इहि विद्धि सत्त अह विर्त्ति जाम। अस आइ कुक्कि पर दार ताम ॥
छं० ॥ ११ ॥

कर पंग मग्ग आगें सु वीर। सर सुक्कि मुक्कि सुमनं प्रसीर ॥
सुनियै न सद्द नीसान भार। दरबार मद्धय इत्तौ पुकार ॥
छं० ॥ १२ ॥

तम पुच्छि ताम जैचंद राज। अवगुन अग्गा किन करिय काज ॥
उच्चंत ताम धाह्न सउत्त। चहुआन राव सोमेस पुत्त ॥छं०॥१३॥
सब देस भंजि षोषंद थान। वालुकाराय हनि देषि प्रान ॥
छं० ॥ १४ ॥

सात समुद्रों के नाम।

दूहा॥ षीर नीर दधि ईष घृत। वारुनि समुद लवन्न ॥
इन सत्तन सम जफाने। बोलिय कामध वचन्न ॥ छं० ॥ १५ ॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम।

कवित्त॥ पूरब दिसि पतिइंद। अग्नि कूंनह अगिनेयं ॥
दच्छिन यम नैरत्ति। कून नैरत्ति सुनेयं ॥

(१) ए.-माय।

पच्छिम अधिपति वरुन। वाय कूँन बहवान ॥
उत्तर हेरि कुबेर। कून ईसह ईसान ॥
ऊरद्ध ब्रह्म पाताल नग। मान षडि दिगपाल कौ ॥
प्रथिराज काल्हि आनो पकरि। तौ जायौ विजपाल कौ ॥
छं० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमत उपारिय। अहंकार उर अंतर धारिय ॥
कहत चंद हरि गर्व पहारिय। सायक षँचि भारथ वग मारिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना।

पद्धरी ॥ दै अधर दंत कंपौ रिसाइ। बुल्ल्यौ सरोस कमधज्जराइ ॥
धन भरौ लष्ष वे सरस वाउ। करि सवालाष नीसान घाउ ॥
छं० ॥ १८ ॥

सज्जौ गयंद सत्तरि हजार। अरु असीलष्ष तिष्षे तुषार ॥
पाइक्क कोरि धानुष्ष धार। स्वाकोरि सजौ वकै झुझार ॥ छं० ॥ १९ ॥
नव कोरि जोरि आतस्स बाज। इत्तनौ सेन छिनमेक साजि ॥
पकरो दुअन जिन जाइ भाजि। पूनी सु भ्रात को ठोर आज ॥
छं० ॥ २० ॥
गहिलेउ पिसुन पारो विपत्ति। जैचंद कोपि बोल्यौ न्रपत्ति ॥
॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जित्ति जगत जैपत्त लिय। दिसि सुरधर उपदेस ॥
छिति रष्षन छिति परस वर। सुनि पगुरे नरेस ॥ छं० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैय्यारी करना।

पद्धरी ॥ थकि वेद वेन विप्रान गान। आनंद सकल सुनियै न कान ॥
करि चंपि राव मुक्यौ निसास। बिग्गर्यौ जग्य मची विसास ॥
छं० ॥ २३ ॥

बंधौं सु चंपि अब चाहुआन। विग्गर्यौ जग्य निहचै प्रमान॥
जोगिनी राज चितंग जोइ। बंधौं समेत प्रथिराज दोइ॥ छं०॥ २४॥
सन्नाह राज बंधौ स बीर। निर्वार करौं चहुआन और॥
आहुट्टराज प्रथिराज साहि। पीलौं जु तेल जिम तिल प्रवाहि॥
छं०॥ २५॥

संभरि जुन्हाइ बुल्लाइ राइ। इक बत्त कहा पिय सुनहु आइ॥
सुनियै न पुन्य सभ मग्ग राज। जुव जसि जुवत्ति अति करिग साज॥
छं०॥ २६॥

पुच्छीस ताम संजोगि बत्त। कहि धाह कौन मोपित विरत्त॥
उच्चरी ताम सहचरी एक। बंधौ सु राज प्रथिराज तेक॥ छं०॥ २७॥
दिल्ली नरेस सोमेस पुत्त। चहुआन पान देषे सउत्त॥
बालुकाराव सम्यौ सु तेन। षोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन॥ छं०॥ २८॥

यह सब सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना।

सुनि श्रवन बत्त संजोगि तथ्थ। चितां सुचित्त गंधर्व कथ्थ॥
संजोगि जोग वर तुम्ह आज। व्रित लयौ बरन प्रथिराज साज॥
छं०॥ २९॥

द्रिढ करिय मंच सम चित्त अत्ति। पितु विरत बुद्धि छंडौ विमत्ति॥
संजोगि ताम जंप्यौ सु एम। मानौं सु मुगाफ इह देहु नेम॥
छं०॥ ३०॥

चहुआन सुबर मोसत्ति मत्ति। छंडौ सु अवर लालिच अत्ति॥
इम जंपि मंच सा निज्ज धाम। छंडेव अप्प विधि ब्याह काम॥
छं०॥ ३१॥

दूहा॥ गंठि जुन्हाई उन्हाइ निजु। राइ बरन निज दान॥
श्रुति अनुराग संजोगि कौ। करहु न प्रभू प्रमान॥ छं०॥ ३२॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना।

कवित्त ॥ बालवेस वय चढत। अम्म रेष्यों न पुच्छि ग्रह ॥
भूमि भूमि न्रिप मिले। जानि वातूल तूल तह ॥
बर सजोगि प्रनाइ। राज बध्यौ चहुआन ॥
बधि बीर प्रथिराज। जग्य मडौ परवान ॥
सज्जै जु काइ भजै कवन। का जानै किम होइ फिरि ॥
पुत्रीय स्वयवर मडिकै। फिरि बधौ दुज्जन असुरि ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ रह सुमत न्रप चिति मन। वजो अवाजन साज ॥
सुनि सजोगि कुमारि ने। हृत लीनौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना।

कवित्त ॥ जग्य विध्वसिय पग। दुअन श्रोतान बढाइय ॥
सुनि सुनि रह सजोगि। चित्त हृत लीय प्रवाहिय ॥
बरों कि बर चहुआन। वार घोज अम्म सारिय ॥
कै छण्णों देंउ प्रान। बरों मनमध्य विचारिय ॥
मन मझ्झ बत्त इत्ती करी। प्रगट न वल बालह करी ॥
पहुपग मत बहु मानि कै। राज राज उच्चित फिरि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

दूहा ॥ पग सुयवर थप्पि तह। सुनिय जुन्हाइय वत्त ॥
बर कमोद जिम सुदरी। रचि वचननि सुनि गत्ति ॥छं०॥३६॥
मा मुरछी धुक्किय धरनि। सुनिय सजोइय बाल ॥
सुहन सुहदी बत्तरी। भुअन परही झाल ॥ छं० ॥ ३७ ॥

अप्प स्वयवर की जरहि। सथ मुक्किय अरि काज ॥
सबै बीर सथ्थह दए। रहि कनवज्ज सु राज ॥ छं० ॥ ३८ ॥

हालाहल की फौज रत। तुतर किय चहुआन ॥
अप्प अप्प कों ह्वै गई। धर जगरी विहान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना।

कवित्त ॥ गथ जंगल जगलियं । राज निरवास देस करि ॥
राजा रैवन जुथ्थ । गयौ प्रथिराज मंत करि ॥
प्रजा पुलिंद नरिंद । समर रावर धर रापौ ॥
चीय चीय साविच । थान थानं न्रप पापौ ॥
सम हथ्थ जुथ्थ की काथ्थ गै । सुबर काथ्थ कविचंद कहि ॥
प्रथिराज राज अरु वीर गति । विपन मझ्झ आषेट गहि ॥
छं० ॥ ४० ॥

राव रैना का भाग जाना।

काइर मुक्यौ नरिंद । पुहप परजंत मधुप तजि ॥
सुके सर तजिहति हंस । द्रुम्म बन म्रगन पत्ति भजि ॥
ज्यौं कलहीत सु पंषि । तजै तरवर नन सेवं ॥
द्रव्य हीन कौं गनिक । तजंत पथ्थर करि देवं ॥
जल तजत कुंभ ज्यौं भिष्ट दुज । जग्य पवित्त न मानइय ॥
भजि थान थान अरि म्रत गयं । बर लालचि सु प्रानइयं ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मानि प्रान की लालसा । तजि साईं सौं हेत ॥
छंडि गए कायर सबै । रहै सूर बधि नेत ॥ छं० ॥ ४२ ॥

केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना।

कुंडलिया ॥ पालिज्जै लहु पुत्त लौं । मानिज्जै गुरु जेन ॥
बर संकट सो भृत्त नै । साईं मुक्यो तेन ॥
साईं मुक्यौ तेन । सिंघ नन होइ न भिल्लं ॥
सौ समंत छह सूर । सम प्रथिराज इकल्लं ॥
धर धूंसे बर पंग । कोस पंची मालिज्जै ॥
मिथ्यौ जग्य कामधज्जा । धज्ज बंधे पालिज्जै छं० ॥ ४३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य विध्वंसनो नाम उनचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४९ ॥

अथ संजोगता नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना ।

*दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रष्षनह । दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुग्गिनि पुरै । गय कनवज फिरि दिष्षि ॥
ढिल्लीवै ढिल्ली चरित । कहैं पग सों सिष्य ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना का उसे आ घेरना ।

कवित्त ॥ इह अप्पानी धत्त । बैर कट्ठै चहुआन ॥
मद्धि प्रात अरु सझ । भयति कपै [1]पगान ॥
पच अग पचास । सोर ढिल्लिय रचि गट्ठे ॥
यों कहत दुत बीय । आय बन बीर सु ठट्ठे ॥
दुसमन दुरग दैवान गति । अब कुरग जम्मी ततरि ॥
गज फुक जेम पूजौ जु इम । चढि अरि समुह न्रप्प भिरि ॥छं०॥३॥
सिध वचन [2]चर मानि । पान असि लष्प सु फेर ॥
सुवर तप्प चहुआन । कोइ समुह नन हेर ॥
भेद न्रपति करिपान । कन्ह लिन्नो उर भान ॥
मिलि ततार कलुधज्ज । तारि कट्ठे चहुआन ॥
वर हस छिपत एकत्त निसि । प्रात अचानक बढ्ढियै ॥
ढिलही वज्र कर वज्र वर । सट्ठि सहस भर चढ्ढियै ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए क को पगान । (२) ए वर ।

* मो प्रति का पाठ यहा से पुन. आरम्भ होता है ।

सिलह अगें करि लीन। गाम मगमें उत्तारिय ॥
सोदागिर ईसब्ब। [1]बीर बढ्ढिउ जस मारिय ॥
अंधारी नव भार। अप्प दूनों संपत्ते ॥
अट्ठ पारि बर चढ्यौ। [2]भेस जू जू बर मत्ते ॥
संजुरन बेन कारन्न सब। भाग चवध्थै चढ्ढयौ ॥
बाजीद षान लूंषे मनों। चूक [3]चोंक बर बढ्ढयौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिड़ार देना।

पार पार बाजीद। धाइ अप्पौ नर कोई ॥
चूक चूक चिंतयौ। सब्ब सामंत जगोई ॥
चूक बीर मानि कै। बीर [4]कैमास जु आइय ॥
सूर सूर आहुट्टि। [5]सब्ब हंसीरह धाइय ॥
बर दीन एक अदीन जुध। निसि सपूह कलहंत बजि ॥
बर जग्ग दट्ठ बढ्ढह परे। [6]जहां तहां हिंदू सु भजि ॥ छं० ॥ ६ ॥

फिर कहंत बन बीर। चरित ढिल्ली चहुआनं ॥
अप्पन न्रप आषेट। सूर सम्हौ सुलतानं ॥
बर दाहिम कैमास। सिंघ चौकी बर घल्ली ॥
आय अब्ब सामंत। बंध प्रथिराज सु चल्ली ॥
बर साम दान अरु भेद दंड। कंका बंक न्रप किज्जियै ॥
सामंत मंत बंधि सु मति गति। सामि संग्राम न छिज्जियै ॥ छं० ॥ ७ ॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन।

एकदेह पहुपंग। बंधि [7]निझझर निसंक भरि ॥
दुतिय देह पज्जून। सुरंभ कूरंमदेव बर ॥
त्रतिय देह तूंअर। प्रहार पांवार सलष्षी ॥
चतुर देह दाहिम्म। धरन नरसिंह सु रष्षौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वीर वढी ऊस भारिय। (२) ए. कृ. को.-भेद।
(३) मो.-चूक। (४) मो.-कैमासह। (५) ए. कृ. को.-हसारह।
(६) ए. कृ. को.-"जह नह हिजन सु भज्ज"। (७) मो.-निडर, निड्डर।

पचमी देह कैमास मति। वर रघुवस कानव विय॥
षट देह गौर गुज्जर अठिल। लोहानौ लगुरि सविय॥ छं० ॥ ८॥

जयचन्द का अपने मन्त्री से संयोगिता का स्वयम्बर करने की सलाह करना।

तब सुमत परधान। पग सब सेन बुलाइय॥
जु कछु मत मतियै। मत चहुआन सु धाइय॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याल आवै कौ नावै॥
जिनहि नाहि दिज्जियै। लाभ [1]सुदरि अकरावै॥
मोमत मत चितै न्रपति। बाल स्वयवर किज्जियै॥
तापच्छ सिध एकट्ठई। फिरि दुज्जन भिरि भजियै॥ छं० ॥ ९॥
दूहा॥ इतनी बत जैचद सो। कही सुमत प्रधान॥
बत मन्त्री जैचद नें। अतर मत भए आन॥ छं० ॥ १०॥
मानि मत पहुपग ने। महल कहल उठि जाइ॥
वर सवर सजोग कौ। पुच्छि जुन्हाई आइ॥ छं० ॥ ११॥

जयचन्द का सयोगिता को समझाने के लिये दूतीं को भेजना।

चौपाई॥ सुनी जत वर वैर जुन्हाई। सहचरि चरी सुरग बुलाई॥
कहि वर वर उतकठ सु बाला। चितै पुच्छि [2]विविरि वर माला॥
छं० ॥ १२॥
सहचरि चरित [3]वरन मोकल्ली। मनो हरि कामन हरी इकल्ली॥
छं० ॥ १३॥
सति कारन चित हरन। सतिका नाक तिहि।
*वर सुमतिका नाम। प्रबोधनि नाम जिहि॥ छं० ॥ १४॥
दूहा॥ सुस्थ सु राजन सुस्थ चित। सुस्थ विलब न धीर॥
पुरुष जु काम काम सचरै। नैन सुता पन पीर॥ छं० ॥ १५॥

(१) ए कृ को सुन्दर। (२) ए कृ को विवर। (३) ए कृ को चरन।
* मालूम होता है कि उपर की चौपाइ के दो अंतिम दो प्रथम पद भूल से खडित हो गए हैं।

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ। सहचरी सलाम कीनौ ॥
हमारी सीष धरौ। [1]संजोगिता कौ हठ दूरि करौ ॥

दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन।

नाराच ॥ परक्खि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि मुक्कने।
तिसाम दाम दंड भेद मारसी विचष्पने ॥
बचन्न चित्त चातुरी न ताहि कोइ पुज्जई।
हरंत मान मेनका मनोहरंन सुझझई। छं० ॥ १६ ॥
श्रवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई।
अनेक विद्धि सिद्ध साध ईस ग्यान पंडई ॥
अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई।
छिनेक में प्रसन्नवै जु जेम मेन डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
कलक्ककलं अलाप जाप ताप छत्त संसई ॥
स्रिषंड ज्यों मिठास बास सासता प्रसन्नई ॥
अनेक बुद्धि सुद्धि सब्ब सुच्छि काम जग्गवै।
सु पाठई चतूर बत्त प्रथंममन्न लग्गवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही।
विषंम जोग भोष तेज जोर सों नसावही ॥
अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही।
कपट्ट ग्यान बत्त मंडि हट्ठ सों छंडावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
प्रचारिका सु चारि जाइ अंगने समुझझवै।
अनेक चित्त चातुरी सु आप मन्न [2]सुझझवै ॥
॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारो। चंचल नैंनीय चंचला बेनी ॥
थावर चित संजोई। थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से वचन।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुर प्रप्प किय।
किम बुझिय मो तात सकिल्लिय एक हिय ॥

(१) ए. कृ. को.-संजोगि।　　(२) मो.-परात्ति।

तब वाले वर तात सयवर मडइय।
कहि वर उतकठाइ माल उर छडइय ॥ छं० ॥ २२ ॥

चौपाई ॥ मिलि मडल राजान्न सु वरई। सो उच्छव वधे सकरई ॥
देषि वाम भोली तजि अग। ते ऊभे दरवारह पग ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूती की वार्त्ता पर कुपित हो कर संयोगिता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ दै वर सेन सँजोग। सषि सहचरि सम वुल्लिय ॥
अवुझ घात वज्रपात। काम वेमो दुष भुल्लिय ॥
[1]परसमाद कै किति। ताहि गगा गुन गावै ॥
वझि पूत रस पढत। क्रन होनह समझावै ॥
सहचरिय वतनि सुन्निय सुवर। चित चल चित वत्त न वकिय ॥
वर भई समझि सजोगि पै। फिरि उत्तर तिन तव्व दिय ॥छं०॥२४॥

पृथ्वीराज की प्रशसा और संयोगिता के विचार।

दूहा ॥ जे वधे पित सकरह। जे पट्ठे पित लोन ॥
ते वट्ठी जन वापुरे। वरै सँजोगी कोन ॥ छं० ॥ २५ ॥
रे सह सह सहचरिय गुन। का जानौ कुल वत्त ॥
जे मो पित वापह कहै। तेमो वधव मत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥
तिहि पुची सुनि गुन दुती। तात वचन तजि काज ॥
कै वहि गगहि सचरौ। पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनत राज अचरज्जि किय। हिये मन्नि अनराव ॥
हौ वरि अवरहि देउ वर। दैवै अवर सुभाव ॥ छं० ॥ २८ ॥
तव पगुरि मन पगु करि। धाइ सवुज्झी वत्त ॥
तुम पुची गुन जानि हौ। कारहु दूरि हठ दुत्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का वचन।

चद्रायना ॥ मो मन मझ गुरु जन गुझझ सु तुम कहौ।
जपत लाजो जीह सु उत्तर लहु लहो ॥

(१) मो मुझझे। (२) ए कृ को परम। (३) मो काहु।

सत्त सेन सामंत सूर छह मंडलिय।
बरन इच्छ बर मोहिय हंति अषंडलिय॥ छं० ॥ ३० ॥

धा का वचन।

दूहा॥ अन दिषि दृत कीजै नहीं। तात मात [1]बरजन्न॥
पच्छि मनोरथ पुज्जि है। मानि सीष धरि [2]मन्न॥ छं०॥ ३१॥
कवित्त॥ बचन समुह संजोगि। बाल उत्तर उच्चारिय॥
अजहूं कनक समूह। तुच्छ जानै नर नारिय॥
मलया [3]पामर पुलिंद। करै इंधन बर चंदन॥
अति परचौ जिहि जानि। काच कीजै अलि बंदन॥
सो सरै पंच पंचौ भयौ। परचै नहिं चहुआन किय॥
संयोगि क्रम्म बर पुब्ब गति। तैंत अली अलि व्रत्त लिय॥छं०॥३२॥

सहचरी का वचन।

सहचरी वाक्य॥ गाथा॥ मुगधे मुगधा रसया। अवरं जे भिन्न रस एवि॥
लहुआ लुहान पुत्तं। तूं पुत्ती राज ग्रेहायं॥ छं०॥ ३३॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन।

संजोगिता का वाक्य।

कवित्त॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति। साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ॥
जिहि लुहार गढ़ि षग्ग। पंग जग्गह घर रुंध्यौ॥
जिहि लुहार सांडसी। भीम चालुक अहि साहिय॥
जिहि लुहार आरन्न। बरै बर मानस गाहिय॥
पावक्क सबर बर नैरि सह। अरनि मंडि जिहिं बारयौ॥
भव भूत भविष्यत व्रत मनह। कुल चहुआनह तारयौ॥ छं०॥३४॥
दूहा॥ अथवा राजन राज ग्रह। अथवा माय लुहानि॥
विधि बंधिय पट्टल सिरह। इह मुष गंध्रव जानि॥ छं०॥ ३५॥

(१) ए. कृ. को.-गुरु जन्न। (२) ए. कृ. को -मन्न।
(३) ए. पर मर कृ. को -पमर।

साटक ॥ आरन्नी अजमेर धुम्मि धमनी, कर मडि मडोवर ॥
मोरीरा मर सुड दड दमनो, अग्नि उचिष्टा करी ॥
रनथभ थिर थभ सीस [1]अहिन, ज्वलदिष्ट कालजर ॥
क्रप्यान चहुआन जान रहिय, घडनोपि गोरी घडा ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सषी वाक्य ॥ तो पुनी मरहट्ट थट्ट सबले, नौमच वैरागरे ।
कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरी ॥
निमोवे हथलेव मालव धरा, मेवार मडोधरा ।
जित्ता तातय सेव देव न्नपती, तत्वान्यनं कि वरे ॥ छं० ॥ ३७ ॥

स्लोक ॥ नमे राजन सवादे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
वरमेक स्वय देहे । नान्यथा प्रथिराजय ॥ छं० ॥ ३८ ॥

संयोगिता की सकोच दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रवननि सहचरि वचन । चित्त गुरुजन सभारिय ॥
रसन वचन चाहत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
समभिलाप गध्रव्व । भयौ किल किचित नारिय ॥
नयन उमडि जल बिद । वदन अब्रू परि भारिय ॥
उपमान इहै कविचद कहि । वाल जदिन सुर सभयौ ॥
उपफेन अमी मभभद्द रह्यौ । ससि काल क उपफानि गयौ ॥छं०॥३६॥

द्रिग रत्त करि बाल । भौंह बकी करि पिक्खिय ॥
सो ओपम वरदाइ । चद राजस मन भज्जिय ॥
सैसव जुवन नरिंद । परसपर लरत विश्रान ॥
मनु सम रप्पत वाल । दुहुन सौ पीझत आन ॥
भौंहन्नि तीर जाने छुरी । दुहुन बीच अड्डी करी ॥
सो रूप देषि सजोगि कौ । उठि सहचरि मतह हरी ॥ छं० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वतह वयन । वयन गये मृत होइ ॥
जा थिर रहै सोई कहौ । हो पूछू तुम सोइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) मो अहित ।

सखी का बचन।

थिर बालै वल्लव मिलनु। जौ जुब्बनु दिन होइ॥
*गयौ जुवन कछु बनत नहिं। रति मंझै घट लोइ॥ छं०॥ ४२॥

संजोगिता का बचन।

रति आग्रह तिन सों करहु। जो तुम सषी समान॥
ज्वाब ज्वाब लजा करौं। मौं तुम तात प्रमान॥ छं०॥ ४३॥

सखी का बचन।

तोसौं मात न तात तन। गात सुरंगरि याह॥
यों जोवन अथ्थिर रहै। अंब कि अंजुरियाह॥ छं०॥ ४४॥

साटक॥ जाने मंदिर द्वार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं॥
जाती फुल्लय [1]पंक जस्य कलया, कंदर्प दीपं प्रभा॥
झंकारे भ्रमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया॥
सोयं तोय संजोय भोग समया, प्राप्तेवसंते छबी॥ छं०॥ ४५॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन)।

कुंडलिया॥ कहि सजोगि सुनि बत्त इह। मरन सरन मुहि एक॥
किम अनि रावह लब्भिहै। दुल्लह जनम विसेष॥
दुल्लह जनम बिसेप। लज्ज सिंगारम थक्की॥
बाहिथवत चहुआन। आस सासा जिय रुक्की॥
बर गुरुजन बिसाहनो। हिंदु हद्द बद्दह हियो॥
सुक जाई सवरीस। उभैं पच्छै श्रुति कहियौ॥ छं०॥ ४६॥

साटक॥ इंद्रो किं अलि अन्यईय अनयो, चक्की भुजंगा सुरं॥
चच्छी चारु विचार चारु भंवरे, चिंचीनि बंका करे॥
तस्थानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे॥
चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महना वरे॥ छं०॥ ४७॥

दूहा॥ ब्रम्ह आइ पहुपंग कै। बर चहुआन सु लेषि॥
सुद्धि नहीं किर बोलु तुहि। रन पत्तह करि देषि॥छं०॥४८॥

* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (१) मो.-चम्पकस्य।

स्लोक ॥ सवादेव विनोदेव । देव देवान रच्छित ।
अनुप्राने प्रयाने वा । प्रानेस ढिल्लीश्वरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दूहा ॥ देहि सही सजोगि दै । निकटति पग कुमारि ॥
जुग्गिनिवै जीवन मरन । लै अलि अप्प विचार ॥ छं० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से सयोगिता का सब हाल कह सुनाना ।

सुनत सहचरी पुत्ति वच । विनसच पुत्ति उदास ॥
उत्तर दीन सु उत्तदिय । पग नरिंदह पास ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दुत्तिन उत्तर उत्तरिय । वुद्धि वध परमान ॥
न्टप आगे वट्टिय न कछु । उत्तर दियौ न आनि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

सयोगिता के हठ पर चिढ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना ।

सहचरि पग नरिंद सजि । कहिय आइ अलि जाइ ॥
वर सजोगि न मानई । चित्त कारहु समझाइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तव झुकि पग नरिद ने । तट गंगा किय ग्रेह ॥
कै वुड्डवि जल मझि परै । कै नैन निरष्षे देह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
षोडस दान समान करि । दीने दुजवर पग ॥
धन अनप चहुआन कै । रष्षि सुरी तट गग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

गगा किनारे निवास करती हुई सयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश ।

झुकि तकिए गंगा तटह । रचि पचि उंच अवास ॥
चहति गही चहुआन कौ । मिटै वाल उर आस ॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ किए गग तट्ट अवास सजोगी । रही सातपन्ने रु छंडी समोगी ॥
वसतारिवास दई सत्त दासी । वीय बमनी मद्द नादीय पासी ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तिय पान पानी सयं दुद्ध धारै । करै व्रत वाला रहीता अधारै ॥
करै जोग ध्यानं सलेप अलेप । सोइ सुप्पन चित्त चौहान देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

फिरै पंषिनी जीव जा ज्यों प्रमानं। इकं धट्ट ध्यानं धरै चाहुआनं ॥
दलं पुब्ब सेतं अवं छन्न राजै। जदं ताव द्वार सिंधारिज साजै ॥
छं० ॥ ५९ ॥

दलं रत्त तायं गुनं होइ जब्बं। तवे नीद आलस्य आवै जु सब्बं ॥
दलं दष्षिनं रूप हुआ प्रमानं। तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं ॥
छं० ॥ ६० ॥

दलं ता वनै रत्ति नीलं वरानं। तहां पत्त उग्गं मनं जंम रानं ॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्णं विराजै। तहां हास उग्गै विनोदंत साजै ॥
छं० ॥ ६१ ॥

दलं बाय कोनं नभं रंग साजी। तहां चिंति चितं उचाटं विचारी ॥
दलं उत्तरं पीत छन्नक लज्जी। तहां भोग सिंगार कांचित्त भज्जी ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दलं गौर छन्नं इसानं जु होई। तहां लज्ज संका सु संगी सजोई ॥
संधी संधि छन्नं मनं मद होई। तहां रोग चिंता त्रिदोषं सजोई ॥
छं० ॥ ६३ ॥

इसो अंबुजं सास मन्नं बनाई। तहां मर्द अंसी सुअं लोक पाई ॥
काहै बंभनी भोग संजोग सिष्षी। तहां गेन बंधं स्वयं जोति लष्षी ॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना।

चौपाई ॥ तव इक दिन इम बंभनि बोलिय। सुत्तिय मन चहुआन संजोलिय ॥
कै चहुआन ग्रहौं कर झल्लिय। ना तन्न छंत संजोग सु हल्लिय ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सुनि फुनि राज वचन इम जंपै। थर हर धर दिल्लिय पुर कंपै ॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मीनह। पंग भयं दुज्जन भय छीनह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता नेम आचरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५० ॥

अथ हांसीपुरप्रथम जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(इक्यावनवां समय।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना।

दूहा ॥ ढुढि फौज जैचद फिरि। वर लभ्यौ चहुआन ॥
चंपिन उप्पर जाहि वर। रहै ठठुक्कि समान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपग। फवज आहट्टि सु पुच्छी ॥
ढीली ते पच कोस। रक लुट्टी गहि लच्छी ॥
फिरि आए न्टप पास। देस दोऊ अरि वस्से ॥
राह रूप प्रथिराज। जग्गि पगह गहि गच्छे ॥
त्रिम्मान भान कूरंभ भुज। हासीपुर न्रप रष्पियै ॥
सामत सबै कैमास विन। दुज्जन मुष्प सु दिष्पियै ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हासी गढ की रक्षा के लिये सामतो को भेजना।

हांसीपुर सामत। कन्ह रष्यौ परिमानं ॥
रष्यौ भीम पुंडीर। सलप रष्यौ सुत भान ॥
रष्यौ जैत पवार। कनक रष्यौ रघुवसी ॥
रष्यौ देवह कन्न। रष्पि उद्दिग कन गसी ॥
वग्गरी राव रष्यौ न्रपति। रा चामड सु रष्पियैं ॥
सामत सूर तेरह चिगढ। गोरो मुष दह दिष्पियै ॥ छं० ॥ ३ ॥

हासीपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

दूहा ॥ न्रप आपेटक मडि कै। ढिल्ली रषि कैमास ॥
पच पच सामत सह। जुग्गिनि पुरह अवास ॥ छं० ॥ ४ ॥
ढिल्ली वै आपेट वर। पहुपगनौ जु त्रास ॥
नैर सु रष्यौ सेन सह। न्रिप हासी पुर पास ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस। भंजि मैवास सबै वर ॥
गुज्जर गोरी पंग। देस दच्छिन सु पत्ति धर ॥
विषम वाप ज्यों तूल। मूल सब अरिन उड़ाइय ॥
बीर भोग बसुमती। बीर रस बीर अघाइय ॥
चामंड राव गोरी दिसा। भोज कुँअर ढिल्ली करी ॥
सामंत सूर असिवर बलह। हांसीपुर अग्रह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
चहुआन। समसूर। सबै सामँत धरिवारं ॥
सगपन सम जुत लाज। समै सामँत पुब धारं ॥
आदर वर चहुआन। हथ्थ अप्पे सुरतारं ॥
हंस किरनि सम राज। राज सोभै हज्जारं ॥
आसनी सीस हांसी पुरह। वर बरषै सुरतान दिसि ॥
सत पच सूर संग्राम रबि। सो नतु दै दैही प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर चढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना।

हांसीपुर सामंत। सुनिय बालोच पहारी ॥
है मारू पतिसाह। तेन वेगम पय धारी ॥
अति बलवंत बलोच। भेद दीनौ पतिसाहं ॥
हांसीपुर हिंदवान। देस अरि मिष्ट सुगाहं ॥
तुम हुकम जुद्ध इन सों करों। अरु वेगम सथ्थे सुभर ॥
मिलि सबै मंत तंतह करै। तौ कढ्ढै हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ हम सुमिया भुसवट करहिं। तुम सहाय हम भीर ॥
सब षंधार बलोच मिलि। षनि कढ्ढै ग्रह तीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना।

इक बरष प्रथिराज बर। रह्यौ ग्रेह तिप थान ॥
चावद्दिसि धर भुग्गवै। बर इच्छा धर मान ॥ छं० ॥ १० ॥
घर बीतिय सत्तिय छुरी। धर नागौर निधान ॥
जिन भुज्जन ढिल्ली धरा। ते रष्षे परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

बलोच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ यो चाहे न्रप सूर । चद चाहै चकोर मुष ॥
बूडत नाव सु कौर । हथ्थ बोहिथ्थ बीर रुष ॥
सूकात नाजह मेघ । प्रज्ज सारी अभिलाषै ॥
आरत तत्त अतरे । बाल सन्तत गुन चाषै ॥
देषियै दुनी चहुआन मुष । लज्ज पत्ति परवत सु गुर ॥
मका चलाइ बेगम न्रपति । तत्त कथा आरत्त सुर ॥ छं० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के को भेजना ।

भुजगी ॥ सय सत्त बेगम दीनी नरिंद । तिन लज्ज पानी मुष मेछ इंद ॥
मह बढ्ढि डढ्ढी लज मुष्ष राची । दियौ धान निसुरत्ति जा मुत्ति जाची ॥
छं० ॥ १३ ॥
मिथानेति पत्नी किरं रान भट्टी । जुलाची चिकत्त विराजी सु घट्टी ॥
मह माहु मती सु सामत ध्रम्म । दियं साहि गोरी सक बीर ध्रम्म ॥
छं० ॥ १४ ॥
घने हेम हून विभूती निनारी । तिनं देषि ह्व्वै र ग्रब्ब प्रहारी ॥
मय मोह मका तिनी जात मन्नी । वियं ग्रेह ध्रम्म काम जात छिन्नी ॥
छं० ॥ १५ ॥

हांसीपुर मे उपस्थित पृथ्वीराज के सामतों का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मय छत्त मध्य महा रस वान । ज्यौ जनु चद कलानि पिछान ॥
हस्यौ नर वाहन नाग नरिंद । सु मोतीयदाम पय पय छंद ॥
छं० ॥ १६ ॥
रहे वर सूर कलानिधि राज । मनों न्रप तेज उदै गिरि साज ॥
रहै अरि आसिय आसय सूर । मनो पवनसुत पव्वय मूर ॥
छं० ॥ १७ ॥
रह्यौ वर वीर सु चामँडराइ । मनों सत पुच तिन धूम चाय ॥
रह्यौ वर वीर चदेलति सूर । अरी घन वाहन ज्यो नद पूर ॥
छं० ॥ १८ ॥

रह्यौ रजि सारँग सारँग गौर। सु रष्पन कों छिति पञ्चन मौर॥
महं गुर जादव जाम प्रमान। रहे ग्रहि आसिय सूर सुजान॥
छं० ॥ १९ ॥

सु मोरिय सादल वीर विवाह। अरी दल चंपन कौ ससि राह॥
वरं वृत दाहिम देव प्रमान। ... ... पारथ के उनमान॥
छं० ॥ २० ॥

धनी धर धोर धराहर पान। सु विक्रम भोज तनें उनमान॥
षिचौ वट षीचिय राव प्रसंग। ([1]च) मरावली बंधन जोति अभंग॥
छं० ॥ २१ ॥

वलोच पहार का संक्षिप्त वर्णन।

बली वृत वाह स जोवनराज। जिनं गर दिल्लिय की धर लाज॥
-नाहन साह सु मंचिय एक। मनों बल भीम अद्भुत टेक॥
छं० ॥ २२ ॥

सतं वर सामंत मध्य सु टारि। रहे वर आसिय साहन च्यार॥
तिनं मधि बंसिय सक्क सद्दूर। तिनं उठि भारथ कंदल भूर॥
छं० ॥ २३ ॥

उभै भुर मध्य सु राजन बीर। प्रषें सुन अस्थि न लिंग्रह चीर॥
तिनें नृप टारिय तेसम अष्षि। सु रष्षिय राजन आसिय पष्षि॥
छं० ॥ २४ ॥

साटक॥ राजं जा नृप रेज राजत समं, दिल्ली पुरं प्रासनं॥
दुर्जोधन सम मान भीषम जुधं, बुद्धंतयं जोवनं॥
निर्जयं च चिकाल वधनं वधं, गोरेनि भा [2]सेसयं॥
सोमिचं च सषा वचंन गुरयं, चेवा गुरं चे सषं॥ छं० ॥ २५ ॥

वलोच पहार का आसीपुर में स्थानापन्न होना।

कवित्त॥ तिन तुरंग गज भंजि। जंग संभरि उद्धारं॥
तिन प्रथिराज नरिंद। वीर लभ्यो नह पारं॥
ते रष्षे आसी नरिंद। चिय हार सु चंगे॥

(१) (च) पाठ अधिक है। (२) कृ.-निभा संसय।

विधि विधिना परिमान । देव देवा दिसि सगे ॥
सुध मध्य विषम धियपत्ति न्रप । परषि रह्यौ ढिल्ली न्रपति ॥
अग्गर सु सकल सुरतान कौ । दिपति दीप दिव लोक पति ॥छं०॥२६॥

बलोच पहार का शाही बगमो के लिये रस्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का उससे नाही करना ।

मध्य पथ सभरिय । चलन बेगक अधिकारिय ॥
मिलि बलोच पाहार । राव चामड सु धारिय ॥
जु कछु भेद सग्रह्यौ । दियौ तिन भेद प्रमान ॥
बिन अग्गा सामंत । जग्गि लग्गिय आपान ॥
बरजए राम रघुवंस गुर । गामी बल लग्गा विहसि ॥
पज्जूनराव पावस पहर । अमर मोह भूले रहसि ॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ सो नागौर सु रष्षि न्रप । अप दिल्ली पुर पास ॥
न्रप अग्गा बिन सूर भर । करिग अट्टत्त सु वास ॥ छं० ॥ २८ ॥

बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामडराय का उसे लूटने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ चढि मक्का बेगम । साहि जननी अधिकारिय ॥
अति सु अम्म माया न । क्रम विग्यान विचारिय ॥
अट्ठ लष्ष हाहून । पट्ट विय द्रव्य रजकिय ॥
सो हथ्थी बर बाज । जाइ पथह सा थक्किय ॥
सभरि सुकान चामंड न्रप । लच्छि लोभ पल मत्त सुनि ॥
बरजयौ बीर रघुवंस नर । तौ पनि चल्यौ अम्म गनि ॥ छं० ॥२९॥

बेगम के पडाव का वर्णन ।

साटक ॥ पास साइर भार मध्य सघन, पानीय मिट्ठ गुन ॥
एक रूपय रेष साहस विधि, रम्य हरम्य तल ॥

जानिज्जै वन हंस अग्ग चकितौ, नोरा वराधिं गुनं ॥
साते तेज फिरस्ता अंग समयं, ऐयं सु वेगम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥

बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना।

कवित्त ॥ पाहारी बल्लोच। पास सामंत सपन्नौ ॥
साथ अग्ग सुरतान। भेद करि भेद सु दिन्नौ ॥
है आमिष्ट सुवास। तमकि सब बीर सु हल्लिय ॥
भर गोरी सुरतान। संग षुरसान सु चल्लिय ॥
बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै। हों षंधार अगियान वर ॥
सोधीर कोन चहआन कौ। लोइ लंक लुट्टै सधर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

सामंतों का रात को धावा करके बेगम को लूटना।

तब सामंत सु तक्कि। चूक चिंतिय सब धाए ॥
अद्ध रयनि परि सोइ। जोर हिंदू भर आए ॥
ग्रहि वेगम सब सथ्थ। लुट्टि लिय षास षजीना ॥
भजि बलोच केइ रुझ्झि। सु बर रन्नौ वह दीना ॥
कुंवार सद्द दस दिसि भइय। अन चिंतत अनवत्त इय ॥
दैवत्त गत्त ऐसी हुइय। लहिय [1]घत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ इह कहंत पुक्कार वर। पाहारिय सौं षेद ॥
वेगम लुट्टि नरिंद भर। लूटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ। सबै सामंत हटक्किय ॥
सब अभंग सामंत। अग्गि वन जग्गि भटक्किय ॥
बारह षान बलोच। कंध संगह दिषि आइय ॥
बिन अग्या प्रथिराज। मुक्कि हांसीपुर धाइय ॥
उत्तर सुमग्ग वंधौ विषम। अद्ध सेन उप्पर परिग ॥
वेगंम सुट्टि वंधिप सयन। लच्छि अमग्गत सह भिरिगि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ अचरज सव सामंत कौं। कहि अव गुज्जर राम ॥
जनति सुबर सुलतान कौ। अरु भर अवधह वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए.- पत्त।

बिन पुच्छे बड गुज्जरह। चूक कन्यौ सामत ॥
तिन सो ए वत्ती कही। गुन में दोस दियत ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामतों से प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ भग्गा वर सब सथ्थ। रही बेगम अधिकारिय ॥
मृतक अग सग्रह्यौ। सस्त्र किन ग्रहि न हकारिय ॥
वार बार दिपि समुप। चीर द्रपदि ज्यो पचत ॥
उहित सद्द गोव्यद। इहित षुदाय सु उचत ॥
असह रु राम इक्के निजरि। विपष वध वधे चलहि ॥
साष्टम पथ जू जू कियो। सुगति पथ एकें षुलहि ॥ छं० ॥ ३७ ॥
सुगति पथ नह भिन्न। एक पथ अधिकारिय ॥
एक नरक सग्रहै। एक मुत्तिय सु विचारिय ॥
अत हत्थ द्वै तिरै। क्राम्म भारो सो वुड्डै ॥
हक्क अस सग्रहै। अहक सा पुरिसह छुड्डै ॥
ससार सकल वुध्यौ फिरै। कहै वध बध्यो न किहि ॥
वुड्डे सु इक्क सारग सुक। सु वुधि बुद्ध तत्तह लहहि ॥ छं० ॥ ३८ ॥
चौपाई ॥ असु सारग पत्तियै बधि। उडै साष द्वै रापै सधि ॥
यो न विचारि सु चामड राइ। मेछ क्राम्म लग्गे गुन चाइ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हासीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहा जा पुकारना।

कवित्त ॥ लूटि सवर चतुरग। लइय चामडराय सधि ॥
मुक्कै कै सग्रहै। के विषडे के विधि विधि ॥
के अहत किय लच्छि। केन लच्छीति समप्पिय ॥
फिरे सब्ब षुरसान। दिसा गज्जनी स रप्पिय ॥
माविस मत्त कीनो नही। हैगै विधि लग्गे विषम ॥
चामडराइ दाहरतनो। मत मची कीनों सुषम ॥ छं० ॥ ४० ॥

चौपाई ॥ तज्जि गाम लुट्टिग बर संगी। हथ मिष्टन सब सथ्य सुरंगी ॥
हांसियपुर फेरिय सुरथानं। पुक्कारी गोरी सुरतानं ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ हीन बदन पत्ती तहां। जहँ गज्जनी सहाव ॥
सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल। विवरि देत सब ज्वाव ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना।

साटक ॥ ए गोरी सुरतान साहिब बरं। साहाब साहाबनं ॥
जैनं जीवत तस्य सेवक हतं। मानस्य मर्द्दं जगं ॥
बीयं जाचत अर्थ बीय धनयो। धन पोपि जीवी धिगं ॥
धिगता तस्यय सेवकाय वरयं। ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

अरिल्ल ॥ राजा षंडन मान प्रमानं। अन्या भंगन तस्य निधानं ॥
सो न्रप भ्रत्यक भ्रत्य समानं। आन सुनत सेवक न मानं ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ विप्प सु षंडन वेद बर। नर षंडन निर ग्यान ॥
त्रिय षंडन इह में सुन्यौ। धिग जीवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का संकुचित और क्रोधित होना।

दूहा ॥ पातिसाह श्रवनन सुनी। जंपी मात निधान ॥
में ग्रब्भह कुक्ख्यौ धर्यौ। सुंठिन षड्डी षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥ धरत ग्रब्भ दस मास। उदर भोगवै दुष्ष तन ॥
सीत जाल बर उष्ण। सवर वरिषा सुमत्त मन ॥
ता जननी दुष देइ। पुत्र ग्रब्भं अधिकारिय ॥
ताहि पुत्र कौं गति। न साहि निहचै विचारिय ॥
साभ्रत्य काल बंधेति न्रक। कहत नयन गद गद बयन ॥
कहतें सु वचन आवै नहीं। दिन विवाने देषे सुपन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दूहा ॥ जाचंग्या प्रति दीन सों। करत सु देखी मात ॥
सुनि गोरी सुरतान कौ। भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतान। सुनि साहाब सूर सव्वान ॥
जा जीवत धरवानं। भुग्गे को तास अप्रमान ॥ छं० ॥ ४९ ॥

अति आतुर अप्पान। पानन पान पाइय पान ॥
हियै धकि धक्कि लग्गि कपानं। दीय पत्तरि सबै फुरमान ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ सुनि श्रवन सूर साहब साहि। धकधकी लग्गि रस बीर छाहि ॥
प्रज्जरे रोस द्रिग रत्त कीन। सीची कि अग्गि घृत होम दीन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

तमतमे तेज वर भर करूर। वद्दन फट्टि किरने कि सूर ॥
विफुरै हथ्थ रस बीर पग्ग। लधने सीह हथवार तग्ग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

फुरमान फट्टि षुरसान पान। वज्जेव सोर सुरवर निसान ॥
रत्तरे रपत उट्ठे प्रमान। भद्दव कि मेघ धन रग आन ॥
छं० ॥ ५३ ॥

ततारषान सुविहान मीर। इहि रत्ति मड वैरम तीर ॥
मत्री जु मत्त जेमत रूप। बोलियै सही सुविहान भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दरवार मीर गजवाज लोइ। पावै न मग्ग भर सुभर कोइ ॥
पोलियहि पग्ग हयगय पलान। किरनानि किरन दुरि रह्यौ भान ॥
छं० ॥ ५५ ॥

वधों समेत सामत सूर। सुविहान साहि बोल्यौ करूर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्य्यादा कथन करके दिल्ली पर चढाई के लिये तैयारी का हुक्म देना।

कवित्त ॥ हिरनकुस पाताल। जाय पग जग मडाइय ॥
सोवनपुर सुर लूटि। पकरि चिय काया धाइय ॥

नारद आइ छंडाय। भयौ प्रहलाद पुत्र तस ॥
तिहि जननी संग्रहन। सुने उर मद्धि रष्षि गस ॥
मघवान सहित दिगपाल दस। मात वयर कज भंजि जिम ॥
सुरतान कहत चहुआन भर। हों पनि गंजहु अब्ब इम ॥ छं० ॥ ५७ ॥

थान थान फुरमान। फट्टि बंधन हिंदू दिय ॥
विधिना सो निम्मयौ। मेटि सक्कै न दियौ दिय ॥
इला नाम धरि हियै। मेछ षुरसानह जोरिय ॥
ज्यों बराम उच्चरै। सेन वोरन गढ़ तोरिय ॥
हक हलाल बोलै न मुष। काफर एघर बर भई ॥
दह बड़े सूर हम साहि कर। तो सलाम कर सुम्मई ॥ छं० ॥ ५८ ॥

ततार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना।

दिष ततार दह करि। सलाम उच्चार वरज्जिय ॥
रहि न बोल ज्यों साहि। दिया उच्चार जु हक्किय ॥
षां ततार वरजे निसान। आसन उर पानं ॥
जु कछु मत्त मत्तियै। हुकम दीना सुरतानं ॥
मक्का मुकाम पीरान की। करिव आन बल बंधियै ॥
मादरं पिदर मानें न दर। निमक हलाल न संधियै ॥ छं० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ थान थान फुरमान फटि। बंधन हिंदु नरिंद ॥
दै दुबाह सों निम्मयौ। को कढ़ै कविचंद ॥ छं० ॥ ६० ॥
कोक कढ़ै विधिना लिषी। आज साह बल तेज ॥
मानों सात समुंद ने। तज्जि म्रजाद असेज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
मरजादा सत्तों समुद। अमित उलंघी आज ॥
मानों घन के देव दुति। नाग विरोधन पाज ॥ छं० ॥ ६२ ॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान।

कवित्त ॥ नाग भूमि सिर तजै। चंद छंडै सुचंद कल ॥
कालिन मान उग्गई। पथ्थ मुक्कै सु बान छल ॥

रघु सुग्यान छंडई । भीम छंडै बल बधै ॥
रूप छंडि मारद । कद छंडै हर संधै ॥
मुक्कै जु जोग जोगिंद ज । कर पिरस्त छंडै गुनह ॥
इत्तने धीर छंडै जदपि । साहि न कस मुक्कै मनह ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ मन मुक्कै सुक्कै सुइत । इत गोरी सुरतान ॥
सकल सेन सज्जे न्रपति । सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन ।

सुनिय मीर मीरन चवै । देपि मप्पिरह मीर ॥
जितौ वास्स सुरतान कौ । तितौ न दिष्यौ तीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पद्धरी ॥ देष्यौ न जाइ आलम अदब्ब । थरहरे मेच्छ षुरसान सब्ब ॥
कर जोरि जोरि सब रहे ठट्ट । उच्चरै सेन वोलत गट्ट ॥
छं० ॥ ६६ ॥

उभ्भै सुमीर ढिग ढिग विसाल । वोलै न मुष्प सनमुष्प काल ॥
सुरतान निजरि बर भई ताम । दह वेर हूर वर करि सलाम ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अंगुरी टेकि इल पा ततार । दह करि सलाम वोलयति बार ॥
जिय हुकम जोइ सो मोहि देउ । उच्चरो मत सोजीव हेउ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना ।

दूहा ॥ चौसठि वेर सुइत्त वर । फेरि फिरि सुरतान ॥
सो पहराए मत्त गुर । दै किताव परिमान ॥ छं० ॥ ६९ ॥
दै किताव पहिराइ चर । नर नरपति मन साहि ॥
आसौ पुर जो भजई । इहै तरा गुन आहि ॥ छं० ॥ ७० ॥

शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरकीब पूछना ।

सुन्यौ मन मत्री सुमत । कहत साच सुरतान ॥

जौ अंगन प्रति भंजियै। लियें ग्रेह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ पति प्रमान इक्करिय। करिय जंगम सु सत गुन ॥
अरि आवत संग्रहै। कारा चंपै सु काल मन ॥
अरि निद्दुर साहरी। सबल मंची इक्षप्पन ॥
इतें होइ जो हथ्थ। आन ग्रह संच सकै धन ॥
जम जोति दून दह मंत गुन। सत्ति मस्सूरति बोलि बर ॥
तत्तार षान षुरसान पति। करौं मंत जा लेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना।

न्रपति न्रपति जो होय। सोइ नह राज राज बर ॥
न्रपति ग्यान जो होइ। बेद सग्यान तत्त नर ॥
बेरं कोबिद अछरि। काम अन्रपतिथ म सुंदरि ॥
इत्त न्रपति जो होइ। भए न्रप तौर समुंदरि ॥
तिहि कहे षान तत्तार बर। आसीपुर भंजन वलह ॥
ता पच्छ लगे ढिल्ली धरा। बैर वत्त बुझझै षलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ षां ततार जंपै सुबर। हम बंदे सु विहान ॥
जु कछु साह अग्या दियै। करें बनें हग्गान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सुने श्रवन तत्तार बच। हिंदवान लै जाइ ॥
मात रीस बेगम मिटै। सोइ सु लुट्टै जाइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का ततार खां से प्रश्न करना।

षां ततार वर वेन सुनि। दै आसन अरु पान ॥
जु कुछु मंत तुम उच्चरौ। सोइ करौं सुविहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥

ततार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना।

कवित्त ॥ करि सलाम तत्तार। मतौ सैमुह उच्चारिय ॥
लच्छि सुभर प्रथिराज। सबै हंसीपुर धारिय ॥
हसम हयग्गय मीर। सज्जि चतुरंग सेन बर ॥
मीर बँदा षुरसान। मुक्कि रहै अप अर धर ॥
सामंत बंध सुनि साहि बर। तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

सो मति मत बधै न्टपति । किति बोलि [1]भर तर पढै ॥ छं० ॥७७॥

हांसीपुर पर चढाई होने का मसौदा पक्का होना ।

षा हसेन आदत्त मन । सुमति कियौ परिमान ॥
आसी पुर भजन भरै । इह करि मत निधान ॥ छं० ॥ ७८ ॥

शहाबुद्दीन की आज्ञा ।

कवित्त ॥ रे अमत तत्तार । मतौ जानै न प्रमान ॥
ए हिंदू हम वधि । सीस लग्गै असमान ॥
हम दल भज्जत देषि । तुम्म गिनियै तिन मान ॥
अब हम बचि कुरान । फतेनामा धरि पान ॥
पापड सस्त्र अग्गें छिपै । मे भजो दुज्जन अरी ॥
चहुआन सेन हासीपुरह । लुट्टि गाम उभ्भा भरी ॥ छं० ॥ ७९ ॥

तत्तार खां की प्रतिज्ञा ।

हासीपुर पुर विपुर । करो सु विहान तेज वर ॥
तो गज्जानिय सुद्ध । हासि मडौ जु अप्प धर ॥
अरि भजे तन भजि । मार मारह करि मोरों ॥
जौ बंधों सामत । साहि तसलीम सु जोरो ॥
ता दिवस षान तत्तार हों । धार धार चढि उत्तरो ॥
सुविहान आन चहुआन सों । जौन जुद्ध इत्तौ करो ॥ छं० ॥ ८० ॥

शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना ।

दूहा ॥ पाहारी बल्लोच तहँ । करि सलाम सुरतान ॥
हम बदे हाजुर निजरि । दै हासीपुर थान ॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त ॥ सत्त बेर पाहरी । तेग बध्धी जु अप्प कर ॥
सब वड्डों सामत । बीटि षुरसान देउ धर ॥
षान साहि साहाब । बीय सन मज्जिय अप्पिय ॥
षा षुरसान ततार । षान विय सरद सु थप्पिय ॥

(१) ए को भरत ।

चतुरंग अनीं हिंदू दिसा। बर गोरी सज्जिय सुवर ॥
जुमा रत्ति ससि बंदि बर। चढ़े सेन सु विहान भर॥ छं० ॥ ८२ ॥

गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना।

दूहा ॥ सिंधु मुक्कि गए दूत बर। तजि गोरी सुरतान ॥
को विधि पवर्त चंपई। अवनी उनमी भान ॥ छं० ॥ ८३ ॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना।

कवित्त ॥ कूच कूच उप्परे। षान षुरसान ततारी ॥
हसम हयग्गय क्रूर। दुसह दुज्जन मक्कारी ॥
दल बद्दल सु विहान। क्रूर पच्छिम दिसि उट्ठे ॥
खज संकार गल बंधि। सिंघ मद नद्द सु छुट्टे ॥
दिसि दुरग अभंग हांसीपुरह। सजिय सेन संमुह धवै ॥
धर दहन बीर चहुआन की। हठ ततार संमुष चवै॥ छं० ॥ ८४ ॥

तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन।

त्रोटक ॥ चढ़ि षान ततार सुरंग अनी। द्रिगपाल चमक्कि निसान धुनी ॥
पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसै। जनु भांवरि भान सुमेर लसै ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दिसि रत्त रषत्त उठंत बरं। मनों बद्दर मद्दव के दुसरं ॥
गुर गोरिय साहि सु संधि ग्रसी। सुनि राज नरिंद नरिंद रसी ॥
छं० ॥ ८६ ॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा। सु मनों जमकें जमजोति जिसा ॥
षल की षल संकर अंदनता। सुमनों सुर दादर के जमिता ॥
छं० ॥ ८७ ॥

रत रेत मयूष इला चमकै। मनु इंद्रवधू नभ तें दमकै ॥
चहुआन सुनी सुरतान दिसं। बढ़ि आज अवाज सुराज रसं ॥
छं० ॥ ८८ ॥

जिनके गुन वीर सुमत चवै । तिनकौ बल देवन तत्त ग्रमै ॥
जमसे दरसे जम ते गरुअ । सुरतान तिपास रहे धुरय ॥छं०॥८९॥
धुरमानय पानति अग्ग अनी । तिनके बर पासन राज यनी ॥
ढलकै ढल ढाल ढलक्कि लता । तिर साइर काइर त कलिता ॥
छं० ॥ ९० ॥

अन कै न्त्रप गोरिय साहि बर । सुमनो घन भूमि उतार उर ॥
चढ़ि चल्लिय उग्गि काला दुसरी । न्त्रिप राज नरिंद सु जुद्ध हरी ॥
छं० ॥ ९१ ॥

सब सेन गरिष्ट इती बलय । न्त्रप राजन राजन सो कलय ॥
रन सुच्छ उट्ठे वर काक लसी । दिमि बक विराजत पच्छ ससी॥
छं० ॥ ९२ ॥

इतने गुन चार चरत कर । उतरे अमरोज नरिंद घर ॥
अम रोज तजै ग्रह सिंह बर । चहुआन सुनी रन राज उर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

तत्तार खा का पडाव दस कोस आगे चलाना ।

कवित्त ॥ कूच कूच उप्परे । राज अग्या नन मानै ॥
सुवर जूह सुरतान । सैन चावद्दिसि वानै ॥
उगन हार ज्यों प्रात । लेन उग्यौ बर गोरी ॥
तिमरलिंग जुलिक्कन्न । राज रजक्कन्न सु जोरी ॥
धनि धनि धनि गोरी सु वर । बलभग्गा भग्गौ न बल ॥
आसीस भजि ढिल्ली पुरा । नब लग्गो मेवात पल ॥ छं० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ जानि सकल गोरी सुवर । गरुअ मत्ति तत्तार ॥
ते भारथ्थ सु दत्त पति । पत्ति ना लभ्यौ पार ॥ छं० ॥ ९५ ॥
पा तत्तार सुरतान वर । नर नाइक सुरतान ॥
दस कोसे आसो हुतें । आय सपत्त थान ॥ छं० ॥ ९६ ॥

शाही सेना का आसीपुर के पास पडाव डालना ।

कवित्त ॥ आय सपत्ते थान । वीर आसी गिरद्द करि ॥
सरद काल ससि मित्त । परी पारस सुमत धर ॥

बहुरि चंद बरदाय। साह लग्गा कस धारिय ॥
चावद्दिसि रूंधये। मंत पावै न विचारिय॥
गढ़ रक्खि सज्यौ साहस बली। सेन सजत लग्गौ धरी।
चामंडराइ दाहरतनौ। अमर मोह भूलौ सुरी॥ छं० ॥ ९७॥

शाही सेना का हांसीपुर को घेरना।

चढ्यौ षान तत्तार। सोर हल्लं द्रिगपालं॥
धुरि निसान धुनि पूर। नाद अंबर लगि तालं॥
पावस चंद सरद्द। घटा घुंमरि ज्यों घेरै॥
ज्यों अषाढ़ रति भान। घुम्म धुंधरि नन हेरै॥
गोरी सपन्न सज्जिय सुभर। ज्यों छयल्ल कुलटा सबसि॥
अवसान अचानक त्यों पुरह। हांसिय षान ततार ग्रसि॥छं०॥९८॥

मुसलमानी जातियों का वर्णन।

षां षुरसान ततार। बीय तत्तार षंधारी॥
हबसी रोमी षिलचि। इलचि षूरेस बुषारी॥
सैद सैलानी सेष। बीर भट्टी मैदानी॥
चौगत्ता चि मनोर। पीरजादा लोहानी॥
अनेक जाल जानैति कुल। विरह नेज असि ग्रहि कारद॥
तुरकाम बीच बल्लोच वर। चिंत पूर हांसी मरद॥ छं० ॥ ९९॥

दूहा॥ सुनि अवाज निसुरत्ति षां। षां ततार षुरसान॥
वे रज गुर सम्हे सजिग। मचिग जुद्ध विहमान॥ छं० ॥ १००॥

यवन सेना की व्यूहरचना वर्णन।

कवित्त॥ षां ततार हरावल। वाम दच्छिन षष पंषी॥
षां निसुरत्ति पहार। उभै सेना पग लष्षी॥
षान षान षुरसान। चंच चञ्चु रचि कसानी॥
कांगुरेस गष्षरह। जंघ मंडे दल मानी॥
षिलची षुरेस भट्टी विहर। पुंछ सु इन पच्छह सुबर॥
महनंग अंग मारूफ षां। छच सीस धारिय सुभर॥ छं० ॥ १०१॥

युद्ध वर्णन ।

हनूफाल ॥ परिधाय स्तूर प्रकार । पावार वज्र सु भार ॥
　　कढ़ि पोलि षग्ग विहथ्थ । भारथ्थ ज्यों सुनि पथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
　　षग षगन वाहै पत्ति । मनो वाज सेन कि पत्ति ॥
　　भारथ्थ काथ्थं जोति । असि अग विज्जि विभोति ॥ छं० ॥ १०३ ॥
　　वजि गुरज वीर प्रहार । सँग टेहि चौसठि तार ॥
　　दुहु पास अंत रुरत । गिध गिधी गिद्ध गहत ॥ छं० ॥ १०४ ॥
　　तर वेलि चढ़ि कनाल । मनु गहिय सस सिवाल ॥
　　तुटि मुंड तुंड सुभट्ट । मनु भग्गर रचि नट्ट ॥ छं० ॥ १०५ ॥
　　रुधि छच्छ धर वर रुंड । पावक्क झर उठि कुंड ॥
　　कहि लेहु लेहु सु स्तूर । भारथ्थ वित्त करूर ॥ छं० १०६ ॥
　　पग झूर उठ्ठिक वार । झर गिद्धि सौ पति पार ॥
　　परिरम रंभ स आइ । तन तनक तनक न पाइ ॥ छं० ॥ १०७ ॥
　　मुकि मुक्कि माननि जाइ । फिरि पिवन दष्पिन आइ ॥
　　मिस हारि रंभ स अग्गि । इन सब मनोरथ भग्गि ॥ छं० ॥१०८॥
　　कि अगनि दभ्भ्कै ताइ । तन धार धार सुलाइ ॥
　　वर वीर रोस सुगत्ति । तहां सोप इष्पि न मत्ति ॥ छं० ॥ १०९ ॥
　　दल सुभर अल्हन मज्झि । जुरिभोम कान्ह अलुझ्झि ॥
　　उच्छरि अरी अरि भीर । चानूर मुष्टक वीर ॥ छं० ॥ ११० ॥
　　घरि पच भिरि भारथ्थ । दिन अस्ति भूप न तथ्थि ॥ छं० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना ।

कवित्त ॥ सुवर स्तूर सामंत । वीर विरुझाइ सु धाए ॥
　　नपि कोट गढ ओट । कोट किप्पाट ढहाए ॥
　　सत छुथ्थौ सामंत । राम वुथ्थौ रघुवंसी ॥
　　रे अभंग सामंत । साहि वधो बल गंसी ॥
　　विना न्टपति जो वध । कित्ति चावद्दिसि चल्लैं ॥
　　सार धार तन पडि । वीर भारथ्थ न डुल्लैं ॥

[1]नन तजौ मंत बल सत्त गहि। गरुअ अश्व पंडोति षग ॥
उबरै लोइ इत्तौ करौ। करौ सूर की रत्ति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन।

कवित्त ॥ विहसि राव चामंड। कहै रघुबंसराइ बर ॥
तुच्छ सेन सामंत। साहि गोरी अभंग भर ॥
दंति घात आघात। षग्ग मग्गह कट्टारिय ॥
गुरज बीर गोरीस। सेल भंभरि भर भारिय ॥
महनसी मेर माकू मरइ। सरद तेज ससि मुष फुल्यौ ॥
पाहार बीर तूंअर उतंग। सार धार नां घर डुल्यौ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बंद होना ॥

भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
सघन घाइ आवत्त। मेर तत्तार होइ बर ॥
चढ़ि हांसीपुर सूर। षेत हुल्यौ न दीन दुहु ॥
उतरि मेर असि वरन। गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥
बहु षग्ग सूर सामंत रन। झोरी पान षुरेस परि ॥
मिलि मेछ मेछ एकोन किहि। रहे सेन ठट्ट विहर ॥ छं० ॥ ११४ ॥

समरि संग तत्तार। बज्जि नीसान षेत रहि ॥
हय गय रन [2]विच्छुरहि। रुद्र भूमिअ सु बीर बहि ॥
निसचर वीर [3]उभार। भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥
बज्जि घाइ कहि उठत। नचै चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद्द नद्द नंदी सु बर। बीरभद्र सुर गान बर ॥
इन भंति निसा बर मुहरी। बर हर हर बज्जे ससुर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह। मुगध महिल ज्यौं बंछै प्रातह ॥
कन्ह नाह लोहान महा भर। रा बड़गुज्जर किल्हन सुभ्भर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

(१) ए-मन। (२) ए-विछुर नाहिं। (३) ए-उभारी।

गढ मे उपस्थित सामतों के नाम ।

कवित्त ॥ वर पीची अचलेस । गरुअ गोयद महनसी ॥
उद्दिग बाह पगार । नरा नरेसिघ समरसी ॥
उभै बध मोरीय । राव रानिग गिरेस ॥
देव कन्न साषुलौ । जुद्ध पारथ्थ बिसेस ॥
सलषान भीम पुडीर भर । जैत पवार सु वग्गरी ॥
चामड राइ कनक सुभर । रघुवंसी सिर पध्धरी ॥छं०॥११७॥

दोनो सेनाओ में युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले । प्रात धाइ धरियार ॥
रोस लगे हिंदू तुरक । मनु बज्जत कठतार ॥ छं० ॥ ११८॥

युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना ।

भुजगप्रयात ॥ असी असि सम्त वधी पान बल्ल ।
सु षग्ग पिती पान सो वीर चल्ल ॥
चवै चल्लि चार सबै रग बीर ।
तजी गाभ वार चढी धार धीर ॥ छं० ॥ ११९ ॥
अए अस्स अस्स उपमा प्रमान ॥
मनो षेत षड्डै किसान रिसान ॥
मिलें सूर धार दल मेल सान ॥
परी जानि बुद समुद्रेन पान ॥ छं० ॥ १२० ॥
तजे कोट पान सबै सूर घेरी ॥
मनो भाव रभान सुम्मेर फेरी ॥
परे षग्ग जद्दौं उजत्तोत सारी ॥
मनो देवल्ल बज्जि काल पार पारी ॥ छं० ॥ १२१ ॥
घय भेदि घाय अधायत रासी ॥
निकस्सी परै अद्ध सा सूर कासी ॥
कटे बध काबध सो बध पारी ॥

मनो बद्धि विम्भाय भग्गी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पयं भग्गि सो डाक ही षग्ग धारी ॥
मनों वामना रूप भै भीम मारी ॥
रुधी घट्ट ज्यों फुट्टि सन्नाह सारी ॥
तिनंकी उपंमा कवीचंद धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥

मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी ।
जलं जावकं सोभ पन्नार पारी ॥
हयं छिंछ उट्ठी रुधी छिंछ तारी ।
हथं वक्र अरद्ध दूअद्ध पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥

तिनंकी उपमा कवी तं कहाई ।
जलं जावकं पावकं को बुड़ाई ॥
ग्रही केस उड्डे उतमंग पथ्यी ।
तिनंकी उपमा कवीचंद अष्षी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

मनों अप्प ग्रेहं अवानंति वारं ।
चली नभ्भ तें चंदनं सुक्कि धारं ॥
भगी धायन भूमि भा प्रान पारं ।
मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥

बजी धाय अघघाइनं ग्रीव पानं ।
फिरें केत रक्की जलं मशिराफ मानं ॥
उड़ी छिंछ सब्बैं दलं रुद्धि जग्गी ।
मनो दीपती हिंदुनं हद्द कग्गी ॥ छं० ॥ १२७ ॥

षटं सत्त उभ्भै सुरं लोक बग्गी ।
फिरी फौज तत्तार की धाइ गग्गी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या ।

कवित्त ॥ अद्ध सेन अध परिग । परिग दंती सत एकं ॥
अयुत अयुत अस परिग । पयह को गनै असेकं ॥
दसत दून बानैत । घाय झोरी करि लिन्ने ॥
पंच पेंड़ पंचास । सेन भग्गा तिन दिन्ने ॥

पछ पुछ पान अलील तब। अति आतुर असिवर धरिय ॥
भग्गौ न मीर मो मीर सुनि। अब मजो हिंदू ररिय ॥छं०॥१२९॥

अलील खा का प्रतिज्ञा करके धावा करना।

सुनि सामत निसान। पान अलील उभ भरि ॥
मनहु अग्गि घन हत्त। आय डडूर समर्धरि ॥
हुगोरी धर कोट। राज [1]अड्डो चहआनी ॥
मो उभ्भै कुन सूर। भोमि विलसै सुरतानी ॥
दूह वाहिन सेन अग्गें धरिय। जाय सूर मुष पग्गयौ ॥
तिन सार मार सामत दल। पच डोरि पच्छौ गल्यौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

दोनो ओर से वडे जोर से लडाई होना।

दूहा ॥ तमकि सूर सामत तब। झुकि लग्गे फिरि पग्ग ॥
लपट झपट ऐसी वहै। ज्यो [2]जज्जर बन अग्गि ॥ छं० ॥ १३१ ॥

लडाई का वाकचित्र वर्णन।

विराज ॥ छुटे अग्गिवाज, मनों नभ्भ गाज। चढ़े सूर सूर, नभे रक नूर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

वहै वान भारी, मनों टिड्ड चारी। दुती सोभ आन, कवीका वषान ॥
छं० ॥ १३३ ॥

दिसाय न्टमल्ल, मनो नाग हल्ल। परै वप्प धाय, मनो वज्र लाय ॥
छं० ॥ १३४ ॥

करै कूह कैक, हुअ एकमेक। वहै पग्ग धारी, अभूत सरारी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

होवै षड षड, धर रुड मुड। वकै मार मार, मनों प्रेत चार ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जुटै सूर हथ्थ, मनो मल्ल वथ्थ। परै भूमि सार, मनों मत्तवार ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) को-कृ अड्डो। (२) ए वज्जर।

अए काए षेतं, बधे बंध नेतं। छुटी अंषि पट्टी, मनों अग्गी छुट्टी॥
छं० ॥ १३८ ॥

षगे मग्ग बाहं, अरी वन्न दाहं। परे नाग ठानं, कलं कूट जानं॥
छं० ॥ १३९ ॥

रनं नेज ढल्लं, मनों केलि पल्लं। सोहानों अजानं, तुट्टे पान टानं॥
छं० ॥ १४० ॥

वहै संग भारी, निकास्सो करारी। तिनं घाव सद्दं, करै कुंभ नद्दं॥
छं० ॥ १४१ ॥

जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं। उठे छिंछ अंगं, मनों अग्गि दंगं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दुती ओप जानं, प्रवारी प्रमानं। पऱ्यौ षान अल्ली, धरारं विहल्ली॥
छं० ॥ १४३ ॥

भगे साहि ठट्टं, गए दस्स वट्टं। भद्री षित्ति ताजं, दियं जित्ति बाजं॥
छं० ॥ १४४ ॥

सामंतों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना।

कवित्त ॥ भइय जित्ति सामंत। सेन भग्गा सुरतानं॥
अप्प सूर सब कुसल। षित्ति रष्षी चहुआनं॥
उभै सहस परि मीर। सहस इक बाज प्रमानं॥
परिय दंति सतएक। करिय अच्छरि वर गानं॥
जै जया सद्द आयास हुअ। धाव सूर गोरी धरिय॥
वित्तयौ कलह भारथ्थ जिम। कही चंद छंदह करिय॥ छं० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुद्ध वर्णननं नाम इक्यावनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५१ ॥

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(बावनवां समय ।)

तत्तार खा का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भाति भाति की यवन सेना एकत्रित करना ।

कवित्त ॥ हसम हयग्गय लुट्टि । लुट्टि पष्षर रषतान ॥
तत्तारी षुरसान । हाम भग्गौ सुरतान ॥
सुनि भग्गा सब सेन । हाय करि पट्टि सु हथ्थ ॥
पुच्छि षवरि बर दूत । कहिय भारथ बत कथ्थ ॥
रगतैत नेन साहाब सजि । पैगबर महम्मद भंजि ॥
फिरि सज्यो सेन भसुचित्त करि । हांसीपुर जीतन सु कजि ॥
छं० ॥ १ ॥

विअष्षरी ॥ सज्जिय सत मत सुरतान । दस दिसि धर दिन्ने फुरमान ॥
हब्स हरेव परेव परारिय । मर भमर भष्षर भर भारिय ॥ छं० ॥ २ ॥
समरकन्द कसकन्द समान । बल्लक बलोच तकी मकरान ॥
कदल्ल वास अधम्म इलास । रोही सोह उजब्बक रास ॥ छं० ॥ ३ ॥
पूनकार ऐराक पधार । साहबदीन मिले दल सार ॥
धुम्मर वृन्न सिरै तुछ रोम । जाति अनत गिनै बुन भोम ॥छं०॥४॥
घोरमुहा केइ सुष्पर क्रंन । चष्य कारूर मुषं रत ब्रंन ॥
इन सर काध विवाह अजोन । दुअ दुअ दुम्मि भषै दिनमान ॥
छं० ॥ ५ ॥
जानै धार अनी बथ मस्स । जानि गिरब्बर सिष्षर चस्स ॥
तानै सिनि गिनि जोर विभार । गोन चढ़ै जिन टक अधारं ॥
छं० ॥ ६ ॥

बंधे दो दो तीन जुआनं। तिन साइक सत सत्त प्रमानं॥
साबद् बेधिय लाघव सारं। पंप हनै पह दिष्ट प्रहारं॥ छं०॥ ७॥
टारैं अनी अनी साइक्कं। मुंठि अभूल रसै चित किक्कं॥
मंद अहार सबै फल आसं। पारसि मभ्भ फ़ विवानि प्रहासं॥छं०॥८॥
करै रगब्ब सरब्बर वानं। जानि कि व्रच्छ विहंग बुलानं॥
बंधिय जूसन सारपि गातं। जानि जुरी नव नोथ जमातं॥
छं०॥ ९॥

सजि पष्षर लष्षर है साजं। पंपपरी वर उड्डन काजं॥
गज घुंमर धज नेजर वानं। जानि कि भद्दव मेघ समानं॥छं०॥१०॥
करिय टमंक चढ्यौ हय नादं। फट्टिय जानि समंद अजादं॥
तर झंगर गिरि पद्धर धारं। उड्डिय रेन डिगे द्रिग सारं॥छं०॥११॥
धर धुंमर लगि अंमर थानं। सुनियै सद्द न दीसै भानं॥
है गै रथ दल अंत न जानं। आसिय दिसि हल्लिय सुविहानं॥
छं०॥ १२॥

वरन वरन की व्यूहवद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना।

कवित्त॥ साहब सुनि सुरतान। समुद व्यूहं रचि धाइय॥
अष्ट सेन रचि अष्ट। ईष्ट करि सेन बनाइय॥
एक लष्ष सारद्द। सुभर असवारति साजं॥
दंती पंति विसाल। अग्ग सज्जे अगिवाजं॥
पावस्स थान मानों प्रगट। दिस दिसान नीसान दिय॥
आसीअ चिंत इक दौर करि। आनि सुभर घन घेरि किय॥
छं०॥ १३॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना।

दूहा॥ घेरि सुभर साहाबदी। कहिय बत्त चर चार॥
कै झुभ्भहु बुभ्भहु सपरि। कै निकरौ अग्ग दुआर॥ छं०॥ १४॥

शहाबुद्दीन का संदेसा पाकर सामंतो का परस्पर सलाह और वादविवाद करना।

कवित्त ॥ सुवर सूर सामंत। बीर विरुझाइ सु धाए ॥
बडगुज्जर रा राम। राइ रावत्त सहाए ॥
सम दुरग सो सीस। बीर लोकिग असमान ॥
कित्ति सुकति भर सुभर। बीर बीर विरुझान ॥
कूरंभ राव पज्जून दे। गयौ हरप सामंत बर ॥
तम पषै मरन दीजै नहीं। मरहु तुम्ह जिन पर सु धर ॥छं०॥१५॥
सुनिय मंत कूरंभ। मतौ जानहि सु मरन वर ॥
जीवन मंत जानंत। साम्भ्रमजाइ भ्रम्म नर ॥
हम बीरा रस भज्ज। जोग जीतन सिर बधी ॥
हम अभज अरि भज्ज। मंत जानै जस संधी ॥
रुक्कयौ हंस पंजर सु पंच। सो पंजर भजहिति भिर ॥
जानियै जगत तनु तिनुक वर। अरि बधन बधेति फिरि ॥छं०॥१६॥
सुवर बीर सामंत। मन्न लग्गे विरुझान ॥
रा चामंड जैतसी। राम बडगुज्जर दान ॥
उद्दिगबाह पग्गार। कनक कूरंभ पजून ॥
षीची रा परसंग। चंद पुंडीर स वन्न ॥
महनंग मेर मोरी मनहु। दोऊ बीर बग्गरि सलष ॥
देवक्कन कुंअर अल्हन सुवर। लषिय सोभ भुज बर विलष ॥
छं० ॥ १७॥

सामंतो का भगवती का ध्यान करना।

दूहा ॥ निसि चिंता सामंत सह। उद्दिग बाह पग्गार ॥
मात बीर अस्तुति करै। सत्त सु मगन हार ॥ छं० ॥ १८ ॥
फुट्टि सरोवर नीर गय। अब कि बधै पालि ॥
तेमन सत पयान किय। इह भावी इह काल ॥ छं० ॥ १९ ॥

हासी के किले मे स्थित सामंतो के नाम और उनका वर्णन।

कवित्त ॥ निड्डुर बर हरसिंघ। बीर भोंहा भर रूपं ॥
बरसिंहरु हरसिंघ। गरुत्र गोयंद अनूपं ॥
राज गुरू रा राम। बली बंभन रस बीरं ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। गौर सग्गर रनधीरं ॥
चालुक्क बीर सारंगदे। दई देव दुज्जन दहन ॥
सुलतान सेन संमुह मिले। गात जु हांसीपुर गहन ॥ छं० ॥ २० ॥

चोपाई ॥ पुर हांसी दिसि दष्षिन कीनी। बीय सूर सम्है अपु लीनी ॥
चक्की चवसठि जोगिनिकारी। दिसि दच्छिन उर सम्हो भारी ॥
छं० ॥ २१ ॥

कुछ सामंतों का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना।

कवित्त ॥ उदिग गयौ निक्करै। सुतौ मरनह तें डरयौ ॥
समर सूर निक्करै। सु फुनि अलगें उत्तरयौ ॥
चावंड रा निक्करै। सुहड सांवला सहित्तौ ॥
गोयँद रा गहिलौत। सु फुनि निक्करै बिगुत्तौ ॥
साषुलौ सूर भोंहा सुतन। कस कथ्था भारथ करै ॥
इत्तने राव गए निक्करे। देवराव क्यों निक्करै ॥ छं० ॥ २२ ॥
ए सामंत अभंग। मेर धुअ मंडल जामं ॥
सेस सीस रवि चंद। सु भुअ मंडल अभिरामं ॥
एउ टरें कोउ बेर। जोग जुग अंतर आयौ ॥
अटल एक सामंत। जुद्ध जोगा रस पायौ ॥
दैवान देव गति अलघ है। नन गुमान कोइ कर सकै ॥
एकैक मत्त चूकै सबै। जित्ति कोइ जाइ न सकै ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत लोग चूक गए तो क्या।

राम चुक म्रग हत्यौ। सीय लिय रावन चुक्यौ ॥
हनुअ वत्त नारद्द। भरथ चुक्कवि सर मुक्यौ ॥

विक्रम जीव जतन्न । काग आमिष मुष मंडिय ॥
इन्द्र अहल्ल्या काज । सहस भग काया मंडिय ॥
नल राय दमती कारनें । और नाम जानौ न उन ॥
सामंत दोष लग्यौ इतौ । मतौ एक चुक्क्यौ न कुन ॥ छं० ॥ २४ ॥

देवराय वग्गरी का वचन ।

साहि मलिक साहाव । दीन जिहि द्वारै वद्दिय ॥
जेन द्वार निक्करौ । जेन निक्करै न कढ्ढिय ॥
सिर तुरक्क भार पडिह । सहित धर जाह सरीरह ॥
हु सभोह पहुचेन । तनो निकलंक सरीरह ॥
साषुलौ सूर सामित्त छल । देवराव कटि वटि मरै ॥
ता नथ्थि पुत्त बापह तनौ । अम्म द्वार होइ निकरै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कल्हन और कमधुज्ज का वग्गरीराव के वचनो का अनुमोदन करना ।

सत छुट्टत गोयद । सत्त सामतन छुथ्यौ ॥
वर पीची अचलेस । धार धारह तन तुथ्यौ ॥
सत छुथ्यौ उदिग्ग । मरन डर ड-यौ अवाहिय ॥
सत छुट्टत नरसिंध । लग उत्तरि पति नाहिय ॥
मुक्यो न सत्त कामधज्ज ने । नाम वीर काल्हन न्टपति ॥
वरि कानकराव परसंग भर । दीपतन रवि तन दिपति ॥ छं० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खां का तलवारे बांधना और हांसी गढ पर आक्रमण करना ।

मुक्त सत तत्तार । तेग वधी सत वध्यौ ॥
मिलि आए सुरतान । सेन गोरी ग्रह सध्यौ ॥
आनि साहि साहाव । नैर हासीपुर चल्यौ ॥
सुन्या सूर सामंत । कौन निक्करि सत डुल्यौ ॥
लच्छी सुमति आमत्त वर । वार बार वर वधियै ॥
असि पच्छ कढ्ढि वधौ सुबर । पढि कुरान क्रत सधियै ॥छं०॥२७॥

*चन्द्रायन ॥ भषे पङ्गुली मंस सरूव बल मुक्कई। काजी कत्ता कुरान अग्गा नन चुक्कई॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सही। हिंदवान गढ़ मुक्कि गहा अप्पा रही॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त ॥ सजे सीस गयनंग। रह्यौ रुप्पे रन मांही ॥
सबल सेन सुरतान। परिय पारस परछांही ॥
हक्क धक्क किलकार। करै आसुर असमानं ॥
गोर नार जंबूर। बान रुक्के रह भानं ॥
पावें न मझ्झ पंषी पसर। विसर नह बज्जे सबल ॥
सांषुलौ सुभर जुथ्थौ समर। उदधि मझझ लग्गौ अनल ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात फट्टं तिमिर। मिलिय संग तत्तार ॥
करत कूंच तुट्टे सुभर। गढ़ लग्गे चिहुं वार ॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ षां ततार गढ़ घेरि। ढोल बज्जे बज्जानं ॥
दो दस दिन सामंत। जुझ्झ बज्जे परमानं ॥
पन्न पान सोवन्न। दीह तिन सूरन पाइय ॥
गयौ बीर पाहार। नाम किन सूरन साइय ॥
पारथ्थ जीत भारथ्थ सह। गोपिन रषि अपुबल तिया ॥
हथ धनुष आइ बंनर बली। सीय कज्ज अपुसह किया ॥छं०॥३१॥

असपूर तत्तार। झंझ बज्जी मग सुद्धी ॥
ईकल्लो देव कांन। बान अर्जुन मग बुद्धी ॥
और सबै सामंत। माहि बिग्राह आलुद्धी ॥
मरन ग्भार उद्दिग। बिहार बीरा रस बंधी ॥
सांषलौ सूर सारंगदे। तिन बंधी लज्जी जगत ॥
उबरै सूर सामंत सौ। जेन भिरत पच्छइ मरत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

* मूल प्रतियों में इस छन्द को चौपाई करके लिखा है ।

देवराव बग्गरी की वीरता।

अनल मझि देवराज। परे पारस दधि गोरी॥
लहरि सेन बाजत। धार झार। झकझोरी॥
वज्जि धार विभ्भार। मार मारह मुष जपहि॥
सूर मत्त रन रत्त। कलह कायर उर कंपहि॥
लगि सार धार रुधि छछ छुटि। सहस सूर उठ्ठहि लरन॥
आवद्दि सेन अद्धो सु अध। अद्ध अद्ध लग्गौ भिरन॥ छं०॥ ३३॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन।

भुजंगी॥ परे अद्ध अद्ध सु अद्ध अधान। भिरै अद्ध अद्ध रहै साह थान॥
अगे दंत पती चले साह सूर। प्रलै काल मानो हलै दक्षि पूर॥
छं०॥ ३४॥

उतै पारसी मीर बोलै करार। इतै सीस हक्कै धर मार मार॥
बहै सूर सूर लगै धार धार। मनो झल्लरी वज्जि देव सुधार॥
छं०॥ ३५॥

गहैं दंत दंती उपारंत सूर। मनों भील कड्ढै गिर कंद मूर॥
परै पीलवान निसान सु पील। हन्यौ वज्जि सैल सवप्प कपील॥
छं०॥ ३६॥

वहै षग्ग धार धरगे निनार। मनों चक्क पिंड कुलाल उतार॥
उठे श्रोन बिंद रत धार लग्गी मनो लग्गि तिंदू प्रलै काल अग्गी।
छं०॥ ३७॥

बहै रत्त धार अपार सु दीस। मनो भद्द मभ्भै वहै नद्दि ईस॥
बिहू बाह बाहै लगे सूर सूर। मनों प्रीति हेत मिले आय दूर॥
छं०॥ ३८॥

बहै जम्मदढ्ढ बहै पारवार। मनों मोष मग्ग किवार उघार॥
परै लुथ्थि पथ्थ उलथ्थति पान। मनो मीन कुहै जल तुच्छ मान॥
छं०॥ ३९॥

रजै ईस सीस करै रुंडमाल। रमै भूत प्रेत किलक्कत नार॥

ग्रहै अंत गिद्धी चढ़ै गेन मग्गं। मनों डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं ॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नद्द सद्दं विहंगं सुनानं। रजै ईस मानं सुरं सत्त पानं ॥
भरै षेचरी पत्र चौसट्ठि चारी। श्रवै भोमि श्रोनं पलं पल्लहारी ॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जाम एकं अनेकं प्रकारं। परे सूर सेनं कहै कोन पारं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना।

दूहा ॥ देवक्रन्न सुरलोक बसि। हयं नरं घर गज भानि ॥
नाग असुर सुर नर सुरभ। बढ़ि मारथ्थ बषान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना।

कबित्त ॥ जीति समर देवक्रन। धार पति चढ्ढिय धारं ॥
निगम अग्ग अजमेघ। द्रभ्भ थल दुग्ग अचारं ॥
रथ रंभन भर थक्कि। रब्बि थक्यौ रथ लोचन ॥
बंध इंद्र सर बंध। मंदु बारा रहि सोचत ॥
शिव बंध सथ्थ रथ जार चढ़ि। भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर ॥
इह करिन कोइ करिहै नहीं। करो सु को रजपूत धर ॥छं०॥४४॥

देव क्रन्न वर बीर। धीर मर भीर अहीरं ॥
चौच्यालीस प्रमाण। तुट्टि तन धार सु धीरं ॥
थुति सदेव उच्चार। करै अस्तुति दै तारी ॥
सिर तुट्टै धर उट्ठि। भिरन कढ्ढी कट्टारी ॥
अरि मुष्ष गयौ चढ़ि चिंत अरि। तनु धारा हर बिंटयौ ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन। करि कुट्टा जिम कुट्टयौ ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली।

भुजंगी ॥ पन्यौ देव क्रन्नं सु भूनिंग जायं। जिने वास लोकं सयं बंभ पायं ॥
पन्यौ बीर मारू नवं कोट रायं। जिनें जूह लग्गे भुजं काम पायं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

प-यौ रानि गिरि राव वीर पताई। जिने पान जद्दो ढहायौ पताई ॥
प-यौ वीर मोरी उभै वध सथ्थ । भजे जूह सप धली हथ्थ वथ्थ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

प-यौ पंच भाई सपच अभग। ढहे जूह वैरी लगै जूह अग ॥
प-यौ सापुला सूर नारेन इद। जिन जाम पेद्यौ करी दूरि दद ॥
छं० ॥ ४८ ॥

परे राव कूरंभ पज्जून जाय। जिने लोक मे लोक सलोक पाय ॥
प-यौ पच पचायन पुज राज। जिने चपि वैरी कुलिगति वाज ॥
छं० ॥ ४९ ॥

प-यौ वग्गरी रूप नर रूप नाह। भगी जानि मोरी तुटी जू सनाह॥
प-यौ वैर वाराह वैरी पचार। जिने सार झार दुझार हकारं ॥
छं० ॥ ५० ॥

प-यौ गुज्जरीराव रघुवसराय। हय अस्ति सस्त्र किन कान पाय॥
प-यौ पग्ग पिनी सु मची नरिद। मरत सजी पौमर वित्ति कद ॥
छं० ॥ ५१ ॥

परे इत्तने सूर भारथ्थ वित्ते। डरे सूर ते वार रिन मुक्ति पत्ते ॥
छं० ॥ ५२ ॥

एक सहस सिपाहियो के मारे जाने पर भी सामतो का किला न छोडना।

दूहा ॥ रा देवग रहत रन। सहस एक बर वीर ॥
तामे एक कमध पिलि। तिन संघारिग मीर ॥ छं० ॥ ५३ ॥
वाने विरद वको वहै। वकौ धान अलील ॥
दस सहस सम मीर बर। तिन लीनो गढ कोल ॥ छं० ॥ ५४ ॥
कोट मझि रजपूत सौ। तिन सझी दरवार ॥
गिरद बाज चिहुकोद फिरि। मीर पीर सिरदार ॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न मे हासीपुर का दर्शन देना।

हासीपुर प्रथिराज पै। चद सुपन वरदाइ ॥
धवल वस्त्र उज्जल सु तन। पुकारिवे न्रप राइ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन ।

हांसीपुर उच्चार वर । कोट सेन सुथितान ॥
अजहूं हूं भग्गी नहीं । करि उप्पर चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥ उभै दीह गढ़ ओट । सकल बज्जै सु बान अग ॥
अग्गबान कम्मान । सार सिंधुर अभंग जग ॥
ता पच्छै सामंत । मंत कीनौ परमानं ॥
नंषि कोट गढ़ ओट । मस्त लग्गे असमानं ॥
न्रिप राज अन्यौ आसी सुन्यौ । सुपनंतर आसी कहिय ॥
ढिल्ली न्रपत्ति ढीली धरा । ढीली ह्वै अग्गें रहिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥
हांसी पुच्छै पहुमि । राय तुं काइन भग्गिय ॥
मो बभीष पम्मारि । तेन भू दंड विलग्गिय ॥
तिन ए रस उच्चरै । चिया छल अब्ब गमिज्जै ॥
जै सिर पड़ै तो जाहु । कज्ज सहँ छल किज्जै ॥
सहसा परि रुकुम्मै मांघुली । एह अचिज्ज पिष्पन रहिय ॥
देवराव सूर षंडे परिग । ताम तुरक्क संग्रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना ।

दूहा ॥ सुनिय बचन प्रथिराज ने । हांसी भारथ वित्त ॥
अम दुवारि निक्करि सुमर । देवराव परि पित्त ॥ छं० ॥ ६० ॥
इह भविष्य चिंतै न्रपति । भयो करुना रस चित्त ॥
रुद्र बीर अरु हास रस । ए अपुब्ब कथ वित्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ सुनत राज प्रथिराज । बोलि कैमास महाभार ॥
तम मंची मंचंग । मंच रष्षन सामँत वर ॥
हयति नट्ठ गज नट्ठ । नट्ठि रधि वासह नट्ठी ॥
सोच सु नट्ठि सनेह । नट्ठ गुन विद्य अनुट्ठी ॥
त्यों सेन नट्ठ हांसीपुरह । मंत उप्पजै सो करौ ॥
कैमास मंत मंती सुमत । मति उच्चारन विच्चरौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ मंत्रि मंत कैमास कहि। राजन चित्त विचार ॥
ए सामंत अमंत मत। कोइ देवान प्रकार ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना।

कवित्त ॥ कहै मंत्रि कैमास। पास रावल जन मुक्कौ ॥
वह आहुट्ठ नरेस। वाहि बिन मंत सु चुक्कौ ॥
तुम आतुर अति तेज। और मिलिहै चित्र गौ ॥
जनु प्रजलती अग्गि। मद्धि घ्रत सचि तरंगी ॥
इम मंत्रि मंत्र गिर राज दिसि। दिय पत्री समर बिगति ॥
दिन दिवस अवधि पंचमि कहिय। दिसि हांसी आवन सुगति॥छं०॥६४॥

रावल समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना।

दूहा ॥ सुनि रावर आतुर पर्यौ। पवन पवंग प्रमान ॥
इक सगपन साहाइ पन। लषि घर बिरद वहान ॥ छं० ॥ ६५ ॥

हांसीपुर को छोड़ कर आए हुए सामंतों का पृथ्वीराज से मिलना।

कवित्त ॥ मुक्कि राज दुज दोइ। बेगि सामंत बुलाए ॥
कछुक लज्ज कछु सहमि। मिलत सिर नीच नवाए ॥
चामंड रा जैतसी। राव बडगुज्जर कन्ह ॥
षीची राव प्रसंग। चंद पुंडीर महन्न ॥
पज्जून कनवां उद्दग पंगर। दोऊ वीर बग्गर सलष ॥
दोउ कन्न कुअर अल्हन सुवर। मिले आय राजान भर ॥छं०॥६६॥
मिलिग आय गोयंद। नरे नरसिंघ महाभर ॥
रेनराइ उद्दिग्ग। बिरदपागार बाह बर ॥
सूर सूर संग्राम। समर सामंत अधिकारिय ॥
मिलत राज प्रथिराज। दिये आदर बर भारिय ॥
हम कज्ज लज्ज तुम सीस पर। एह वत्ति मन मत धरहु ॥
देवान गत्ति न्त्रिम्मान मति। भइय वत्त चित्त न धरहु ॥छं०॥६७॥

दूहा। ॥ कहिय सूर राजन सुनहु । तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संग्रहै । तौइ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को सम्हाा बुझा कर सांत्वना देना।

कवित्त ॥ इक्क वार सुग्रीव । त्रिया तारा नन रष्षिय ॥
इक्क वार पारथ्थ । चीर पंचत चष दिष्षिय ॥
इक्क वार श्रियपत्ति । जमन अग्गौं धर छंडिय ॥
इक्क वार सुत पंड । भोमि छंडिय वन हिंडिय ॥
तुम सूर नूर सामंत बल । कलह कथ्थ भारथ करन ॥
सुरतान षान मोषन ग्रहन । महनरंभ बंछहु मरन ॥छं०॥६९॥
बोलि राज सामंत । कहिय तुम जुद्धनि अज्जार ॥
चंद्रसेन पुंडीर । राइ रामह बड़गुज्जर ॥
बोलि कन्ह नर नाह । बोलि चहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ । बोलि वरनं वर भाइय ॥
पज्जूनराव बलिभद्र सम । लोहानौ आजांन वर ॥
सजि सेन ताम चल्लहि न्नपति । उदधि जानि हल्लिय गहिर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का सामंतों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना।

कोलाहल कलकलिय । रत्त द्रिग वयन रत्त किय ॥
कहिय सूर सामंत । मंत नीसान सद्द दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध । राव न सुनै अप कन्नह ॥
देस भंग कुलअंत । होइ नहिं देषत धन्नह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि । करि प्रयान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि । मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि।

दूहा ॥ तिथि पंचमि चहुआन चढि । अति आतुर बर वीर ॥
बर प्रधान पावास बर । इह सह परिगह तीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढाई का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ सेन प्रथिराज राज । मानहुँ कि राम कपि सीय काज ॥
सामंत नाथ कटि तोन धारि । मानो कि पथ्थ गौ ग्रहन बार ॥
छं० ॥ ७३ ॥

रगतैत नैन भ्रकुटी कराल । मानो कि ईस त्रयनेत्र झाल ॥
बंकुरिय मुछ लगि भौह आनि । मानो कि चंद बिय किरन बानि ॥
छं० ॥ ७४ ॥

चिहुफेर सूर विच चाहुआन । मानो निषत्र परि परस मान ॥
सजि सिलह सूर अँग अंग थान । मानो कि मुकुर प्रतिव्यंब जानि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

करि करी अग्ग रज रजत दंत । मानो कि जलद पँग बग्ग पंति ॥
उभ्भारि सुंड गज लैहि वीर । मानो कि व्यब अहि मरुत मीर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

मद झरहि पाट बरषत दान । मानो कि धराहर धार जानि ॥
तिन मचत कीच हय कलत लार । मानो कि भद्र कद्रव मझार ॥
छं० ॥ ७७ ॥

धर स्याम सेत रत पीतवंत । मानो कि अभ्भ पल्लव सुभंत ॥
चमकंति अनिय दामिनि समान । बाजंत बज्ज घनघोर बान ॥
छं० ॥ ७८ ॥

उच्चरहि हद कवि मोर सोर । पप्पीह चीह सहनाय रोर ॥
ठनकंत घंट सादुरनि नद्द । मानो कि भद्र दादुर सबद्द ॥
छं० ॥ ७९ ॥

दिसि विदिसि धुध मुदियग भानि । तिम्र मइंद्र विय इंद्र जानि ॥
बरषत धार चढि व्योम मंत । तिन उडिग रेन विच कीच मंत ॥
छं० ॥ ८० ॥

तिन कालहि पंषि पावै न ठौर। उपमा कौन जंपौस और॥
कालमलिय नाग परि कमठ भार। हलहलिग दंति द्रिग मंत सार॥
छं०॥ ८१॥
रथ षरहि स्वर अप अप्प मान। मानो छयल्ल कुलटा मिलान॥
सिर लग्गि व्योम हय षरहि राज। मानो कि कपिय गिरि द्रोन काज॥
छं०॥ ८२॥
पत्तौ सु राज हांसीति थान। सजि सूर सेन दीने निसान॥
छं०॥ ८३॥

रावल का चहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना।

दूहा॥ चढ्यौ राज प्रथिराज बर। सुनि चिचंगी भीर॥
बर हांसी सामंत सह। बीटि षान बर बीर॥ छं०॥ ८४॥
कवित्त॥ इन अग्गै बर बीर। समर हांसीपुर पत्तौ॥
रन रत्तौ रन सु। अम्म आअग्ग विरत्तौ॥
चतुरंगनि बर सज्जि। बीर चतुरंग सपत्तौ॥
कूंच कूंच उप्पार। दीह चौ पंच सु जत्तौ॥
सु बर राव रावल समर। अमर बंध जत अमर जत॥
आवाज बढ़ी तब मीर बर। सेन संभ हांसी बिरत॥छं०॥८५॥

समरसी जी के पहुंचते ही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना।

दिसि पति पति पत्तीय। मेर लजपत्ति सु धारी॥
सबर सत्त जंपन सु। बीर किति सम बर चारी॥
ब्रह्म रूप जीति न सु। ब्रह्म आहुट्ठ सपन्नौ॥
लष्यौ रूप तत्तार। रंक लभ्भै वित मन्नौ॥
लगि जका सूकरस पियन बर। छुधा क्रोध लगि बीर रस॥
बर मिरन षान षुरसान दल। बल प्रमान षोलीति अस॥
छं०॥ ८६॥
डिट्ठ ढाल ढलकंत। समर चतुरंग रंग रन॥
बंधि फावज्ज सुबीर। बीर उचरंत मंत मन॥
हरवल षान ततार। करै करवलति षुरेसी॥

तुड समर लगि नहौ। आनि वधी बल गसौ ॥
मुष रुक्क मेलि मार महन। नाहर राव नरिंद तन ॥
सावग समर दिसि दिसि षिनह। सुभर जुद्ध मच्यौ गहन ॥
छं० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिपाहगीरी और फुरतीलोपन का वर्णन।

महन रंभ आरंभ। समर बधीत समर वर ॥
अमर नाम वर अमर। मुक्कि सामंत लल भर
पुर हासी बर पत्त। पूर दच्छिन दच्छिन वर ॥
मिले सूर कर वर कारूर। वधीति सिरी सर ॥
वधि सनाह विलगे समर। करि भर धाइ अपुब्ब भर ॥
हक्कारि सूर पच्छिम परिय। वज्र मेर वज्जे सुभर ॥ छं० ॥ ८८ ॥
तमकि वीर चित्रंग। बाज उप्पर वर नषिय ॥
मनहु कंस सिर वज्र। चिल्ह उप्पर धर पषिय ॥
सथ्थ सूर सामंत। हथ्थ किरवान उभारिय ॥
मनहुँ चंद विय व्योम। परिग रारिय चनरारिय ॥
धरि च्यार धार धारह हरिय। भरिय नरेनर चित्तरिय ॥
औसरिय सेन अध कोस भ्रम। कलह केलि ऐसी करिय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ दोज [1]रूर वद्द, उड्डीरेन जद्द। निसी जानि भद्द, वहै वान सद्द ॥
छं० ॥ ९० ॥
सुकै गज्ज मद्द, वहै षग्ग अद्द। सुभै रथ्थ हद्द, नचै वीर वद्द ॥
छं० ॥ ९१ ॥
वजै षग्ग सद्द, घटा वज्जि भद्द। षमजाल षद्द, प्रलै अग्गि नद्द ॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) को सूर।

त्रिसूली अनद्दं, बजै घाय रुद्दं। जनौं षट्ट बद्दं, कहं जोग सद्दं॥
छं० ॥ ९३ ॥

मगी मुत्ति हद्दं, षगं सोर षद्दं। उअं ताप उद्दं, कवीचंद चंदं॥
छं० ॥ ९४ ॥

सुभै रथ्थ हथ्थं, ... । रसं रोस मानी, अमं सेन दानी॥
छं० ॥ ९५ ॥

जकी जोग माया, चितं जोग पाया। ...., ... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

रामरायी जी की वीरता का बखान।

कवित्त॥ ॥ कै छुट्टा मदमोष। सिंध छुट्टा पल काजै॥
कै तुट्टा बयवाज। बीच कोलिंग विराजै॥
कै रस संका छुट्टि। वृषभ दोइ छुट्टि विलुद्धा॥
लज्जा रतन विषंत। उभै रंकहु आलुद्धा॥
वर सेन उररि निसुरत्ति षां। दइ दुवाह उप्पर परी॥
चित्रंगराव रावर समर। सुबर जुद्ध एतौ करी॥ छं० ॥ ९७॥

रामरायी जी के भाई अमरसिंह का मरण।

मिलिग धाइ अधधाइ। समर धायौ जु समर बँध॥
धार धार तन उधरि। गयौ सुर लोक रंभ कँध॥
षठ सु पंच अरि ढाहि। पंच मिलि पंच प्रपत्ते॥
दइ दुवाह रन अमर। अमर भौ बोलन जत्ते॥
हर हार कंठ आनंद मध। सुनि संग्राम दुमार बन॥
दुअ हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों। रह्यौ पिष्षि तं त्रिय नयन॥
छं० ॥ ९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन।

*मोतीदाम॥ जु रुप्यौ रन रावल मंझ अनी। सु मनौं ससि मंडल भू अधनी॥

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है। रासो में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया है। परन्तु यह छन्द चार सगण का है। भाषा के प्रचलित दो एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है।

बजि षग्ग उनगत षग बजै। घरियारन के सुर मझ्झ लजै ॥
छं० ॥ ९९ ॥

गज षग्ग उडंतह मुत्ति झरैं। तिनकी उपमा कविचंद करैं ॥
मनि मैं ग्रह रत्ति प्रनार चली। जल जावक नागिनि पौरि छली ॥
छं० ॥ १०० ॥

कढि हथ्थर हथ्थ सु हथ्थ परी। तिनकी उपमा कविचंद धरी ॥
मुष से सहते जल धार धसी। निकसी जुइ एक प्रवाह गसी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

छित रावर भारथ राज धनी। कहि भग्गिय षान ततार अनी ॥
छं० ॥ १०२ ॥

अरिल* ॥ षा ततार सुनि बेन नेन सोध। लले कारी बर भग्गा जे भान ॥
ओट जिन कोटह सुद्दर। लै दत्तिक कर चुमि तुंड डड्डी बड्डी कर ॥
षा पुरसान ततार। भजि भजे सुर सुम्भर ॥ छं० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना।

कवित्त ॥ बाज नषि ततार। बाजि षुरतार बज्जि षग ॥
पंच अग्ग सौ मीर। संग धाए पयान मग ॥
जुद्ध कथ्थ कर हिंदु। तूल जिम बाय उडाइय ॥
मेर लाज पज्जून। सत्त साइर वर छाइय ॥
घरि एक झिझ्झ बज्जी सकल। बर उप्पर पावार करि ॥
निठ्ठ करि षान तत्तार कढि। हिंदुमेछ सहिये अपरि ॥छं०॥१०४॥

घोर युद्ध वर्णन।

पद्धरी ॥ वर लुथ्थ लुथ्थि आलुथि पलथ्थ। नचि प्रेत नाद वीर ततथ्थि ॥
नारद नद निस सुनि सभीर। सारद सिद्ध तिन तत्त बीर ॥
छं० ॥ १०५ ॥

चौसठ्ठि धाइ सह सूर सचि। पंच पचीस कावंध नचि ॥

* यह छन्द वास्तव में कोई छन्द नहीं है। इस की प्रथम पंक्ति साटक छन्द की तृत्ति के समान है। दूसरी गाथा की, तीसरी उल्लाला की और चौथी रोला की है। इस से मालूम होता है कि यहां के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषांश मात्र रह गया है।

बजि घाइ सद्द सद्दीन हद्द। सुनि ईस सद्द नंदी अनद्द॥
छं० ॥ १०६ ॥

सत पंच मुक्कि तरवार बूव। तत्तार गात असवार हूव॥
बँधि चाल चाल उचाल पाव। षगवाह विहथ्थन सूर लाव॥
छं० ॥ १०७ ॥

तन बंधि संग सो लोह कढ्ढि। मानो कि समुद्द जल मीन चढ्ढि॥
उठि छिंछ रकत तीरत्त भाइ। मानो पलास बन फुल्लि नाइ॥
छं० ॥ १०८ ॥

बर बुभिझ साहि कर बज्र वाय। रुधि पियत [1]भीम सम्मिन्न काय॥
उतमंग हक्क धर नच्चि धाव। झम बट्टै षग्ग की विज्जा लाव॥
छं० ॥ १०९ ॥

दूहा॥ अनुध जुद्ध हिंदू तुरक। भय अनादि जमनूत॥
इन ततार संमुष अनी। उतै समर अवधूत॥ छं० ॥ ११० ॥

रसावला॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं बढ़ी। षग्ग [2]झालं जढ़ी, लोह दूनो कढ़ी॥
छं० ॥ १११ ॥

दून बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी। लथ्थि लुथ्थं बढी, हथ्थ दो दो चढ़ी॥
छं० ॥ ११२ ॥

जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी। देवि रथ्थं चढ़ी, पुप्फ नंषै गढ़ी॥
छं० ॥ ११३ ॥

उत्तमंगं बढ़ी, अंत तुट्टी कढ़ी। ईस देषै ननं, [3]पुत्तनं रंजनं॥
छं० ॥ ११४ ॥

सूर कढ्ढै इसं, बान कढ्ढी जिसं। ... . छं० ॥ ११५ ॥

इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना।

दूहा॥ षोड़स इक पंचह सुभर। समर परिग संग्राम॥
नव घट्टी अंतर परिग। सुत सोमेस सु ताम॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त॥ मद्धि पहर विप्पहर। समर सामंत जुद्ध मिलि॥

(१) ए.-भूमि। (२) ए.-जाल।
(३) को. कृ.-पुत्ततं।

नवनि नीच करि नीच । जुद्ध सग्राम सार झिलि ॥
विमुष न भौ परि बध । जुद्ध सामंत सूर मिलि ॥
अनी एक करि मेर । धाइ अरि जुट्टि षग्ग षुलि ॥
षुरसान षान दल ठेलि वर । चद्दर सौ चौरंग वजि ॥
थिर भए सूर रथ दिषत पर । कायर चलि जंगम प्रहजि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

भुजंगी ॥ काढे लोह सूर करूरति ताय । चले सस्त्र हथ्थ न चालत पाय ॥
मिलै हस हस चलै अश्व कैसें । जनो नौधनी नारि पिय अग्ग जैसें ॥
छं० ॥ ११८ ॥

नन डोलि चित्त मरनंति सूर । चिया कुंभ चित चलै हथ्थ जूर ॥
प्रतथ्या प्रमानं समानं न सूर । बुझै पच पंच नन दीप दूर ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तुट्टै सिप्पर टूक सा टूक सथ्थ । कला चद्र राहे उभै भूप तथ्थं ॥
कलै निक्कस्यौ बार सन्नाह फुट्टै । तिनकी उपम्मा कवीचद जुट्टै ॥
छं० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लव व्रत्त जुट्टी । रवी राह भेद दुहु 'अग फुट्टी ॥
लगे धार धार दुधार प्रहार । वर काइर भास चित्त विचार ॥
छं० ॥ १२१ ॥

कर मोडि दूनौं सिर धुन्नि जत्ती । मनों मष्षिका जाति पच्छै सुरत्ती ॥
सुमित्र कपी जानि लवालिजाय । उपमा इन की नन भूलि पाय ॥
छं० ॥ १२२ ॥

वजी झंझ लग्गे असम्मान सीस । उठे पच दह दून धावत दीस ॥
नही मानवे दानवे नाग लोय । कह्यौ बाहु भारथ्थ जिम पथ्थ जोय ॥
छं० ॥ १२३ ॥

परे समर सूर षट्ट ति पंच । लगे धार धार भए रंच रंच ॥
सबै धाव सामंत सूर प्रकार । पर्यौ बग्गरी रा चल्यौ धार धार ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए.-अग ।

भरं राज प्रथिराज पंचास पंचं। गयौ राव चावंड रंछोरि अंचं॥
॥ छं० १२५॥

अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना।

कवित्त॥ पर्यौ अमर षावास। ग्रिद्ध संमुह उड्डावै॥
बल घट्टै तन घट्टि। किर्त्ति धट्टी नर जावै॥
स्वामि विमुष नह भयौ। स्वामि कारज तन भग्गी॥
साम दान अरु भेद। दंड तीने पथ लग्गी॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु भ्रम। गयौ मोह माया सु पथ॥
जग हथ्थ राइ सुर लोक वसि। सली जुग्ग भारथ्थ कथ॥
छं०॥ १२६॥

अमर गयौ पुर अमर। देवि घर घरह उछवि करि॥
रचिय भोग आरंभ। देव भूषन सुरंग बर॥
बर बरु करि शृंगारी। सौ कि रानी पुकारी॥
धूप दीप साषा सु। पुहप दृष्टह उच्छारी॥
तन पवित्र भ्रम भ्रन धन्न तन। गौ सुरलोक अचिज्ज नह॥
अघ रोकि न्रपति जोवन्न वर। षग्ग मग्ग षुरसान लह॥
छं०॥ १२७॥

पृथ्वीराज के पहुंचते ही शाही सेना का बल ह्रास होना।

कुंडलिया॥ जै कित्ती रत्ती उमा। भुगत सुरत्ती पान॥
चाहुआन बल बढ़त बर। बल घट्यौ सुरतान॥
बल घट्यौ सुरतान। साहि भौ पूरन चंदं॥
राज न्रपति बियचंद। बीर बीरं रस मंदं॥
विधि विधान निरमान। षान दिष्षिय तिहि बतहय॥
इन पंचौ संग्रहै। राज पट्टियत जैतिजय॥ छं०॥ १२८॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना।

दूहा॥ जै बट्ठी जै जै सकल। पीलॅ तन धरि ढाल॥
बल गोरी बल संग्रहै। ज्यौं चंपै बर काल॥ छं०॥ १२९॥

ज्यों चपै बर काल गुन । हर चपै विष कंद ॥
रबि चपै किरनावली । ज्यों चपैत नरिंद ॥ छं० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ बर संभरि चहुआन निवास । उत चित्रंग नरिंदह सास ॥
फिरि गोरी पारस अधिकारी । मनो चंद बद्दर बिच सारी ॥
छं० ॥ १३१ ॥

दूहा ॥ राजत वीर शरीर गति । छिति मिच्छिति वर राज ॥
मनहु भूप भूआल कौ । वर बसंत रितराज ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ वर वसंत बर साज । सूर लग्गा चावद्दिसि ॥
रत्त रुधिर समरंग । छित्त राजै अट्टत्त वसि ॥
फेरि ग्रह्यौ सुरतान । चंद बध्यौ उडगन वर ॥
निस नछित्र ज्यो प्रात । सेन दिष्यौ जुमंच वर ॥
नर गिरहि भिरहि उठ्ठहि लरत । घट घट्टति न सुभट घट ॥
पाहुनौ सुभट गोरी कियौ । दाहिम्मै चावंड थट ॥ छं० ॥ १३३ ॥

दूहा ॥ सु चिय हार सम परि सुथिर । यो सुबरे समेत ॥
सार धार बर देषियै । सार प्रहारन प्रेत ॥ छं० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।

कवित्त ॥ गुरज उभ्भ तिय तेग । तोन त्रिय सत्त सुरंग ॥
छह कमान सर सहस । लोह सौ वीर अभंग ॥
ए तुट्टै बर अंग । तोन थक्का सुर थान ॥
अंग अंग निरमलौ । कित्ति सारथी सु आन ॥
तिहि परत गयौ गोरी न्रिपति । परत षान चौसठ्ठि धर ॥
तिन जपि चंद बरदाइ बर । नाम जु जू ए सब विवरि ॥छं०॥१३५॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।

त्रिभंगी ॥ वर षान ततार, झोरिय डार नेह उधार, परिषान ॥
॥

हबसी षट बंधं, जम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुद्धं ॥
असि बर बर झारी, षान प्रहारी, कुंत कटारी, बर बंधं ॥
छं ॥ १३६ ॥

गोरी धर काले, शस्त्र न झाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
सर बीरति भारे, परि रस सारे, बजि धर धारे, धर ईनं ॥
महनंसिय मेरं, परि धर घेरं, जुग परिसेरं, षुरसानं ॥
षुरसानत षानं. चौसठि थानं, रेन पति पानं. चहुआनं ॥छं०॥१३७॥

उन रंग अट्टत्तं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि देनं।
.. .. ॥
उड़ि साइक सूरं, नभ तक रूरं, धरि परि जूरं, धर पूरं ॥
... . ॥ छं० ॥ १३८ ॥

झल्लारे गग्गं, ओड़न तग्गं, मन मत पग्गं, पै नग्गं।
जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
प्रारब्ध सुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कंद षुत्ती, रेन षुत्ती ॥
अभिमान डकारं, बजि रन सारं, जगत उभारं, जम कंत्ती ॥
छं० ॥ १३९ ॥

झोरी परि लीनं, छित रस भीनं. रन दुहु दैनं, करि हैनं ॥
... ... ॥
दैवत्त सु रत्तं, मन करि गत्तं, कर हित सतं, रेन गत्तं ॥
... . छं० ॥ १४० ॥

धर धर धर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तन आहुट्टै, मति षुट्टै ॥
नव जोग समानं, दोवर षानं, पति सन मानं, बर फुट्टै ॥
इन सूर समानं, देवन जानं, रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
मोहनी भग्गा, तन षग लग्गा, जुगति सु जग्गा, प्रति लग्गा ॥
छं० ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ षूब षान आकूब। षूब मारू षिति मारू ॥
षूब बेर तत्तार। षूब मंडी षिति तारू ॥

खूब षान षुरसान। खूब जा भारय षंडै॥
खूबर गोरिय सेन। जेन मग्गापग मंडै॥
अद्दिहार साह गोरी सुवर। सुदिन राज प्रथिराज वर॥
तित्तने परे झोरी धरे। सुवर वीर वीरं सु रर॥ छं०॥ १४२॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा।

वलि भट्टी महनंग। गरूअ गब्बह गज्जिय धर॥
इन लरंत सामंत। साहि चब्यौ दिल्लिय पर॥
जोगिन पुर जोगिंद। आदि चच्चर चौरंगी॥
इंद्र जोग जुध इंद्र। इंद्र काल इंद्र अभंगी॥
नग नग नरिंद नग वर सजहि। रजहि सेन सामंत सह॥
नपयौ कोट आसी पुरह। सुवर वीर लग्गे मगह॥ छं०॥ १४३॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना।

लगे मग्ग सामंत। अंग नचे चच्चरं रन॥
इक्क मंत आमंत। इक्क देषै धावंत घन॥
महन मंत आरंभ। रंभ लग्गा चावद्दिसि॥
एक सस्त्र वरषंत। एक वरषंत वीर असि॥
जोगिंदराइ जग हथ्थ तुअ। सुवर वीर उप्पर कारन॥
कालंकराव कप्पन विरद। महन रंभ मच्चौ सुरन॥ छं०॥ १४४॥

युद्धस्थल का वाक् चित्र दर्शन।

भुजंगी॥ मह रंभ आरंभ सारं प्रकारं। नचै रंग भैरूं ततथ्थे करारं॥
तहां पत्तयौ तत्त चिंतंग राजं। मनो गज्जिये देव देवाधि साजं॥
छं०॥ १४५॥

महा मंत मंत सु तंतं हकारे। मनो वीर भद्द सु भद्रं डकारे॥
झनक्कंत षग्गं उपम्मा निनारी। मनो वीज कोटी कलासी पसारी॥
छं०॥ १४६॥

दुहुं वाह वीरं सहस्सं भुजानं। कहै कौन कब्बी बलं जा प्रमानं॥

रसं तार तारं जिते तार वग्गे। मनो मानछो देव मा देव भग्गे॥
छं० ॥ १४७ ॥

बहै बोह वाहं कारारेति तथ्थं। परे रंग चंगं अरथ्थी सरथ्थं॥
नचै बीर पायं झनक्कंत षग्गं। मनो तार बज्जे सु देवाल अग्गं॥
छं० ॥ १४८ ॥

करैं कंस कंसी बजे जानि नैनं। इसे सार सों मार वज्जैस धैनं॥
उनंके उनाही गुमानं न भग्गें। करी षान षुरसान षुरसान मग्गें॥
छं० ॥ १४९ ॥

बहै बान कम्मान आवत्त तेजं। लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं। मनो चच्चरी जानि आवत्त नग्गं॥
छं० ॥ १५० ॥

ढिलै अंग अंगं परै बथ्थ ढारे। मनों लग्गियं च्यार ज्यों मत्तवारे॥
उभैं बीर बाहै सु बोलै प्रचारै। सहै अंग अंगं दुधारे दुधारै॥
छं० ॥ १५१ ॥

इते च्यार चारं सु देषे प्रकारै। चढ्यौ सूर सूर मध्यान मझारे॥
छं० ॥ १५२ ॥

घोर युद्ध उपस्थित होना।

गाथा॥ मध्यानं वर भानं भानं। तेजाय सूरयो [1]भुष्षं॥
चच्चर सी चवरंगं। उच्चारं मत्तयो बेनं॥ छं० ॥ १५३ ॥

भुजंगी॥ चरं चारि मतं सजे सूर सूरं। नमो डंबर्‌यौ भान उग्यौ करूरं॥
दुअं बीर धाए सु चौहान मोरी। मनों षेत षद्धे किसानंत गोरी॥
छं० ॥ १५४ ॥

कहैं हक्क बाजी बिराजंत लक्से। सुभें दंग लग्गें जु पावक्क प्रस्से॥
दुअं सेन हक्कें बिहक्कंत न्यारैं। बकै जानि हंदं सु बंदी पुकारैं॥
छं० ॥ १५५ ॥

(१) ए.-सुष्षं।

रन रग रत्त विराजै सु भूमी। मनो मगल पुत्त की आनि ऊमी॥
उडै हस हस द्रुम डाल ढाल। मनो नाग मध्य बरें अग्गि चाल॥
छं० ॥ १५६ ॥

रती रत्त अग्गे सुगत्ती ज रत्ते। मनों मान ईसे नम देवदत्ते॥
भए नेन ऐसे द्रिग देव जैसे। ॥ छं० ॥ १५७ ॥

परे गज्ज बाजी परे रथ्थ छीन। मद्दा मत मत्ती लगे लोह पीन॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा।

कवित्त ॥ प्रथीराज गज सहित। तेग वक्की सिर धारिय॥
घनह कोर बिय चद। वीर उज्जली सुधारिय॥
सेन चमर सम भिजि। रही लट एक समिज्जिय॥
स्याम सेत अरु पीत। अग अगन छत दग्गिय॥
कज्जलन कूट ते उत्तरहि। चिथ नदी सग्राम तिय॥
चिचग राव रावर चवै। सुबर बीर भारथ्थ किय॥ छं० ॥ १५९ ॥

भारथ्थह चहुआन। समर रावर सम गोरिय॥
विध विधान निरमान। उभै भारथ्थ स जोरिय॥
भारथ्था पारथ्थ। समर रावर प्रथिराज॥
मेर मद्धि सायर समद्धि। बड्ढ गिरि राज॥
जित्ति कित्ति पन साइ सो। भिरन कोन बीरत्त गुर॥
चामडराइ दाहर तनौ। भारथ्था लीनी सुधर॥ छं० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन।

भुजगी ॥ धरा भ्रम्म भागी सु लीनी नरिद। मनो मेनिका देव जुद्द सुकद॥
कमद्द हँकारे हके हाक वज्जी। कहै सीर भारी उदै मीर रज्जी॥
छं० ॥ १६१ ॥

सनकंत बान भनकंत पग्ग। मनो बीज के बास अभ्यास जग्ग॥
दुहू दीन दीन चहुव्वान गोरी। हहूदूत षेलत बालक जोरी॥
छं० ॥ १६२ ॥

निर्थं अग। देहं इकं अंग जान्यौ। जिनें मुत्ति को रूप अंगं पिछान्यौ॥
गजं दंत काढ़े करै सस्त्र भारी। तिनै पच्छ तारी दियै हथ्थ तारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

उदै इंद काढ़ै रबी कोर मानं। इसे षग्ग तेगं झमक्कै प्रमानं॥
पटे हथ्थ झारे उतारे निनारे। मनो सारसी हथ्थ कीने चिकारे॥
छं० ॥ १६४ ॥

उड़ै सद्द बानं विवानंत रुक्कै। तिनं मारुतं सद्दगं मद्द सुक्कै॥
छबी छच्छि रत्तं उड़ै छिंछ भारी। मनो मत्त मेघं वरष्षै करारी॥
छं० ॥ १६५ ॥

परं नाग भागं हलै नाग जानं। तहां संगमं मान आवै न पानं॥
छं० ॥ १६६ ॥

युद्ध को आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ सगन संग आवइ न। नाग भिंजै नागिन रुधि॥
परे नाग हलहलिय। नाग भागै कमठ्ठ सुधि॥
मननि सीस मुक्कयौ। इहै दंपति विचारै॥
तिहिन संग आवै न। संग नागन हक्कारै॥
धरि एक भयौ विभ्रमत मन। बहु रिस हार सिंगार किय॥
नव रस विलास नव रस सुकथ। राज उट्ठि संग्राम लिय॥छं०॥१६७॥

कवि कृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन।

सोइ संग्राम सोइ साम। सोई विश्राम मुगत्ती॥
सोइ सदेव समदेव। ताह अच्छरि रस मत्ती॥
जु कुछ मुकति तिन ग्रसिय। सार बज्जे नह अंगं।
ग्रसिय जनं किय अग्गि। जोग जुट्टे धन जंगं॥
विन जोग विरह भारथ्थ विन। सूर भेद भेदै न कोइ॥
पारथ्थ पंच पंचौ सुबर। गयौ सूर भेदेव सोइ॥ छं० ॥ १६८ ॥

वीररस प्रभात वर्णन।

भुजंगी ॥ चढ़े ज्वान अष्षं नषं काम रंगं। परे पल्लभा राइ मध्झे सुरंगं॥

चढे कोतर कोक कोक पुरान। रवी तेज भग्गी सची चार पान॥ १६६॥ छं०॥

मुरे सूर सस्सि सरोज पुहप्प। गय मुद्दित पच्च आरद्द अप्प॥
कामोदत मोद घर वै प्रमान। तहा काइर सो सद्दिप्प तथान॥ छं०॥ १७०॥

प्रफुल्लत वीर चका चक्क थान। इक मुत्ति वछै इक सामि पान॥
त्रिया कंत वछै वियोगी संजोग। रन सूर वछै अछी अच्छ भोग॥ छं०॥ १७१॥

भई सिष्षरेनी वर दीह ऐसें। मनो सधि बाल विराजत जैसें॥
दुहु सेन वज्जे निसान दुरत्ते। तहां पष पषी रहे थान जत्ते॥ छं०॥ १७२॥

दुव सेन वेन निवती प्रकार। दोऊ वीर छेडे तजे बाज सार॥
विना नीद पानी विना अन्न धार। रहे एक हिंदू सहिंद्दान सार॥ छं०॥ १७३॥

भये मेच्छ वाजी रन जे करारे। तके वीर कज्जी विनो अग्गि सारे॥
भये मस चोर धिग जा प्रकार। इसी रैंन वित्ती दुहु दीन मार॥ छं०॥ १७४॥

उरव्वीति मीरत वारति पान। हसे रग रग रस वीर पान॥
इसी रेन दोऊ गई नट्ठि नट्ठी। गई कायर कट्टु सूरत मिट्ठी॥ छं०॥ १७५॥

कवित्त॥ रही रत्ति आरत्ति। तत्त लग्गी परिमान॥
जुद्ध जूह सुरतान। मच कीने परिमान॥
मान पयानन होइ। लोह जित्ते पायान॥
सार धार निरधार। सार उद्धार समान॥
षुरसान षान तत्तार रन। दिसि रत्ती रत्तीत अप॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुबर वीर वीरत जप॥ छं०॥ १७६॥

प्रात काल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना।

दूहा॥ बर भग्गी जग्गीति निसि। दोऊ दीन परमान॥
वचि सिपारे तीसचव। करि निवाज सुरतान॥ छं०॥ १७७॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ क्रम उघरीय किपाट। चौर भग्गंत रोर तनु ॥
चक चक्की जंमिलहिं। उधरि सत पच मत्त जनु ॥
भ्रंग भृंगि सम भ्रमहि। बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
गय उडुगन ससि घटिय। बढ़िय आकास किरनि कर ॥
सेंविधि सुरंग व्यापार घन। रवि रत्तौ मुष दिष्ष्यौ ॥
भासकर सहसकर कांमकर। नवकर कमुद विसष्ष्यौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

कंठभूषन ॥ कंठय भूषन छंद प्रकाराय। बारह अच्छरि पिंगल भासय ॥
अट्ठय संजुत मत्त प्रमानय। कंठयभूषन छंद वषानय ॥छं०॥ १७९ ॥
उग्गि रतं रत अंमर भासय। भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
पाप हरै तन क्रम्म प्रगासय। कौ जम तात जमुन्नय भासय ॥
छं० ॥ १८० ॥

तात करन्नय पूरन पूरय। बंध कमोदनि को मत ह्ररय ॥
वंध जवासुर औषम थानय। अर्क पलासन काम विरामय ॥
छं० ॥ १८१ ॥

कौ सुनि तात सनी सर ह्ररय। भास करं करुना मति पूरय ॥
है कर सस्वति भाष प्रकारय। तारय नाथ दिनं मति तारय ॥
छं० ॥ १८२ ॥

हैवर ओष करं गिर पारय। मानहु देव दिवालय साजय ॥
भंजन कुंज अस्त्रत षंडय। सो धरि ध्यान धरंत विचंरय ॥
छं० ॥ १८३ ॥

एक घरी धरि ध्यान स दिष्षिय। मुत्ति स लच्छिय संपन अष्षिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य्य की स्तुति।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तारन गयंद घर ॥
ब्रह्म विष्णु अंजुल। उदंत आनंद नंद हर ॥
इक चक्र चिहुं दिसै। चलत दिगपाल तुंग तन ॥

कमल पानि सारी अरुन। ससार जियन जन ॥
उड्डग वीर छच्छव पवन। निरारम्भ सपाह सुमुप ॥
कविचद छद इम उच्चरै। हरो मित्त दोइ दीन दुप ॥ छं० ॥१८५॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन।

दूहा ॥ सो जगत मगी सु कर। काढे लोह करि छोह ॥
दै दिवान देवत्त गति। हाइ हाइ रति रोह ॥ छं० ॥ १८६ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ　　।　　अरिष्ट गरिष्ट ॥
चाहुआन सुरतान। वीर मारथ्थ वरिष्ट ॥
दै दुवाह अति धाह। पग्ग पोलै छिति तोलै ॥
सस्त्र वीर वाजत। देव देवासुर डोलै ॥
डक्कनि डहकि जोगनि लसय। लसै लोह देवर धसै ॥
चामडराय दाहरतनौ। राज ध्रम्म चित्त वसै ॥ छं० ॥१८७॥

सामंतो की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन।

उद्दू दिसा सामत। अड्ड उब्भै दुहु पास ॥
रा चामड जैतसी। सलप सूरिवा सुवास ॥
लोहानौ आजान। वलिय पावार सभारिय ॥
दै दिवान दैवत्त। वर्ज लैहै अधिकारिय ॥
महनसी मेर पच्छै नृपति। मुगति हथ्थ कट्ठी निजरि ॥
दैवत्त वाह दैवत्त गति। सुवर वीर ठट्टे उसरि ॥ छं० ॥१८८॥

यवन सैनिको का उत्साह।

* सौ मीरन सगमति। वज्जि नीसान पेत रहि ॥

* मालूम होता है कि या तो यहा क कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गडबड पड गया है। छद १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररस के छन्द होने चाहिए। तिस के बाद मृतकों का महत्व या युद्ध की प्रशसा इत्यादि होनी चाहिए। परन्तु छन्दों के खडित होन के सिवाय हमारे विचार से छदों का लौट फेर भी हुआ है। छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उपर बेसिलसिले पडता है। इसलिय सभव है जब कि प्राचीन समय मे खुल पत्र पर पुस्तकें लिखी जाती थी लेखक की असावधानी स गडबड हो गया हो। परन्तु पाठ क्रम में तीनो प्रतिया समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है। पाठक स्वय विचार कर देखें।

हय गय नर विच्छुरै। रुद्र भौ बीर बीर नह ॥
निस वर वर उम्भरहिं। भूत प्रेतन उच्छव सिर ॥
बज्जि धाव हक्के। त्रिधाव चौसट्ठि रंभ वर ॥
नारद्द नद्द सद्दह सुभर। बीरभद्र आनंद भर ॥
इहि भंति निसा सुर सुंदरी। भर हर हर वज्यौ सुभर ॥छं०॥१८६॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन।

भय विभात लगि गात। रत्त रत्तं रन मत्यौं ॥
हिंदवान तुरकान। जुद्ध अंबर अंगत्यौं ॥
अगति मग्ग पाइन। सुगत्ति मारग बहु चल्ल्यौ ॥
अश्वमेद बहु दान सत्व। सम एक न पुल्ल्यौ ॥
स्वामित्त धरम कीनौ जु इम। मन उछाह अच्छे रहसि ॥
ना करी कोइ करिहै न को। करौ सु कौ रवि चक्क गसि ॥छं०॥१९०॥

दूहा ॥ चक्र चरित सोमंत असि। निज निवर्त नग नाम ॥
चाहुआन सुरतान सौं। वजि ऐसी असि ठाम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम।

कवित्त ॥ गयौ षान तत्तार। पच्यौ षुरे सानति षानं ॥
पच्यौ हिंदु बर रूप। भीम परि परि रन भानं ॥
पच्यौ भट्टि बलिभद्र। मान परिमान न मुक्यौ ॥
पच्यौ जंगलीराव। बीर दहिमा दल रुक्यौ ॥
अजमेर जोध जोधा परिग। पर किल्हन बन बीर बँध ॥
उप्पारि षान हुस्सेन लिय। चढ़ि अच्छरि मोरै सु कँध ॥
छं० ॥ १९२ ॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना।

दूहा ॥ इन परंत तत्तार गौ। ग्रब्ब सु नंच्यौ साहि ॥
लज्जा ग्रब्ब भै मै दुच्यौ। जस सु जोति बल नांहि ॥छं०॥१९३॥

खेतझारना होना और लाशों का उठवाया जाना।

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार दुब्बौति समर बर ॥
बजि निसान आइत्त । जीति षुरसान सूर भर ॥
उप्पारिग सामत । बीस तिय डोल प्रमान ॥
डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समान ॥
दल जल जिहाज रावर समर । धजा किति उड्डी फहरि ॥
हय गय सु लुट्टि षुरसान दल । छोड़ फकीर छुट्टंति फिरि ॥
छं० ॥ १८४ ॥

युद्ध मे मृत वीरों के नाम ।

परिग षान षावास । गौर हासीपुर धारी ॥
परि प्रताप सागर । नरिंद रन सूर बिभारी ॥
पऱ्यौ कहै चंदेल । पऱ्यौ राजा नव भान ॥
परि मोरी महनंग । जग जीते जुग जान ॥
पँावार परिग पूरन पह । पहर एक भारथ्थ करि ॥
केसर नरिंद केसर वलह । तेग चित्ति कीरति लहरि ॥
छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ जीति समर भारथ्थ बर । न्त्रिप सम करि जुध ताम ॥
ढुढि षेत भारथ्थ परि । कहि कविंद्र तिन नाम ॥छं०॥१८६॥

कवित्त ॥ जगलवै बर भग्गि । भग्गि ततार सपन्नौ ॥
परिग सुभर प्रथिराज । जैत बधव सलपन्नौ ॥
परिय पुत्त महनंग । सिंघ नाहर नाहर हर ॥
कान्ह पुत्त दुति कान्ह । चंद रघुवंस चंद बर ॥
नरसिंघ पुत्त हरसिंघदे । परिग सु किल्हन राम तन ॥
वीरम्म वीर माल्हन परिग । मल्हन वास विरास मन ॥
छं० ॥ १८७ ॥

हासी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन ।

हासीपुर दिन सत्त । तीय बासर अग्या बर ॥
धाव बाधि भर सुभर । ठेलि दुज्जन प्रवाह धर ॥
वार सोम सत्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

भर रष्षवि अरि भंजि। मिलिय रावल रन रत्तौ॥
सामंत रष्षि भारथ्थ जिति। गवन रष्षि नन राज अंग॥
बर मिलि समंद सलिता सुबर। जलन देषि एकह सुमग॥
छं० ॥ १९८॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना।

जीति षान तत्तार। पारि हांसीपुर नीरं॥
जीति समर भिरि समर। रुधिर रत लत्त सरीरं॥
प्रथु सामत प्रथिराज। सुने सामंत सु कथ्थं॥
जथ्थ कथ्थ अरि करिय। डोलि नन सूर सु रथ्थं॥
छलि कै अमंत सुक्कै न वल। तजि हांसी सम्हो भिरिय॥
रुंधयौ चक्क जुग्गिनि सु वर। वीर वीय संमुह फिरिय॥
छं० ॥ १९९॥

दूहा। ॥ ढिल्ली सह सामंत सथ। अमर सुक्रत ढिग थान॥
समरसिंघ रावर सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन॥ छं० ॥ २००॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना।

भावभगति बहु विद्धि करि। हम लज्जा तुम भीर॥
इक्क अरी कामधज्ज गिनि। इक सहाबदी मीर॥ छं० ॥ २०१॥

बालुक्का सद्धौ समर। और विध्वंस्यौ जग्ग॥
उभै बत्त पुब्बै बहुत। फेरि उन्हाई अग्गि॥ छं० ॥ २०२॥

दिवस पंच मनुहारि करि। पहुंचायो चित्रंग॥
बीस अश्व गज पंच सजि। दै पहुंचाए रंग॥ छं० ॥ २०३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर जुद्ध नाम बावनमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ५२॥



अथ पज्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(तिरपनवां समय ।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ।

दूहा ॥ सुक सुकी सुक समरिय । वालुक कुरम जुद्ध ॥
कोट महुव्वा साह दल । कहौ आनि किम रुद्ध ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनैं । हारि कूरंभ पग छट्टिय ॥
सब लुट्टे गजवाजि । हेम मानिक नग वट्टिय ॥
अति उर लग्गिय दाह । हारि कूरंभ सम लद्धिय ॥
सह वालूक कामध । उभय पज्जून सकिद्धिय ॥
अष्यैव नाम तत्तार वर । कारी कूच उत्त गहर ॥
महुवा दिसान चपै धरा । वीर पजून सु बधि बर ॥ छं० ॥ २ ॥

खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ पठयौ षान ततार बर । कोट महुवा थान ॥
षा निसुरति रुमी नदी । वर कीनो अगिवान ॥ छं० ॥ ३ ॥

कियो कूच गोरी गहर । लहर महुव्वा थान ॥
षा षुरसान षुरेस षा । पाइल लष्य प्रमान ॥ ॥छं० ॥ ४

शाही सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ चढ्यौ साह सुरतान । षान षोयौ फिर हूढन
सम कूरंभ चहुआन । धरा मोह अब मडि रन
लष्य एक असवार । सहै वानह सम वारन ॥
पाइक अयुत त्रिपच । सग ततार सु धारन ॥



बलिराइ जेम दानव बलिय। तेम प्रकारन मद्धि मढ़॥
उड़गन कि चंद तत्तार दल। इम घेऱ्यौ मोहब्ब गढ़॥ छं०॥ ५॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूहा॥ रष्षन गढ़ थानौ न्रपति। बहु दिन बीर पजून॥
पठये दूत सु राज पै। निढ्ढुर मन साजून॥ छं०॥ ६॥
दूत कहिय दारुन षबर। फौज साह सुरतान॥
पारस राका दल प्रबल। कोट महूवा षान॥ छं०॥ ७॥

राजा का दरबार में कहना कि महूवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जावे।

सित्त सु मत्तह सूर बर। सकल लरन सुरतान॥
को अगिवान सु किजियै। जुद्ध महूवा थान॥ छं०॥ ८॥
फौज दिष्षि चहुआन की। सबै सूर रनधीर॥
मद्धि राज प्रथिराज पति। हाहुलिराव हमीर॥ छं०॥ ९॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना।

नेज बाज नीसान सजि। चढ़े सकल सामंत॥
कूरँभ बिन को अंग में। अनी लष्ष हैमंत॥ छं०॥ १०॥
कवित्त॥ पुच्छि राज प्रथिराज। समर रावर अधिकारिय॥
को ढुंढारह राइ। षग्ग मग्गह संभारिय॥
मोसें बोलि नरिंद। [1]सैन दै नैन मिलाइय॥
ए कूरंभ नरिंद। साह सम राह सु आहिय॥
बोलयो जाम जद्दों सुबर। चित्तंगी रावर सुभर॥
इन सम न कोइ कूरंभ बर। बीर न को रविचक्क तर॥छं०॥११॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

इन जित्तौ जंगलू। षेदि कढ्यौ तत्तारिय॥
बह्म पुत्त कै वार। जुद्ध अरियन सिर झारिय॥

(१) कृ. को.-'सेन दे नेनानि लाहय'।

इन मेहरा पै जाय। पेदि काढ्यौ चालुक्की ॥
इन गिरिनार पजाइ। लियौ छोगा चालुक्की ॥
इन नंपि पोदि आबू सिपर। अजै वीर अजपाल हित ॥
केवरा वीर केवर हतिग। करै वीर आनद पिति ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन पगानो वीर। वाद पोपद पहारिय ॥
इन देवगिरि जुरिग। बंधि मोहिल जुध धारिय ॥
इन जालौरय जाय। दई भाटी महनसिय ॥
बंधि जोध अजमेर। बैर भज्यौ मलअसिय ॥
प्रथिराज राज सनमान दिय। ढिल्लिय घर अविचल धरा ॥
सग्राम सूर कूरम ढिग। नको वीर वीरमरा ॥ छं० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज बर। समर मिलिग पज्जून ॥
बर हासी हिसार दिय। गढ दीने दह दून ॥ छं० ॥ १४ ॥
कवित्त ॥ दीने छत्र सुजीक। सत्त नीसान चोर बर ॥
रतन हेम हय गय। समूह आदर अनत भर ॥
सुधर वीर अति धीर। कन्ह कल्हन बुल्लायौ ॥
अप्पि महूवा लाज। बाजि बर वीर चढायौ ॥
सुरतान साह गोरी चढिग। षा ततार अगिवान करि ॥
उतर्यौ सिंधु अरु विहथ बिच। मीर सुसान गुमान धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सगुन सरम्भर सुभ असुभ। जिह्वा जहर मुनिंद ॥
चले साह कारन करन। नह पुच्छयौ नरिंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ सुनि ततार बर वीर। तोन बध्यौ गोरीय झुकि ॥
दैवकाल उपज्यौ। छित्ति छचीन रहै लुकि ॥
अति आतुर पतिसाह। हम स हिंदु सामता ॥
ज्यौं रोजा सों झुक्कि। वट्थ छंडै जुधवंता ॥

कूरंभ सकल बरबंधि कैं। हौं बंधन गोरी करौं ॥
महुवा सु दिसा चंपी धरा। सुबर बीर किती धरौं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना।

दूहा ॥ षरिग सहाब महुव्व धर। दिल्ली दछिन छंडि ॥
पहुंच्यौ तहां पजून पै। आनि सु भारथ मंडि ॥ छं० ॥ १८ ॥

युद्ध वर्णन।

विराज ॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी तेग जोरी। पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं ॥
छं० ॥ १९ ॥

भिरै बीर वीरं, बजे सद्द तीरं। भजे कोटि धारी, बयन्नं करारी ॥
छं० ॥ २० ॥

कारं कुंत हस्सैं, महावीर बुल्लै। मलैसिंह हथ्थं, दिषै कोटि सथ्थं ॥
छं० ॥ २१ ॥

रुधिं धार धारं, बहैं ज्यों प्रनारं। रवयं बीर बीरं, महामत्त तीरं ॥
छं० ॥ २२ ॥

जिनै सुष्ष पानी, स्फुलै षग्ग बानी। उठे उट्ठि धावै, मनं मत्त मावै ॥
छं० ॥ २३ ॥

छुटै बीर वीरं, रुलंते सरीरं। कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी ॥
छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय की वीरता।

दूहा ॥ मीर सु भंजत बीर बर। चढ्यौ भान मध्यान ॥
जे कूरंभ करै सु भर। देव मनुष्य प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
धंनि सुक्रत पज्जून कौ। मलयसिंह बलिभद्र ॥
स्वामि सह बंधन हसहि। कढ्ढन मीर नरिंद ॥ छं० ॥ २६ ॥

त्रिभंगी ॥ कूरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमर झाले, स्रुभझाले ॥
षानं मुलतानं, से षुरसानं, तन तुरकानं, भय भानं ॥
गजदंत सु कट्टैं दै पग चट्टैं, कंद उकट्टैं, भिस्सानं ॥

*नरजे बल कारी, सुर बर सारी, उत्तम चारी, बल धारी ॥
छं० ॥ २७ ॥

यवन सेना का भाग उठना ।

कवित्त ॥ भग्गौ दल षुरसान । षान पीरोज उपारे ॥
पूब षान आकूब । पूब सिर तेग प्रहारे ॥
मारूराव नरिंद । पारि पष्पर परिहारी ॥
दुबै अग बलिभद्र । धाव दुअ अग विचारी ॥
पद वार चढायौ चित्त मे । जै वज्जा घन वज्जया ॥
प्रथिराज भाग ज ज जियै । कूरमराव सु रज्जया ॥ छं० ॥ २८ ॥

पज्जून राय की प्रशसा ।

प्रथीराज साहन समूह । दल मिलिग मुहल्लै ॥
तिनह दलह रावत्त । डरै डगमगै न डुल्लै ॥
सभरि राव नरेस । फिरे पिछवाह न दिष्यौ ॥
नलह वस नल वर । नरेस दस दिसि दल रष्यौ ॥
गहि सेल सकुजर सिर हयौ । भर भजन जग डग्ग सुअ ॥
पज्जून महुव्वै जीति रन । जैत पत्र कूरम तुअ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना ।

दूहा ॥ जीति महुव्वा लीय बर । ढिल्ली आनि सु पथ्थ ॥
ज ज कित्ति कला वढी । मलैसिह जस कथ्थ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गयौ साह फिरि गज्जने । वहु दल रिन में कढ्ढि ॥
उभै हारि असि पति लही । उर अति रोस अचढ्ढि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून महुवा जुद्ध नाम त्रेपनों प्रस्ताव. सपूर्णम् ॥ ५३ ॥

* इस छन्द का बहुत कुछ अश लोप हो गया मालूम देता है पाठ में भी बहुत भेद पडता है ।

अथ पजून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(चौवनवां समय ।)

और सामतों को महुवा मे छोड कर पज्जून का नागौर जाना।

कवित्त ॥ रष्षे कान्ह नरिंद । सलष रष्षे बड गुज्जर ॥
उदिग बाह पग्गार । ताह साईं भुज पजर ॥
रष्ष निड्डुर वीर । बीर रष्षे सु पवार ॥
किल्हन दे तूअर । उतग किस्सन सिर सार ॥
पज्जून महौवे जीति वर । पुत्र रष्षि वलिभद्र वर ॥
तिय बध मलैसी पल्हसी । सुवर चित्त चिता सुभर ॥ छ० ॥ १ ॥

दूहा ॥ ए सब रष्षि पजून सग । दै साईं सिर भार ॥
वर नागौर सु रष्षिया । स्मिस्सन मार प्रहार ॥ छ० ॥ २ ॥

मनहीन शाह का गजनी को जाना और पजून राय को परास्त करने की चिंता करना ।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै । तज्जि मौहव महत्त सम ॥
उभै हारि सिर धार । छडि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
वढिय दुष घटि सुष्ष । सभ्भ छायारु प्रात फुनि ॥
गयौ साह पन एम । पाग बधो कूरभ हनि ॥
पठ्ठये दूत नागौर दिसि । संभरि आषेटक स मुह ॥
श्रीफल सु आनि आसेर गढ । दिसि जुग्गिनिपुर गम तह ॥
छ० ॥ ३ ॥

धम्मायन का गजनी को समाचार देना ।

दूहा ॥ चल्यौ राज दिल्ली दिसा । सुर धर सुभर सु रष्षि ॥
अम्माइन काइथ कुटिल । कग्गद गोरी लिष्षि ॥ छ० ॥ ४ ॥

गोरी पै गय दूत बर। षान 'साहि सुरतान ॥
बर कूरंभ चरित्त दिषि। धर नागौर प्रमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना।

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि ॥
धर नागौर प्रमान। थान पज्जून रष्षि फुनि ॥
संभरिवै जहौं दिसान। आसेर सु हिंडिय ॥
व्याह विनोद सुरंग। नृपति देवास समंडिय ॥
फुरमान लिषौ कूरंभ तन। गहिय मान फिरि कढ्ढिहौं ॥
कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिरु बधु षंडिहौं ॥ छं० ॥ ६ ॥

कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिरु बधु षंडिहौं ॥ छं० ॥ ६ ॥
पद्धरी ॥ लष तीन मीर अवसान सद्धि। चढ़आन धरा कामना किद्धि ॥
दस सहस करी मत्त प्रमान। आषाढ़ सु गज्यौ मेघ जानि ॥
छं० ॥ ७ ॥

पाइक्क सहस चौसट्ठ चिअच्छ। दहं धाव इक्क टारंत स्वच्छ ॥
सावद्ध वेध साइक्क मग्ग। दिष्षेव साइ बंधंत षग्ग ॥ छं० ॥ ८ ॥
साइक्क साइ बर हने तीर। असि वरहु पंच कटि बाज बीर ॥
सिंगिनिय उभै बर धार दीस। गुन चढ़त तेन बर टंक बीस ॥
छं० ॥ ९ ॥

कूरंभ दीस। फुरमान लष्षि। सिर ताव भाव बहु बैन अष्षि ॥
फुरमान लिष्षि सुरतान बीर। मुक्कले दूत नागौर तीर ॥ छं० ॥ १० ॥
पज्जून तेगबर छंडि हथ्थ। कै मंडि जुद्ध सुरतान सथ्थ ॥
छं० ॥ ११ ॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना।

दूहा ॥ गयौ दूत नागौर धर। जहं कूरंभ बर बीर ॥
सम सहाव संभर कारन। आयो जोजन तीर ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का हँसकर निधड़क उत्तर देना।

(१) ए.-सहित।

कवित्त ॥ हसि पज्जून नरिंद । कहै सुरतान सार्ध वर ॥
जीव डरै लज्जवै । सो न कूरभ होहि नर ॥
सो न होहि रघुवंस । तेग छंडै मरन डर ॥
हम छंडै जब तेग । सूर उग्गै न दीह पर ॥
चल्लै न पवन गंगा थकै । गवरि तजै वर ईस वर ॥
पज्जून नाम कूरंभ मो । साहि जान चिंता न कर ॥ छं० ॥ १३ ॥
कहै राज पज्जून । वीर कूरम्भ चेत वर ॥
हम सलाह सुरतान । हम सुरष्षै ढिल्लिय धर ॥
हम रवि मंडल भेदि । जाम लगि सत्त न छंडै ॥
पंड पंड धर ढारि । सीस हर हार सु मंडै ॥
सुरतान सुनिव चिंता न करि । मंडि जौति नागौर दिसि ॥
कूरंभ अचल लज्जा सुभर । मेर जेम करतार कसि ॥ छं० ॥ १४ ॥

दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जून राय का संदेसा कहना।

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जन पुरह । दिय दुवाह सुरतान ॥
भग्गि अवर चक्कित सुभर । कूरंभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान । षान तत्तार बुलायौ ॥
हम सुषान जंगलौ । जुद्ध चहुआन चलायौ ॥
घोघदा वर वाद । मारि गम्भार सु जित्तौ ॥
डूंगोरी साहाबदीन । लोकह परि लित्तौ ॥
पज्जून सुनवि सामंत सम । आय पाय सुरतोन परि ॥
कै अप्पि कोट नागौर तजि । कै सु साहि सनमुष्ष लरि ॥
छं० ॥ १६ ॥

इधर नागौर में किलेबन्दी होना।

दूहा ॥ पुच्छि कन्ह बलिभद्र वर । मलैसिंह दुअ बंध ॥
चलहि साह समुह लरन । लज्जह काँवरि कंध ॥ छं० ॥ १७ ॥
वर पज्जून वरज्जिया । न्टपतिन ढिल्ली ढाइ ॥

को रष्षै ढुंढा रहा। उभै पूत सँग सोइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
तात सु अग्या मानि बर। साजि कोट नागौर ॥
सकल सूर सामंत मनि। मरन सरन किय और ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय की बीर व्याख्या।

कवित्त ॥ सकल सूर सों कही। बीर कूरंभ उचारिय ॥
न रहै तन धन तरुनि। किरनि बेताइन चारिय ॥
वापी कूप द्रषग्ग। सरित सर वर गिरि जैहैं ॥
मठ मंडप वर कोट। कोटि पाषंड सचै हैं ॥
अप कित्ति कित्ति जैहै न जग। रहै मग्ग षिची सुबर ॥
पज्जून द्रढ्ढ नागौर गहि। साधन सोर समग्ग कर ॥ छं० ॥ २० ॥

यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर तोप चलाना।

पद्धरी ॥ सुरतान घेरि नागौर गड्ढ। मानो कि मद्धि प्रक्कार मड्ढ ॥
मर बाज करिय पावस पमान। मानो नषित्र मधि एम जान॥
छं० ॥ २१ ॥
सावाति भांति चिहुं दिसा लग्गि। अंजनी सुतन दै लंक अग्गि ॥
गोला अवाज दस दिसा घोरि। बंधनह पाज कपि करिय सोर ॥
छं० ॥ २२ ॥
दस दिसा षान गढ़ बंटि दीन। अप अप्प ठौर चौकीस कीन ॥
चय लष्ष मीर नाषित प्रमान। घेन्यौ सु मद्धि पज्जून मान ॥
छं० ॥ २३ ॥

राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना।

कवित्त ॥ घेरि साह नागौर। पंति मंडी सु पंति पर ॥
दैव काल सामंत। सत्त छूटंत बीर बर ॥
पथ गोपी लुट्टई। बहित बारह सत छुब्यौ ॥
दुर्जोधन बल बंधि। सिंधु बंधी जल लुब्यौ ॥

आनयौ सत्त सुरतान बर। सकल सूर सामंत डर॥
अपे सु चद कूरभ जस। प्रथीराज जित्तौ सु भर॥ छं०॥ २४॥

पज्जून रु बलिभद्र। बोलि कूरभ कारारो॥
सत छुथौ नहि साह। सत्त मो सत्तह सारो॥
उदिग बांह पग्गार। सुनह सामंत सवाहौ॥
सक फौज गोरी। नरिंद पती गज गाहौ॥
पचीसे पंच नह अग्गरौ। फेरि काल फुनि फुनि परौ॥
ज करो सब्ब सामत मिलि। बोल रहै जुग उव्वरौ॥ छं०॥ २५॥

पज्जून राय का यवन सेना पर रात को धावा मारना।

तेग तमकि पकरिग। सकल सामत सूर वर॥
पच बध कूरभ। कोटि रच्चे पहार भर॥
उध्धारिय गढ्ढ पौरि। अद्ध निसि बीर सु तत्ते॥
रत्तिवाह करि चाह। कूर करि सूर सपत्त॥
राजाधिराज सामंत सर। तमकि तमकि तेग कसी॥
ससिपाल जोति ज्यों लज्ज फिरि। कूरभ आनन में बसी॥
छं०॥ २६॥

मुसल्मान सेना के पहरुओ का शोर मचाना और सेना का सचेत होना।

विराज॥ बसी मुष्प लज्जी, सिला धूर रज्जी। दिसा उत्तराय, सु बीर पठाय॥
छं०॥ २७॥

किय कूच मच, हलाल अनत। लगे लोइ चौकी, मनो नारि सौकी॥
छं०॥ २८॥

दुअ इक थीय, भजे पुठि दीयं। चढे पान पान, समभी गुरान॥
छं०॥ २९॥

सबै सेन धायौ, धप जैति नायौ। मजूर्न सपृत, मिलै सिह जूत॥
छं०॥ ३०॥

नषे कोट पारं, हुऔ जोट थारं। कटे कोट हेरा, कियं साह घेरा।
छं० ॥ ३१ ॥
मसंदं हजारं, ग्रहे तेग सारं। सुरत्तान पायौ, मनंमुष्य धायौ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सबै सूर सज्जी, मंडे जानि पज्जी। षुले पग्ग राजी, वलीभद्र साजी ॥
छं० ॥ ३३ ॥
भुजं ओट कोटं, पहारंति जोटं। मुषं सुष्य आई, सहस्सा दिषाई ॥
छं० ॥ ३४ ॥
जकी जोग माया, हरी रूप पाया। तुटै अंग अंगं, विभंगं त्रिभंगं ॥
छं० ॥ ३५ ॥
छनंकेति तीरं, परं वज्र श्रीरं। पयं पल्ह धायौ, सुरत्तान आयौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥
मिलै सिंह साहं, विवंधो विवाहं। उड़ै चाल टोपं ति कूरंभ कोपं॥
छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ इक्क ओर बीरम्म बर। कियौ गहग्गह सूर ॥
परि सुरतानह उप्परै। अति आतुर गति क्रूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध।

षा षुरमान ततार तब। सुनिय कूह दल सथ्थ ॥
सहस बीस गष्षर लियें। आयो बीर समथ्थ ॥ छं० ॥ ३९ ॥
नंषि पाट पज्जून रिन। परत्त गष्षर कोट ॥
सहस बीस गष्षर मसंद। लग्गि करी जम जोट ॥ छं० ॥ ४० ॥

दोनों में तलवार का युद्ध होना।

कवित्त ॥ सहस वीस गष्षर गुराय। ततार षान रहि ॥
नव दूलं कटि बाज। बीर बलिभद्र हथ्थ बहि ॥
मुररि मुररि मारुफ। बान कम्मानति [1]नग्गी ॥
मुक्कि बान कम्मान। तेग कढ्ढी सालग्गी ॥

(१) क. को.-सग्गी।

बजि घोइ निघाइ अघाथ घट। वर वसत जिम दिष्षि भर॥
फुल्लै सु जानि केस्र सुरग। यौ दीसै वर वीर नर॥ छं० ॥ ४१॥

दूहा॥ लरत पिष्षि बलिभद्र कौ। हरषि पजून सुचित्त॥
को रष्षै कविचद इह। हम समान तुम मित्त॥ छं० ॥ ४२॥
परे दौरि हिंदू सुभर। उसर साह साहाब॥
औसरि लगि आसुर सयन। मचति वेर किताब॥ छं० ॥ ४३॥

पज्जून राय के पुत्रों का पराक्रम।

भुजंगी॥ पऱ्यो षान जल्लाल सें तीन जाम। भई बारहू फौज सौ एक ठाम॥
लरतं सु वीरं प्रमानं प्रमानं। बजे बस नस कारष्षे कमान॥
छं० ॥ ४४॥
मिलै सिंह धायौ लपें वीर धीरं। गही वग्ग बलिभद्र आनुज्ज वीरं॥
दुअ वीर तेग हुडा होड बाहै। मनों चचरी चक्र डकेस गाहैं॥
छं० ॥ ४५॥
निय ध्रम्म रष्षे सदा व्रत्त ग्रेह। हड्डूह षेलत बालक्क जेह॥
छुरी धार धारं छुरै हथ्थ नाही। गहीदंत बग्गा कटारी समाही॥
छं० ॥ ४६॥
झरे पग्ग पग्गं चिनगीत उड्डै। मनों झिंगन भद्दव रैनि चड्डै॥
इलाह इलाह कहैं षान जादे। इसे वीर वीरं महो माह वादे॥
छं० ॥ ४७॥
करै मुष्प पूत पजून दुहाई। प्रलै काल मानो उभै सेस छाई॥
दुअ वाह वीरं बहै वीर भग्गे। इसे सूर क्रूरंभ के हथ्थ लग्गे॥
छं० ॥ ४८॥
कहै मेछ रुष्षं सरुष्षं प्रमानं। किधौं मानव लोह लै देव जान॥
द्रुम ढाल ढालं दुव सकारक्के। लग्यौ अस बस सु बस परक्के॥
छं० ॥ ४९॥
बहै बान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै तथ्थ गिद्ध सु पावै न जान॥
मलै सिंह हथ्थं पऱ्यौ बथ्थ गोरी। मनों फूल माला लई हथ्थ जोरी॥
छं० ॥ ५०॥

लगे लोह अंगं परे जंग षानं। पऱ्यौ षान षुरसान तह षेत पानं॥
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज नंष्यौ सु भर। मलै सिंह कूरंभ॥
दस हथ्थी बढ़ि षग्ग सों। तन तरंग सूरंभ॥ छं० ॥ ५२ ॥
इनि जित्तें भग्गौ सु अरि। बर बंध्यौ सुरतान॥
दुअ सु लष्ष को अंग मै। धनि कूरंभ प्रमान॥ छं० ॥ ५३ ॥

पज्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और किले में चला जाना।

कवित्त ॥ षूब षान मारुफ। षूब दल मलिय मलैसी॥
बंध्यो गोरी साहि। भांति करिकें जु प्रलै सी॥
सब लज्जै सामंत। सीस संमुह न उठावैं॥
सुबर भाग प्रथिराज। बीर कूरम्भ सु गावैं॥
लै गयो साह चहुआन पैं। जस बज्जाग्रह बज्जया॥
कूरंभ बस सुत मलैसी। बंधे साह सुरज्जिया॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना।

सुन्यौ षान तत्तार। साहि गहि कोट पयट्ठौ॥
सुरतानह सब सेन। संकि आतुर बर नट्ठौ॥
छंडि करी सें सत्त। बुगर आतुर अध हैं बर॥
हसम हेम डेरा। जरीन बरभर दर कज्जर॥
हुअ प्रात आइ पज्जून भर। करि हसम हैवर गिरद॥
कविचंद कित्ति उज्जल उदित। राका निसि चंदह सरद॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना।

छंडि राज सुरतान। सुजस सिर कूरँभ धारिय॥
सहस बाज दस पंच। डंड गैवर सुकारिय॥
कहै राज सुनि साह। तुम सु नरनाह कहावहु॥

[1]वार वार प्रौढा प्रमानं। दंड करि घर जावहु॥
कोरान करीम करम्म तजि। हम सु पैज पौरान किय॥
कूरम समह सुर षेत षसि। पोय लज्ज पुरसान किय॥छं०॥५६॥

दूहा॥ दंड मंडि सुरतान सिर। छंडि दयौ चहुआन॥
औ सु भ्रम हिंदवान कुल। कहिग चंद बष्पान॥ छं०॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पज्जून कछावाहा पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौ प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५४॥



(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और "दंड" शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अर्थयुक्त है और किसी भी प्रति में पाठभेद नहीं है।

THAN UNIVER...